भारत-भ्रमण

पांच खण्डों में से

तीसरा खण्ड

बाबू साधुचरणप्रसाद बिरचित

जिसमें

भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध स्थानों के भूतकालिक और वर्तमान काल के बृत्तान्त पूर्ण रीति से लिखे गए हैं।

काशी

यजेश्वर यन्त्रालय में मुद्रित।

१९०२ ई०।

पहिलीबार १००० पुस्तकें छपीं।

मूल्य प्रति पुस्तक १) केवल प्रेस का खर्च।

भारत-भ्रमण के तीसरे खंड का सूचीपत्र।

भारत-भ्रमण के तीसरे खंड का शुद्धि पत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२६	शाही साही	शाही
६	२४	मर	पर
८	२१	महंथ	महंत
८	२५	दसवं	दसवें
१०	१६	१०००	१००००
१२	३	गपा	गया
१२	२८	संथाल-प्रगना	संथाल-परगना
१५	१८	फाल्गु	फलगू
१८	१३	कहते कि	कहते हैं कि
२१	२	कंआ	कूँआ
२१	८	लोम	लोग
२१	१८	मज	गज
२३	१	(७,८और९	(७,८ और ९)
२३	५	रामचन्द्रपद	चन्द्रपद
२४	५	काष्ट	काष्ठ
२५	६	मुण्डपृष्टा	मुण्डपृष्ठा
२८	१७	वनवाया हुआ	वनवाया हुआ राधाकृष्ण का मंदिर है,
२८	१८	बभनी	ब्रह्मनी
३२	२४	यशस्थी	यशस्वी
३३	२३	श्रेष्ट	श्रेष्ठ
३४	९	उपरी	उपरि
३४	११	चरणांकित	चरण अंकित
३५	१०	करुं	करूं
३५	१५	श्राप	शाप
३५	१६	पर्यत्न	पर्यन्त
३६	८	वांक्षित	वांछित
३६	९	सत्तमी	सप्तमी
३६	१४	ज्ञात	ज्ञाति
३६	१५	आमावास्या	अमावास्या
३६	१८	फाल्गुण	फाल्गुन
३६	१८	आमावास्या	अमावस्या
३६	१९	फाल्गुण	फाल्गुन
३६	१९	सत्तमी	सप्तमी
३६	२०	जेष्ट	ज्येष्ठ
३६	२२	गया नाम के	गय-नामक
३७	१५	छुट	छूट
३९	३	स्वपृष्ट	स्वपृष्ठ
३९	२२	श्राद्थ	श्राद्ध
४०	१४	वाजमेय	बाजपेय
४०	२०	गयाशिषि	गयाशीर्ष
४१	२४	फाल्गुण	फाल्गुन
४३	१०	स्नादिक	स्नानादिक

भारत-भ्रमण के तीसरे खंड का शुद्धि पत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५	१९	च्यवन,वनजी	च्यवनजी
४७	१६	होता	होता है
४९	४	वरदाग	वरदान
५१	१८	कदादित	कदाचित
५२	१७	०	महाभारत
५३	१७	म्लेक्षों	म्लेच्छों
६४	१६	वशिष्ट	वशिष्ठ
७२	२२	वंगी	वंशी
७४	८	म्लेक्ष	म्लेच्छ
७५	२४	मोकाम	मोकामा
७७	२०	फाल्गुण	फाल्गुन
७९	२८	हरेंद्रसिंह	हरेंद्रकिशोरसिंह
८३	३	चौकूटी	चकूटी
८५	२५	१३००	१३०००
८७	९	टेलहन	तेलहन
८७	१६	थारु	थारू
८७	२३	छीड़ती	छीटती
८८	१	मंजपाटन	मंजुपाटन
८९	४	१६९२	१७९२
८९	१५	१६१५	१८१५
८९	२	मिनिष्टर	मिनिष्टरी
९१	१३	शाप	शापदिया
९४	६	काठकांडू	काठमांडू
९६	१३	३८५	३२५
१०४	१५	उपर	ऊपर
१०८	२	लक्षीराय	लक्षीसराय
११२	९	वैशाप	वैशाख
११८	२६	सल्तान	सुल्तान
१२०	१६	दिलचस्म	दिलचस्प
१२१	१६	इंटे	ईंटे
१२१	१७	पुर्वोत्तर	पूर्वोत्तर
१२२	८	दुसरे	दूसरे
१२३	१	कानकुब्ज	कान्यकुब्ज
१२४	१३	कोड़	छोड़
१३२	६	८७९	६७९
१३५	११	दीनाजतुर	दीनाजपुर
१३७	७	घुमती	घूमती
१४०	२	६३५	६३५२
१४०	८	रोगग्रस्थ	रोगग्रस्त
१४१	२	तिव्र	तीव्र
१४६	८	कामरुप	कामरूप
१५०	२६	जातापुर	यात्रापुर
१५४	५	कामरुप	कामरूप
१५७	१८	कामरुप	कामरूप
१५८	२७	ऋपिश्वरों	ऋपीश्वरो
१७०	१	कुवोघाटी	कूवोघाटी
१७६	१६	१५४	११४
१८८	२१	कील	मील
१९१	१०	७६०	१७६०
१९२	२०	मुसलगान	मुसलमान
१९४	११	उदयमुर	उदयपुर
२०६	१३	राजपुत	राजपूत

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०६	१७	पुरे	पूरे
२०८	१२	सन् १८९१	सन्१८८१
२०८	१३	बारकगंज	बाकरगंज
२०८	१४	२६०७७	२६०७७१
२१३	१८	यतिन्द्र	यतीन्द्र
२१८	१३	तृयोदशी	त्रयोदशी
२१९	४	आमावाश्या	अमावाश्या
२२४	१२	महड़ी	यहड़ी
२२५	५	फोर्टविलियम	विलियम
२३१	२१	किड़े	कीड़े
२३१	२१	नमुने	नमूने
२४०	८	दारवाजा	दरवाजा
२४१	७	१७८०	१८९०
२५७	३३	१०८०३	१००८३
२६०	२३	सर्वमस्टनत्	सर्वमसृजत्
२६०	२३	ज्ञातमनन्तं	ज्ञानमनन्तं
२६०	२४	निरवचवं	निरवयवं
२६०	२६	तदुपा-समैव	तदुपास-नमेव
२६१	१३	वक्तूता	वक्तृता
२६८	१	अशुभलड़के	अशुभसमय के लड़के
२७०	१	ईशाण	ईशान

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८१	२७	सन् ५६७	सन्१५६७
२८४	२	भूवनेश्वर	भुवनेश्वर
२८४	१८	१८०	१६०
२८८	१८	सूक्ष्म आ-मूतिकेश्वर-	सूक्ष्म मूतिकेश्वर
२८८	२७	स्कंधपुराण	स्कंदपुराण
२८८	२७	(उत्कल-खण्ड)	(उत्तर-खंड)
३०४	१३	ढुंढ	ढूंढ़
३१७	१५	वहां	यहां
३१९	१६	समम	समय
३२५	७	वशाख	वैशाख
३२५	२७	सारुप्य	सारूप्य
३२६	६	उच्छिष्ठ	उच्छिष्ट.
३३१	२३	क्षत्र	क्षेत्र
३३९	१६	१२७२६०	१२६२६०
३४१	५	निकला	निकाला
३५१	२२	साहब-गंज	साहब-गंज से
३६०	१८	जिलेमें	जिलेमें
३६०	२०	२६२८१	३६२८१
३६२	४	३७०३३६	२७०३३६
३६२	१७	२००	२०००

भारत-भ्रमण ।

तीसरा खण्ड ।

श्रीगणेशायनमः

संभुचरन सिर नाइ कै 'साधुचरनपरसाद' ।
तृतिय खंड 'भारत-भ्रमन' वरनत हैं अविवाद ॥

पहला अध्याय ।

(सूबे विहार में) आरा, दानापुर, पटना और बांकीपुर ।

आरा ।

मेरी तीसरी यात्रा सन १८९२ ईस्वी के अक्तूबर (संवत १९४९ के कार्तिक) में मेरी जन्मभूमि चरजपुरा से प्रारंभ हुई ।

चरजपुरा से १२ मील दक्षिण 'इष्ट इंडियन रेलवे' का विहिया स्टेशन है । मैं विहिया में रेलगाड़ी में सवार हो, उससे १४ मील पूर्व आरा के स्टेशन पर उत्तरा । विहार प्रदेश के पटना विभाग में शाहाबाद जिले का सदर स्थान और जिले का प्रधान कसबा (२५ अंश, ३३ कला, ४६ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश, ४२ कला, २२ विकला पूर्व देशांतर में) रेलवे स्टेशन

से एक मील उत्तर और गंगा से ६ मील दक्षिण आरा एक छोटा शहर है। स्टेशन से पश्चिमोत्तर एक सराय है।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय आरा में ४६९०८ मनुष्य थे; अर्थात् २३४२६ पुरुष और २३४७९ स्त्रियां। इनमें ३३३५३ हिन्दू, १३०८६ मुसलमान, ४०६ जैन, ५६ क्रस्तान और ४ बौद्ध थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में २२ वां और बंगाल में १४ वां शहर है।

शहर रौनक़दार है। इसका चौक भी अच्छा है। मकान ईंटे और मट्टी के बने हैं। शहर के उत्तर दीवानी और पश्चिम एक तालाव के समीप मैदान में कलक्टरी और फौजदारी सुन्दर कचहरियां बनी हुई हैं। कलक्टरी से पश्चिम दीवार से घेरा हुआ मुसलमानों का बहुत बड़ा मौलाबाग, जिसमें एक उत्तम ताज़िया रक्खी हुई है, और पूर्व गवर्नमेंट स्कूल है। स्कूल से पूर्व शहर के मध्य में डील साहब का बड़ा तालाव; दीवानी कचहरी से उत्तर गांगी नदी पर काठ का पुल और शहर के भीतर जेलखाना और अस्पताल है। जज की कोठी के पास वह दो मंजिला मकान है, जिसमें सन १८५७ के बलवे के समय कई एक यूरोपियनो ने थोड़े सिक्ख सिपाहियों के साथ बड़ी बहादुरी से आत्मरक्षा की। जजकी कोठी से १ मील दूर एक सुन्दर छोटा गिर्जा है। बाबू बाजार के एक मन्दिर में बुढ़वा महादेव नामक मोटे शिवलिंग हैं। वहां सावन मास में प्रति सोमवार की रात्रि में रोशनी, नाच, शिव का शृङ्गार और पूजन होता है। बहुत दर्शक लोग आते हैं। इसके अतिरिक्त आरे में कई एक छोटे देवमन्दिर और जैनमन्दिर हैं। शहर से एक मील से अधिक पूर्व सोन की नहर है, जो डेहरीघाट से निकल कर साठ मील पर आरा से पूर्वोत्तर गंगा नदी में मिली है।

शाहाबाद जिला—यह पटना विभाग के दक्षिण-पश्चिम का जिला है। इसके उत्तर पश्चिमोत्तर प्रदेश के गाजीपुर और बलिया जिले और बिहार में सारन जिला; पश्चिम पश्चिमोत्तर देश में मिर्जापुर-बनारस और गाजीपुर जिले; दक्खिन लोहरदगा जिला और पूर्व पटना जिला है। जिले के उत्तरीय सीमा

पर गंगा और सरजू; पश्चिमी सीमा पर कर्मनाशा और पूर्वी सीमापर सोन नदी बहती है। जिले के पूर्वोत्तर कोने के पास सोन नदी और चौसा के निकट कर्मनाशा नदी गंगा में मिल गई है। जिले का क्षेत्रफल ४३६५ वर्गमील और सदर स्थान आरा है।

शाहाबाद जिला स्वभाविक रीति से दो विभागों में बटा है। उत्तरीय भाग में, जो जिले के क्षेत्रफल का तीन चौथाई है, उपजाऊ भूमि में खेती होती है और आम महुआ इत्यादि फलदार वृक्ष बहुत हैं। और दक्षिणीय भाग में विन्ध पहाड़ का सिलसिला, जिनमें से इस ज़िले में आठ सौ वर्गमील है, फैला है। प्लेटू की साधारण उंचाई समुद्र के जल से १५०० फीट है। वनों में लाही बहुत होती है। सोन के किनारों पर और जहां तहां मैदानों में कंकड़ निकाले जाते हैं। कायमूर पहाडियों के पत्थर से इमारतें, चक्कियां, चाक, ऊख पेरने के कोल्हू, इत्यादि चीज बनती हैं और पहाड़ियों में स्लेट आदि कई प्रकार के पत्थर मिलते हैं। जिले के दक्खिनी पहाड़ी भाग में बाघ, तेंदुए, भालू, सूअर और अनेक प्रकार के हिरनें आदि बनैले जीव रहते हैं और उत्तरीय भाग में कई एक नहरें फैली हुई हैं। और ज़िले में बहुतसी छोटी २ नदियां बहती हैं। सहसराम के पास सूर्य्यवंशी राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व के नाम से रोहितासगढ़ नामक पुराना किला है। इसकी वर्तमान इमारत को बंगाल के सूबेदार राजा मानसिंह ने सन १६४४ ई० में बनवाया था। लगभग ४ मील पूर्व से पश्चिम तक और ५ मील उत्तर से दक्खिन तक गढ़ की निशानियां देखने में आती हैं। इस जिले के ब्रह्मपुर, बक्सर, जखनी, घुसरिया, सिनहा, गड़हनी, कस्तरदोनवार, धमार, मसाढ़ और गुप्तेश्वर में समय समय पर मेले होते हैं।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय २०४२१२२ और सन् १८८१ ई० में १९६४९०९ मनुष्य थे; अर्थात १८१७८८१ हिन्दू, १४६७३२ मुसलमान, २७६ कृस्तान और २० दूसरे। जातियों के खाने में २१३३०८ ब्राह्मण, २०७१९५ राजपूत, १५२८४६ कोइरी, ११९०१० चमार, ९०१५५

दुसाध, ६८४२७ कांदु, ६६३४१ कुर्मी, ६२८१२ कंहार, ५९०७५ भुइंहार, ४७८३६ तेली, ४६९९४ कायस्थ, ३४५६८ बनीआं थे; शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसबे आरा में ४६९०५, सहसराम में २२७१३, डुमरांव में १८३८४, बक्सर में १५५०६, जगदीशपुर में १२४७५, और भभुआ में १०२१६, और भोजपुर, नासरीगंज और भगेन में १०००० से कम मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १८५७ ई० के बलवे के समय ता० २४ जुलाई को लगभग २००० सिपाही बागी होकर दानापुर से आरा को चले। उन्होंने जगदीशपुर के बाबू कुंवरसिंह के आधीन लगभग ८००० हथियारबन्द गांव वालों के साथ ता० २७ जुलाई को आरा के जेलखाने के सम्पूर्ण कैदियों को छोड़ दिया, खजाने को लूट लिया और सरकारी फ़ौज पर आक्रमण किया। बहुत से यूरोपियन लड़के और स्त्रियां पहलेही बाहर भेज दी गईं थीं, केवल १२ अंगरेज और ३ चार दूसरे कृस्तान कसबे में थे। पटने के कमिश्नर ने ५० सिक्खों को सहायता के लिये आरे में भेज दिया था। उसके पश्चात जो २३० यूरोपियन दानापुर से चले, वे रास्ते में प्रायः सब मारे गए। आरा के यूरोपियन और सिपाहियों ने इस्टइंडियन रेलवे कम्पनी के दो मकानों को, जिनमें का २० गज लम्बा दो मंजिला मकान प्रधान था, तुरतही किलाबन्दी कर उसमें सब सामान रख लिया। जब यूरोपियन और सिक्ख लोग दो मंजिले मकान में चले गये, तब बागी लोग कसबे में लूट पाट करने के पीछे मिस्टर बोली की छोटी गढ़ी को चले, किन्तु एक सरकारी तोप की बाढ़ दगने पर वे छितर बितर हो गए। इसके पश्चात बलवाइयों ने एक सप्ताह तक कई एक प्रकार से कई बार उन पर आक्रमण किया, किन्तु उनके पास तोप नहीं थी, इसलिये ये लोग उनको मार न सके। अगस्त के आरंभ में दानापुर से भेजे हुए २६० पैदल ६० गोलन्दाज और ४ तोपों के साथ आरा के पास पहुंचे। ता: २ अगस्त को तोप की सनसनाहट दूर से सुन कर बागी लोग जहां तहां भागने लगे। सूर्यास्त के पहले ही सब लोग भाग गये। ता० ३ अगस्त को सरकारी पल्टन

घेरे हुए लोगों से आमिली । बाबू कुंवरसिंह का वृत्तांत भारत-भ्रमण के पहले खंड में डुमराव और आज़मगढ़ के वृत्तांत में लिखा है ।

दानापुर ।

आरा से पूर्व ८ मील कोइलवर का पुल और २४ मील दानापुर का रेलवे स्टेशन है ।

कोइलवर में सोन नदी पर, जो नर्मदा के निकास के पास अमरकंटक पर्वत से निकल कर ४६४ मील दक्खिन से उत्तर को वहने के उपरांत कोइलवर से कई मील उत्तर हरदी छपरा के निकट गंगा में मिली है, ४७२६ फीट लम्बा रेलवे का पुल है । उसमें १५० फीट लम्बे २८ दरवाजे हैं । पुल के पाये ३२ फीट पानी के नीचे और भूमि में और ३५ फीट पानी से ऊपर हैं । पुल के नीचे की तह में आदमी और गाड़ी चलती हैं और ऊपर रेलवे की दोहरी लाइन है । यह पुल सन् १८६२ ई० में ४३३३३२४ रुपये के खर्च से तैयार हुआ ।

कोइलवर के पुल से १६ मील पूर्व दानापुर का बड़ा रेलवे स्टेशन है स्टेशन पर गाड़ी देर तक ठहरती है । रेलवे से उत्तर बिहार के पटने जिले में फौजी छावनी का स्थान गंगा के दाहिने अर्थात दक्षिण दानापुर एक कसबा है । जिसको दीनापुर भी कहते हैं ।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय दानापुर कसबे और इसकी छावनी में ४४४१९ मनुष्य थे; अर्थात २१८९३ पुरुष २२५२६ स्त्रियां । इनमें ३२२८३ हिन्दू, १०६२४ मुसलमान, १४९१ कृस्तान, १७ यहूदी और ४ जैन थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ९१ वां और वंगाल में १७ वां शहर है ।

रेलवे स्टेशन से ३½ मील दूर पटना विभाग की फौजी छावनी फैली हुई है । उसमें एक बैटेलियन अर्थात पलटन पैदल गोरों की और एक रेजीमेंट बंगाल पैदल की रहती हैं । सन १८८३ ई० में २ यूरोपियन और एक देशी पैदल शाही साही आरटिलरी के २ बैटरियों के साथ था । एक ६ मील की

सड़क दानापुर से बांकीपुर की सिविल कचहरियों तक गई है, उसके किनारों पर लगातार छोटे बड़े मकान बने हैं। वास्तव में गंगा और रेलवे के बीच में दानापुर, बांकीपुर और पटना लगातार एकही पतला शहर है।

सन् १८५७ की जुलाई में ३ रेजीमेंट, जो दानापुर में थीं, वागी होकर आरा को चली गईं; पीछे दानापुर से यूरोपियन सेना आरा की रक्षा के लिये भेजी गई।

पटना और बांकीपुर।

दानापुर के रेलवे स्टेशन से पूर्व ६ मील वांकीपुर का रेलवे जंक्शन और १२ मील पटना शहर का रेलवे स्टेशन है। विहारप्रदेश में क़िस्मत और जिले का सदर स्थान (२५ अंश, ३७ कला, १५ विकला, उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, १२ कला, ३१ विकला, पूर्व देशांतर में) गंगा के दहिने अर्थात दक्षिण किनारे पर पूर्व जाफर खां के वाग से पश्चिम वांकीपुर की शहरतली तक ९ मील की लंबाई और औसत में दो मील की चौड़ाई में पटना शहर फैला हुआ है। पुरानी क़िलावंदी, जो शहर को घेरती थी, अब नहीं है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पटने और वांकीपुर में १६५१९२ मनुष्य थे; अर्थात ८२००८ पुरुष और ८३१८४ स्त्रियां। इनमें १२४५०६ हिन्दू, ४००७७ मुसलमान, ५४१ कृस्तान, ५९ जैन और ९ वौद्ध थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में १५ वां, वंगाल में दूसरा और विहार में पहला शहर है।

शहर के मकान ईंटे और मट्टी से वने हुए हैं। एक चौड़ी सड़क पूर्व से पटने के पश्चिम दरवाजे होकर वांकीपुर होती हुई पश्चिम दानापुर गई है। दूसरे रास्ते तंग और टेढ़े हैं। चौक से ५ मील पश्चिम वांकीपुर की सिविलियन कचहरी तक चौड़ी सड़क पर ट्रामगाड़ी चलती है। दीघा, वांकीपुर और पटने के बीच में पटना नहर है, जो सन १८७७ में खुली। प्रधान सड़कों मर रात में लालटैन की रोशनी होती है। एक धर्म्मशाला पटने के रेलवे स्टेशन से थोड़ा पश्चिम और दूसरी चौक के निकट है। पटने शहर में गोपीनाथ,

बड़ी पटनदेवी, छोटी पटनदेवी और हरिमन्दिर ये ४ मन्दिर प्रधान हैं। गुलजारबाग में अफीम के गोदाम और रोमनकाथेलिक चर्च के सामने एक कबरगाह है, जिसमें मीरकासिम द्वारा मारे हुए लोग दफन किए गए थे। उसके ऊपर पत्थर और ईंटे से बना हुआ एक स्तम्भ खड़ा है। दूसरा यूरोपियन कबरगाह शहर के पश्चिम है। पश्चिम की शहरतली में शाहअरजानी का, जो सन् १०३२ हिजरी (सन् १६२२ ई०) में मरा था, बड़ा दरगाह है। वहां प्रति वर्ष एक बड़ा मेला होता है। मेला ३ दिनों तक रहता है। उसमें लगभग ५००० मनुष्य आते हैं। दरगाह के पास के करवले में मुहर्रम के दिन बहुत से लोग एकत्र होते हैं और संपूर्ण शहर के ताजिये दफन किये जाते हैं। करवले के पास एक साधु का बनवाया हुआ एक तालाब है। पटने की मसजिदों में शेरशाह की मसजिद सब से पुरानी है। पीरबहोर की दरगाह भी मुसलमानों की पूजा का स्थान है, जिसको बने हुए २५० वर्ष हुए। शहर के आस पास गुलाब चुलाने के लिये गुलाब के बहुतेरे बाग़ लगे हुए हैं।

बांकीपुर में हिन्दुस्तान में सब से बड़ी अफयून की कोठी है, वहां बिहार के १२ जिलों से अफयून आता है। पटना कालिज ईंटे से बनी हुई बहुत सुन्दर इमारत है, इसको किसी बाशिन्दे ने अपने रहने के लिये बनवाया था। गवर्नमेन्ट ने इसको खरीद कर कचहरी बनाई। सन् १८५७ ई० में कचहरी दूसरी बनी। सन् १८६२ में इसमें कालिज स्थापित हुआ। इनके अतिरिक्त बांकीपुर में सिविल कचहरियां, मेडिकल कालिज, नार्मल स्कूल, बिहार नेशनल कालिज, खैराती अस्पताल, पबलिक लाइब्रेरी, इत्यादि दर्शनीय वस्तु हैं। सिविल कचहरी और अफीम की कोठी के बीच में प्रतिवर्ष सावन मास में प्रति सोमवार को सोमवारी मेला होता है, जिसमें बहुत सी चीज़े बिक्री के लिये आती हैं और महादेव के मन्दिर में बड़ा उत्सव होता है।

पटने में कारोबार के प्रधान स्थान मारूगंज, मन्सूरगंज, किला महल्ला, मिरचाइगंज के साथ चौक, महराजगंज, सादिकपुर, अलावक्सपुर, गुलजार बाग और कर्नैलगंज हैं। पटना शहर जिले में प्रधान तिजारती बाजार और

नील की तिजारत का प्रसिद्ध स्थान है। तेल के वीज, नमक, सज्जी, चीनी, गुड़, गेहूं, रहर, चना, चावल, इत्यादि वस्तु दूसरे शहरों से पटने में आती हैं और कई प्रकार की चीजें शहर से दूसरे शहरों में जाती हैं। मारूगंज सबसे अधिक आमदनी की जगह है। कर्नेलगंज में बहुत सी तिजारती चीजें बंगाल और विहार के जिलों से नाव पर आती हैं। सादिकपुर और महराजगंज में तेल के वीज का वाजार है। मिरचाईगंज से सटा हुआ चौक है, जिसमें मारवाड़ियों की कपड़े आदि की दुकानें देखने में आती हैं। चौक से पूर्व किले के महल्ले में रुई, वांस और लकड़ी की तिजारत होती है। सन् १८८३-८४ में वांकीपुर और दानापुर के साथ पटने की सौदागरी की आमदनी की कीमत ३८९२१८४० रुपए और रफतनी की कीमत ६६०३५७९० रुपए थी।

गुरु गोविन्दसिंह का मन्दिर—यह मन्दिर चौक के पास एक गली के वगल में हरिमन्दिर करके प्रसिद्ध है। मन्दिर के फाटक के दालान में मार्बुल के ४ जोड़े खम्भे लगे हुए हैं। वड़े आंगन में एक उत्तम वरामदा वना है उसमें पूर्व और पश्चिम दालान और वाहर चारो ओर सुन्दर ओसारे बने हैं। पूर्व के दालान में गुरु गोविन्दसिंह की २ जोड़ी चरणपादुका और पश्चिम वाले में सुन्दर सिंहासन पर ग्रन्थ साहव अर्थात् नानकशाही लोगों की धर्म्म पुस्तक रक्खी हुई हैं। पुस्तकों को दुशाले ओढ़ाये जाते हैं और चंवर डुलाये जाते हैं। मन्दिर से उत्तर वहुत ऊंचा निशान है। पूस सुदी सप्तमी गुरु गोविन्दसिंह का जन्म दिन है, उस दिन वहां वड़ा उत्सव होता है। फूल वंगला वनता है और वड़ी रोशनी की जाती है। हरिमन्दिर के महंथ वावा सुमेरसिंह जी हैं जो व्रजभाषा के अच्छे कवि हैं। उसी स्थान पर सिक्खों के नवं गुरु तेग वहादुर की पत्नी गुजरीदेवी के गर्भ से संवत १७२३ (सन् १६६६ ई०) में पूस सुदी सप्तमी को गुरु गोविन्दसिंह का जन्म हुआ था। उन्हों ने अपने मतवालों को सिंह की पदवी दी और एक दूसरा ग्रन्थ बनाया, जो दसवं गुरु का ग्रंथ कहलाता है। और आज्ञा दी कि हमारे पश्चात अव कोई दूसरा गुरु नहीं होगा, सव लोग अवसे ग्रन्थ साहव को गुरु सम-

ोंगे; जो किसीको कुछ पूछना होगा, वे उसीमें देख लेवेंगे । गुरु गोविन्द सिंह के जीवन का बड़ा भाग युद्ध में बीता; उन्हों ने संवत १७६५ कार्तिक सुदी पंचमी (सन् १७०८ ई०) को हैदराबाद के राज के नवेड़ में मुसलमानों से लड़कर संग्राम में अपने प्राण का विसर्जन किया; वहां गुरु गोविन्दसिंह की संगति बनी हुई है।

पटनदेवी—हरि मन्दिर से दक्षिण ओर एक गली के बगल में छोटी पटनदेवी का मन्दिर है । आंगन के पूर्व और पश्चिम दोहरी और उत्तर तथा दक्षिण एकहरी दालान और चारों कोनों पर चार कोठरियां हैं । पूर्व के दालान में १२ खम्भे लगे हुए आसन में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की तीन मूर्तियां स्थित हैं।

चौक से ३ मील पश्चिम महाराज गंज में बड़ी पटनदेवी का मन्दिर है । लोग कहते हैं कि पार्वती के पट के गिरने से वहां पाटनदेवी हुई और इस शहर का नाम पटना पड़ा ।

गोलघर—बांकीपुर के रेलवे स्टेशन से १½ मील उत्तर ऊंचे गुम्बज की शकल की ईंटे से बनी हुई गोलघर नामक इमारत, जो सन् १७८४ ई० में अकाल के समय गल्ले रखने के लिये बनी थी, देखने लायक है । इसकी दीवार १२ फ़ीट मोटी; गोलाई नेव के पास ४२६ फीट, ऊंचाई मध्य में ९० फीट और भीतर का व्यास १०९ फ़ीट है। चारो ओर चार दरवाजे और सिरे पर १०½ फीट गोलाकार चबूतरा है। ऊपर चढ़ने के लिये बाहर से दो सीढ़ियां, जिनके बगल में रोकावट के लिये दीवार बनी है, बनी हुई हैं। लोग कहते हैं कि नैपाल के सर जंगबहादुर छोटे घोड़े पर चढ़कर बाहर की सीढ़ियों से इसके सिरे पर चढ़ गए थे। गोलघर में १३७००० टन गल्ला अंट सकता है।

पटना ज़िला—इसका क्षेत्रफल २०७९ वर्गमील है। इसके उत्तर गंगा नदी, बाद सारन मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिले; पूर्व मुंगेर जिला; दक्षिण गया जिला और पश्चिम सोन नदी, जो शाहाबाद जिले से इसको अलग करती है, बहती है। जिले के दक्षिण भाग में पहाड़ियां हैं । जिले में जंगल

नहीं है। जिले के दक्षिण पूर्व के भाग में लगभग १००० फीट ऊंची राजगृह की पहाड़ियां और अनेक गर्म झरने हैं।

पटना जिले में गंगा और सोन प्रधान नदी है। पुनपुन नदी से छोटी २ नहर निकली हैं। पुनपुन नदी नौवतपुर तक पूर्वोत्तर को बढ़कर, वहां से पूर्व झुककर फतुहा के पास गंगा में मिलगई है। उसकी लम्बाई इस जिले में ५४ मील है। विहार की पहाड़ी में मकान बनाने योग्य पत्थर की खान है।

जिले में सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय १७७०२२४ और सन् १८८१ ई० में १७५६८५६ मनुष्य थे; अर्थात् १५४१०६१ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान, २५८८ कृस्तान, २२ जैन, १६ ब्रह्मो, १४ यहूदी, १ पारसी और १३ दूसरे। जातियों के खाने में २१७८४५ अहीर, १९४२२२ कुर्मी, १२१३८१ भूमिहार, ९९९७६ दुसाध, ८६७३८ कोइरी, ८५८२४ कंहार, ६४३३२ राजपूत, ५६६८७ चमार, ५२८८० तेली, ४७०४१ ब्राह्मण थे; और शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पटना जिले के पटने शहर में १६५१९२, विहार में ४७७२३, दानापुर में ४४४१९, वाढ़ में १२२६३, और खगौल, मुकामा, फतुहा, महम्मदपुर, वैकुंठपुर और रसूलपुर में १००० से कम मनुष्य थे।

सूबे विहार—बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन विहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर ये चार सूबे हैं। इनमें से सूबे विहार का प्रधान शहर पटना है। सूबे विहार के उत्तर स्वाधीन नैपाल राज्य; पूर्व सूबे बंगाल; दक्षिण छोटा नागपुर के जिले और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश है। सूबे विहार में पटना और भागलपुर दो विभाग हैं,—पटना विभाग में पटना, गया, शाहाबाद, सारन, चंपारन, मुजफ्फरपुर, और दरभंगा ये ७ जिले और भागलपुर विभाग में भागलपुर, मालदह, पुर्निया, मुंगेर और संथाल परगना ये ५ जिले हैं।

यह देश साधारण तरह से चिपटा है। मुंगेर जिले और देश के दक्षिण-पूर्व, में जहां राजमहल और संथाल सिलसिले हैं, पहाड़ियां हैं। इस सूबे में सबसे

ऊंची पहाड़ी, जिसकी ऊंचाई केवल १६२० फीट है, गया जिले में स्थित है। सूबे के मध्य होकर गंगा नदी बहती है, जिससे इस सूबे के प्रायः बराबर दो भाग हो गए हैं। उत्तर से सरजू, गंडक, कोसी और महानंदा और दक्षिण से सोन नदी आकर गंगा में मिली हैं। इस सूबे में कई एक नहर खेतों को पटाते हैं और नील और अफीम बहुत होती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सूबे बिहार का क्षेत्रफल ४४१३९ वर्ग मील था। इसमें ७७४०७ कसबे और गांव, ३५२०८९६ मकान और २३१२७१०४ मनुष्य थे। अर्थात् ११३८५८३६ पुरुष और ११७४१२६८ स्त्रियां। इनमें १९१६९३२७ हिन्दू, ३३१२६९७ मुसलमान, ६३३८६६ आदि निवासी इत्यादि, १०९५४ कृस्तान, १३२ बौद्ध, ५४ सिक्ख, ५० यहूदी और २४ जैन। जातियों के खाने में २६४२९५७ ग्वाला, ११६६५९३ राजपूत, ११२४३६१ कोइरी, १०७३६४३ ब्राह्मण, १०५२५६४ दुसाध, ९८५०९८ भूमिहार, ८८२११३ चमार, ७९०५२३ कुर्मी, ६३२०२९ तेली, ५३१४२३ कांदू, ५३१९०४ धानुक, ४६८३०५ कंहार, ४१९५२१ तांती और तंतवा, ३९३५३७ बनिया, ३९२६२२ मलाह, ३५८०६८ कायस्थ, ३४०७१७ नाई, २८३७४० कुंभार, २५२९१४ लोहार; शेष में दूसरी जातियां थीं। आदि निवासियों में ५५९६२० संथाल, ११९९५ कोल थे। बिहार भारतवर्ष में सबसे घनी आबादी का देश है। इसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय प्रति वर्गमील में औसत ५२४ मनुष्य थे।

प्राचीन काल में मगध के राजाओं के आधीन सूबे बिहार था, जो उस समय भारतवर्ष में प्रबल राजा थे। सन ईस्वी की चौथी सदी के पहिले से पांचवीं सदी के पीछे तक उनका राज्य था। तेरहवीं सदी के आरंभ में बिहार देश मुसलमानों के आधीन होकर बंगाल के नवाब के अधिकार में हुआ। सन १७६५ में इष्टइंडियन कंपनी ने दीवानी के साथ सूबे बिहार को पाया।

सूबे बिहार के शहर और क़सबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	शहर और कसबे	जिला	जन-संख्या
१	पटना बांकीपुर	पटना	१६५१९२
२	गया	गया	८०३८३
३	दरभंगा	दरभंगा	७३५६१
४	भागलपुर	भागलपुर	५९१०६
५	छपरा	सारन	५७३५२
६	मुंगेर	मुंगेर	५७०७७
७	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९२
८	बिहार	पटना	४७७२३
९	आरा	शाहाबाद	४६९०५
१०	दानापुर	पटना	४४४१९
११	बेतिया	चंपारन	२२७८०
१२	सहसराम	शाहाबाद	२२७१३
१३	हाज़ीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
१४	डुमराव	शाहाबाद	१८३८४
१५	जमालपुर	मुंगेर	१८०८९
१६	सीवान	सारन	१७७०९
१७	मधुबनी	दरभंगा	१७५४४
१८	बक्सर	शाहाबाद	१५५०६
१९	पुर्नियां	पुर्नियां	१४५५५
२०	इंगलिशबाजार	मालदह	१३८१८
२१	रिविलगंज	सारन	१३४७३
२२	मोतीहारी	चंपारन	१३१०८
२३	लालगंज	मुजफ्फरपुर	१२४९३
२४	जगदीशपुर	शाहाबाद	१२४७५
२५	बाढ़	पटना	१२३६३
२६	टिकारी	गया	११५६२
२७	साहेबगंज	संथालपरगना	११२९२
२८	रोसरा	दरभंगा	१०८८७
२९	भभुआ	शाहाबाद	१०२१६

इतिहास—पुराण के लेखानुसार शिशुनागवंश के राजा अजातशत्रु के पोते उदयाश्वने पाटली पुत्र (पटना) को, जिसको कुसुमपुर भी (पुष्पपुर) कहते थे, बसाया। (भारत-भ्रमण इसी खंड के तीसरे अध्याय की प्राचीन कथा में देखो) अजातशत्रु बौद्धमत नियत करने वाले गौतमबुद्ध के समय में था। गौतमबुद्ध का देहांत सन ई० के ५४३ वर्ष पहले हुआ था। चन्द्रगुप्त ने मगध या विहार के नंद खांदान को, जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी, विनाश करके सन ई० से ३१६ वर्ष पहले एक राज्य नियत कर २४ वर्ष तक गंगा के मैदान में राज्य किया। उसी समय चीन के मेगेस्थनीज़ ने शहर को देखा था। उसने लिखा था की सिंध नदी से १०००० इसटाडिया (११४९ मील) दूर गंगा और एरानोबो (सोन) के संगम के निकट खाई से घेरा हुआ ६४ फाटकों से सुशोभित हिन्दुस्तान की राजधानी पालीबोथरा (पटना) है। उसके कथनानुसार शहर का घेरा २४ मील का होता है। चीन के दूसरे यात्री हुएंत्संग ने सन ६३७ ई० में इस शहर को देख कर लिखा है कि पुराना शहर, जो कुसुमपुर कहलाता है; उजड़ पुजड़ गया है, किन्तु नया शहर पाटलीपुत्र ११½ मील के घेरे में है।

मुसलमानों के राज्य के आरंभ में इस देश का सूबेदार विहार शहर में रहता था। अकबर ने पटने को अपने अधिकार में किया। औरंगजेब ने अपने पुत्र आजम को पटने का सूबेदार बनाया। तब से पटने का अजीमाबाद नाम पड़ा। सम १७६३ ई० में मुर्शिदाबाद के नबाव मीर कासिम की सेना ने लगभग २०० अंगरेज और २००० सिपाहियों को पटने के पास मार डाला। उनकी यादगार में एक स्तंभ बना हुआ है। सन १८५७ की जुलाई में दानापुर में ७ वीं, ८ वीं और ४० वीं देशी पैदल के सिपाही बागी हो गए। वे लोग जब नावों पर सवार होकर चले, तब अंगरेजों ने स्टीमर के गोलों से उनको मारा, जिससे बहुतेरे मरे और बहुतेरे डूब गए, किन्तु आधे से अधिक बागी सोन पार होकर शाहाबाद जिले में चले गए।

बांकीपुर जंक्शन से 'इष्ट इंण्डियन रेलवे' की लाइन ४ तरफ गई है। तीसरे दरजे का महसूल फी मील २½ पाई है।

(१) बांकीपुर से पश्चिम कुछ दक्षिण—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—
६ दानापुर।
२२ कोइलवर-पुल।
३० आरा।
४४ विहिया।
५३ रघुनाथपुर।
६३ डुमराव।
७३ बक्सर।
९५ दिलदारनगर जंक्शन।
१३१ मुगलसराय जंक्शन।

दिलदार नगर जंक्शन से उत्तर थोड़ा पश्चिम १२ मील गाज़ीपुर के इस पार तारीघाट; मुग़लसराय से पश्चिम २० मील चुनार, ४० मील मिरजापुर, ४५ मील विन्ध्याचल, ९१ मील नयनी जंक्शन और ९५ मील इलाहावाद और पश्चिमोत्तर 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' के पास ७ मील बनारस, ४६ मील जौनपुर, १२६ मील अयोध्या, १३० मील फैजावाद जंक्शन, १९२ मील वारावंकी जंक्शन और २०९ मील लखनऊ जंक्शन है।

(२) बांकीपुर से उत्तर, थोड़ा पश्चिम—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—
६ दीघाघट।

दीघाघाट से गंगा के बाएं किनारे पर पलेजाघाट तक बोट जाती आती है। पलेजाघाट से पश्चिम 'बंगाल नार्थवेष्ट रेलवे' पर २९ मील छपरा, ६७ मील सिवान और १४१ मील गोरखपुर जंक्शन और पलेजा से पूर्वोत्तर ६ मील सोनपुर और ७० मील मुजफ्फरपुर जंक्शन है।

(३) बांकीपुर से दक्षिण गया ब्रेंच—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
८ पुनपुन।
२८ जहानावाद।
५७ गया।

(४) बांकीपुर से पूर्व—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—
६ पटना शहर।
२८ वखतियारपुर।
३९ बाढ़।
५६ मोकामा जंक्शन।
७६ लखीसराय जंक्शन।

लखीसराय से कार्ड लाइन पर ६१ मील वैद्यनाथ जंक्शन, १३० मील आसन सोल जंक्शन, १४१ मील रानीगंज और १८७ मील खाना जंक्शन और लुप लाइन होकर २५ मील जमालपुर जंक्शन, ५८ मील भागलपुर, १०४ मील साहेबगंज और २४८ मील खाना जंक्शन है। खाना जंक्शन से दक्षिण ८ मील वर्द्धवान और ७५ मील कलकत्ते के इस पार हवड़ा है।

दूसरा अध्याय ।

(सूबे बिहार में) गया, बोध गया, टिकारी और बिराट नगर ।

गया ।

बांकीपुर से ८ मील दक्षिण पुनपुन गांव का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से ½ मील उत्तर पुनपुन नदी बहती है जहां गया के यात्री बालू की एक वेदी बनाकर पिण्डदान करके गया जाते हैं ।

पुनपुन स्टेशन से ४९ मील और बांकीपुर जंक्शन से ५७ मील दक्षिण (२४ अंश ४८ कला ४४ बिकला उत्तर अक्षांस और ८५ अंश ३ कला १६ विकला पूर्व देशांतर में) बिहार प्रदेश के पटना विभाग में जिले का सदर स्थान और प्रधान कसबा गया नामक छोटा शहर है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गया में जो साहबगंज के साथ एक म्युनिसिपलिटी बना है, ८०३८३ मनुष्य थे; अर्थात ४०८९३ पुरुष और ३९४९० स्त्रियां । इनमें ६३०४६ हिन्दू, १७१४७ मुसलमान, १०५ क्रस्तान और ८५ जैन थे । मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३६ वां, बंगाल में ५ वां और बिहार में दूसरा शहर है ।

गया २ हिस्सों में विभक्त है, अर्थात् साहबगंज और पुरानी गया । दोनो फाल्गु नदी के बाएं अर्थात् पश्चिम किनारे पर हैं । साहबगंज में रेलवे स्टेशन, यूरोपियन और देशी लोगों की कोठियां और स्टेशन से करीब १ मील दक्षिण-पूर्व सिविल कचहरियां हैं । साहबगंज तिजारती जगह है, वहां की सड़क चौड़ी और मकान दो मंजिले तीन मंजिले बने हैं । उसमें जेलखाना, अस्पताल, गिर्जा, पबलिक लाइब्रेरी, तैरने का हम्माम, और घोड़दौड़ की सड़क है । गया में काले और सफेद पत्थर के प्याले पथलौटी आदि वस्तु बहुत सुन्दर बनती हैं ।

रेलवे स्टेशन से १½ मील पूर्वोत्तर पुरानी गया के उत्तर का फाटक और २ मील फलगू के बाएं विष्णुपद का मन्दिर है । पुरानी गया का खास शहर, जिसमें गया वालों के मकान हैं, फलगू नदी के पश्चिम किनारे पर उत्तर से

दक्षिण ¾ मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम ¾ मील चौड़ा है। उसके चारो दिशाओं में ४ फाटक हैं। मकान पुराने ढाचे के चौमंजिले पंच मंजिले तक बने हैं। उत्तर के फाटक से दक्षिण के फाटक तक गच की हुई एक सड़क है। ऊंची नीची भूमि पर शहर बसा है। जगह जगह पथरीली जमीन है। फल्गू के किनारे पर ब्रह्मनी घाट, गायत्री घाट, वेकुआ घाट, सोमर घाट, जिह्वालोल, गदाधर घाट आदि हैं।

पश्चिम फाटक से वाहर एक सड़क उत्तर से दक्षिण गई है जिसके पश्चिम बगल पर पश्चिम फाटक से कुछ दक्षिण रामसागर महल्ले में करीव १८५ गज लम्बा और इससे आधे से अधिक चौड़ा रामसागर नामक तालाव है। जिससे दक्षिण चान्दचौरा वाजार है।

गया से पूर्व फल्गू के दहिने किनारे पर नगकूट पहाड़ी; दक्षिण-पश्चिम भस्मकूट (जिसको लोग मुरली पहाड़ी कहते हैं इसके शिर पर एक मन्दिर देख पड़ता है) और ब्रह्मयोनि की पहाड़ी; उत्तर साहवगंज के वाद रामशिला पहाड़ी और पश्चिमोत्तर प्रेतशिला पहाड़ी देख पड़ती है।

गया श्राद्ध के लिये भारतवर्ष में प्रधान है। वहां प्रतिदिन श्राद्ध करने के लिये यात्री पहुंचते हैं, किन्तु आश्विन मास का कृष्णपक्ष गया श्राद्ध का सर्व प्रधान है। उस समय भारतवर्ष के प्रत्येक विभागों के लाखों यात्री गया में आते हैं। और धनी लोग गयावाल पंडों को वहुत दक्षिणा देते हैं। गया के पंडों में वड़े वड़े धनी हैं। आश्विन के वाद पौष और चैत्र के कृष्ण पक्ष में भी वहुत यात्री गया में पिंडदान करते हैं।

श्राद्ध के स्थान और विधि—(१) पूर्णिमासी के दिन फल्गु नदी में एक वेदी पर खीर का श्राद्ध, तर्पण और पंडा की चरण पूजा होती है। फल्गू नदी गया के पूर्व वहती हुई दक्षिण से उत्तर को गई है। फल्गू का विशेष माहात्म्य नगकूट और भस्मकूट से उत्तर और उत्तर-मानस से दक्षिण है। नगकूट से दक्षिण फल्गु का नाम महाना है। गया से ३ मील दक्षिण नीलांजन नदी दहिने से आकर महाना नदी में मिली है। संगम से करीव १ मील

दक्षिण सरस्वती के मन्दिर तक इस नदी का नाम सरस्वती है । मधुश्रवा नामक एक छोटी नदी दक्षिण-पश्चिम से आकर गया के दक्षिण महाना (फल्गू) नदी में मिली है, जिसकी धारा वरसात के वाद फल्गू से अलग होकर गदाधर के मन्दिर के नीचे वहती है। वर्षाकाल के अतिरिक्त दूसरी ऋतुओं में फल्गू नदी में पानी नहीं रहता, परन्तु वालू खोदने पर साफ पानी मिल जाता है। नदी में पानी रहने पर भी लोग वालू हटा कर स्वच्छ पानी ले जाते हैं विष्णुपद के पूर्व फल्गू के दहिने किनारे पर नगकूट पहाड़ी, वाएं किनारे पर भस्मकूट पहाड़ी और विष्णुपद से लगभग १ मील उत्तर उत्तरमानस नामक सरोवर है।

(२) कृष्ण प्रतिपदा के दिन ५ बेदी पर पिंडदान करना होता है,—रामशिला, रामकुंड, प्रेतशिला, ब्रह्मकुंड और कागवलि । रामशिला और रामकुंड—विष्णुपद के मन्दिर से करीव २ मील साहवगंज के पासही उत्तर फल्गू के पश्चिम किनारे पर रामशिला पहाड़ी है, जिसके पूर्व वगल के नीचे दीवार से घेरा हुआ ब्रह्मकुंड से वहुत वड़ा रामकुंड नामक तालाव है। यात्री गण प्रेतशिला से लौटने पर इसके किनारे एक बेदी का पिंडदान करते हैं और पीछे रामशिला के ऊपर पिंडदान होता है। तालाव के दक्षिण एक शिवमन्दिर और पश्चिम रामशिला के वगल पर २० सीढ़ी के ऊपर टेकारी की रानी का वनवाया हुआ एक सुन्दर विशाल मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण, जानकी और हनूमान आदि देवता स्थित हैं । मन्दिर के दक्षिण एक धर्मशाला है। ३४० सीढी लांघने पर रामशिला के सिर पर आदमी पहुंचता है। उसके मध्य में पत्थर के ढोकों से वना हुआ एक शिवमन्दिर है, जिसके जगमोहन में एक चरणचिन्ह बना है। मन्दिर के दक्षिण एक ओसारे और उत्तर एक मन्दिर में ३ पुरानी वौद्धमूर्तियां देखने में आती हैं, जिनमें से एक स्त्री और दो चतुर्भुज पुरुष हैं। लोग कहते हैं कि पहले रामशिला का नाम प्रेतशिला था, जब रामचन्द्र यहां आये, तबसे इसका नाम रामशिला हुआ है।

प्रेतशिला और ब्रह्मकुण्ड—रामशिला से ४ मील पश्चिम प्रेतशिला एक पहाड़ी है। पत्थर के टुकड़ों की पक्की सड़क बनी है। सवारी के लिये एक्के और बग्गी और पहाड़ियों पर चढ़ने के लिये खटोली मिलती हैं। प्रेतशिला के पासही उत्तर २४ गज लम्बा और इतनाहीं चौड़ा ब्रह्मकुण्ड नामक तालाब है। झरने का पानी कुण्ड में गिरता है। चारो बगलों पर पानी तक पक्की सीढ़ियां बनी हैं। कुण्ड के पास एक मन्दिर और दो तीन पंडे के ओसारे हैं, जिन के उत्तर झरने के पानी की बावली है, जिसका जल ब्रह्मकुण्ड में गिरता है। ब्रह्मकुण्ड में स्नान तर्पन करने के उपरांत वहां पिण्डदान करके प्रेतशिला पर जाना होता है। ब्रह्मकुण्ड से ३६० सीढ़ियों के ऊपर चढ़ने पर यात्री प्रेतशिला के सिर पर पहुंचते हैं, जहां एक आंगन के तीन बगलों पर ओसारे और पूर्व बगल पर आगे की तरफ एक मंडप है। मंडप और पश्चिम के ओसारे में कई पुरानी बौद्ध मूर्तियां हैं। वहां पिंडदान करना होता है। कहते कि पूर्व समय में प्रेतशिला का नाम प्रेत पर्वत था; जब रामचन्द्र के आने पर प्रेतशिला का नाम रामशिला हुआ। तब प्रेतपर्वत को प्रेतशिला लोग कहने लगे।

कागबलि—रामशिला से करीब २०० गज दक्षिण सड़क के पश्चिम बगल पर घेरी हुई जमीन के भीतर एक वट वृक्ष है। वहां एक वेदी के केवल तीन पिंड दिये जाते हैं। कागबलि, यमबलि और श्वानबलि। इस दिन प्रेतिया ब्राह्मण १) रुपया लेता है और यात्रियों को दूसरे दिनों से अधिक परिश्रम होता है।

(३) कृष्णपक्ष की द्वितीया को उत्तर मानस, उदीची, कनखल, दक्षिण मानस और जिह्वालोल इन ५ वेदियों पर पिंडदान होता है। इनको पंचतीर्थी कहते हैं।

उत्तर मानस—विष्णुपद से करीब १ मील उत्तर सिविल कचहरियों से २०० गज पूर्व उत्तर मानस नामक महल्ले में रामशिला वाली सड़क के पूर्व बगल पर करीब ५० गज लम्बा और इतनाहीं चौड़ा उत्तर मानस नाम का तालाब है। उसके चारो बगलों पर नीचे तक पक्की सीढ़ियां हैं। तालाब के

पूर्व और दक्षिण वहार दीवारी, पश्चिम धर्मशाला और उत्तर एक शिखरदार मन्दिर है, जिसमें उत्तरार्क नामक सूर्य और सीतला आदि देवी की मूर्तियां स्थित हैं। मन्दिर के आगे पूर्व लम्बा जगमोहन है, जिससे मन्दिर में अंधेरा रहता है। मन्दिर से उत्तर पीपल की जड़ के पास पितामहेश्वर महादेव का वहुत छोटा मन्दिर है। तालाव के पश्चिमोत्तर कोने के पास सड़क के पश्चिम मौनेश्वर महादेव का मन्दिर है। इस में भी लम्बा जगमोहन होने के कारन अंधेरा रहता है। दक्षिण की दीवार में पार्वती जी; पश्चिमवं दीवार में सूर्य्य नारायण और गणेश जी और लक्ष्मी जी की मूतियां प्रतिष्ठित हैं। लोग कहते हैं कि ब्रह्मा उत्तर मानस में श्राद्ध करके इसी स्थान से मौन व्रत धारण कर सूर्य्यकुंड तक गए, इसीलिये सम्पूर्ण यात्री उत्तर मानस में पिंडदान करने के पश्चात् मौन होकर सूर्य्यकुंड पर जाते हैं।

उदीची, कनखल और दक्षिण मानस विष्णुपद के मन्दिर से करीव १७५ गज उत्तर ९५ गज लम्बा और ६० गज चौड़ा दीवार से घेरा हुआ सूर्य्यकुंड तालाव है। वगलों पर पत्थर की पुरानी सीढ़ियां लगी हैं। कुंड के उत्तर का हिस्सा उदीची, मध्य हिस्सा कनखल, और दक्षिण हिस्सा दक्षिण मानस तीर्थ कहा जाता है। तीनों स्थानों पर तीन वेदी के २ पिंडदान होते हैं। सूर्य्यकुंड के पश्चिम गुम्वजदार अन्धेरे मन्दिर में पुराने ढंग की सूर्य्यनारायण की चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है जिसको दक्षिणार्क कहते हैं। जगमोहन पुराने ढाचे का आगे की तरफ लम्बा है।

जिह्वालोल—सूर्य्यकुंड से करीव ८० गज दक्षिण फल्गू के किनारे पर जिह्वालोल तीर्थ है, वहां मैदान में एक पीपल का वृक्ष और एक ओसारा है, जहां पिंडदान होता है।

गदाधरजी—विष्णुपद से ३० गज पूर्वोत्तर फल्गू के किनारे पर पूर्व मुख का शिखरदार गदाधरजी का मन्दिर है। अन्धेरे में गदाधरजी की चतुर्भुज मूर्ति चवूतरे पर खड़ी है। मन्दिर के आगे तेहरा जगमोहन है। पूर्व वाले जगमोहन में करीव एक गज ऊंची दोनो भुजाओं को नीचे लटकाए हुए

एक मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग रामचन्द्र कहते हैं । इसके दहिने हाथ के नीचे एक पुरुष की और बाएं हाथ के नीचे एक स्त्री की छोटी मूर्ति और इसके बाएं दूसरी जगह तीन मुख वाली एक चतुर्भुज मूर्ति है । पंचतीर्थी के पिंडदान होजाने के पीछे पंचामृत से गदाधरजी को स्नान कराया जाता है। मन्दिर के पूर्व गदाधर घाट पर पत्थर की २९ सीढ़ियां बनी हैं गदाधरजी के मन्दिर से उत्तर शिखरदार मन्दिर में करीब २ हाथ ऊंची गयाश्री देवी की अष्टभुजी मूर्ति खड़ी है।

(४) कृष्ण तृतीया के दिन तीन वेदी पर पिंड दान होता है,—मातंग वापी, धर्मारण्य और बोधगया गया। से ६ मील दक्षिण बोधगया तक पक्की सड़क है; परन्तु सरस्वती, मतंगवापी और धर्मारण्य होकर जाने वाले यात्रियों को ७ मील का रास्ता पड़ता है। गया से करीब ३ मील जाने पर पक्की सड़क छुट जाती है । वहां से पैदल अथवा खटोली पर एक मील से अधिक पूर्व दक्षिण जाने पर सरस्वती नदी मिलती है। फल्गू के दोनों तरफ बालू का मैदान है। सरस्वती नदी में स्नान और तर्पन होता है। किनारे पर लगभग ४ गज़ ऊंचा सरस्वती का मन्दिर है । जिसमें यात्री सरस्वती का दर्शन करते हैं । मन्दिर के भीतर और बाहर कई बौद्धमूर्तियां देखने में आती हैं। मन्दिर के उत्तर एक चबूतरे पर एक जोड़ा चरण चिन्ह और १६ शिवलिंग हैं, जिन में से दो में चारो ओर एक एक मूर्तियां बनी हैं । ऐसे लिंग बोधगया के मन्दिर के पास बहुत देख पड़ते हैं । पहले सरस्वती के मन्दिर के चारो तरफ मकान थे, अब तक भी एक तरफ खड़ा है।

मतंगवापी—सरस्वती से १ मील से अधिक दक्षिण मतंगवापी नाम की छोटी बावली है। कुछ दूर चौड़ी राह और कुछ दूर पगडंडी मिलती हैं। वापी के उत्तर बगल में सीढ़ियां और पश्चिमोत्तर दीवार के भीतर ४ मन्दिर खड़े हैं, जिनमें से दो मामूली कद के नए शिव मन्दिर और दो छोटे पुराने मन्दिर हैं। जिन में से एक में मतंगेश्वर शिवलिंग प्रतिष्ठित हैं। वहां कई बौद्धमूर्तियां देखने में आती हैं। वहां वापी के किनारे पर पिंड दान होता है।

धर्मारण्य—मतंगवापी से ½ मील पूर्व-दक्षिण धर्मारण्य स्थान की एक छोटी बारहदरी में यूप कूप नामक एक कूंआ है, वहां पिंड दान करके पिंडाओं को इसी कूप में लोग डाल देते हैं। मेले के समय में पानी के ऊपर तक पिंड हो जाते हैं। बारहदरी के दक्षिण-पूर्व एक छोटा मन्दिर है, जिसके भीतर की मूर्ति को लोग धर्मराज अर्थात युधिष्टिर कहते हैं। मन्दिर के दक्षिण 'रहट कूप' नामक कूंआ है। कोई कोई पुत्र कामना के लिये वहां पिंडदान करता है, और नारियल फूल कूप में डाल कर पूजा करता है। कूप के दक्षिण छोटा मन्दिर है, जिसके भीतर की मूर्ति को लोग भीम कहते हैं। धर्मारण्य में कई बौद्ध मूर्ति देख पड़ती हैं। मतंगवापी से वहां तक पगडंडी राह है।

बोधगया—धर्मारण्य से १ मील से अधिक पश्चिम बोधगया का प्रसिद्ध मन्दिर है। फल्गू नदी लांघने के समय दोनों तरफ बालू मिलती है। मन्दिर के उत्तर एक चबूतरे पर पीपल का पुराना वृक्ष है, जिसके पास पिंडदान होता है। प्रेतशिला की यात्रा के सिवाय दूसरे दिनों की यात्रा से इस दिन यात्री को अधिक परिश्रम होता है (बोधगया का वृतान्त अन्यत्र देखो)

(८) कृष्ण चतुर्थी के दिन दो वेदी पर पिंड दान होता है,—ब्रह्म सरोवर और काग बलि—गया के दक्षिण फाटक से लगभग ३५० गज और वैतरनी तालाब से ६५ गज दक्षिण सड़क के पश्चिम किनारे पर १२५ गज लम्बा और ९ गज चौड़ा ब्रह्म सरोवर एक तालाब है। पूर्व और उत्तर बगलों पर सीढ़ियां बनी हैं। तालाब के जल में दक्षिण-पश्चिम के कोने के पास पूर्व तरफ झुकी हुई पत्थर की गदा खड़ी है। ब्रह्म सरोवर में स्नान तर्पन और पिंडदान करके उसकी परिक्रमा करनी होती है। तालाब के पश्चिमोत्तर कोने से २० गज उत्तर वट वृक्ष के पास कागबलि, यमबलि और स्वानबलि तीन पिंड दिए जाते हैं। वृक्ष के चबूतरे के पूर्वोत्तर कोने के पास एक छोटी बारहदरी में एक चौकोना कुंड है, जिसमें तीनों पिंड डाल दिए जाते हैं सरोवर के पश्चिमोत्तर कोने से ४८ गज पश्चिम एक छोटे मन्दिर के भीतर की दीवार में पत्थर खोदकर तारक ब्रह्म बनाये गये हैं, जिनका दर्शन करना होता है ब्रह्म

सरोवर से करीब १३० गज पश्चिम एक चबूतरे के मध्य में एक ऊंची वेदी पर केले की छोटी झाड़ी के बीच एक गज से कम ऊंचा आम्र का वृक्ष है, जिसको यात्री लोग पानी से सींचते हैं। पुराना वृक्ष गिर गया है।

(६) कृष्ण पक्ष की पंचमी को तीन वेदी पर खीर का पिंड दान होता है—सोलह वेदी वाले मंडप में रुद्रपद और ब्रह्मपद के पास और विष्णुपद के मन्दिर में विष्णुपद के निकट विष्णुपद के वर्तमान मन्दिर और सोलह वेदी के मंडप को इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने बनवाया, जिसका राज्य सन १७६५ से सन १७९५ ई० तक था।

विष्णुपद का मन्दिर—गया शहर के दक्षिण-पूर्व फल्गू नदी के पास गया के सब मन्दिरों में प्रधान और सबों से उत्तम विष्णुपद का विशाल मन्दिर पूर्व मुख से खड़ा है। मन्दिर काले पत्थर से बना हुआ भीतर से आठ पहला है। कलस, ध्वजा और ध्वजा के स्तंभ पर सोने का मुलम्मा हुआ है। किवाड़ों में चान्दी के पत्तर लगे हैं। मन्दिर के मध्य में विष्णु का एक चरणचिन्ह शिला पर उखड़ा है। उसके हौजे के चारो तरफ चांदी का पत्तर लगा है। दीवार के ताकों में कई एक देवमूर्तियां स्थित हैं। मन्दिर के आगे १८ गज लम्बा और १७ गज चौड़ा ४२ खूब सूरत खम्भे लगे हुए काले पत्थर का बना हुआ गुंबजदार उत्तम जगमोहन है। बीच का हिस्सा छोड़कर इसके चारो बगल दो मंजिला है। गुम्बज के ऊपर सोनहुला कलस लगा है। नीचे बड़ा घंटा लटकता है। जगमोहन में मन्दिर के दोनों बगलों पर २ छोटी कोठरी हैं। दक्षिण वाली में मन्दिर का खजाना और उत्तर वाली में कनकेश्वर शिवलिंग स्थित हैं। शिव के आगे मार्बुल का नन्दी है। जगमोहन के आगे ४ खंभों से बना हुआ छोटे मंडप में बड़ा घंटा लटकता है, जिसके पास एक छोटी कोठरी में काले पत्थर से बनी हुई गरुड़ की मूर्ति है।

सोलह वेदी नामक मंडप—जगमोहन के पूर्व-दक्षिण के कोन के पास कोन के पूर्व और दक्षिण ३७ चौकोने स्तम्भ लगे हुए काले पत्थर से बने हुये सोलह वेदियों का मंडप है। वेदियों के पास या उनके पास के खम्भे पर वेदियों के नाम लिखे हुए हैं।

(७, ८ और ९ कृष्णपक्ष की ६ से ८ तक तीन दिन में सोलह वेदी के मंडप में १४ स्थानों पर और उसके पास के छोटे मंडप में दो स्थानों पर कुल १६ वेदी के पिंडदान होते हैं (१) कार्तिक पद (२) दक्षिणाग्नि (३) गार्हपत्याग्नि (४) आवाहन्याग्नि (५) सतत्स्याग्नि (६) अवस्थ्याग्नि (७) सूर्य्यपद (८) रामचन्द्रपद (९) गणेशपद (१०) दधीचपद (११) कन्वपद (१२) मतंगपद (१३) क्रौंचपद (१४) इन्द्रपद (१५) अगस्तपद और (१६) कश्यपपद। अष्टमी के दिन सोलहवेदी के मंडप में एक स्थान पर दूध से गजकर्ण तर्पन होता है। नियत दिन पर बहुत भीड़ होती है। बहुत लोग मंडप में किसी स्थान पर या उसके आस पास के मैदान और ओसारों में वेदियों के स्थान मान कर पिंडदान करते हैं।

विष्णुपद के मन्दिर से ३ गज दक्षिण गया के पंडा बिहारीलाल मेहरवार का बनवाया हुआ जगन्नाथ जी का मन्दिर है। मन्दिर के दक्षिण-पश्चिम और उत्तर दालान और धर्मशाला बनी हैं। वहां जगह जगह बहुत पुरानी बौद्ध मूर्तियां हैं, जिनको बहुत लोग हिन्दू के देवता जानते हैं। मन्दिर से उत्तर एक छोटे मन्दिर में नारायण के बाएं लक्ष्मी और दहिने अहिल्या बाई की मूर्तियां हैं। तीनों प्रतिमा मार्बुल की बनी हुई हैं।

(१०) कृष्णपक्ष की ९ को २ वेदियों पर पिंडदान होता है,—रामगया में और सीताकुंड पर। पिछले स्थान पर माता, और वृद्ध प्रमाता को केवल तीनहीं बालू के पिंड दिए जाते हैं। और वहां सौभाग्य दान की विधि है।

सीताकुंड और रामगया—विष्णु पद के मन्दिर के सामने पूर्व फल्गू नदी के दूसरे पार अर्थात् पूर्व किनारे को सीताकुण्ड कहते हैं। नगकूट पहाड़ की नेव के पास चार पांच सीढ़ी के ऊपर एक छोटे मन्दिर में जानकी जी, दशरथ जी को पिंडदान देती हैं। पिंडलेने के लिये दशरथ जी का हाथ निकला है। मन्दिर से पश्चिम इस से लगा हुआ एक दूसरा मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्ति सुशोभित हैं। मन्दिर के दक्षिण नायकजी गयावाल का बनवाया हुआ शिव मन्दिर है। मन्दिर के ताक़ में छकर भगवान

की मूर्ति स्थित है। सीता जी के मन्दिर से करीब २५ गज पूर्व एक छोटे मन्दिर में कोई देवता हैं, जिसके पूर्व के मन्दिर में मार्बुल की ३ मूर्ति हैं। मध्य में नृसिंह जी, उनके दहिने महावीर जी और बाएं सूर्य। इस मन्दिर से पूर्व राम, लक्ष्मण और जानकी हैं। इन मन्दिरों के सामने रास्ते के उत्तर एक आंगन के चारो तरफ कई छोटे मन्दिर और कमरे हैं। एक में काष्ठमय जगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा; दूसरे में मार्बुल के महावीर जी और तीसरे में धातु-विग्रह राम, लक्ष्मण, जानकी, राधा कृष्ण आदि हैं। राम मन्दिर के ईशान कोन पर रास्ते के सामने शिला में खोदा हुआ एक शिवलिंग है, जिसको रामनाथ महादेव कहते हैं। महादेव के पास फल्गू के जल के पास तक २५ सीढ़ी बनी हैं। सीढ़ियों के सिरे के पास करीब १२ गज लम्बा और ८ गज चौड़ा आंगन है, जिसके ३ बगलों पर दीवार और पश्चिम बगल ओसारा है ओसारे में राम जानकी की पुरानी मूर्तियों के आगे भूमि पर शिला निकली हुई है, जो भरताश्रम की वेदी कही जाती है। उसी स्थान पर रामगया का पिंड दान होता है। आंगन में मतंग ऋषि का बड़ा चरण चिन्ह बनाया गया है। वहां भी बौद्ध मूर्तियो के समान बहुत मूर्तियां देख पड़ती हैं। पर्वत के सिर पर गयावाल के बनवाये हुए एक छोटे मन्दिर में छोटे स्तंभ के समान महावीर जी हैं।

(११) कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन गयासिर में और गयाकूप के पास दो वेदी का पिंडदान होता है;—

गयासिर—विष्णु पद के मन्दिर से लगभग ५० गज दक्षिण गयासिर नामक स्थान है, वहां दक्षिण मुख के ओसारे के आगे थोड़ी भूमि है। ओसारे में एक छोटा चौकोना कुंड है, जिसमें बहुतेरे लोग पिंडदान के पीछे पिंडों को डाल देते हैं। ओसारे के पश्चिम की दीवार में एक स्त्री और माला लिये हुए एक पुरुष की मूर्ति बनी है।

गयाकूप—विष्णु पद के मन्दिर से करीब १०० गज दक्षिण-पश्चिम और गयासिर से पश्चिम करीब १८ गज लम्बे और १० गज चौड़े एक आंगन में

गयाकूप है। आंगन के तीन बगलों पर दीवार और पश्चिम तरफ ओसारा है। कूप के पश्चिम पीपल का मोटा वृक्ष है। कोई कोई यात्री अकाल-मृत्यु से मरे हुए प्रेतों को एक नारियल पर आवाहन करके इस कूप में छोड़ देते हैं नारियल छोड़ने वाले को १‌। रुपया वहां देना पड़ता है। यात्री लोग पिंड दान होने के पीछे पिंडों को गयाकूप के पाटन पर डाल देते हैं।

(१२) कृष्ण पक्ष की ११ को ३ वेदियों पर पिंडदान होता है—मुंडपृष्ठा, आदिगया और धौतपद। उस दिन खोवे या गुड़ तिल अथवा सिंगझाड़े के आटे आदि फलाहारी वस्तुओं के पिंड बनाए जाते है। कोई कोई आटे का भी पिंडदान करता है।

मुंडपृष्ठा—गयाकूप से करीब ५० गज पश्चिम ऊंची भूमि पर एक आंगन में पूर्व मुख की छोटी कोठरी है। उसमें १२ भुजावाली मुंडपृष्ठा देवी की मूर्ति स्थित है। मन्दिर के पास चारो तरफ आंगन में पिंडदान होता है।

आदिगया—मुंडपृष्ठा से दक्षिण-पश्चिम आदिगया है। वहां शिलापर पिंडदान होता है। उससे पश्चिम एक आंगन है, जिससे पश्चिम ५ सीढ़ी नीचे उतरने पर दूसरा आंगन मिलता है। उससे पश्चिम ३ सीढ़ी नीचे उतरने पर एक छोटी कोठरी में प्रवेश करना होता है, जिसमें शिला काटकर ५ देवोंकी मूर्ति बनी हैं, जिनमें आदि गदाधर प्रधान हैं।

धौतपद—आदिगया से दक्षिण-पश्चिम और गया के दक्षिण फाटक से दक्षिण-पूर्व एक ओसारे में करीव ३॥ हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी उजली शिला भूमि पर निकली हुई है, वही पिंडदान की वेदी है। भीड़ होने पर इसके आस पास लोग पिंडदान करते हैं।

(१३) कृष्णपक्ष की १२ के दिन ३ वेदियों पर पिंड़दान होता है,—भीम-गया, गोप्रचार और गदालोल।

भीमगया—वैतरनी के पश्चिमोत्तर के कोने से करीव ८० गज पश्चिम भीमगया है। वहां एक घेरे के भीतर भी शिला पर पिंडदान करना होता है। घेरे में दक्षिण मुख के ओसारे में ३ हाथ गहड़ा भीम के अंगूठे का चिन्ह है।

दक्षिण तरफ की कोठरी में भीमसेन की मूर्ति है। भीमगया से लगभग ११५ गज पश्चिम-दक्षिण भस्मकूट नामक ऊंची भूमि पर करीब ४६ सीढ़ियों के ऊपर पुराने ढाचे के जनार्दन भगवान का शिखरदार मन्दिर है, जिसके आगे पूर्व तरफ एकही द्वार वाला जगमोहन बना है। जगमोहन के भीतर ऊंचे १६ स्तंभ लगे हैं। मन्दिर के भीतर भगवान की चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है उसके दोनों हाथों के नीचे एक एक छोटी मूर्ति हैं। जगमोहन के आगे करीब २ गज ऊंचे ३ शिवमन्दिर बने हुए हैं। जनार्दन के मन्दिर से थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम पुराने ढाचे का मंगला देवी का छोटा मन्दिर है, जिसमें मंगलेश्वर शिवलिंग और एकही में ५ लिंगस्वरूप मंगला देवी हैं। वहां कई बौद्ध मूर्तियां देखने में आती हैं और ओसारानुमा एक धर्मशाला बनी है।

गोप्रचार—मंगला देवी के मन्दिर से दक्षिण नीचे की ओर २२ सीढियां गई हैं, उसके दहिने बगल पर गोप्रचार स्थान है। वहां एक आंगन के ३ तरफ दीवार और उत्तर ओर दालान के आगे ओसारा है, जिसमें भूमि पर शिला निकली हुई है। शिला पर गौओं के छोटे बड़े खुरों के बहुत चिन्ह हैं। लोग कहते हैं कि इस स्थान पर ब्रह्मा ने गोदान किया था, इस शिला पर और इसके आस पास पिंडदान होता है।

गदालोल—अक्षयबट से दक्षिण गदालोल नामक कच्चा तालाब है, जिसमें सब जगह पानी नहीं रहता। इसके उत्तर किनारे पर ओसारानुमा दो छोटी धर्मशाला हैं। दक्षिण पश्चिम हिस्से के जल में छोटे पतले खंभे के समान गदा खड़ी है। यात्री लोग धर्मशालों में पिंडदान करके गदा का दर्शन करते हैं।

(१४) कृष्ण पक्ष की १३ को फल्गू में स्नान करके दूध का तर्पण और सन्ध्या समय ४५ वेदियों के ४५ दीपदान फल्गू के किनारे या कुछ किनारे पर और कुछ विष्णुपद आदि प्रख्यात मन्दिरों के पास लोग करते हैं।

(१५) कृष्ण पक्ष की १४ को वैतरनी में तर्पण होता है। वहां गोदान की विधि है। गया के दक्षिण फाटक से १३० गज दक्षिण और ब्रह्म सरोवर से ६५ गज उत्तर सड़क के पश्चिम किनारे पर १३० गज लम्बा और इससे आधा

चौड़ा बैतरनी नामक तालाव है। पश्चिम और पूर्व बगलों पर जगह जगह सीढियां बनी हैं।

(१६ वें दिन) अमावास्या के दिन अक्षयवट के पास पिंडदान होता है और पंडे लोग अपने अपने यात्रियों को सुफल देते हैं। यहां शय्यादान की विधि है।

अक्षयवट—ब्रह्म सरोवर से करीब २५० गज पश्चिम मंगला देवी से २०० गज दक्षिण-पश्चिम और गदालोल से उत्तर सड़क के उत्तर बगल पर अक्षयवट नामक वटवृक्ष है। १८ सीढियों को लांघने पर ३० गज लम्बे और २८ गज चौड़े पत्थर के फरस पर अक्षयवट मिलता है जिसके उत्तर पुरानी चाल का पूर्व मुख वटेश्वर शिव का मन्दिर है। उसके आगे की दीवार में नागरी अक्षर का पुराना लेख है। अक्षयवट के पूर्वोत्तर एक दूसरा वटवृक्ष है। फरश के पश्चिमोत्तर कोने के पास दक्षिण मुख की एक खूबसूरत दालान और पूर्व बगल पर एक आंगन के चारो ओर दालान हैं, जिनकी छत फर्श के बराबर है। पूर्व की छत पर एक बैठक और उत्तर वाली पर खूबसूरत दालान बनी है। फर्श से पश्चिम उससे लगा हुआ ३० गज लम्बा और १६ गज चौड़ा दो हिस्से में दूसरा फरस है। उनमें से उत्तर वाले हिस्से के उत्तर तरफ अक्षयवट वाले फरस की दालान से लगी हुई उसी के समान सुन्दर दालान और दक्षिण-पश्चिम कोने के पास एक छोटी बैठक है। अक्षयवट से पश्चिम रुक्मिणी तालाव और उत्तर वृद्धप्रपितामहेश्वर का मन्दिर है। मन्दिर पुरानी चाल का है। शिवलिंग अर्घे के साथ करीब १ गज ऊंचा है। लिंग के पूर्व बगल पर एक मुख बना हुआ है।

गया के पिंडदान की विधि—पूर्णिमा से अमावास्या तक १६ दिनों में ४५ वेदियों के पिंडदान समाप्त हो जाते हैं, जो सीताकुंड की नवीन वेदी के साथ ४६ वीं होती है। नियत दिनों के सिवाय दूसरे दिन भी यात्री वेदियों पर पिंडदान करते हैं। बहुतेरे लोग दो ही चार दिनों में सम्पूर्ण वेदियों पर पिंडदान कर देते हैं। कुछ लोग मुख्य मुख्य वेदियों पर पिंडदान करके

चले जाते हैं। आश्विन आदि श्राद्ध के मुख्य महीनों में प्रतिदिन बहुतेरे यात्री आते हैं। कृष्ण पक्ष की पंचमी से बहुतेरे लोग छफल कराके जाने लगते हैं। प्रत्येक बेदी पर १ पिता, २ पितामह, ३ प्रपितामह, ४ माता, ५ प्रमाता, ६ वृद्धप्रमाता, ७ मातामह, ८ प्रमातामह, ९ वृद्धप्रमातामह, १० मातामही, ११ प्रमातामही और १२ वृद्धप्रमातामही के नाम से १२ पिंड दिए जाते हैं। जिसका नाम नहीं मालूम रहता, उसके लिये 'यथा नाम' कहना होता है। इसके पीछे पिता-कुल, माता-कुल, श्वशुर-कुल, गुरु कुल, आदि लोगों को और नोकर को भी पिंड दिए जाते हैं।

(१७ वें दिन) शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन गायत्री घाट पर दही अक्षत का पिंडदान होकर गयाश्राद्ध का काम समाप्त होता है। विष्णुपद के मन्दिर से करीब ३ मील उत्तर फल्गू नदी में गायत्री घाट है। नीचे से ऊपर तक उसमें ६८ सीढ़ी लगी हैं। ११ सीढ़ियों के ऊपर गायत्री देवी का छोटा मन्दिर है। मन्दिर के आगे की दीवार पर लेख है, जिससे जान पड़ता है कि सम्वत १८५६ के भादों सुदी १५ को दौलतराव माधव जी सेन्धिया के पोते सेठ खुशहालचन्द की स्त्री गया में श्राद्ध करने को आई, तब उसने गायत्री घाट और इस मन्दिर को बनवाया। गायत्री के मन्दिर से उत्तर एक गया-वाल का बनवाया हुआ उससे उत्तर एक छोटे हाते में लक्ष्मी-नारायण का मन्दिर और गायत्री घाट से उत्तर बभनी घाट पर फल्गेश्वर शिव का मन्दिर है। दक्षिण तरफ एक दूसरे मन्दिर में सूर्य नारायण की चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग गयादित्य कहते हैं।

संकटा देवी और प्रपितामहेश्वर—विष्णुपद के मन्दिर से करीब ३३० गज दक्षिण लखन पुरा में पूर्व मुख के ओसारे के पीछे २ कोठरी हैं। दक्षिण की कोठरी में भैरव और सिंह के सहित संकठा देवी की चतुर्भुज मूर्ति और उत्तर वाली कोठरी में प्रपितामहेश्वर शिवलिंग हैं। देवी के पास बहुतेरी बौद्ध मूर्तियों के समान पुरानी मूर्तियां और शिवलिंग के पास बहुतेरे नए शिवलिंग हैं।

अनेक देवमन्दिर—गया से पश्चिम गृध्रकूट पहाड़ी के पश्चिम छोटे मन्दिरों में गृध्रेश्वर महादेव, ऋणमोचन महादेव और पापमोचन महादेव हैं। पापमोचन से दक्षिण गोदावरी नामक छोटा तालाब है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिर में गणेशजी की मूर्ति स्थित है।

ब्रह्मयोनि—अक्षयवट से ३०० गज पश्चिम-दक्षिण जाने पर सड़क छूटकर पगडंडी मिलती है, जिससे ½ मील पश्चिम-दक्षिण जाने पर पहाड़ी पर चढ़ने के लिये सीढ़ी मिलती है। उससे उत्तर पहाड़ी की जड़ के पास छोटे मन्दिर में गौपर सवार पंचमुख वाली सावित्री देवी की मूर्ति है। मन्दिर के आगे साबित्रीकुंड नामक छोटा पोखरा है। १६३ सीढ़ी लांघने पर खुला हुआ कमरा मिलता है। ३९० सीढियों के ऊपर एक ढोके के नीचे रुद्रयोनि; ४०० सीढ़ियों के ऊपर विष्णुकुण्ड नामक बावली, जिसमें जाने को पतली सीढ़ियां हैं और ४५० सीढ़ियों के ऊपर एक चौक है। चौक के मध्य में ऊंचे चबूतरे पर एक शिवलिंग और पश्चिम पत्थर के ढोकों के नीचे ब्रह्मयोनि है, जिससे होकर कोई कोई यात्री निकलते हैं। गवालियर के महाराज जयाजी राव ने इन सीढ़ियों को बनवाया, जिनके ऊपर गच का काम है। चौक से ११ सीढ़ियों के ऊपर दोहरा ओसारा मिलता है, जिसके पीछे के मन्दिर के ताकों में ४ पुरानी बौद्ध मूर्तियां हैं। एक के आगे गौ पर सवार पंचमुखी सावित्री की मूर्ति है। ओसारे में २ चरण चिन्ह हैं, जिनके पास महाराज जयाजी राव का नाम खोदा हुआ है वहां मेले के समय कोई पुजारी स्त्री या पुरुष रहता है। यात्री बहुत कम जाते हैं।

गया जिला—गया जिले का क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला; पूर्व मुंगेर जिला; दक्खिन और दक्षिण-पूर्व लोहरदंगा जिला और पश्चिम सोन नदी, बाद शाहाबाद जिला है। गया की दक्षिणी सीमा की पहाड़ियां विन्ध्य का एक भाग है उनमें जंगल लगे हैं और बनैले जंतु रहते हैं। देश साधारण प्रकार से समतल है; किन्तु स्थान २ में पहाड़ियां देख पड़ती हैं। ऊंची पहाड़ियां जंगल और घास से छिपी हुई है और दूसरी पथ-

रीली और पौधों से रहित हैं। सब से अधिक ऊंची गया कसबे से १२ मील दक्षिण-पूर्व माहर पहाड़ी है। उसकी उंचाई समुद्र के जल से १६२० फीट है। गया जिले का पूर्वी भाग अधिक उपजाऊं और उत्तर-पश्चिम का कम उपजाऊं है। शेष भाग में पहाड़ी और जंगल, जिसमें बहुत जंगली जानवर हैं, देखने में आते हैं। दक्षिणी पहाड़ियों में बाघ और बहुतेरे भागों में तेंदुए और भालू रहते हैं। बहुतेरी नदियां दक्षिण की पहाड़ियों से निकल कर जिले में दक्षिण से उत्तर बहती हैं। पुनपुन नदी जिले के दक्षिणी सीमा से निकलकर पूर्वोत्तर गंगा की ओर बहती है। दो पहाड़ी धाराओं के मेल से फल्गू नदी बनी है। सूखी ऋतुओं में फल्गू नदी सूख जाती है। जिले में कई एक नहर निकली हैं।

जिले में सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय २१४१०६५ और सन् १८८१ में २१२४६८२ मनुष्य थे; अर्थात् १८९१४८४ हिन्दू, २१३१८१ मुसलमान और २००५७ कृस्तान इत्यादि। जातिओं के खाने में ३०९८७१ ग्वाला, १५२६४६ भुमिहार, ११४४०२ राजपूत, १०८२४९ दुसाध, १४४६७५ कोइरी, ११६९६१ कंहार, ८९७५० ब्राह्मण, ८३४६९ भुइआ ७८५५२ चमार, ५७३७९ तेली, ४९३०४ बनिआ, ४३९६५ कायस्थ, ४३७७१ कुर्मी, ४३७७३ रजवाड़ और शेष में पासी, हजाम, बढ़ई, इत्यादि थे। जिले में लगभग ३०० घर गयावाल ब्राह्मण हैं। सन् १८९१ ई० में गया जिले के कसबे गया में ८०३८३, टिकारी में ११५३२, और दाउदनगर, सेरघाटी, जहानाबाद और हसुआ में १०००० से कम मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अत्रिस्मृति—(५५ से ५८ वें श्लोक तक) बहुत पुत्रों में से एक भी यदि गया को जाय अथवा नीले बैल से वृषोत्सर्ग करे तो उसको अश्वमेध यज्ञ का फल होता है। नरकों से डरते हुए पितर यह इच्छा करते हैं कि जो पुत्र गया को जायगा वह हमारा रक्षक होगा। मनुष्य फल्गु तीर्थ में स्नान और गदाधर देव के दर्शन करके और गयासुर के सिर पर चरण रख कर ब्रह्महत्या से भी छूट जाता है। जो मनुष्य महा नदी में स्नान करके पितर और देवताओं का तर्पण करता है वह अक्षय लोकों को प्राप्त

होता है और अपने कुल का उद्धार करता है। (३५९ से ३६० श्लोक) श्राद्ध के समय बड़े यत्न से ब्राह्मण की परीक्षा करनी उचित है। कन्या राशि पर जब सूर्य्य आते हैं तब पितर अपने उत्तम पुत्र के समीप गमन करते हैं फिर वृश्चिक की संक्राति होने पर जब पिंड नहीं पाते हैं, तब निरास हो शाप देकर अपने भवन को चले जाते हैं।

कात्यायन स्मृति—(२९ वां खंड) कोई २ विद्वान पिंडदान को ही प्रधान कहते हैं, क्योंकि गया आदि तीर्थों में पिंड ही दिया जाता है इत्यादि।

बृहस्पति स्मृति—(२० वां श्लोक) नरक के भय से डरते हुए पितर यह कहते हैं कि जो पुत्र गया में जायगा वही हमारी रक्षा करने वाला होगा।

शंखस्मृति—(१४ वां अध्याय) गया में जाकर जो कुछ पितरों के निमित्त दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। गया के तीर का दान अनन्त फल देता है

लिखितस्मृति—(१० वें से १३ वें श्लोक तक) जो पुत्र गया को जाय वा अश्वमेध यज्ञ करे अथवा नील बैल का उत्सर्ग करे वही सुपुत्र है गया में जिसके नाम से पिंड दान किया जाता है वह यदि नरक में हो तो स्वर्ग में जाता है और स्वर्ग में होय तो मुक्त होता है।

याज्ञवल्क्य स्मृति (श्राद्ध प्रकर्ण) गया तीर्थ में और भादो वदी त्रयोदशी विशेष करके मघायुक्त त्रयोदशी में पिंड देने से निस्संदेह अनंत काल पितरों की तृप्ति रहती है। वसु, रुद्र, अदितिसुत और पितर ये श्राद्ध के देवता हैं, ये श्राद्ध से तृप्त होकर मनुष्यों के पितरों को तृप्त करते हैं, जब पितर तृप्त होते हैं तो मनुष्यों को आयु, पुत्र, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्षसुख और राज्य देते हैं।

महाभारत—(वनपर्व–८४ वां अध्याय) गया में जाने से अश्वमेध का फल और कुल का उद्धार होता है। वहां तीन लोक विख्यात अक्षयवट है। (८७ वां अध्याय) चाहे अश्वमेध करे, चाहे काले रंग का सांड़ छोड़े, चाहे गया को जाय, तीनो कर्मों का यही फल है कि १० अगली और १० पिछली

पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है। गया में महानदी और गयशिर नामक तीर्थ है। उसी जगह ब्राह्मण लोग अक्षयवट बतलाते हैं और उसी जगह पवित्र जल वाली फल्गू नामक महानदी है।

(९५ वां अध्याय) पाण्डव लोग गया में पहुंचे, जहां धर्मज्ञ राजा गय ने पर्वत का संस्कार किया है। उसी जगह उसने अपने नाम से गयसिर नामक तीर्थ स्थापन किया है। उसी जगह उत्तम घाटवाली फल्गु नामक महानदी है। जहां पवित्र शिखर वाला दिव्य पर्वत है, उसी जगह ब्रह्मसर नामक उत्तम तीर्थ है, जहां से अगस्त्य मुनि सूर्य्य के पास गए थे। उसके पासही सब नदियों का एक सोता है। वहां महादेव सदा वास करते हैं और अक्षयवट वृक्ष है, जिसका फल अक्षय होता है। वहां यज्ञ करने से अक्षय पुण्य लाभ होता है। उसी तीर्थ में राजा अमूर्त्तरयस के पुत्र राजा गय ने ताकाव के तट पर बड़े बड़े अनेक यज्ञ किये हैं। (द्रोण पर्व्व ६४ वां अध्याय) यज्ञ कर्म के प्रभाव से राजा गय जगत में विख्यात हुए थे। उनका कीर्तिस्वरूप अक्षयवट और ब्रह्मसरोवर तीनो लोक में विख्यात होकर जगत में स्थित हैं। (शल्य पर्व्व-३८ वां अध्याय) जब राजा गय गया नामक स्थान में यज्ञ कर रहे थे और अनेक व्रतधारी ब्राह्मणों ने सरस्वती का ध्यान किया तब विशाला नामक सरस्वती गया में पहुंची। वह शीघ्र बहने वाली नदी हिमाचल के शिखर से चली थी।

(अनुशासन पर्व्व-२५ वां अध्याय) गया के अन्तर्गत अश्मपृष्ट में स्नान करने से पहली ब्रह्महत्या, निरविन्द पर्वत पर दूसरी ब्रह्महत्या और क्रौंचपदी में स्नान करने से तीसरी ब्रह्महत्या छूट जाती हैं। (८८ वां अध्याय) बहुत पुत्रों के लिये कामना करनी योग्य है क्योंकि उनमें से एक पुत्र भी तो गया धाम में जायगा जहां परलोकविख्यात अक्षयबट हैं।

वाल्मीकि रामायण—(अयोध्याकांड-१०७ वां सर्ग) गय नामक एक यशस्वी पुरुष ने जो गया प्रदेश में यज्ञ करता था, पितर लोगों के पास यह वाक्य कहा कि पुत्रों में से कोई एक भी यदि गया को जायगा तो पितरों का उद्धार होगा।

लिंगपुराण—(६५ वां अध्याय) सूर्य के पुत्र मनु का सुद्युम्न नामक पुत्र था, जो स्त्री रहने के समय इला कहलाता था। सुद्युम्न के ३ पुत्र हुए,—उत्कल, गय और विनताश्व। उनमें से गय के नाम से गया बसा।

वामनपुराण—(७६ वां अध्याय) जहां गय राजा ने १०० बार अश्वमेध यज्ञ और सैकड़ों हजारों बार मनुष्यमेध यज्ञ किया है और मुरारि भगवान गदाधर नाम से प्रसिद्ध हो रहे हैं वही गया तीर्थ है। (९० वां अध्याय) वामन जी बोले कि गया में गोपतिदेव, ईश्वर, त्रैलोक्यनाथ, बरद और गदापाणि मेरा रूप है।

वाराहपुराण—(१८३ वां अध्याय) पितर कहने लगे कि गया श्राद्ध कर अक्षयवट के नीचे पिण्डदान करो।

मत्स्यपुराण—(२२ वां अध्याय) गया नाम से प्रसिद्ध पितृतीर्थ सब तीर्थों में उत्तम है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड–७६ वां अध्याय) जो मनुष्य गया के विष्णुपद में पिण्डदान और विष्णु की पूजा करता है, वह पितृगण और अपने को उद्धार कर देता है।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड–११ वां अध्याय) गया में विष्णुपद नामक पितरों का सर्वोपरि तीर्थ है, जहां आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में पिण्ड वा जलदान करने से प्रेतयोनि में प्राप्त भी पिता पितामहादि तुरन्त ब्रह्मलोक को चले जाते हैं। पुनःपुना नदी के तीर पर गया तीर्थ है। श्राद्ध के विषय में गया के समान कोई भी तीर्थ नहीं है। (स्वर्ग खण्ड–२० वां अध्याय) आषाढ़ी पूर्णिमासी के पीछे जो पांचवां पक्ष होता है (आश्विन का कृष्ण पक्ष) उसमें श्राद्ध करे, चाहे कन्या के सूर्य्य हों अथवा न हों। कन्या के सूर्य्य होने पर जो प्रथम के १६ दिन होते हैं वे श्रेष्ठ यज्ञों के समान हैं। महापुण्य काम्य श्राद्ध करने का कन्या के सूर्य्य हीं में मुख्य काल होता है। यदि किसी कारण से कन्या के सूर्य्य में श्राद्ध न कर सके तो तुला के सूर्य्य में कृष्ण पक्ष के १६ दिन में करे, क्योंकि जब कन्या तुला दोनो राशियों के सूर्य्यों में कृष्ण पक्ष के १६

दिनों में श्राद्ध नहीं हो तो वृश्चिक के सूर्य्य हो जाने से पितर निराश होकर चले जाते हैं।

देवीभागवत (९ वां स्कन्ध ४४ वां अध्याय) सृष्टि के आदि में ब्रह्माजी ने ७ पितृगणों को उत्पन्न करके श्राद्ध तर्पण उनका आहार बना दिया।

सौरपुराण—(६७ वां अध्याय) परमगुप्त गया तीर्थ में भगवान महादेव के चरण चिन्ह प्रतिष्ठित हैं। वहां पिंडदान करने से पितरों की अक्षय तृप्ति होती है। मनुष्य महानदी में स्नान करके रुद्रपद के स्पर्श करने से अपने पितरों के सहित शिवलोक में निवास करते हैं।

कूर्मपुराण—(ऊपरी भाग ३४ वां अध्याय) परम गुप्त गया तीर्थ में श्राद्धादि कर्म करने से पितर लोगों का पृथ्वी में पुनरागमन नहीं होता है। गया में ब्रह्माजी ने जगत के हित के लिये तीर्थशिला पर चरणांकित किया है। पितरगण लड़कों के उत्पन्न होने पर प्रसन्न होकर कहते हैं कि हमारे वंश में हम सब को तारन करने वाले ने जन्म लिया यह किसी समय में गया जाकर हम लोगों को परम पद देगा। कोई पुत्र गया में जाकर पिंडदानादि कर्म करे तो पितरगणों का स्वर्गवास होता है।

अग्निपुराण—(११५ वां अध्याय) पूर्वकाल में देवगण गयासुर की तपस्या से त्रसित होकर विष्णु भगवान की शरण में गए और उनसे बोले कि हे प्रभो तुम हम लोगों को गयासुर से रक्षा करो। विष्णु ने दैत्य के पास जाकर उससे कहा कि वरदान मांगो। गयासुर बोला कि हे भगवान मैं सम्पूर्ण तीर्थों से पवित्र हो जाऊं। यह वरदान देकर जब विष्णु चले गए तब स्वर्ग और भूमि में सम्पूर्ण देवता और ब्राह्मण दैत्य के अधिक तेज होने से निस्तेज हो गए। देवताओं ने विष्णु से निवेदन किया कि हे प्रभो सम्पूर्ण देवता ब्राह्मण और तीर्थ शून्य प्राय हो गए हैं तुम इसका उचित उपाय करो। ब्रह्मा ने विष्णु के आदेशानुसार देवतों के साथ गयासुर के पास जाकर उससे कहा कि मैं अतिथि हूं तुम यज्ञ करने के लिये अपना पवित्र शरीर मुझको दे दो। ऐसा सुन असुर भूमि पर लेट गया और बोला कि हे भगवान, आप हमारे शरीर से

यज्ञ कीजिये। ब्रह्मा ने असुर के सिर पर यज्ञ किया; किन्तु पूर्णाहुति देने के समय वह चलायमान हो गया। तब विष्णु की आज्ञानुसार धर्मराज ने देवमयी शिला को गयासुर के ऊपर रक्खा और शिला के ऊपर विष्णु की गदाधर मूर्ति को स्थापित की और सम्पूर्ण देवताओं के सहित आप भी उस पर निवास करने लगे।

धर्मणी शिला धर्म्मराज की पुत्री थी, उसका विवाह ब्रह्मा के पुत्र महर्षि मरीचि से हुआ। मरीचि ने उससे रमण करने के उपरांत श्रमातुर होकर उससे कहा कि मैं शयन करता हूं तुम मेरा चरण दबाओ। मुनि के शयन करने पर शिला उनके चरण दबाने लगी। उसी समय ब्रह्माजी वहां आगये शिला विचार करने लगी कि ब्रह्मा का पूजन करूं कि स्वामी का चरण दबाऊं? अंत में वह ब्रह्माजी को अपने स्वामी का पिता जानकर चरण दबाना छोड़ पुष्पादिक से ब्रह्मा का पूजन करने लगी। मरीचि ने अपने स्त्री को ब्रह्मा की पूजा में निरत देख कर उसको शाप दिया कि तुम शिला अर्थात पत्थर हो जावो। शिला ने कहा मैंने तुम्हारी सेवा छोड़ कर तुम्हारे पिता की सेवा की है, तुमने मुझ निरपराधिनी को श्राप दिया है इसलिये तुमको भी शिवजी श्राप देंगे। इसके पश्चात् शिला ने सहस्र वर्ष पर्यंत तपस्या की। विष्णु आदि देवता वरदान देने के लिये उसके पास आए शिला ने ऐसा वरदान मांगा कि मेरा श्राप निवृत्त हो जावे। देवताओं ने कहा कि मरीचि का श्राप व्यर्थ नहीं होगा; किन्तु सम्पूर्ण देवताओं के चरणों का चिन्ह तुम्हारे ऊपर रहेगा। शिला बोली कि तुम लोग सर्वदा हमारे ऊपर निवास करो। विष्णु आदि देवता उसको वरदान देकर स्वर्ग को चले गए। वही शिला गयासुर के ऊपर रक्खी गई। उस पर भी जब असुर चलायमान होने लगा, तब देवताओं ने विष्णु का आराधन किया। विष्णु ने जब अपनी गदाधर मूर्ति को शिला पर स्थापित किया, तब असुर स्थिर हो गया। पूर्व समय में विष्णु ने गद नामक एक असुर को मारा; विश्वकर्मा ने उसकी अस्थि से एक गदा बनाई और विष्णु ने उस गदा को स्वीकार किया इस कारण उनका नाम गदाधर पड़ा। वही मूर्ति

गदाधरी कहलाती हैं। असुर के स्थिर होने पर ब्रह्मा ने अपना यज्ञ समाप्त किया और ब्राह्मणों को बहुत दक्षिणा दी। देवताओं ने गयासुर को वरदान दिया कि तुम्हारा शरीर विष्णुतीर्थ, शिवतीर्थ और ब्रह्मातीर्थ होगा और यह सम्पूर्ण तीर्थों से प्रसिद्ध और पितरगणों को मोक्ष देने वाला होगा। ऐसा कह देवतागण उसी स्थान पर स्थित हो गए।

गया में संक्राति के दिन श्राद्ध कर्म करने का महाफल है। मनुष्य प्रतिपदा में श्राद्ध करने से धनी होता है; द्वितिया में करने से रूपवती भार्य्या मिलती है; चतुर्थी में करने से धर्म्म और वांछित फल लाभ होता है; पंचमी में श्राद्ध करने से पुत्र प्राप्त होता है; षष्ठी का श्राद्ध श्रेष्ठ है; सप्तमी में श्राद्ध करने से गृहस्थ को लाभ होता है; अष्टमी में श्राद्ध करने से अर्थ लाभ होता है; नवमी में श्राद्ध करने से एक खुर वाले पशुओं के व्यापार में लाभ होता है; दशमी में श्राद्ध करने से गौ गणों की वृद्धि होती है; एकादशी में श्राद्ध करने से कुटुम्बगणों का कल्याण होता है; द्वादशी में श्राद्ध करने से धन धान्य की वृद्धि होती है; त्रयोदशी और चतुर्दशी में श्राद्ध करने से ज्ञात जन आनन्दित होते हैं; और आमावास्या में श्राद्ध करने से सम्पूण मनोरथ प्राप्त होता है। युगादि तिथि में अर्थात् माघ की पूर्णिमा, भाद्र कृष्ण त्रयोदशी, वैसाख शुक्ल तृतीया और कार्तिक शुक्ल नवमी; कार्तिक की द्वादशी, माघ और भाद्र पद की तृतीया, फाल्गुण की आमावास्या, पौष की एकादशी, आषाढ़ की द्वादशी, माघ की सप्तमी, श्रावण के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, आषाढ़, कार्तिक, फाल्गुण और जेठ की पूर्णिमा को श्राद्ध करने से अक्षय फल प्राप्त होता है।

गरुड़पुराण—(पूर्व खंड ८२ वां अध्याय) पूर्व काल में सम्पूण प्राणियों को क्लेश देने वाला गया नाम के असुर ने उग्र तपस्या की। उसके तप से पीडित होकर देवता लोग विष्णु की शरण में गये। उसके उपरांत किसी दिन गयासुर ने शिव की पूजा के निमित्त समुद्र से कमल का पुष्प लाकर कीकट देश में शयन किया। विष्णु ने गदा से उसको मारा। इस कारण से वह गदाधर नाम से गया में निवास करते हैं और उसके पुण्यमय शरीर पर लिंगरूपी पिता-

मह, जनार्द्दन, शिव, प्रपितामह रहने लगे । उसके पश्चात् विष्णु ने कहा कि यह स्थान पुण्यक्षेत्र होगा । यहां श्राद्ध पिंड दान स्नानादि कर्म करने से स्वर्ग में निवास होग: । उसके उपरांत ब्रह्मा ने गया को उत्तम तीर्थ जानकर वहां यज्ञ किया और यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों को बहुत सा धन और पांच कोस का गयाक्षेत्र दिया और रसवती महानदी और तड़ागों को वहां रचा। उसने कहा कि ब्रह्मज्ञान, गया में श्राद्ध, गो ग्रह में मृत्यु और कुरुक्षेत्र में निवास ये चार मनुष्यों के मुक्ति लाभ के प्रधान स्थान हैं। गया में श्राद्ध करने से ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी-गमन और पापिओं के संसर्ग के पाप का विनाश हो जाता है।

(८३ वां अध्याय) कीकट देश में गयापुरी और राजगृह वन पुण्य स्थान है। गया के चारो ओर अढ़ाई कोस मुंडपृष्ठ और पांच कोस में गयाक्षेत्र और एक कोस में गयासिर है। फल्गु तीर्थ में पिण्डदान करने से पितरगणों की उत्तम गति होती है। मनुष्य गया में जाने से पितृऋण से मुक्त हो जाते हैं और पितृरूपी जनार्द्दन के दर्शन करने से पितृऋण, ऋषि ऋण और देव-ऋण से छुट जाते हैं। गया में रथमार्ग कालेश्वर और केदार के दर्शन करने से मनुष्य पितृऋण से उद्धार पाता है और उस स्थान पर ब्रह्मा के दर्शन करने से उसका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है। प्रपितामह को देखने से अक्षय पद मिलता है और गदाधर पुरुषोत्तम को भक्ति पूर्वक नमस्कार करने से पुनर्जन्म नहीं होता। मौनादित्य और कनकार्क के दर्शन करने से पितृऋण से उद्धार होता है और उस जगह ब्रह्मा के पूजन करने से ब्रह्मपद लाभ होता है। जो मनुष्य उस स्थान में प्रातः काल गायत्री का दर्शन करके प्रयत्न से संध्या करता है वह सम्पूर्ण वेद पढ़ने का फल पाता है। मध्यान्ह में सावित्री के दर्शन करने से यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है और संध्या काल में सर-स्वती के दर्शन से सम्पूर्ण दान का फल मिलता है। पर्वतस्थित शिवजी के और धर्मारण्य में धर्म के दर्शन करने से पितरगणों से उद्धार होता है। गृध्रे-श्वर के दर्शन करने से बंधन से मुक्ति होती है। प्रभास में प्रभासेश्वर के दर्शन

करने से उत्तम गति मिलती है। कोटीश्वर और अश्वमेध यज्ञ के स्थान के दर्शन करने से मनुष्य तीनों ऋणों से छूट जाता है और स्वर्गद्वारेश्वर के दर्शन करने से भव बंधन से छूटता है। मनुष्य रामेश्वर और गदालोल के दर्शन करने से स्वर्ग पाते हैं और ब्रह्मेश्वर के दर्शन से ब्रह्महत्या से छुटकारा पाते हैं। मुंडपृष्ठ में महाचन्डी के दर्शन करने से सम्पूर्ण कामना प्राप्त होता है। फल्गीश, फल्गुचंडी, मंगला गौरी, गोमक, गोपति, अंगारेश, सिद्धेश, गया- और मार्कन्डेश्वर इनके दर्शन करने से मनुष्य पितृऋण से उद्धार होता है। फल्गु तीर्थ में स्नान करके गदाधर के दर्शन करने से मनुष्य सम्पूर्ण प्रकार के पुण्य प्राप्त करता है और उसके २१ पुश्त ब्रह्मलोक में जाते हैं। पृथ्वी में गया और गया में गयासिर श्रेष्ठ है। कनकादिक नदी जो नाभितीर्थ कही जाती है और ब्रह्मसद तीर्थ में स्नान करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। कूप में पिंडदान देने से पितृगणों से उद्धार होता है। अक्षयवट में श्राद्ध करने वाले मनुष्य पितृगणों को ब्रह्मलोक में भेजते हैं। हंसतीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य सम्पूर्ण पापों से छूट जाता है। कोटितीर्थ, गदालोल, वैतरणी और गोमक इन तीर्थों में श्राद्ध करने से २१ पुश्त ब्रह्मलोक में प्राप्त होते हैं। ब्रह्मतीर्थ, राम- तीर्थ, रामहृद, आग्नेय, और सोमतीर्थ में स्नान करने वाले पितृकुल को ब्रह्म- लोक प्राप्त कराते हैं। उत्तर मानस में श्राद्ध करने वाले मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता। स्वर्गद्वार में श्राद्ध करने से पितरों को ब्रह्मलोक मिलता है। भस्म- कूट में तर्पण करने वाला मनुष्य पितृगण को तारता है। गृद्धेश्वर में श्राद्ध करने से पितृऋण से उद्धार होता है। धेनुकारण्य में श्राद्ध करने से पितृ- गण ब्रह्मलोक में जाते हैं। गायत्री, सावित्री और सरस्वती इन तीर्थों में स्नान, संध्या और तर्पण करने से १०१ पुश्त को ब्रह्मलोक मिलता है। जो मनुष्य पितरों को स्मरण करते हुए ब्रह्मयोनि में प्रवेश करके उससे बाहर निकलते हैं, वे पितर और देवताओं को तृप्त करके पुनर्जन्म संकट में नहीं पड़ते। काकजंघा में तर्पण करने से पितरगणों की अक्षय तृप्ति होती है। धमारण्य और मातंगवापी में श्राद्ध करने से स्वर्ग प्राप्त होता है। धर्मयूप और कूप में श्राद्ध

करने से स्वर्ग प्राप्त होता है। धर्मयूप और कूप में श्राद्ध करने वाला मनुष्य पितृऋण से उद्धार हो जाता है। रामतीर्थ में स्नान करके प्रभास में श्राद्ध करने से पितृगण प्रेतत्व छोड़कर मुक्ति पाते हैं। स्वपृष्ठ में श्राद्ध करने वाला २१ पुश्तों को तारता है। मुण्डपृष्ठादि में श्राद्ध करने से पितृगण ब्रह्मलोक में जाते हैं। गया के पंचकोश के किसी स्थान में पिंडदान देने वाला मनुष्य अक्षय फल को प्राप्त करता है और पितरों को ब्रह्मलोक में भेजता है। गया में धर्मपृष्ठ, ब्रह्मसर, गयासिर और अक्षयवट में जो कुछ पितरों को दिया जाता है उसका अक्षयफल होता है। धर्मारण्य, धर्मपृष्ठ, धेनुकारण्य इनके दर्शन करने से भी २१ पुश्त का तरन हो जाता है। गया नदी के पश्चिम भाग में ब्रह्मारण्य और पूर्व में ब्रह्मसर है। नागाद्री को भरताश्रम कहते हैं। गयासिर से दक्षिण और महानदी से पश्चिम चंपकवन और चंपकवन में पांडुशिला है। उस स्थान पर और कौशिकी ह्रद में तृतीया को श्राद्ध करने से अक्षय फल मिलता है। बैतरनी से उत्तर तृतीया नामक सरोवर के निकट क्रौंचपद है, उस स्थान में श्राद्ध करने से पितरगण स्वर्ग में निवास करते हैं। क्रौंचपद से उत्तर निश्चिराख्य जलाशय है, उस स्थान पर एक बार पिंडदान करने से मनुष्य को कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं रहता। जो मनुष्य महानदी के जल स्पर्श करके पितर और देवताओं के तर्पण करते हैं, उनको अक्षय लोक प्राप्त होता है। मुंडपृष्ठ, अरविंद-पर्वत और क्रौंचपद के दर्शन करने से भी संपूर्ण पाप छूट जाता है। माघ मास, चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण में गया का पिंडदान दुर्लभ है। महाह्रद कौशिकी, मूलक्षेत्र और गृध्रकूट के गुहे में पिंडदान देना अति उत्तम है। महेश्वरीधार में स्नान करने वाला मनुष्य संपूर्ण ऋण से विमुक्त हो जाता है। विशाला नदी में श्राद्ध करने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल मिलता है। सूर्यपद में पिंडदान देने से पतितों का उद्धार होता है। वैतरनी नदी पितरगणों को तारने के लिये गया में आई है, उसमें पिंडदान करके गोदान करने से २१ पुश्त का उद्धार हो जाता है। ब्रह्मा के निर्माण किए हुए स्थानों पर पिंडदान करने वाले मनुष्यों को गया वास होता है। राम तीर्थ और मतंगवापी में स्नान करने वाले मनुष्य

को १०० गो दान करने का फल मिलता है। वशिष्ट जी के आश्रम पर स्नान करने से वाजपेय यज्ञ का फल, महाकौशी में निवास करने से अश्वमेध यज्ञ का फल, ब्रह्मसर से निकली हुई कपिला में स्नान और श्राद्ध करने से अग्निष्टोम का फल और कुमारधारा में श्राद्ध और कुमार को नमस्कार करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। सोमकुंड में स्नान करने से सोमलोक में निवास होता है। संवर्तक सर में पिंड दान देने से वांछित फल प्राप्त होता है। प्रेतकुंड पर पिंड देने से मनुष्य पवित्र होता है।

(८४ वां अध्याय) मुंडन और उपवास सम्पूर्ण तीर्थों का नियम है; परन्तु कुरुक्षेत्र, विशाला, विरजा और गया में इनकी आवश्यकता नहीं है। गया में दिन और रात्रि में सर्वदा श्राद्ध होता है। मुंडपृष्ट से उत्तर कनखल तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य स्वर्ग में निवास करते हैं और वहां श्राद्ध करने से अक्षयफल प्राप्त होता है। प्रथम दिन फल्गु तीर्थ में स्नान और गदाधर और पितामह के दर्शन करने से मनुष्य के २१ पुश्त का उद्धार होता है। दूसरे दिन मातंगवापी और धर्मारण्य में श्राद्ध करने से वाजपेय यज्ञ का फल, ब्रह्मतीर्थ में पिंडदान करने से राजसूय और अश्वमेध यज्ञ का फल होता है। कूप यूप में श्राद्ध और तर्पण करने वाले मनुष्य के पितृगणों को अक्षयफल मिलता है। तृतीय दिन ब्रह्मसर में स्नान और तर्पण करके कूप यूप में पिंडदान और ब्रह्मा के कल्पित स्थानों के सेवन करने से मनुष्य के पितृगण मुक्त हो जाते हैं और यूप को प्रदक्षिण करने से वाजपेय यज्ञ का फल होता है। चतुर्थ दिन फल्गु तीर्थ में स्नान, देवतादिकों के तर्पण और गया शिषि, द्रुपदादि, पंचाग्नि, सूर्य्य, इन्दु, कार्तिकेय इन तीर्थों में श्राद्ध करने से अक्षय फल मिलता है। दशाश्वमेध तीर्थ में स्नान करके पितामह का दर्शन और रुद्रपद का स्पर्श करने से पुनर्जन्म नहीं होता। गयासिर में पिंडदान देने से तीन बार पृथ्वी दान करने का फल लाभ होता है। मुंडपृष्ट में रुद्रपद के निकट अल्प भी तपस्या करने से महत फल मिलता है। पंचम दिन गदालोल में स्नान और वटवृक्ष के नीचे श्राद्ध करने से सम्पूर्ण कुल का उद्धार होता है। अक्षयवट के नीचे पिंडदान देने से

मनुष्य को अक्षयलोक प्राप्त होता है और १०० पुश्त का उद्धार हो जाता है।

वायुपुराण—(४३ वां अध्याय) गयासुर के तप के तेज से देवता और ऋषिगण त्रसित हुए, तब ब्रह्माजी ने याचना करके उसका शरीर मांग लिया और अत्यन्त पवित्र जान कर श्वेतवाराहकल्प में उसके सिर पर यज्ञ किया। पूर्णाहुति के समय जब दैत्य चलायमान हुआ, तब विष्णु की आज्ञा से धर्मराज ने उसके सिर पर शिला स्थापित कर दिया; उस पर भी जब असुर स्थिर नहीं हुआ, तब भगवान गदाधर उस पर स्थित हुए। ब्रह्मा ने अपना यज्ञ समाप्त करके ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। श्वेतवाराहकल्प में जब गय ने ब्रह्मा करके निर्मित क्षेत्र में यज्ञ किया, तब से गय के नाम से वह क्षेत्र गया नाम से प्रसिद्ध हुआ। ब्रह्मज्ञान, गया का श्राद्ध, गोगृह की मृत्यु और कुरुक्षेत्र के निवास से मनुष्यों की अवश्य मुक्ति होती है। गया में श्राद्ध करना सर्वदा विहित है। सिंह राशि में बृहस्पति के होने पर सम्पूर्ण तीर्थ गौतम क्षेत्र में निवास करते हैं, इसलिये सिंहस्थ बृहस्पति में तीर्थादिक कर्म करना निषेध है; परन्तु उस समय में भी गया में पिण्डदान करना विहित है। गया तीर्थ करने वाले मनुष्य को अकाल मृत्यु होने पर भी प्रेतयोनि में निवास नहीं होता। गयाक्षेत्र में मृत्यु होने से विना ब्रह्मज्ञान के मनुष्य की मुक्ति हो जाती है। २ ½ कोस तक गया, ५ कोस तक गया क्षेत्र और १ कोस गया सिर है। इन्हीं के मध्य में सम्पूर्ण तीर्थ वास करते हैं। गयाशिर पर पिंडदान करने से १०० कुल का उद्धार होता है। गया में खीर से, सत्तू से, पिसान से, चावल से और फल मूलादिक से भी पिंडदान करना विहित है। मधु, घृत, तिल, से युक्त हविषान्न के पिंडदान करने से पितृगणों की अक्षय तृप्ति होती है। वैतरणी नदी में स्नान करके वहां गोदान करने से सात पीढ़ी तक का उद्धार होता है। चैत्र, वैसाख, आश्विन, पौष और फाल्गुण में गया का पिंडदान दुर्लभ है।

(४४ वां अध्याय) गयासुर ने कई एक वर्ष तक कोलाहल गिरि पर उग्र तपस्या की, उस तपस्या से देवतागण क्षोभित हुए। वे लोग ब्रह्मा और

शिव को अपने साथ लेकर क्षीरशायी विष्णु के पास गए। विष्णु भगवान सब देवताओं के सहित गयासुर के पास आए, उन्होंने असुर से कहा कि तुम कैसे फल के लिये तपस्या करते हो जो इच्छा हो वह वर मांगो। गयासुर ने कहा कि मैं सब देवताओं, ऋषियों, मंत्र, यज्ञ और तीर्थादिकों से पवित्र हो जाऊं। जब देवतागण उसको यह वरदान देकर चले गए, तब सम्पूर्ण तेज गयासुर में निवास करने के कारण से त्रैलोक्य और यमपुरी तेज से शून्य हो गई।

यमराज ने इंद्रादि देवतों के सहित ब्रह्मलोक में जाकर ब्रह्मा से कहा कि हे पितामह गयासुर की पवित्रता से हम लोगों का अधिकार नष्ट हो गया। ब्रह्मा ने विष्णु के उपदेशानुसार देवताओं के साथ गयासुर के पास जाकर उससे कहा कि मैंने संपूर्ण पृथ्वी पर चारो ओर भ्रमण किया; परन्तु तुम्हारे शरीर के अतिरिक्त कोई स्थान पवित्र नहीं है, इसलिये यज्ञ करने के लिये मैं तुम्हारा शरीर तुम से याचना करता हूं। गयासुर ब्रह्मा का वचन स्वीकार करके अति प्रसन्न हो कोलाहल गिरि के नैऋत्य कोन पर उत्तर सिर और दक्षिण चरण करके लेट गया। ब्रह्मा ने श्वेतवाराहकल्प में महर्षियों के सहित गयासुर के शरीर पर यज्ञ किया। अग्निशर्मा नामक ऋषीश्वर ने अपने मुंह से दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, हवनीय, सत्य और आवसथ से पंचअग्नि का निर्माण किया। हवन के अन्त में जब ब्रह्मा पूर्णाहुति देने लगे, तब गयासुर अपनी देह को संचालन करने लगा। ब्रह्मा की आज्ञा से यमराज ने अपने गृह से शिला लाकर गयासुर के शरीर पर रक्खा। जब असुर थिर नहीं हुआ, तब ब्रह्मा की प्रार्थना से सब देवता उस दैत्य के शरीर पर स्थित हुए। उस पर भी जब दैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्मा व्याकुल हो विष्णु भगवान के पास गये। विष्णु ने एक मूर्ति अपने शरीर से निकाल कर ब्रह्मा को दिया। ब्रह्मा ने विष्णु के आदेशानुसार उस मूर्ति को गयासुर के ऊपर स्थापित किया, उस पर भी जब दैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्मा ने विष्णु को पुकारा। विष्णु साक्षात् आकर उसके शरीर पर स्थित हुए। ब्रह्मा, पितामह, फल्गवीश, केदार, कनकेश्वर

और ब्रह्मा इन पांच मूर्तियों करके विराजे। सूर्य्य, गयादित्य, उत्तरार्क और दक्षिणार्क इन तीन मूर्ति से स्थित हुए। इनके अलावे गणेश, लक्ष्मी, सीता, गौरी, मंगला, गायत्री, सावित्री, सरस्वती, इन्द्र, बृहस्पति, पूषा, अष्टवसु, विश्वेदेवा, अश्वनी कुमार, इत्यादि देवता अपनी २ शक्तियों के साथ असुर के शरीर पर विद्यमान हुए। तब असुर बोला कि हे आर्यगण इतने छल करने की आवश्यकता नहीं थी, हम केवल विष्णु के वचन से निश्चल हो जाते। गदाधर आदिक देवतों के प्रसन्न होने पर गयासुर ने ऐसा वरदान मांगा कि, जब तक आप लोग मेरे ऊपर निवास करें, हमारे नाम से यह तीर्थ विख्यात हो, पंचकोस गयाक्षेत्र और एक कोस गयासिर कहा जावे, इसी के भीतर सम्पूर्ण तीर्थों का निवास हो, यहां स्नादिक करके पिंडदान करने से १०० कुल का तारन हो जावे, पिंडदानादिक करने वाले को ब्रह्मलोक मिले, इस जगह वास करने से ब्रह्म हत्यादिक पापों का नाश हो जावे और नैमिष, पुष्कर, गंगा, प्रयाग, अविमुक्त, इत्यादि तीर्थ आकर यहां निवास करें। विष्णु आदि देवताओं ने गयासुर को एवमस्तु कहा। गयासुर प्रसन्न चित्त से स्थिर हो गया। ब्रह्मा ने यज्ञ की पूर्णाहुति दी और ब्राह्मणों को बहुत सा दान दिया।

(४९ वां अध्याय) सनतकुमारजी नारद से शिला की उत्पत्ति की कथा कहने लगे कि धर्म की विश्वरुपा नामक पत्नी से धर्मव्रता नामक कन्या उत्पन्न हुई। धर्मराज ने अपनी पुत्री का विवाह ब्रह्मा के पुत्र महर्षि मरीचि से कर दिया। मरीचि को १०० पुत्र उत्पन्न हुए। एक समय महर्षि सो गए और धर्मव्रता उनकी आज्ञानुसार उनके पावों को दबाने लगी। उसी समय ब्रह्मा जी आ पहुंचे। धर्मव्रता ने विचार किया कि ये हमारे पति के पिता हैं, इसलिये पति की सेवा छोड़कर इनका सत्कार करना उचित है। ऐसा विचार वह फलादिक से ब्रह्मा का सत्कार करने लगी। इसके पश्चात मरीचि ने उठकर धर्मव्रता को शाप दिया कि तू पत्थल होजा। धर्मव्रता बोली कि हे महर्षि तुमने वृथा मुझे शाप दिया है, इसलिये तुमको भी शिवजी शाप देंगे। धर्मव्रता और मरीचि

दोनों वन में जाकर घोर तपस्या करने लगे। विष्णु ने देवताओं के साथ धर्मव्रता के समीप जाकर उससे कहा कि वरदान मांगो। धर्मव्रता बोली कि स्वामी के शाप से निवृत्त हो जाऊं। देवताओं ने कहा कि मरीचि का शाप हम से निवृत्त नहीं होगा, तुम दूसरा वरदान मांगो। तब धर्मव्रता ने कहा कि मैं अति पवित्र शिला होऊं; उस पर सम्पूर्ण देवता, सर्व तीर्थ और सम्पूर्ण पवित्र वस्तु आकर निवास करे। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इत्यादि देवताओं के चरण चिन्ह हमारे पर विद्यमान रहें। जो मनुष्य हमारे ऊपर तर्पण और श्राद्धादि कर्म करें उनको ब्रह्मलोक प्राप्ति होय। गदाधर की मूर्ति हमारे ऊपर स्थित रहे, फल्गु नदी में वाराणसी, प्रयाग, पुरुषोत्तम, गंगासागर, इत्यादि नित्य विद्यमान रहे, चारों प्रकार के जीव शिला पर प्राण छोड़ने से विष्णुपद को पावें और श्राद्धादिक कर्म करने वाला मनुष्य सहस्र कुल के सहित विष्णु-लोक में निवास करें। देवतागण बोले कि धर्मव्रता जो तुमने वर मांगा वह सब सत्य होगा। जब गयासुर के शिर पर तुम्हारा वास होगा, तब हम सब चरण चिन्ह होकर तुम्हारे ऊपर वास करेंगे। ऐसा वरदान देकर देवगण अन्तर्द्धान हो गए।

(४६ वां अध्याय) जब धर्मव्रता शिलारूपिणी हुई, तब उसके स्पर्श करने से सम्पूर्ण ब्रह्मांड निवासियों को वैकुंठ मिलने लगा। तीनों लोक और यमपुरी शून्य होगई। यमराज ने ब्रह्मलोक में जाकर ब्रह्मा से कहा कि महा-राज हमारी पुरी शून्य होगई। आप अपना अधिकार मुझ से ले लीजिये। ब्रह्मा ने कहा कि तुम शिला को लाकर अपने गृह में रखो। जब यमराज शिला को अपने घर लाया, तब सब जन लोग यमपुरी में आने लगे। उसके पश्चात यमराज ने ब्रह्मा के यज्ञ के समय उस शिला को अपने गृह से लाकर गयासुर के शरीर पर रखदिया। देवताओं ने कोई २ मूर्ति रूप से, कोई २ पद रूप से और कोई २ शिलारूप से उसपर निवास किया। गया में रामचन्द्र ने स्नान किया था, इस कारण उस स्थान का नाम रामतीर्थ पड़ा, जिसमें स्ना-न करने से मनुष्य को विष्णुपद प्राप्त होता है। और वहां पिण्डदान करने से

पितरगणों की मुक्ति होती है। रामचन्द्र के वनवास होने पर भरतजी ने गया में आकर शिलापर पितरगणों को पिण्डदान दिया और राम लक्ष्मण सीता को वहां स्थापन किया। वह भरत का स्थान अत्यन्त पवित्र है। उस स्थान में मतंगपद का दर्शन होता है। भरताश्रम में चतुर्युग के स्वरूप, सूर्य्य की मूर्त्ति, वामनजी और ब्रह्मा हैं। इनके दर्शन करने से मनुष्य पितरगणों के साथ विष्णुपद को प्राप्त करते हैं। शिला के वामहस्त पर ऊर्ध्वंतक गिरि है। उसपर पिंडदान करने से पितरगणों को ब्रह्मलोक मिलता है। उर्ध्वंतक गिरि पर अगस्त्य जी ने उग्र तपस्या की थी। उस गिरि पर मध्यान्ह में सावित्री के पूजन करने से मनुष्य धनाढ्य और वेदपारग ब्राह्मण होता है। जो मनुष्य ब्रह्मयोनि में प्रवेश करके बाहर निकलता है, उसकी मुक्ति होजाती है। सोमकुंड में स्नान करने से पितरगणों को सोमलोक मिलता है। स्वर्गद्वारेश्वर-को नमस्कार करने से स्वर्ग प्राप्त होता है। व्योमगंगा में पिंडदान करने से पितरगणों का स्वर्ग में निवास होता है। शिला के दक्षिण हस्त पर भस्मकूट गिरि है, जहां धर्मराज और कुंभजजी शोभित हैं और दक्षिण पर्वत पर वटेश्वर और प्रपितामह हैं। मातंगपद पर पिंडदान करने से पितरों को स्वर्ग मिलता है। मतंगकुंड से आगे रुक्मिनीकुंड और उससे पश्चिम कपिला नदी है। भस्मकूट पर जनार्दन के हाथ में पिंडदान देने से मनुष्य को विष्णुलोक मिलता है। शिला के दक्षिण पाद पर प्रेतकूट पर्वत है, वहां पिंडदान करने से पितरों का प्रेतत्व छूट जाता है। कीकट देश में गया, बड़ी पवित्र भूमि है, वहां राजगृह च्यवन, वनजी का आश्रम और पुनपुना नदी हैं। इन स्थानों में श्राद्ध करने से पितरों को ब्रह्मलोक मिलता है। शिला के दक्षिण पाद पर धर्मराज ने गृध्रकूट पर्वत स्थापित किया, उसपर पूर्व समय में महर्षियों ने गृध्ररूप धारण करके तप किया था। उस गिरि पर गृध्रेश्वर को नमस्कार करने से और उस स्थान की गुहा के समीप पिंडदान देने से मनुष्य को शिवलोक मिलता है। वहां के गृध्रकूटवट को नमस्कार करने से कामना सिद्ध होती है, और महेश्वरी धारा पर पिंडदान देने से पितर लोगों को स्वर्ग मिलता है। शिला के उदर में आदि-

पाल गिरि पर श्राद्ध करने से पितर लोग ब्रह्मलोक में जाते हैं। शिला के वामहस्त पर उद्यंतक गिरि है, जिसको अगस्तजी ले आये थे, वहां ही अगस्त का कुंड है। शिला के दक्षिण हस्त पर भस्मकूट गिरि पर धर्मराज और अगस्त जी रहते हैं। वहां अगस्तेश्वर और ब्रह्मा का दर्शन करने से ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है और लोपामुद्रा के साथ अगस्तजी के पूजन करने से पितर लोग ब्रह्मलोक में जाते हैं। सीताद्रि के दक्षिण गिरि पर वट, वटेश्वर, और प्रपितामह रहते हैं, उससे दक्षिण रुक्मिणीकुंड और पश्चिम कपिला नदी है, उस नदी में सोमवती अमावास्या को स्नान और पिंडदान करने से पितृगणों की मोक्ष होती है। उस स्थान में अग्निधारा है। उद्यंतक गिरि के पीछे सारस्वत कुंड है। क्रौंचपद पर पिंडदान देने से पितरों को स्वर्ग मिलता है।

(४७ वां अध्याय) सनत्कुमार महर्षि नारद से विष्णु के गदाधर नाम पड़ने की कथा कहने लगे कि ब्रह्मा ने गद नामक असुर से जिसने उग्र तपस्या करके वर लाभ किया था, गदा बनाने के लिये उसका शरीर मांग लिया। विश्वकर्मा ने ब्रह्मा की आज्ञा से उसके अस्थि से गदा बनाई; वह गदा स्वर्ग में रक्खी गई। ब्रह्मा के पुत्र हेती नामक असुर ने ब्रह्मा से वरदान पाकर इंद्रादिक देवताओं को जीत लिया, तब देवगण विष्णु की शरण में गये। विष्णु ने गदासुर के अस्थि से निर्मित गदा को देवताओं से लेकर उससे असुर का विनाश किया और गयासुर के सिर पर गदा को धोवा, तभी से उस कुंड का नाम गदालोल हुआ और विष्णु का गदाधर नाम पड़ा, जिसको देवताओं ने गयासुर की देह पर स्थापित किया। मुंडपृष्ठ गिरि, गृद्धकूट प्रेतकूट, अरविंदक, पंचलोक, सप्तलोक, वैकुंठ, लोहदंडक, क्रौंचपद, अक्षयवट, फल्गुतीर्थ मधुश्रवा, दधिकुल्या, मधुकुल्या, देविका, वैतरणी इन स्थानों पर आदि गदाधर प्रगट होकर निवास करते हैं और विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद काश्यपपद, पंचाग्नि, इन्द्रपद, अगस्तपद, सूर्य्यपद, कार्तिकेयपद, क्रौंचपद, मातंगपद इन मुख्य स्थानों पर विष्णु भगवान, व्यक्त और अव्यक्त रूप से विद्यमान हैं। गायत्री, सावित्री, सरस्वती, गयादित्य, उत्तरार्क, दक्षिणार्क, नैमिष,

श्वेतार्क, गणनाथ, अष्टवसु, एकादश रुद्र, सप्तर्षि, सोमनाथ, सिद्धेश, कपर-दीश, नारायण, महालक्ष्मी, बृह्मा, पुरुषोत्तम, मार्कण्डेय, अंगिरेश, पितामह, जनार्दन, मंगला, पुंडरीकाक्ष इन स्थानों पर भी गदाधर भगवान रहते हैं। गदाधर भगवान के समीप श्राद्धादिक कर्म करने से पितरों की मोक्ष होती है। आदि गदाधर की स्तुति और पूजा करने से मनुष्य को पृथ्वी में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं रहती।

(४८ वां अध्याय) मनुष्य को उचित है कि यात्रा के समय अपने गृह में श्राद्ध करके गुप्त होकर ग्राम प्रदक्षिणा करे, उसके उपरांत प्रतिग्रह से निवृत्त होकर यात्रा करे। गया के समीप महानदी में स्नान कर देवताओं को तर्पण करके पितरों का श्राद्ध करे।

(४९ अध्याय) उत्तर मानस में स्नान करके श्राद्धादिक कर्म करने से पितरों की मुक्ति होती है, और सूर्य्य को नमस्कार करने से पितृगणों को सूर्य्यलोक प्राप्त होता है। दक्षिण मानस के उदीची तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को स्वर्ग मिलता है, और उस स्थान के कनखल तीर्थ में स्नान करने से सुवर्ण के समान शरीर की चमक हो जाती है और श्राद्धादिक कर्म करने से बृह्महत्या आदि पाप विनाश होता। फल्गुतीर्थ में स्नान करने से अश्वमे-धादिक यज्ञ के फल से अधिक लाभ होता है। जो मनुष्य गया में जाकर गदाधर भगवान का दर्शन नहीं करता है, उसके श्राद्ध करने का फल निष्फल हो जाता है।

गया के यात्री को उचित है कि प्रथम दिन फल्गु तीर्थ में स्नान तर्पण और श्राद्धादि कर्म करके बृह्मा, गदाधर और शिव जी को नमस्कार करे, दूसरे दिन धर्मारण्य के मातंगवापी में स्नान तर्पणादि कर्म करके मतंगेश को नमस्कार करे। बृह्मतीर्थ पर श्राद्ध करे। कूप में पिंडदानादिक कर्म करने से सम्पूर्ण पितरों की तृप्ति होती है। पितरों को तारने के लिये धर्म, धर्मेश्वर और महाबोधी अर्थात पीपल के वृक्ष को नमस्कार और महाबोधी की स्तुति करनी चाहिये। तीसरे दिन बृह्मसर में स्नान और श्राद्धादिक कर्म; बृह्मा

के निर्माण किए हुए यूप की प्रदक्षिणा; ब्रह्मसर में उत्पन्न आम्र वृक्षों को सींचना; यमबलिदान; स्वान वलिदान और काक बलिदान देना उचित है। चौथे दिन फल्गु तीर्थ में स्नान, गयाशिर पर श्राद्ध और पाद पर सपिंड श्राद्ध करना उचित है। नगकूट जनार्दन, ब्रह्मकूप से लेकर उत्तर मानस और पितामहेश्वर तक गयासिर कहा जाता है। पितामह से लेकर उत्तर मानस पर्यन्त फल्गु तीर्थ है। क्रौंचपद से फल्गु तीर्थ तक गयासुर का मुख है, इसलिये उस स्थान पर पिंडदान करने से पितरों की अक्षय तृप्ति होती है। मुंडपृष्ठ से गिरि के नीचे तक फल्गु तीर्थ में आदि गदाधर का स्थान है, उस स्थान में पिंडदान और गदाधर के दर्शन और पूजन करने से सहस्र कुल को विष्णुपद प्राप्त होता है। शिवजी को नमस्कार करके उनके स्थान पर श्राद्ध करने से सौ कुल को रुद्रपद मिलता है। ब्रह्मा को नमस्कार करके वहां पिंडदान करने से १०० कुल को ब्रह्मलोक मिलता है। कश्यप के स्थान पर पिंडदान करने से ब्रह्मपद, दक्षिणाग्नि पद पर पिंडदान करने से वाजपेय यज्ञ का फल, गार्हपत्यपद पर श्राद्ध करने से राजसूय यज्ञ का फल आवाहनीयपद पर श्राद्ध करने से अश्वमेध का फल, सत्यपद पर श्राद्ध करने से ज्योतिष्टोम यज्ञ का फल, आवसथ के स्थान पर श्राद्ध करने से पितृगणों को सोमलोक, इन्द्रपद पर श्राद्ध करने से इन्द्रलोक, अगस्त्यपद पर श्राद्ध करने से पितृगणों को ब्रह्मलोक, क्रौंचपद और मातंगपद पर श्राद्ध करने से ब्रह्मलोक, सूर्य्यपद में श्राद्ध करने से सूर्य्यलोक, कार्तिकपद में श्राद्ध करने से शिवलोक, गणेशपद में श्राद्ध करने से रुद्रलोक, गजकर्ण में तर्पण करने से पितृगणों को स्वर्ग मिलता है। सम्पूर्ण स्थानों में विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद और काश्यपपद श्रेष्ठ हैं। किसी समय में श्रीरामचन्द्र ने गया में आकर रुद्रपद पर पिंडदान दिया। राजा दशरथ ने स्वर्ग से आकर पिंडदान ग्रहण किया। मुंडपृष्ठ पर्वत देवताओं के पद से सर्वत्र चिन्हित है, वहां पिंडदान करने से पितृगणों की मोक्ष होती है। गदालोल तीर्थ में स्नान करने से पितरों की मुक्ति हो जाती है। अक्षयवट के नीचे अन्न से श्राद्ध करने से पितरों की मोक्ष होती है।
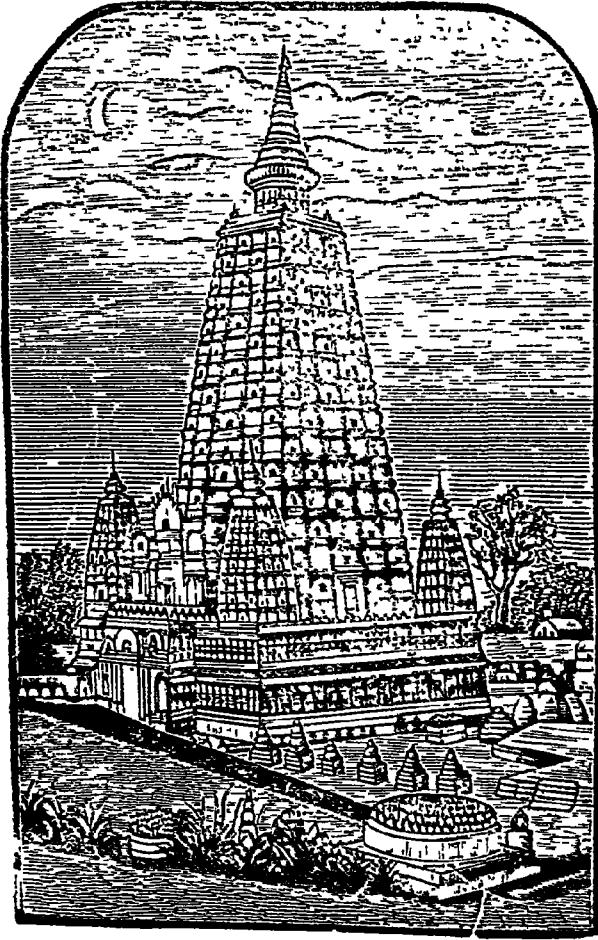
बुद्ध गयाका मन्दिर।

(५० अध्याय) राजा गय ने गया में यज्ञ किया और बहुत अन्न द्रव्य दान दिया। विष्णु आदि देवता प्रसन्न होकर राजा गय से बोले कि तुम मनोवांच्छित वर मांगो। राजा गय ने कहा कि यह पुरी हमारे नाम से विख्यात होजाय। देवताओं ने वरदान दिया कि ऐसाही होगा।

बोधगया।

गया के विष्णुपद के मन्दिर से ६ मील दक्षिण, बिहार के गया जिले में फल्गू नदी के बाएं अर्थात पश्चिम किनारे पर फल्गू और मोहन नदी के संगम से ऊपर बोधगया एक गांव है। गया से बोधगया तक पक्की सड़क गई है। बोधगया बौद्ध लोगों के लिये संसार में सबसे अधिक पवित्र स्थान है। हजारों यात्री बोधगया में आते हैं और पवित्र पीपल के वृक्ष के नीचे और बुद्धदेव के विख्यात पुराने मन्दिर में पूजा चढ़ाते हैं। वहां ८० फीट लम्बी, ७८ फीट चौड़ी और ३० फीट ऊंची छत के ऊपर ४७ फीट लम्बी और इतनी ही चौड़ी बुद्ध के मन्दिर की नेव है। नीचे के सतह से मन्दिर की ऊंचाई १७० फीट है। उसके पूर्व बगल पर दो मंजिला जगमोहन और ३ बगलों पर लगभग १६ फीट चौड़ी छत है। मन्दिर अत्यंत पके हुए ईंटों से बना है। ईंटों पर गच का काम है। केवल दरवाजे का चौकठ और फर्श पत्थर का बना है। मन्दिर शिखर के चारो बगलों पर नीचे से ऊपर तक सर्वत्र छोटे बड़े ताक हैं, जिनमें से बहुतेरे में बौद्धमूर्तियां बनी हुई हैं। मन्दिर पुराने होने पर भी इसकी बनावट उत्तम है। सब बातों को ख्याल करने पर ठीक जान पड़ता है कि यह मन्दिर बहुत दिन ठहरा है। कोई कोई कहते हैं कि इस मन्दिर को मगध देश के बौद्ध राजा अशोक ने बनवाया, जिसका राज्य सन ईस्वी के २६४ वर्ष पहले से २२३ वर्ष पहले तक था। पीछे वह कई बार मरम्मत हुआ। सन १८७६ ई० में ब्रह्मा के राजा ने मन्दिर की मरम्मत के लिये ३ अफसरों को बोधगया में भेजा, जिन्हों ने मन्दिर के चारो तरफ बहुत जमीन साफ की। उस समय बंगाल गवर्नमेंट को डर हुआ कि मन्दिर की नेव पोली होजाने से शायद मन्दिर को नुकशानी पहुंचे, इसलिये सन १८७७ ई० में डाक्टर राजे-

न्द्रलाल मित्र वहां भेजे गए। उस समय मन्दिर का हिस्सा हीन दशा में था, जो पीछे सुधारा गया।

मन्दिर के द्वार के ऊपर अंगरेजी में शिलालेख है, जिसमें लिखा है कि जहां राजा शाक्यसिंह बुद्ध हुए, उस पवित्र स्थान पर महाबुद्ध का पुराना मन्दिर है। इसको सन १८८० ईस्वी में बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर ने अंगरेजी सरकार के खर्च से सुधरवाया।

उस मन्दिर में पूर्व तरफ मुख करके बुद्ध की विशाल मूर्ति बैठी है, जिसका बायां हाथ ठोंढ़ी के पास और दहिना हाथ नीचे की ओर गिरा हुआ है। मूर्ति पर सोने का मुलम्मा है। जगमोहन में केवल पूर्व बगल पर एक द्वार है, इसके आगे ४ खम्भे लगे हुए एक छोटा ऊंचा दालान है, जिसके भीतर उत्तर और दक्षिण की दीवारों में दहिना हाथ उठाए हुए और बायां हाथ नीचे गिराए हुए एक एक बौद्धमूर्ति है। अब दोनों के अंग भंग होगए हैं।

दो मंजिले पर भी इस मन्दिर की परिक्रमा है, जिसके चारो कोनों पर एक एक शिरपरदार छोटा मन्दिर बना हुआ है। उन में से पूर्व-दक्षिण और पूर्वोत्तर वाले मन्दिरों में होकर ऊपर की परिक्रमा पर सीढ़ी गई हैं। २१ सीढ़ियों के ऊपर पूर्व-दक्षिण वाले मन्दिर में लगभग ५ फीट ऊंची और पूर्वोत्तर वाले में करीब ५ ½ फीट ऊंची बौद्धमूर्ति हैं, जिनके पास से ११ सीढ़ी और चढ़ने पर आदमी छत के ऊपर पहुंचते हैं और वहां से बड़े मन्दिर के चारो तरफ घूम सकते हैं। पश्चिम-दक्षिण वाले छोटे मन्दिर में करीब ५ फीट ऊंची दो भुजा वाली बौद्धमूर्ति और पश्चिमोत्तर के छोटे मन्दिर में भी इतनीही बड़ी बौद्धमूर्ति है, जिसके दोनों बगलों पर मनुष्य, हाथी आदि की छोटी छोटी कई मूर्तियां बनाई हुई हैं। ऊपर के मन्दिर में नीचे के बुद्धदेव के ठीक ऊपर करीब ४ फीट ऊंची बौद्धमूर्ति पूर्वमुख से खड़ी है, जिसके बायें हाथ की केहुनी और दहिना हाथ नीचे को लटके हुए हैं और दोनों बगलों पर नीचे से ऊपर चार चार छोटी मूर्तियां हैं। जगमोहन के प्रत्येक ओर एक द्वार है, देखलाने वाला ऊपर की सम्पूर्ण बौद्धमूर्तियों को भैरव, काली, लक्ष्मी आदि देवता कहता है।

मन्दिर के पीछे भूमि पर इसकी दीवार में लगा हुआ बौद्ध सिंहासन नामक पत्थर का चबूतरा है, जिसपर बैठकर बुद्ध सिद्ध हुए थे। चबूतरे से दो तीन गज पश्चिम पीपल का वृक्ष है। मन्दिर के उत्तर कई बड़े चबूतरों पर बहुत लिंगाकार बौद्धमूर्तियां रक्खी हैं, जिनसे उत्तर वाले पीपल के वृक्ष के नीचे गया के यात्री पिंडदान करते हैं। मन्दिर के दक्षिण के मैदान में बहुत बौद्धमूर्ति रक्खी हुई हैं, जो भूमि खोदने पर मिली थीं। मन्दिर के आगे दक्षिण बगल पर उत्तर मुख की कई कोठरी हैं, जिनमें से पश्चिम वाली में गया के दूसरे महन्त बाबा महादेव नाथ का चौरा है। उसके पूर्व का कमरा खाली है, जिसके पूर्व की कोठरी में बोधगया के पहले महन्त बाबा चेतननाथ का चौरा है। उनके ३ चेले थे; महादेवनाथ, विभूतनाथ और घमंडनाथ। उनमें से महादेवनाथ बोधगया में रहते थे। लाग कहते हैं कि उनकी ग्यारहवीं गद्दी पर बोधगया के वर्तमान महन्त हैं। विभूतनाथ फल्गु के उस पार और घमंडनाथ सरस्वती के पास घमंडी बाग में रहते थे। पिछले दोनों के चेले भी सिल-सिले से चले आते हैं। चेतननाथ के चौरे के पूर्व की कोठरी में बहुत मूर्तियां और कोठरी के पूर्व की अन्तवाली कोठरी में एक बौद्धमूर्त्ति है। कोठरी के आगे एक नाद के ऊपर १३ हाथ लम्बा बुद्ध का चरण चिन्ह देख पड़ता है। बौद्ध तवाहियां, जिसके उत्तर भाग में मन्दिर है, १५०० फीट लम्बी और १००० फीट चौड़ी भूमि पर फैली हुई हैं। कदाचित राजा अशोक और उसके उत्तराधिकारियों के रहने की यह जगह थी।

बुद्धमन्दिर के हाते के पूर्वोत्तर के कोन के पास तारा देवी का शिखरदार पुराना मन्दिर हीन दशा में खड़ा है। हाते के पूर्व एक घेरे के भीतर ५ शिखरदार बड़े मन्दिरों में बोधगया के महंतों की समाधि हैं। हाते के उत्तर मूर्ति गोदाम में बहुत बौद्धमूर्तियां रक्खी हुई हैं। मूर्ति गोदाम के उत्तर जगन्नाथ का दो मंजिला पुराना मन्दिर है, जिससे लगे हुए उत्तर अहिल्या बाई के बनवाए हुए दो मंजिले मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी, हनुमान, आदि की मूर्ति प्रतिष्ठित हैं। दोनों मन्दिरों की मूर्तियां दो मंजिले पर स्थापित हैं। इनके

उत्तर एक अंधियारे मन्दिर में लोकनाथ और ऋणमोचन शिवलिंग हैं। दो कोठरियों को लांघ कर मन्दिर में आदमी पहुंचते हैं। जगन्नाथजी के मन्दिर के पासही पूर्व दो शिखरदार मन्दिर हैं, जिनमें से एक में नागेश्वर और दूसरे में खगेश्वर शिव का दर्शन होता है।

बुद्ध के मन्दिर के करीब ५० गज पूर्व छोटा बाजार और लगभग १०० गज पूर्वोत्तर बोधगया के महंत का तीन मंजिला मकान और फुलवाड़ी आदि सामान देखने में आते हैं। महंत बड़े धनी हैं, इनको यात्रियों की दी हुई भूमि से करीब ८०००० रुपये सालाना आमदनी होती हैं। नेपाल, अराकान, ब्रह्मा, शिलोन, जापान, चीन इत्यादि देशों से बौद्ध यात्री आकर बहुत पूजा चढ़ाते हैं।

गया कसबे से लगभग १६ मील उत्तर फल्गु नदी के पास ७ पुरानी बौद्ध गुफा हैं। उनमें से सब से बड़ी गुफा, चन्द्रगुप्त के पोते राजा अशोक के राज्य के समय सन ईस्वी से २५२ वर्ष पहिले की बनी हुई ४६ फीट लंबी और २० फीट चौड़ी है। उनमें से जो सबसे पीछे की बनी हुई है, उसको ईसा से २१५ वर्ष पहले अशोक के पोते ने बनवाया था। भारतवर्ष में राजा अशोक ने पहले पहल गुफाओं को बनवाया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—(शान्तिपर्व्व—३४२ वां अध्याय) अदिती ने इस उद्देश्य से देवताओं के निमित्त अन्न पाक किया था कि वे लोग इस अन्न को खाकर असुरों को मारेंगे। बुद्ध ने व्रत समाप्त होने पर अदिती के निकट जाकर भिक्षा मांगी। देवतालोग पहले इस अन्न को भोजन करेंगे, इसी निमित्त उसने बुद्ध को भिक्षा नहीं दी, तब बुद्ध स्वरूप भगवान ने रुष्ट होकर अदिती को शाप दिया कि तुम्हारे उदर में पीड़ा होगी।

मत्स्यपुराण—(४७ वां अध्याय) विष्णु भगवान ने देवताओं के हित के लिये शुक्र की माता का सिर काट डाला। यह देख शुक्र ने विष्णु को शाप दिया कि तुम इस संसार में ७ बार मनुष्य का शरीर धारण करोगे। (दस अवतार में मत्स्य, कूर्म और वाराह ये ३ मनुष्य से बाहर हैं) । तभी

से मनुष्यों के हित के लिये विष्णु बार बार जन्म लेते हैं। उनमें धर्म की स्थिति और असुरों के नाश करने के लिये तप करके कमल सदृश नेत्र वाले और देवता के समान रूपवाले बुद्ध का अवतार हुआ।

पद्मपुराण—(पाताल खण्ड-६८ वां अध्याय) ज्येष्ठ शुक्ल २ को बुद्ध भगवान ने जन्म लिया।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड-९ वां अध्याय) बुद्ध अवतार हरि के अंश से है।

श्रीमद्भागवत—(पहला स्कन्ध-३ रा अध्याय) कलियुग की प्रवृत्ति देख असुरों को मोह देने के लिये बुद्ध ने जन्म लिया।

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध-७३ वां अध्याय) श्रावण शुक्ल १२ को कलश के ऊपर सुवर्ण की बुद्ध भगवान की प्रतिमा स्थापन करके पूजन करे और पश्चात कलश ब्राह्मण को देदेवे। यह व्रत शुद्धोदन ने किया, जिससे बुद्ध भगवान उसके पुत्र बने और शुद्धोदन बहुत काल राज्य सुख भोगकर परम गति को प्राप्त हुआ।

वाराहपुराण—(प्रथम अध्याय) भगवान ने बुद्ध अवतार धारण कर वेद के विरुद्ध धर्म भाषण करके लोक को मोहित किया था।

शिवपुराण—(५ वां खण्ड-१८ वां अध्याय) पृथ्वी म्लेच्छों से परिपूर्ण हो गई, तब भगवान ने बौद्ध रूप होकर उनसे वेदों को छीन लिया और वेदों की निन्दा करके दैत्यों की बुद्धि भ्रष्ट करदी।

अग्निपुराण—(१६ वां अध्याय) पूर्व काल के देवासुर-संग्राम में दैत्यों ने देवताओं को पराजय किया, तब देवतागण विष्णु की शरण में गए। विष्णु देवताओं के हित के लिये शुद्धोदन के बुद्ध नामक पुत्र हुए। उनकी माया से दैत्यगण बौद्ध होकर धर्म और वेद से वर्जित हो गए। उसके पश्चात भगवान ने अर्हत होकर बहुत लोगों को अर्हत-मतावलम्बी बना दिया, जिससे वे लोग वेद धर्म से वर्जित हो गए।

इतिहास—पश्चिमोत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले की उत्तरीय सीमा के

बाहर नैपाल की तराई में कपिलवस्तु नगर था। उसमें शाक्यजाति का राजा शुद्धोदन रहता था। सन ईस्वी से ६२३ वर्ष पहले गौतम नामक उसका पुत्र जन्मा, जो पीछे अति बुद्धिमान होने के कारण बुद्ध नाम से विख्यात हो गया। गौतम का विवाह एक राजपुत्री से हुआ, जिससे १ पुत्र जन्मा। ३० वर्ष की अवस्था में गौतम ने घर से चुपचाप निकल कर जंगल में रहना आरंभ किया। उसने बहुत दिनों तक २ ब्राह्मणों से पटने के जिले में शिक्षा पाई कि सिवाय शरीर के दुःख देने के आत्मा के चैन देने का दूसरा उपाय नहीं है। इसलिये उन्हां ने ६ वर्ष तक ५ चेलों के साथ गया के तंग और अन्धेरे जंगल में कठिन तप से अपने शरीर को गला डाला। जहां उन्हों ने बहुत दिनों तक तप किया था, उस स्थान पर बुद्ध गया का मन्दिर है।

पीछे बुद्ध का विचार ऐसा हुआ कि आदमियों को अच्छी चाल की शिक्षा दें। तब उन्हों ने तपस्या छोड़ दी और बनारस के सारनाथ के पास साधारण शिक्षा देनी आरंभ की। उनकी शिक्षा सब के लिये थी। सर्वसाधारण लोगों ने उनका मत स्वीकार किया। ३ महीने के भीतर ६० आदमी उनके चेले हुए। साल के ८ महीने तो बुद्ध शिक्षा देते फिरते थे और बाकी ४ महीने बरसात में किसी खास जगह में बैठकर शिक्षा देते थे। छोटे बड़े सब लोग बुद्ध के मत में शामिल हुए। बुद्ध बिहार, अवध और पश्चिमोत्तर के आस पास के जिलों में अपनी शिक्षा को फैलाकर घूमते हुए अपने घर आए। बूढ़े राजा ने उनकी शिक्षा आदर के साथ सुनी। उनका लड़का उन के मत में आया। ३० वर्ष की अवस्था में बुद्ध ने अपने गृह को छोड़ा और ३६ वर्ष की उमर में शिक्षा देनी आरंभ की। उसके पश्चात ४४ बर्ष शिक्षा देने के उपरांत सन ई० से ५४३ वर्ष पहले ८० वर्ष की अवस्था में बुद्ध का देहान्त हुआ।

बुद्ध इस बात की शिक्षा देते थे कि हर एक आदमी मोक्ष पा सकता है; परन्तु मोक्ष किसी देवता के प्रसन्न करने से नहीं, किन्तु अपने कर्मों से मिल सकती है। आदमी के वर्तमान, भूत और भविष्य जिन्दगी के हालात

केवल उन्हीं के कर्म के फल हैं। जो आदमी बोता है, वही काटेगा। दुःख और सुख जो इस जन्म में होता है, उनको पहले जन्म के कर्म का फल जानना चाहिए और वर्तमान जन्म के कर्म से दूसरे जन्म में दुःखसुख भोगना होगा। जब कोई जीवधारी मरता है, तो वह फिर अपने कर्म के अनुसार बड़े या छोटे शरीर को पाता है। बुद्ध का यह मत है कि प्रत्येक अच्छे आदमी को इस बात का उद्योग करना चाहिये कि किसी प्रकार से जन्म मरण के दुःख से मोक्ष होकर छुटकारा पावें। बुद्ध के मत का धार्मिक आदमी इस संसार में पवित्र ध्यान के मरतबे को पाने का उद्योग करता है और दूसरे जन्म में नित्य की सुस्थिरता की आशा रखता है। यज्ञों के बदले में बुद्ध ने ३ बड़े धर्म बतलाये; अर्थात् अपने को वस में रखना, दूसरों पर दया करना और सब जीवधारियों के प्राण की रक्षा करना।

सन ई० के लगभग २५७ वर्ष पहले चन्द्रगुप्त का पोता मगध या बिहार का राजा अशोक, जो सन ईस्वी के २६९ वर्ष पहले राजसिंहासन पर बैठा था, बौद्धमत का मानने वाला निहायत सरगर्म था। लोग कहते हैं कि वह ६४००० बौद्ध मत के पुजारियों की परवरिश करता था। उसने बहुत से तपस्थान कायम किए, इसीलिये उसका मुल्क अब तक बिहार प्रदेश कहलाता है।

कनिष्क पश्चिमोत्तर प्रदेश के सिदिया का राजा था, उसके राज्य के समय सन ४० ई० में बौद्ध मत का अन्तिम और चौथा बड़ा जलसा हुआ। उसने दूसरी बार पवित्र पुस्तकों को सुधारा। उसके समय का तरजुमा उत्तरी मजमूए के नाम से तिब्बत, तातार और चीन के बौद्धों के लिये दीनी किताब हुआ। उसके समय बौद्ध मत की शिक्षा संपूर्ण एशिया के मुल्कों में दी गई। सन ई० से २४४ वर्ष पहले अशोक का बेटा पवित्र पुस्तकों का दक्खिनी मजमूआ, जो उसके बाप ने इकट्ठा कर दिया था, लंका को ले गया। वहां से वह ब्रह्मा और पश्चिमी द्वीप समूह में पहुंचा। बौद्ध मत का उत्तरी मजमूआ सन ६५ ई० में चीन का राजधर्म होगया। अबतक तिब्बत से लेकर जापान तक उत्तर के बौद्ध लोग उसको मानते हैं।

यद्यपि बौद्ध मत कई शतकों तक शाही मज़हब था; परन्तु ब्राह्मणों का मजहब नाबूद नहीं हुआ; वह पीछे धीरे धीरे बढ़ गया। शंकराचार्य्य ने इस में अधिक सहायता की। सन ईस्वी की नवीं सदी में इस मजहब के लोग हिन्द से जबरदस्ती निकाल दिये गये। परन्तु परदेश में उसको इतनी कामयाबी हासिल हुई कि जन्मभूमि में हासिल होनी कभी संभव न थी। करीब आधी दुनियां के निवासियों के लिये उसने एक नया धर्म और विद्या बना दी और बाक़ी आधे के विश्वास को भी किसी कदर बदल दिया। दुनियां के निवासियों में ५० करोड़ आदमी अर्थात् फी सदी चालीश मनुष्य बुद्ध की शिक्षा को मानते हैं। समय समय पर उसके विजय का झंडा अफ़ग़ानिस्तान नैपाल, पूर्वी तुर्किस्तान, तिब्बत, मंगोलिया, मंचूरिया, चीन, जापान, द्वीप समूह, श्याम, ब्रह्मा, सिंहलद्वीप, लंका और हिन्द में खड़ा हुआ था। उस के मठ और मन्दिर रूस की सल्तनत के वर्तमान हद से लेकर पासिफिक समुद्र के टापू तक लगातार देखने में आते है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भारतवर्ष में (जिसमें ब्रह्मा भी है) ७१३११३६१ बौद्ध थ।

टेकारी।

गया से लगभग १५ मील पश्चिम कुछ उत्तर गया जिले में टेकारी एक म्युनिस्पल कसबा है। जिसमें सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ११५३२ मनुष्य थ; अर्थात ८८९३ हिन्दू और २६३९ मुसलमान। कसबे में टेकारी के राजा का गढ़ बना हुआ है। वहां के मृतराजा को सन १८७३ ई० में महाराज का पद मिलता था। राजा भूमिहार ब्राह्मण हैं। राजा सुंदरसिंह के पोते राजा मित्रजीतसिंह के दो पुत्र थे, हितनारायणसिंह और मोदनारायणसिंह। छोटे भाई ने बड़े भाई से जमीदारी में से साढ़े सात आना हिस्सा ले लिया। पीछे हितनारायणसिंह के वारिश उनके शाले के पुत्र रामकिशुनसिंह और मोद नारायणसिंह के वारिश उनके भतीजे रणबहादुरसिंह हुए।

विराटनगर।

गया से दक्षिण हजारीबाग जिले में काल्हुआ नामक एक पर्वत है। महाभारत-प्रख्यात मत्स्यदेश का विराट नगर उसी पहाड़ के समीप था, जहां युधिष्ठिर आदि पाण्डवों ने १ वर्ष राजा विराट के घर नोकरी की थी और विराट के शाले दुष्कर्मी कीचक को भीमसेन ने मारा था।

पर्वत के मध्य भाग में एक तालाव के पास एक खाली मन्दिर है, जिसके आगे के सहन पर लोग कीचक के नाम पर पत्थर के टुकड़े मारते हैं। उससे थोड़ी दूर पर कोल्हासनी देवी का मन्दिर है, जहां चैत्र और आश्विन की नवरात्र के समय यात्रियों का मेला होता है। एक जगह पाण्डवों का यज्ञ कुण्ड और एक स्थान पर एक गोलाकार पत्थर है, जिसको लोग भीम का गेन्द कहते हैं। पर्वत के ऊपर एक गहरा विल है, लोग कहते हैं कि भीम ने अपनी वर्छो से इसको वनाया था। एक जगह एक वड़ी अथाह गुफा है। पर्वत के मध्य भाग में पत्थर पर पाण्डवों की मूर्ति खुदी हुई हैं। इनके अतिरिक्त सूर्य्यकुण्ड नामक एक गहरा कुण्ड और कई देवता और ऋषियों की प्रतिमा हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(आदिपर्व १६७ वां अध्याय) माता कुन्ती के सहित पांडवगण वारणावत नगर से एकचक्रा नगरी को चले पथ में मत्स्य, त्रिगर्त, पंचाल और कीचक देश मिले।

(सभापर्व ३१ वां अध्याय) पांडुपुत्र सहदेव ने दक्षिण दिशा में जाकर मत्स्यनाथ को जीता।

(विराटपर्व ५ वां अध्याय) द्रौपदी के सहित पांडवगण द्वैतवन से प्रस्थान करके यमुना नदी के दक्षिण तट पर पैरों से चलने लगे। अनंतर वे लोग पर्वत, गुफा और वनों में निवास करते हुए दशार्ण देश के उत्तर और पंचाव देश की दक्षिण सीमा होकर निकले और सूरसेन और यकुल्लोभ देश की सीमा को लांघ कर राजा विराट के राज्य में पहुंचे। उन्होंने विराटनगर के पास पहुंचने पर स्मशान के समीप एक वड़े भारी शमी के वृक्ष पर गांडीव आदि धनुष, खड्ग और अन्य शस्त्रों को रख दिया और इस प्रयोजन से

उस वृक्ष पर एक मरे हुए पुरुष का शरीर बांध दिया कि मृतक की दुर्गंधि से कोई मनुष्य वृक्ष के पास न आवेगा।

(७ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर कंक नामक ब्राह्मण के नाम से विराट के सभासद हुए। (८ वां अध्याय) भीम विराट के रसोइयां बने। (९ वां अध्याय) द्रौपदी राजा विराट की स्त्री के पास दासी होकर रहने लगी। (१० वां अध्याय) सहदेव राजा की गौ के काम में नियुक्त हुए। (११ वां अध्याय) अर्जुन वृहन्नला नामक नपुंसक स्त्री बन कर गए और राजपुत्री उत्तरा और उसकी सखियों को नाचना गाना और बजाना सिखाने के काम में नियुक्त हुए। (१२) नकुल राजा के घोड़े आदि वाहनों के स्वामी बने।

(१४ वां अध्याय) द्रौपदी ने अपनी सेवा से रनवास की सब स्त्रियों को प्रसन्न कर लिया। वर्ष समाप्त होने से थोड़े दिन पहले राजा विराट का सेनापति और शाला कीचक रूपवती द्रौपदी को देख काम से व्याकुल होगया। (१६ वां अध्याय) उसने द्रौपदी का दहिना हाथ और पीछे उसका वस्त्र पकड़ा। तब द्रौपदी ने लम्बी सांस लेकर अपना वस्त्र छुड़ा लिया। उस झटके से कीचक पृथ्वी में गिर गया। द्रौपदी कांपती हुई सभा की शरण गई। राजा युधिष्ठिर उसी जगह बैठे थे। कीचक ने भागती हुई द्रौपदी का बाल पकड़ लिया और पृथ्वी में गिरा कर राजा विराट के सामने ही उसको लात से मारा। सूर्य्य ने द्रौपदी की रक्षा के लिये पहलेही १ राक्षस भेजा था। राक्षस ने बड़े वेग से कीचक को उठा कर दूर फेंक दिया। भीम ने दुष्ट कीचक के मारने की इच्छा की। (२२ वां अध्याय) द्रौपदी रानी के घर में चली गई। प्रातःकाल होतेही कीचक राजा के भवन में पहुंचा और द्रौपदी से बोला कि मुझसे विरोध करने से कोई तेरी रक्षा नहीं कर सकता है। वास्तव में मैंही मत्स्य देश का राजा हूं, तू मेरी सेवा कर। द्रौपदी बोली हे कीचक ! मैं यशस्वी गंधर्व्वों की स्त्री हूं, उनसे बहुत मैं डरती हूं, यह जो राजा विराट ने नाचने के लिये स्थान बनाया है; उसे गंधर्व्व लोग नहीं जानते। तुम अंधेरे में आधी रात को वहां जाना, मैं तुमसे वहीं

मिलूंगी। तब कीचक बहुत प्रसन्न होकर अपने घर गया। द्रौपदी ने भीमसेन के पास जाकर यह सब वृत्तांत कह सुनाया। भीमसेन आधी रात को छिप कर नाचघर में जा बैठे। उसी समय कीचक भी उसी नाचघर में पहुंचा। वह स्थान अंधेरे से पूर्ण था। कीचक ने द्रौपदी को ढूंढते हुए भीमसेन को एकान्त पलंग पर सोते हुए पाया। तब उसने भीमसेन का हाथ पकड़ लिया। पश्चात वह काम से व्याकुल हो भीम के पास सो गया, तब भीम ने कीचक का बाल पकड़ लिया। कीचक ने भी वेग से अपने को छुड़ाकर भीम का हाथ पकड़ा। दोनों का घोर युद्ध होने लगा, अंत में भीमसेन ने कीचक को मार कर उसके हाथ, पैर और सिर को तोड़ कर उसके पेट में घुसेड़ दिया। द्रौपदी ने आकर पहरे वालों से कहा कि मेरे गंधर्व्व पतियों ने कीचक को मार डाला। तब सब पहरे वाले बहुत डरे और कहने लगे कि इसको अवश्य गन्धर्व्वों ने मारा है।

(३० वां अध्याय) दुर्य्योधन ने अपनी सभा में कहा कि पहले समय में मत्स्यराज विराट ने हमारे राज्य में बहुत उपद्रव किया था। उसके बड़े बलवान सेनापति कीचक को गंधर्व्वों ने मार डाला। उसके मरने से राजा विराट निरुत्साह हो गया होगा। उस राज्य में बहुत अन्न उत्पन्न होता है, इसलिये वह लेने के योग्य है। उसके मिलने से अनेक प्रकार के रत्न और धन मिलेंगे। कर्ण ने इसका अनुमोदन किया। राजा की आज्ञा के अनुसार महासेना कृष्ण पक्ष की सप्तमी को हस्तिनापुर से निकल कर अग्नि कोण को चली। उसके सेनापति त्रिगर्त्त देश के राजा सुशर्म्मा हुए। दूसरे दिन सेना का दूसरा भाग भीष्म आदि कौरवों के सहित हस्तिनापुर से चला। (३१ वां अध्याय) उसी दिन कपट वेषधारी पांडवों के वनवास का तेरहवां वर्ष पूर्ण हो गया। तेरहवें वर्ष के अंत के दिन कौरवों की सेना का प्रथम भाग विराट नगर में पहुंचा। राजा सुशर्म्मा ने विराट के अहीरों से १ लाख गऊ छीन ली। यह खबर पाकर राजा विराट महासेना लेकर पांडवों के साथ नगर के बाहर खड़े हुए। (३२) वां अध्याय दोनों सेना लड़ने लगी। (३३ वां अध्याय) राजा

सुशर्म्मा ने विराट को विरथ कर उसको बांध लिया, तब राजा युधिष्ठिर की आज्ञा से भीम ने क्षणभर में सहस्रों रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों को मारकर गिरा दिया। पांडव लोग दिव्यास्त्र चलाकर सहस्रों वीरों को नाश करने लगे। राजा विराट बंधन से छूट युद्ध में प्रवृत्त हुए। सुशर्म्मा परास्त हुआ।

(३५ वां अध्याय) जब राजा सुशर्म्मा हार कर चला गया और राजा विराट ने अपने पशुओं को पा लिया, तब उसी दिन कौरवों की सेना का दूसरा भाग विराट नगर में पहुंचा। भीष्म, द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, शकुनि, दुःशासन आदि महारथियों के संग राजा दुर्य्योधन विराट नगर में पहुंच गए। उन्हों ने दूसरे द्वार पर जाकर साठ हजार गौओं को छीन लिया।

(३७ वां अध्याय) विराट के पुत्र उत्तर बृहन्नला अर्थात् अर्जुन को सारथी बनाकर रणभूमि में चले। (३८ वां अध्याय) इस सेना के देखतेही भय के मारे उत्तर के रोवें खड़े होगए। वह रथ से उतर कर भागा। अर्जुन ने उसको पकड़ कर रथ पर बैठाया।

(४१ वां अध्याय) अर्जुन शमी के वृक्ष के पास गए। उनके कहने पर उत्तर ने रथ से उत्तर शमी वृक्ष से पांडवों के शस्त्रों को उतारा। (४५ वां अध्याय) अर्ज्जुन उत्तर को सारथी बनाकर शमी वृक्ष की प्रदक्षिणा कर शस्त्रों को रथ में रख वेग से चले। (५३ वां अध्याय) कौरवों ने गांडीव धनुष का महाशब्द सुनकर अर्ज्जुन को पहचाना। अर्जुन से कोरवों का भयंकर युद्ध होने लगा। (६७ वां अध्याय) बड़ी लड़ाई के उपरांत अर्ज्जुन सब कौरवों को जीत और उनका धन छीन कर उसी शमी वृक्ष के नीचे आकर खड़े हुए। उत्तर ने पांडवों के शस्त्रों को फिर वैसेही शमी वृक्ष पर रख दिया। अर्ज्जुन फिर नपुंसक का वेष बना कर उत्तर के सारथी बन नगर की ओर चले। कौरव लोग हार कर हस्तिनापुर चले गए।

(७२ वां अध्याय) राजा विराट ने कहा कि हे अर्ज्जुन ? तुम मेरी कन्या उत्तरा से विवाह करो। अर्ज्जुन बोले कि हे राजन ? हमने गुरु होकर उसको

नाचना और गाना सिखाया है। वह भी पिता के समान हमारा विश्वास करती है। आप अपनी पुत्री का विवाह हमारे पुत्र से कर दीजिए। उसी समय राजा युधिष्ठिर और राजा विराट ने श्रीकृष्ण और अपने २ सम्बन्धियों के पास दूत भेजे। पांडव लोग द्रौपदी के सहित विराटनगर के समीप उपप्लव नामक नगर में रहने लगे। अनन्तर उन्होने अभिमन्यु और कृष्ण के सहित द्वारिका से सब यादवों को बुला भेजा। वे विराट नगर में आए। उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से हुआ।

तीसरा अध्याय।

(सूबे विहार में) विहार, राजगृह, बाढ़ और मोकामा जंकूशन।

विहार।

पटने के स्टेशन से २२ मील पूर्व बख्तियारपुर रेलवे स्टेशन है, जिससे १८ मील दक्षिण (२५ अंश ११ कला २८ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ३३ कला ५० विकला पूर्व देशांतर में) पटने जिले में विहार एक पुराना शहर है, जिसके नाम से यह प्रदेश सूबे विहार कहलाता है। बख्तियारपुर से विहार तक मेल कार्ट अर्थात् डाकगाडी चलती हैं, जो तीन घंटे में विहार पहुंच जाती हैं। रास्ते में ६ मील, ९ ½ मील और १४ मील पर ३ जगह घोड़े बदलते हैं। एक गाड़ी में ६ मोसाफिर बैठते हैं। एक आदमी का महसूल १ रुपया लगता है। पक्की सड़क पर मील के पत्थर लगे हैं। बख्तियापुर से आगे ३ मील पर धोवा नामक एक छोटी नदी और १५ मील पर एक तालाव मिलता है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय विहार में ४७७२३ मनुष्य थे; अर्थात् २२९१७ पुरुष और २४८०६ स्त्रियां। इनमें ३२५०१ हिन्दू, १५१०६

मुसलमान, ११९ जैन, और १ कृस्तान थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह बंगाल में ११ वां और भारतवर्ष में ७९ वां शहर है।

बिहार पटने जिले का सब डिवीजन है। वहां एक मुनसफ, दो दिपोटी मजिस्ट्रेट, एक स्कूल और एक अस्पताल है। शहर में एक छोटी लम्बी पहाड़ी है, जिसके ढालू छोर पर नीचे से ऊपर तक शहर का एक हिस्सा बसा है। बिहार के दक्षिण भाग में सदर सड़क के पास बेली साहब की बनवाई हुई बेली सराय नामक उत्तम इमारत है। इसकी सब कोठरियां मुंडेरे-दार और मोरव्वा बनी हैं। प्रत्येक के चारो तरफ द्वार बने हैं। कोठरियों के दो तरफ उत्तम बरंडे और बड़ा आंगन हैं। इससे दक्षिण दूसरे किते में इसी तरह की दूसरी इमारत है। अंगरेजी कायदे के रहने से इस सराय में हिन्दू मोसाफिर कम ठिकते हैं, मैं भी किराये के मकान में टिका था। शहर होकर राजगृह को सड़क गई है। शहर के पास पंचाना नामक छोटी नदी है। बिहार से ४० मील पश्चिम-दक्षिण गया तीर्थ है। बिहार में बड़ी तिजारत होती है। तिजारत की खास चीजें युरोपियन कपड़ा, चावल, कई प्रकार के गल्ले, तंबाकू आदि हैं। रेशमी और रुई के कपड़े की वहां दस्तकारी होती है। शाह मखदूम की क़बर के पास एक सालाना मेला होता है, जिसमें लगभग २०००० मुसलमान आते हैं। पुराने किले की तबाहियां लगभग ३०० एकड़ में फैली हुई हैं। यह अनुमान किया जाता है कि ईस्वी सन् प्रारम्भ होने के थोड़ेही पश्चात् यह मगध की पुरानी बादशाहत की राजधानी था।

राजगृह।

बिहार से १४ मील दक्षिण, कुछ पश्चिम औ बख्तियारपुर के रेलवे स्टेश-न से ३२ मील दक्षिण पटने जिले में राजगृह है, जिसको बहुत लोग राज-गिर भी कहते हैं। बिहार से २ मील तक पक्की सड़क, आगे कच्ची है। मेले के समय बख्तियारपुर और बिहार में एक्के, बैलगाड़ी और डोली सवारी के लिये बहुत मिलती हैं। बख्तियारपुर से राजगृह तक जगह जगह बस्तियों में टिकान और मोदी हैं। सड़क के किनारे पर मील के पत्थर और वृक्ष लगे हैं।

विहार से २ मील आगे बालू के मैदान में एक छोटी नदी की धारा, ३½ मील आगे दीपनगर में मोदियों के कई एक मकान और ६½ मील आगे महुआ वाग है।

महुआवाग से करीव २ मील पश्चिम एक दूसरी सड़क वड़गांवां को गई है, जिसको वहां के लोग रुक्मिणी के पिता राजा भीष्मक की राजधानी कुण्डिनपुर कहते हैं। परन्तु पुराणों में विदर्भ देश में कुण्डिनपुर लिखा है। (श्रीमद्भागवत, दशमस्कन्ध, ५२ वां और ५३ वां अध्याय—विदर्भ देश के पालन करने वाला राजा भीष्मक कुंडिनपुर का राजा था) दक्षिण के हैदरावाद राज्य के वीदर कसवे को लोग विदर्भ देश में कहते हैं। मगध देश में जरासन्ध की राजधानी राजगृह से वड़गांवा केवल ८ मील पर है। वड़गांवां एक छोटी वस्ती है। वस्ती से वाहर एक वौद्ध मन्दिर है, जहां किसी नियत समय में वहुत वौद्ध यात्री जाते हैं। वौद्ध लोगों के लिये नालन्द गांव वहुत पवित्र है। वड़गांवां में पुराने नालन्द के चिन्ह अव तक मिलते हैं। वस्ती के भीतर सूर्य का एक छोटा मन्दिर; वाहर सूर्यकुण्ड नामक एक कच्चा तालाव और वस्ती से थोड़ीही दूर पर जगह जगह चार पांच टीले हैं।

विहार से ९½ मील (महुआवाग से ३ मील) शिलाव नामक एक वड़ी वस्ती, जिसकी खझुली सुस्वाद होती है; १२½ मील पण्डितपुर; १३½ मील नया राजगृह वस्ती और १४ मील मेले की जगह है, जहां से करीव १ मील आगे ब्रह्मकुण्ड तक मलमास में मेला लगता है। राजगृह सूवे विहार के पटने जिले में एक छोटी वस्ती और मगध देश की पुरानी राजधानी का स्थान है, जो पूर्वकाल में जरासंध की राजधानी गिरिव्रज नाम से प्रसिद्ध था। चीन के रहने वाले फाहियान ने लगभग सन ४०० ई० में और हुएंत्सांग ने सातवीं शदी में राजगृह को देखा था। हुएंतसांग ने लिखा है कि यहां गरम पानी के कई झरने हैं।

राजगृह में सरस्वती नामक नदी दक्षिण-पश्चिम से वैभार पर्वत के पूर्वोत्तर ब्रह्मकुण्ड के पूर्व आई है और वहां से उत्तर की ओर गई है। नदी की

धारा छोटी है। स्नान के प्रसिद्ध घाटों पर केवल डुबकी देने योग्य पानी रहता है। ब्रह्मकुण्ड के पास सरस्वती को प्राची सरस्वती कुण्ड कहते हैं, जहां नदी के दोनों किनारों पर पक्के घाट बने हैं। और यात्रीगण प्रथम स्नान करते हैं।

सरस्वतीकुण्ड से पश्चिम वैभार पर्वत के पूर्वोत्तर पांव के पास मार्कण्डे क्षेत्र है। सरस्वतीकुण्ड से क्षेत्र तक पक्की सीढ़ियां बनी हैं। वहां नीचे लिखे हुए ७ कुण्ड हैं,-जिनमें ब्रह्मकुण्ड प्रधान है,—(१) मार्कण्डेकुण्ड, (२) व्यासकुण्ड, (३) गंगायमुनाकुण्ड, (४) अनन्तनारायणकुण्ड (५) सप्तर्षिधारा, (६) काशीधारा और (७) ब्रह्मकुण्ड। गंगायमुनाकुण्ड में एक ठंढ़ा और दूसरा गरम झरना है। दूसरे सब कुण्डों के झरने गरम हैं। कई झरनों के ऊपर आदमी के बैठने लायक नाले बने हैं, जिनमें वहां के चढ़े हुए पैसे लेने वाले आदमी बैठे रहते हैं। (अनन्तनारायणकुण्ड का नाम राजगृह महात्म्य में नहीं है) इन में सप्तर्षिधारा उत्तर और दक्षिण को लम्बी १ बावली है, जिसके पश्चिम की दीवार में ५ और दक्षिण २ झरने हैं; सातों जगह स्नान होता है। झरने निम्न लिखित सप्तर्षि के नाम से प्रसिद्ध हैं। अत्रि, भरद्वाज, कश्यप, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ट और यमदग्नि। परन्तु राजगृह माहात्म्य में यहां भरद्वाज, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ट, यमदग्नि, दुर्वासा और पराशर तीर्थ लिखा है। बावली के पश्चिम की दीवार में शिलालेख है, जिससे जान पड़ता है कि सम्वत १९०४ में यहां से १० कोस पूर्व-दक्षिण के रहने वाले एक आदमी ने इसको बनवाया। बावली के दक्षिण किनारे पर दोना के कायस्थ के बनवाए हुए एक छोटे मन्दिर में सप्तर्षियो की ७ मूर्तियां स्थापित हैं। उससे पूर्व और ब्रह्मकुण्ड से दक्षिण एक छोटा शिवमन्दिर और सप्तर्षिधारा के उत्तर किनारे पर एक शिवमन्दिर, एक कन्हैयाजी का मन्दिर और गयावाल पण्डे का बनवाया हुआ एक बड़ा पंच मन्दिर है, जिसमें देवताओं की स्थापना कभी नहीं हुई। सप्तर्षि धारा के पास ही पूर्व ब्रह्म कुण्ड है। राजगृह के सब कुण्डों से इसका जल अधिक गरम रहता है। कुण्ड में पानी के किनारे पर ब्रह्मा, लक्ष्मी और गणेश की मूर्तियां हैं। ब्रह्मकुण्ड

से पूर्व एक छोटे मन्दिर में वराहजी की मूर्ति है । और दक्षिण पहाड़ी के ढाल पर सन्ध्यादेवी का छोटा मन्दिर है; जिसके पास केदारकुण्ड है, जिस में पुत्रकामना के लिये वहुत स्त्री स्नान करती हैं । पश्चिम एक छोटे मन्दिर में विष्णु का चरणचिन्ह देख पड़ता है।

सरस्वतीकुण्ड से २०० गज पूर्व नीचे लिखे हुए ५ कुण्ड हैं,-(१)सीताकुण्ड, इसके उत्तर हाटकेश्वर महादेव का छोटा पुराना मन्दिर है । लोग कहते हैं कि तीर्थ निर्मान हुआ, तभी का यह मन्दिर है । हाटकेश्वर से उत्तर (२) सूर्य्य कुण्ड,-(३) चन्द्रकुण्ड, (४) गणेशकुण्ड और पांचवां रामकुण्ड हैं । सब कुण्डों में गरम झरने का पानी गिरता है। रामकुण्ड का एक झरना गरम और दूसरा ठण्ढा है। रामकुण्ड के पूर्व दीवार में शिलालेख है, जिसमें इस कुण्ड के बनने का सम्वत् और बनाने वाले का नाम लिखा है । राजगृहमाहात्म्य में इस कुण्ड का नाम नहीं है । सीताकुण्ड से पूर्व-दक्षिण विपुलाचल पर्वत की जड़ में ठण्ढे जल का झरना है । सीताकुण्ड से पूर्व विपुलाचल की जड़ के पास शृङ्गीकुण्ड है। एक ठण्ढे ओर दूसरे गरम झरने का पानी उसमें गिरता है । उस जगह किसी समय मखदूम साहब एक मुसलमान फकीर रहे थे। वह कुण्ड मुसलमानों के कब्जे में है। वेलोग इसको मखदूमकुण्ड कहते हैं।

सरस्वतीकुण्ड से आधे मील से अधिक उत्तर उसी सरस्वती को लोग वैतरणी कहते हैं। नदी के दोनों किनारों पर पक्के घाट बने हैं। दहिने किनारे पर बहुत लोग पिण्डदान और गोदान करते हैं । वहां बहुत बछियों को लेकर ग्वाले लोग खड़े रहते हैं । एक आने पर भी बछिया संकल्प कराकर वे लोग उसको लौटा लेते हैं। नदी के बाएं किनारे पर बहुत छोटे एक मन्दिर में माधवजी की एक मूर्ति है । वैतरणी से करीब ४०० गज उत्तर उसी सरस्वती को लोग शालग्रामकुण्ड कहते हैं । उसमें घाट बना है। यात्रीगण स्नान करते हैं। शालग्रामकुण्ड से पूर्व एक छोटे मन्दिर में धर्मेश्वर महादेव और धर्मेश्वर से पूर्व भरतकूप है । कई सीढ़ियों से भीतर जाकर उस कूप में स्नान होता है। उसमें झरने का पानी नहीं है। उस का जल साफ नहीं रहता। उस कूप का नाम राजगृहमाहात्म्य में नहीं है।

बहुतेरे यात्री एकही दिन में सरस्वती के तीनों घाटों पर अर्थात् सरस्वती-कुण्ड, वैतरणी और शालग्रामकुण्ड में और सम्पूर्ण झरनों के जल से और भरतकूप में स्नान करते हैं। कोई कोई २ दिन में स्नान कर्म समाप्त करता है। ब्रह्मकुण्ड और सप्तर्षि धाराकुण्ड के अतिरिक्त सब कुण्डों में जाने को एकही रास्ता है। सीढ़ियों पर मलमास में स्नान करनेवालों की बड़ी भीड़ रहती है। पुरुष और स्त्री सभी भींगे हुए कपड़े पहने हुए एक जगह से दूसरी जगह स्नान करते फिरते हैं। उस तीर्थ में स्नान करनेवालों का आश्चर्य दृश्य देखने में आता है। ब्रह्मकुंड और सीताकुण्ड के बीच में बहुतेरे लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को दौड़ते हैं। कोई अपने लड़के को कन्धे पर या गोदी में लेकर स्नान कराता फिरता है। किसी कुण्ड का गरम पानी असह्य नहीं है। मोरी द्वारा कई कुण्ड मिले हुए हैं।

सरस्वतीकुण्ड से दक्षिण ओर सरस्वती नदी में नदी के बाएं वानरी-कुण्ड नामक एक बहुत छोटा कुण्ड है, जिसका पानी लोग देह पर छिड़कते हैं। उस स्थान को वानरीतरण क्षेत्र कहते हैं। वानरीकुण्ड से कुछ दूर दक्षिण गोदावरी नामक एक छोटी धारा दक्षिण से आकर सरस्वती में मिली है। संगम से दक्षिण-पूर्व पहाड़ी टीले पर ज्वाला देवी का छोटा मन्दिर है।

सरस्वती और गोदावरी के संगम से पश्चिम सरस्वतीकुण्ड से १ मील दक्षिण-पश्चिम सरस्वती नदी के बाएं वैभार पर्वत के दक्षिण बगल में ११ गज लम्बी और ५½ गज चौड़ी सोनभण्डार नामक प्रसिद्ध एक गुफा है। उसके भीतर की छत दोनों तरफ ढालुवां है, जो मध्य में पृथ्वी से ३¾ गज ऊं-ची है। गुफाके पूर्व भाग में ४ मुखवाली १ बौद्धमूर्ति बैठी है। गुफा के द्वार पर टूटी हुई छोटी छोटी २ बौद्धमूर्तियां पड़ी हैं। गुफाके भीतर और द्वार के पास कई अक्षरों का घिसा हुआ लेख है। कोइ कोई यात्री गुफा के द्वार के बाहर खड़ी दीवार में आपना नाम लिख देते हैं। बौद्ध लोगों के लिये सोनभण्डार बहुत पवित्र है। उसी स्थान पर सन ई० के ५४४ वर्ष पहले बुद्ध की विद्यमानता में उनके चेलों में से ५०० आदमियों ने इकट्ठे होकर धर्मसभा की थी। वही बौद्धों का पहला जलसा कहलाता है।

राजगृह की पहाड़ियां लग भग १००० फीट ऊंची है, जिनमें शिलाजीत निकलता है। उनमें वैभार, विपुलाचल, जिसको महाभारत में चैतक लिखा है, रत्नगिरि जिसका नाम महाभारत में ऋषिगिरि लिखा है, उदयगिरि और सोनागिरि ये पांच पहाड़ियां प्रधान हैं। वैभार सरस्वतीकुण्ड से दक्षिण-पश्चिम है। उसके सिरे पर एक पुराने जर्जर मन्दिर में सोमनाथ और सिद्धनाथ २ शिवलिंग हैं। एक मील चढ़ाई के पीछे मन्दिर मिलता है, जहां बहुत यात्री जाते हैं। उस मन्दिर के आस पास ६ जैनमन्दिर हैं, जिनमें मलमास के मेले के समय यात्री लोग हिन्दूमन्दिर जान कर दर्शन करते हैं। मन्दिर के नौकर हिन्दू-मन्दिर कह कर पैसे चढ़वाते हैं। विपुलाचल सीताकुण्ड से पूर्व है, जिस पर ६ जैनमन्दिर हैं। उस से दक्षिण की पहाड़ी पर गणेशजी का एक छोटा मन्दिर है। रत्नगिरि विपुलाचल के दक्षिण है, जिस पर २ जैनमन्दिर हैं। उदयागिरि रत्नगिरि के दक्षिण है, जिस पर १ जैनमन्दिर है और उसके पश्चिम नीचे नाटकेश्वर महादेव का छोटा मन्दिर है। और सोनागिरि उदयगिरि से पश्चिम है, जिस पर १ जैनमन्दिर है। महाभारत में लिखा है कि इन पांच पहाड़ियों के मध्य में राजा जरासंध की गिरिव्रज नामक राजधानी थी। बहुतेरे जैन लोग खटोलियों में और पैदल उन पहाड़ों पर अपने तीर्थस्थान को जाते हैं। गयाजी के पर्वत तक पहाड़ियों का तांता लगा है। राजगृह से गया तीर्थ ३२ मील पश्चिम है।

सरस्वती कुण्ड से करीब ६ मील पूर्व गिरियेबस्ती के पास वैकुण्ठ नामक नदी और वैकुण्ठ तीर्थ है, जिससे उत्तर की ओर कण्ठेश्वर का मन्दिर है।

राजगृह एक समय मगध देश और जरासन्ध की राजधानी था, जो चारो ओर पहाड़ों से और उत्तर की ओर एक पुराने किले के खंडहर से वेष्टित है। सरस्वतीकुण्ड से करीब ४ मील दक्षिण बाणगंगा पहाड़ी नदी है, जिसके पार की बहार दीवारी जरासन्ध का बान्ध कहलाती है। और वहीं एक बाहर जाने का रास्ता है। राजगृह के पुराने कसबे की बाहर की दीवार का चिन्ह, जिसका घेरा ४ मील से अधिक है, अब तक देखने में आता है। बाणगंगा से उत्तर कई पुराने शिलालेख हैं, जो पढ़े नहीं जाते। रंगभूमि भी

उसी जगह है। लोग कहते हैं कि भीमने जरासंध को इसी जगह चीर डाला था। सरस्वती कुण्ड से करीब २ मील दक्षिण और वाणगंगा से २ मील उत्तर मणियारमठ (नागमणि) में अशोक महाराज का स्तूप और जैनलेख हैं। राजगृह में बौद्धो ने हिन्दुओं को निकाल कर अपना अधिकार किया था, परन्तु हिन्दुओं ने फिर उन्हे निकाल कर अपने तीर्थ स्थापित कर लिए।

सरस्वती कुण्ड से १२ मील पश्चिम तपोवन और गिरिव्रज नामक दो स्थान हैं, जिनको लोग जरासन्ध का भजनागार और बैठक कहते हैं। तपोवन में चारो भाई सनकादिकों के नाम से गरम झरने के ४ कुण्ड हैं। पर्वत लांघ कर वहां जाना होता है। मेले के दिनों में दुकान रहती हैं।

राजगृह का मेला मलमास में एक महीना रहता है, किंतु शुक्लपक्ष से कृष्णपक्ष में अधिक यात्री जाते हैं। आसपास के जिलो के लोग उस तीर्थ में बहुत जाते हैं। बहुतेरे यात्री पहुचने के दिन या दूसरे दिन स्नान करके लौट जाते हैं। कुण्डों में स्नान की भीड़ दिन भर रहती है। राजगृह और पण्डितपुर के ब्राह्मण राजगृह के पण्डे हैं; वे लोग यात्रियों के टिकने के लिये बहुत छप्पर लगाते हैं। ब्रह्मकुण्ड और सरस्वती कुण्ड से १ मील पर बाजार बसता है। मेले में कोई पशु बिकने को नहीं आता। नदी और झरनों के सिवाय वहां कई कूप हैं। मेले के आस पास के जंगल मेले से भर जाते हैं। इन्तज़ाम के लिये बिहार के एक हाकिम टिके रहते हैं। पहाड़ों पर और उनकी तराइयों में छोटे वृक्ष और झाड़ों का जंगल है। खटोली में बैठा कर पहाड़ों पर ले जाने वाले कुली मेले में मिलते हैं। मलमास के अतिरिक्त कार्तिकी पूर्णिमां, माघी अ-मावास्या और पूर्णिमां, बैसाख की अमावास्या, सोमवारी अमावास्या, ग्रहण आदि पर्वों में भी आस पास के बहुत लोग स्नान के लिये राजगृह में जाते हैं।

संक्षिप्त प्राचीनकथा—महाभारत-(शान्तिपर्व्व ५९ वां अध्याय) वेणु के पुत्र राजा पृथु के दो वन्दी थे सूत और मागध। प्रतापी पृथुने उनके ऊपर प्रसन्न होकर सूतको अनूप देश और मागध को मगध देश प्रदान किया।

(सभापर्व १३ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से राजसूय यज्ञ करने का प्रयोजन कह सुनाया। (१४ वां अध्याय) कृष्णचंद्र ने कहा कि हे

महाराज जरासंध संपूर्ण राजाओं का सौभाग्य पाकर पृथ्वीनाथ बनकर अपने तेज से सर्वोपर हुआ है। आप उसके जीवित रहते हुए कदापि राजसूय यज्ञ पूरा नहीं करसकेंगे। (१५ वां अध्याय) उसने सैकड़े पीछे ८६ भूपों को कैद कर रक्खा है। सौ में केवल १४ राजा शेष बचे हैं। (१७ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर के पूछने पर श्रीकृष्ण जरासंध का जन्म वृत्तान्त कहने लगे कि मगध देश में अति विक्रमभरे दूसरे इन्द्र के समान वृहद्रथ नामक एक राजा था। उसने काशीराज की दो कन्या से विवाह कियाथा। राजा की यौवन दशा कट गई, पर एक भी पुत्र नहीं उपजा। तब उसने दोनों रानियों के साथ एक तपस्वी चण्डकौशिक मुनि के पास जाकर उनको प्रसन्न किया और पुत्र के लिये प्रार्थना की। मुनि आम के वृक्ष की छाह में वैठकर जब ध्यान करने लगे, तब उनकी गोद में एक आम्र फल गिरा। मुनिवर ने पुत्र लाभ के लिये वह फल राजा को दिया। राजा ने अपने घर आकर अपनी दोनों पत्नियों को वह फल देदिया। उन्होंने आपस में बांट कर उस फल को खाया। १० महीने पूरे होने पर दोनों रानियों ने दो खंड शरीर प्रसव किये तब उन की आज्ञा से दो धात्रियों ने उन दो सुन्दर खण्डों को अन्तःपुर से निकाल कर एक चौराहे पर फेंक दिया। जरा नाम्नी एक राक्षसी ने उन खण्डों को लेलिया और सहजही में दोनों खण्डों को जोड़ दिया। दो आधी देहों के एक दूसरे से मिलतेही एक वीर कुमार बनगया। अनन्तर राक्षसी बच्चे को उठाने की चेष्टा करने लगी पर वह उठा नहीं सकी। बालक गहरे शब्द से रोने लगा। अनन्तर उस राक्षसी ने मानवी शरीर धर उस कुमार को ले कर सब वृत्तान्त कहने के उपरांत राजा को देदिया। (१८ वां अध्याय) जरा राक्षसी ने बालक को संधित किया, अर्थात् जोड़ा इस कारण से राजा वृहद्रथ ने बालक का नाम जरासंध रक्खा। (१९ वां अध्याय) जरासन्ध के बड़े होने पर राजा वृहद्रथ उसको मगध के राजसिंहासन पर वैठाकर अपनी दोनों रानियों के साथ बनको पधारे और तपोवन में बहुत दिनों तक तप करके स्वर्ग को सिधारे। जरासन्ध ने अपने वीर्य्य के प्रभाव से सब नरनाथों को अपने बस में कर लिया।

(२० वां अध्याय) ऐसा कह श्रीकृष्ण बोले कि संपूर्ण सुरासुर भी खुल्लम खुल्ली लड़ाई में जरासन्ध को परास्त नहीं कर सकेंगे, इसलिये भुजयुद्ध मेंही उसको जीतना उचित है। राजा युधिष्ठिर के सहमत होने पर श्रीकृष्णचन्द्र भीम और अर्जुन के सहित स्नातक ब्राह्मणों के वस्त्र पहिर कर इन्द्रप्रस्थ से मगधनाथ के धाम की ओर चले और गङ्गा और सोन के पार उतर कर मगधराज के छोर में आ पहुंचे। अनन्तर उन्होंने गोरथ नामक पर्वत में उतर कर मगधनाथ की पुरी देखो। (२१ वां अध्याय) श्रीकृष्ण बोले कि हे अर्जुन देखो मगधराज की राजधानी कैसी सुन्दर शोभा पारही है। ऊंची ऊंची चोटी लिये हुए ठंढे वृक्षवाले एक दूसरे से मिले हुए वैहार, वराह, वृषभ ऋषिगिरि और चैतक ये ५ पर्वत मानों एक गृह वनकर गिरिव्रज नगरी की रखवारी कर रहे हैं। पूर्वकाल में अंग वंगादि के राजा गण यहां के गौतम जी की कुटी में आकर प्रमुदित होते थे। देखो गौतम जी के आश्रम के निकट लोध्र और पीपल के वन कैसी सुन्दर शोभा दे रहे हैं। इसके पश्चात् श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन मगधपुरी की ओर चले और द्वारके निकट न जाकर चैतक पर्वत की चोटी को लांघ कर गिरिव्रज नगर में जाघुसे। वे लोग ३ कक्षाओं को पीछे छोड़ कर राजा जरासंध के निकट जा पहुंचे। राजाने इनका बड़ा सत्कार किया। उस काल भीम और अर्जुन मौन साधे थे। श्रीकृष्ण जरासन्ध से बोले कि हे नरनाथ यह दोनों नियम युक्त हैं। इस समय कुछ नहीं बोलेंगे, किंतु आधी रात बीतने पर तुम से वार्तालाप करेंगे। आधी रात बीतने पर राजा उन द्विजों के पास आया और कृष्णादि की निन्दा करके बोला कि स्नातक व्रतधारी ब्राह्मण माला आदि नहीं धारण करते, पर तुम फूल लगाये हो और तुम्हारी हथेलियों में धनुष के गुण चढ़ाने के चिन्ह बने हैं; सो तुम कहो कौन हो। कृष्ण बोले कि महाराज तुम हम को स्नातक ब्राह्मण कर केही जानो। (२२ वां अध्याय) बहुत बातें करने के पीछे कृष्णचन्द्र ने कहा कि हमने तुमको मारने के लिये ब्राह्मण वेष लिया है। मैं कृष्ण हूं और ये दोनों पाण्डु के पुत्र हैं। हम तुमको ललकारते हैं, स्थिर होकर लड़ो। अथवा सब भूपों को छोड़ दो। जरासन्ध बोला कि

जो तुम युद्ध की बात कहते हो तो मैं व्यूह युक्त सेनाओं से अथवा अकेले एक से, दो से वा तीनों से एकही बार या अलग अलग; चाहे जैसे हो, लड़ने में सम्मत हूं। (२३ वां अध्याय) कृष्णचन्द्र के पूछने पर तेजस्वी मगधनाथ ने भीम से लड़ने को कहा, तब जरासन्ध और भीम शस्त्र लिये हुए अति प्रमुदित चित्त से एक दूसरे से भिड़ गए। भीम और जरासन्ध की लड़ाई होने लगी जो कार्तिक मास की प्रथमा तिथि से आरंभ होकर त्रयोदशी तक निश दिन विना भोजन चली थी। चतुर्दशी की रात को जरासन्ध ने थक कर कुश्ती त्याग दी। (२४ वां अध्याय) भीम ने जरासन्ध को ऊँचे उठा कर १०० फेरा घुमाने के पश्चात् अपनी जंघे से उसकी पीठ नवा कर तोड़ डाली। अनन्तर कृष्णचन्द्र ने राजाओं को कारागार से छुड़ाया और जरासन्ध के पुत्र सहदेव को राज्यतिलक दिया। उसके पीछे भीम और अर्जुन के साथ वह इन्द्र प्रस्थ में आए।

(यह कथा श्री मद्भागवत दसमस्कंध के ७२ वें अध्याय में है। उसमें यह लिखा है कि कृष्णचन्द्र ने जरासंध से द्वंद युद्ध करने कहा, तब वह स्वीकार करके नगर से बाहर निकल कर भीमसेन के साथ गदा युद्ध करने लगा। कृष्ण के इसारा बताने पर भीम ने जरासंध के एक पांव को अपने पांव से दाब दूसरे पांव को भुजाओं से पकड़ कर चीर डाला)

(वन पर्व्व—८४ वां अध्याय) पुलस्त्य बोले कि तीर्थसेवी पुरुष राजगृह तीर्थ को जाय। वहां तीर्थों का स्पर्श करने से पुरुष आनन्दित होता है। वहां यक्षिणी को नैवेद्य लगाकर भोजन करने से यक्षिणी के प्रसाद से पुरुष की ब्रह्महत्या छूट जाती है। मणिनाग तीर्थ में जाने से हजार गोदान का फल होता है। जो पुरुष मणिनाग तीर्थ की उत्पन्न हुई वस्तुओं को खाता है, उसे सर्प काटने का विष नहीं चढ़ता। वहां एक रात रहने से हजार गोदान का फल होता है। वहां से ब्रह्मर्षि गौतम के वन में जाना उचित है। वहां अहल्या-कुण्ड में स्नान करने से मोक्ष मिलती है।

विष्णुपुराण—(चौथा अंश २३ वां और २४ वां अध्याय) सोमवंश के पल्लव से उत्पन्न मागध वंश में जरासंध आदि प्रतापीराजा हुए, जिनके क्रमिक

नाम ये हैं—(१) जरासंध, (२) सहदेव, (३) सोमापि, (४) श्रुतवान, (५) अयुतायु, (६) निर्मित्र, (७) सुक्षत्र, (८) बृहत्कर्मा, (९) सुश्रम, (१०) दृढ़सेन, (११) सुमति, (१२) सुवल, (१३) सुनीत, (१४) सत्यजित्, (१५) विश्वजित् और (१६ वां) रिपुंजय। इतने बृहद्रथवंश के मागध राजा कलि-युग के १००० वर्ष बीतने तक होंगे।

रिपुंजय के मंत्री शुनक रिपुंजय को मार कर अपने पुत्र प्रद्योत को राज-सिंहासन पर बैठावेगा। प्रद्योत वंशी ५ राजा १३८ वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) प्रद्योत, (२) पालक, (३) विशाखयूप, (४) जनक, और (५) नन्दि-वर्द्धन।

शिशुनाग वंश के १० राजा ६६२ वर्ष राज्य करेंगे;—(१) शिशुनाग, (२) काकवर्ण, (३) क्षेमधर्मा, (४) क्षेत्रज्ञ, (५) विंदुसार, (६) अजातशत्रु, (७) दर्भक, (८) उदयाश्व, (९) नंदिवर्द्धन और (१० वां) महानंद।

नंद और उसके पुत्र गण १०० वर्ष तक राज्य करेंगे। महानंद की शूद्री स्त्री से उत्पन्न नंद नामक पुत्र पृथ्वी का एक राजा होगा। उस के सुमाली इत्यादि ८ पुत्र होंगे। चाणक्य नामक ब्राह्मण छल से नन्दों को मार कर चंद्रगुप्त को राजसिंहासन पर बैठावेगा। १० मौर्यवंशी राजा १३७ वर्ष तक राज्य करेंगे। (१) चंद्रगुप्त, (२) विन्दुसार, (३) अशोकवर्द्धन, (४) सुयशा, (५) दश-रथ; (६) संगत, (७) शालिशुक, (८) सोमशर्मा, (९) शतधन्वा और (१० वां) बृहद्रथ।

शुंगजाति के १० राजा ११० वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) पुष्पमित्र, (२) अग्निमित्र, (३) सुज्येष्ठ, (४) वसुमित्र, (५) आर्द्रक, (६) पुलिंदक, (७) घोषवसु, (८) वज्रमित्र, (९) भागवत और (१० वां) देवभूति।

वसुदेव नामक कण्व वंशी अपने स्वामी देवभूति को मार कर राज्य सिंहा-सन पर बैठेगा। ३५ वर्ष तक उस वंश के ४ राजा राज्य करेंगे—(१) वसु-देव, (२) भूमिमित्र, (३) नारायण और (४ था) सुशर्मा।

क्षिप्रनामक अंध्रक वंशी अपने स्वामी सुशर्मा को मार कर राजा होगा। उस वंश के ३० राजा ४५६ वर्ष तक राज्य करेंगे;—क्षिप्र, कृष्ण, श्रीशांतकर्ण,

पूर्णोत्संग, शाककर्णी, लंबोदर, द्विविलक; मेघस्वाती, पटुमान, अरिष्टकर्मा, हालेय, पत्तलक, प्रविल्लसेन, सुनंदन शातकर्णी, चकोरशातकर्णी, शिवस्वाति गोमती, पुलिमान, शातकर्णी, शिवश्री शिवस्कंध, यज्ञश्री, विजय, चंद्रश्री, और पुलोमच। ये ३४५६ वर्ष राज्य करेंगे।

उसके पीछे ७९ राजा १३९९ वर्ष तक राज्य करेंगे; ७ आभीर, १० गर्दभिल, १६ शकवंशी, ८ यवन, १४ तुषार अर्थात् गोरा, १३ मुंड और ११ मौनेय। उसके पश्चात् पौर नामक ११ राजा ३०० वर्ष राज्य करेंगे इत्यादि। (श्रीमद्भागवत द्वादश स्कंध के प्रथम अध्याय में भी यह वंशावली है।)

भविष्यपुराण में (१४वां अध्याय)—कलियुग के राजाओं का वर्णन इस भांति है;—

कुरुवंशो, इक्ष्वाकुवंश के राजा और मागधवंश के राजा एक हजार वर्ष तक

कलि में राज्य करेंगे	१०००
प्रद्योतवंशी ५ राजा	१३८
शिशुनाग आदि १० राजा	३६०
शूद्री के गर्भ से उत्पन्न नन्द राजा और उसके ८ पुत्र	१००
चन्द्रगुप्त आदि मौर्य्यवंशी १० राजा	१३७
शुंग जातिके १० राजा	११०
कण्ववंशी	३४५
इनके सेवक शूद्र आन्ध्रवंशी ३० राजा	४५६
आभीर ७ राजा	१००
गर्दभीनामक १० राजा	९८
कंक नामक १६ राजा	२००
उज्जैनका विक्रमादित्य	१३५
शालिवाहन	१००
८ यवन और १६ तुरुष्क	३५०
गुरुण्ड नामक १० राजा	११६
मौन नामक ११ राजा	३००

भूत नन्द आदि राजा	...	...	...	....	१०८
वह्लखंड राज्य ...	...	...	...	...	४१२
गौरमुख नामक राजा	...	...	...	...	१८०
हजारों राजा ...	...	...	...	...	३५०
विजय के वंशमें ...	...	...	...	...	५५०
नागार्गुन वंश ...	...	...	...	...	१०००
बलि राजाके घराने में	...	...	....	...	११००

इसके पीछे शूद्र म्लेक्ष आदि राजा होंगे; सब जगत् म्लेक्षमय होजायगा।

बाढ़।

बख्तियारपुर से ११ मील (बांकीपुर जंक्शन से ३९ मील) पूर्व बाढ़ का रेलवे स्टेशन है। सूबेविहार के पटना जिले में गंगा के दहिने किनारे पर बाढ़ एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बाढ़ में १२३६३ मनुष्य थे; अर्थात् ९३०५ हिंदू, २९६५ मुसलमान, ५० जैन और ४३ क्रुस्तान।

गंगा के किनारे पर देवताओं के कई मन्दिर, जिनमें उमानाथ महादेव का मन्दिर प्रधान है, बने हुए हैं। कसवे में देशी पैदावार की तिजारत होती है।

मोकामा जंक्शन।

मोकामा जंक्शन से रेलवे लाईन ३ ओर गई है।

(१) मोकामा घाट से उत्तर की ओर बंगाल नर्थवेष्ट रेलवे;—

मील—प्रसिद्धष्टेशन।

२ मोकामाघाट।

२२ सेमरियाघाट (बोट द्वारा)।

६० समस्तीपुर जंकशन।

समस्तीपुर से पश्चिमोत्तर ३२ मील मुजफ्फपुर जंक्शन, ८१ मील मोतीहारी, ९४ मील सुगौली और १०८ मील बेतिया और समस्तीपुर से २३ मील उत्तर दरभंगा।

मुजफ्फरपुर जंक्शन से दक्षिण कुछ पश्चिम ३१ मील

हाजीपुर और ३५ मील सोनपुर और ३५ मील सोनपुर। दरभंगा जंक्शन से पश्चिमोत्तर १४ मील कमतोल; २६½ मील जनकपुर रोड; ४२ मील सीतामढ़ी और ६१ मील वैरगिनिया और दरभंगा से पूर्वोत्तर १२ मील सकरी, ४३ मील निर्मली, ५३ मील भभटियाही, ६० मील राघवपुर ६७ मील प्रतापगंज और ७५ मील कोशी नदी के दहिने कनवाघाट।

(२) मोकामा से पूर्व-दक्षिण इष्टइंडियन रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध ष्टेशन।

२० लखीसराय जंक्शन (आगे के ष्टेशन लखीसराय में देखो)।

(३) मोकामा से पश्चिम इष्टइंडियन रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध ष्टेशन।

१७ बाढ़।

२८ बख्तियारपुर।

५० पटना शहर।

५६ बांकीपुर जंक्शन।

(आगे का ष्टेशन पटना और बांकीपुर में देखो)।

चौथा अध्याय।

(सूबे बिहार में) मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, बेतिया (स्वतंत्र) नैपाल और मुक्तिनाथ।

मुजफ्फरपुर।

मोकाम जंक्शन से ६० मील उत्तर; कुछ पश्चिम, समस्तीपुर जंक्शन; और समस्तीपुर से ३२ मील पश्चिमोत्तर मुजफ्फरपुर रेलवे का जंक्शन है। सूबे बिहार के पटने विभाग के तिरहुत में (२६ अंश ७ कला २३ विकला उत्तर

अक्षांश और ८५ अंश २६ कला ५२ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान और जिले का प्रधान कसवा, छोटी गंडकी नदी के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर मुजफ्फरपुर है।

सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय मुजफ्फरपुर कसवे में ४९१९२ मनुष्य थे; अर्थात् २७१६५ पुरुष और २२०२७ स्त्रियां। इन में ३५१९६ हिन्दू, १३६३८ मुसलमान, २४९ कृस्तान, ३ पारसी १ यहूदी, और १०५ दूसरे थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ७७ वां, बंगाल में १० वां और विहार में ७ वां शहर है।

कसवा साफ है; इसकी सड़कें, जो खास करके पूर्व से पश्चिम गई हैं, अच्छी वनी हुई हैं। वाजार में एक सीताराम का और दूसरा शिव का वड़ा मन्दिर और कचहरी के निकट एक वड़ा तालाव है। इन के अलावे मुजफ्फरपुर में सिविल कचहरियां जेलखाना, अस्पताल, और कई एक स्कूल हैं और छोटी गंडकी और रेलवे द्वारा वड़ी तिजारत होती है।

मुजफ्फरपुर कसवे से लगभग २० मील पूर्व, लखनदेई नदी के एक मील पश्चिम अंवराई गांव के निकट फागुन और वैशाख की शिवरात्रि के समय भैरवनाथ का मेला होता है और लगभग एक सप्ताह रहता है। मेले में वैल टट्टू और कपड़े वर्तन इत्यादि वस्तु विकती हैं। वहां भैरवनाथ महादेव का मन्दिर है।

मुजफ्फरपुर जिला—यह जिला तिरहुत के, जो सन १८७५ में दरभंगा और मुजफ्फरपुर दो जिले वने थे, पश्चिमी भाग में है। इसके उत्तर नैपाल का स्वाधीन राज्य; पूर्व दरभंगा जिला; दक्षिण गंगा, वाद पटना जिला और पश्चिम चंपारन जिला और वड़ी गंडकी नदी, जो सारन जिले से इसको अलग करती है, है। जिले की सब से अधिक लम्वाई उत्तर से दक्षिण तक ९६ मील और सव से अधिक चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ४८ मील और इसका क्षेत्रफल ३००३ वर्गमील है। छोटी गंडकी नदी मुजफ्फरपुर कसवे के पास वहती है और वागमती, वड़ीगंडकी, लखनदेई और वया जिले की प्रधान नदियां हैं। इस जिले में गाय बहुतायत से पाली जाती हैं, उन के वच्चे दूर २ के देशों में खरीद होकर जाते हैं।

जिले में सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय २६८९४९२ और सन१८८१ में २५८२०६० मनुष्य थे; अर्थात २२६५३८० हिन्दू, ३१६३०८ मुसलमान और ३७२ कृस्तान। जातियों के खाने मे २९९१२७ अहीर, १८९८२७ दुसाध, १७१६३७ भूमिहार, १६७५९४ राजपूत, १४१५५१ कोइरी, १२२८३७ चमार, ११५११७ कुर्मी, ९६२०६ ब्राह्मण, ८९८६३ माला, ८२१५२ कांदू, ५२७७३ धानुक और शेप में दूसरी जातियां थी। १८९१ में इस जिले के कसबे मुजफ्फरपुर में ४९१९२, हाजीपुर में २१४८७, लालगंज में १२४९३, मनुष्य थे। जिले मे महनर, सरसोंधा, सीतामढ़ी, घटारो, वहिलवारा, कंता, शिवहर, मानिकचक, वसंतपुर, धनौली, इत्यादि वड़ी वस्तियां हैं।

मोतीहारी।

मुजफ्फरपुर से ४९ मील (समस्तीपुर जंकशन से ८१ मील) पश्चिमोत्तर मोतीहारी का रेलवे स्टेशन है। सूबे विहार के पटना विभाग में चंपारन जिले का सदर स्थान एक झील के पूर्व किनारे पर मोतीहारी एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मोतीहारी में १३१०८ मनुष्य थे, अर्थात् ९६०८ हिन्दू, ३४६३ मुसलमान, ३५ कृस्तान और २ बौद्ध। मोतीहारी में छोटा वाजार, सिविल आफिस; जेलखाना, नील की कोठी, अफीम का ओफिस, अस्पताल और स्कूल हैं। छपरे के जज दौरे के समय मोतीहारी में जाकर कचहरी करते हैं।

अरेराज महादेव—मोतीहारी से ४ या ५ मील पश्चिमोत्तर एक पोखरे के पास अरेराज गांव में महादेव का मंदिर है। फाल्गुण की शिवरात्रि को वहां मेला होता है और लग भग १ सप्ताह रहता है। किसान लोग धान की वाल वहां चढ़ाते हैं। वालों की ढेर लग जाती है। वहुतेरे लोग शिव को पगड़ी चढ़ाते हैं, अर्थात् शिवके मंदिर से पार्वती के मंदिर तक पगड़ी लगा देते हैं। गांव में एक वहुत पुराना स्तंभ है।

चंपारन जिला—यह सूबे विहार के पश्चिमोत्तर कोने में पटना विभाग का जिला ३५३१ वर्गमील क्षेतफल में फैला है। जिले के उत्तर स्वाधीन

नैपाल राज्य; पूर्व मुजफ्फरपुर जिला; दक्षिण मुजफ्फरपुर और सारन जिला; और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश में गोरखपुर जिला और नैपाल राज्य का एक हिस्सा है। जिले का सदर स्थान मोतीहारी और प्रधान कसबा वेतिया है। जिले के उत्तरीय भाग में ऊंची नीची भूमि है। गंडकी नदी. जो यहां शालिग्रामी कहाती है, और इस जिले के पश्चिमी सीमा पर दूर तक वहती है, नैपाल राज्य में वहती हुई त्रिवेणी घाट के निकट इस जिले में प्रवेश करती है। छोटी गंडकी नदी, जिसका नाम स्थान २ में भिन्न २ है, जिले में वहती है, जिसको बहुत स्थानों में सूखी ऋतुओं में हल कर लोग पार होजाते हैं। वागमती नदी जिले की पूर्वी सीमा पर वहती है। जिले के भीतर १५० वर्गमील के क्षेत्रफल में ४३ झीलों का लम्बा जंजीर है। छोटी पहाड़ी नदियों की वालू धोकर कुछ सोना निकाला जाता है। लोग कहते हैं कि पहले वहुत सोना निकलता था। सम्पूर्ण जिले में भूमि के नीचे कंकड़ का एक तह है। जंगलों में सोवीता नामक घास, जिसके रस्से वनते हैं; नरकट, जिसकीचटाई वनती है; मधु, मोम, लाही इत्यादि वस्तु होती हैं।

जिले में सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय १८५४०३८ और सन् १८८१ में १७२१६०८ मनुष्य थे; अर्थात् १४७६९८५ हिन्दू, २४२६८७ मुसलमान और १९३६ कृस्तान। जातिओं के खाने में १६९२७४ ग्वाला, ११२७८९ चमार, १०३८९३ कोइरी, ८८७२१ कुर्मी, ८१९६१ दुसाध, ८०७६४ राजपूत, ७६२८४ ब्राह्मण, ६६५६२ कांदू, ५५४११ मलाह, ५२८४२ तेली, ४२८० भुंइहार, २८४११ कायस्थ, शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय चंपारन जिले के कसवे वेतिया में २२७८० और मोतीहारी में १३१०८ मनुष्य थे। जिले में मधुवनी और केसरिया छोटे कसवे हैं और वेतिया, सीताकुंड, अरेराज और त्रिवेणी घाट में सालाना मेला होता है।

इतिहास—चंपारन जिले का कोई खास इतिहास नहीं है। सन १८६६ ई० में सारन जिले के दो भाग करके चंपारन जिला बनाया गया। अवतक सारन के सेशन जज नियत समय पर छपरे से आकर मोतीहारी में

कचहरी करते हैं। जिले के कई एक स्थानों में दिलचस्प पुरानी निशानियां हैं। सन् ई० से पहले चंपारन जिला मगध के राज्य का एक भाग था। अरेराज गांव में एक वहुत पुराना स्तम्भ और केसरिया गांव में एक ईंटे का वड़ा टीला, जिसके ऊपर ६२ फीट ऊंचा ६८ फीट व्यास के ईंटे का वहुत पुराना स्तूप है, देखने में आता है।

सन् १८५७ के वलवे के समय जुलाई में सुगौली में सवारों की १२ वीं पल्टन अचानक वागी हो गई। सवारों ने अपने कमांडर और उसकी स्त्री और लड़कों को तथा छावनी के सम्पूर्ण यूरोपियनों को मार डाला।

वेतिया।

मोतीहारी से २७ मील और मुजफ्फरपुर से ७६ मील पश्चिमोत्तर वेतिया का रेलवे स्टेशन है। विहार के चंपारन जिलेमें सव से वड़ा कसवा, प्रधान तिजारती जगह और सव डिवीजन का सदर स्थान हड़हा नदी के पास वेतिया है।

सन् १८९१ को मनुष्य-गणना के समय वेतिया में २२७८० मनुष्य थे; अर्थात् १४६६८ हिन्दू, ६८७८ मुसलमान और १२३४ कृस्तान।

वेतिया में यहां के महाराज का उत्तम महल वना हुआ है और एक रोमन कैथलिक चर्च, जो सन् १७४६ ई० में वना था, और खैराती अस्पताल है। प्रति वर्ष दशहरे के समय वेतिया में काली का वड़ा मेला होता है, जिस में लग भग ३०००० मनुष्य आते है और घोड़े, वैल, गाय, भैंस, कपड़ा, वर्तन, मिठाई, किराने की चीजें, आदि वस्तु विकती हैं। मेला १५ दिन तक रहता है। महाराज के महल के पास काली जी के मंदिर में काली की विचित्र प्रतिमा वनाकर रक्खी जाती है। अंत में उसको लोग नदी में वहा देते हैं।

इतिहास—सन् १६५९ ई० में राजा गजसिंह ने वेतिया को वसाया। दिल्ली के वादशाह शाहजहां ने उनकों राजा की पदवी दी थी। सन् १८३० में लार्ड विलियम वेंटिंग ने उस समय के राजा को महाराज की पदवी दी। वेतिया के महाराज सर हरेन्द्रसिंह वहादुर के. सी. आइ. ई. के पिता महाराज इन्द्रकिशोरसिंह वहादुर वड़े दानी थे।

रामनगर—बेतिया से २३ मील पश्चिमोत्तर चंपारन जिलेमें रामनगर, जो केवल महाराज के रहने से प्रसिद्ध है, एक बस्ती है। वहां के राजा क्षत्री हैं, जिनके पुरुषों को दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने सन् १६७६ ई० में राजा की पदवी दी थी, और अंगरेजी गवर्नमेण्ट ने सन १८६० ई० में उस पदवी को दृढ़ कर दिया। राज्य की मालगुजारी खास करके रामनगर के जंगलों से आती है।

नैपाल।

मोतीहारी और बेतिया के बीच में मोतीहारी से १३ मील और मुजफ्फरपुर से ६२ मील पश्चिमोत्तर सुगौली में रेलवे का स्टेशन है। यात्री लोग वहां रेलगाड़ी से उतर कर नेपाल के काठमांडू में पशुपतिनाथ के दर्शन के लिये जाते हैं। सुगौली से उत्तर पहाड़ी मार्ग से ९० मील काठमांडू है। सुगौली से भीमपदी तक ६६ मील जाने के लिये गाड़ी और पालकी की सवारी मिलती हैं। प्रत्येक कंहार का भाड़ा ३ रुपये से कम लगता है। भीमपदी से उत्तर पहाड़ के ऊपर जाने के लिये छींका (कण्डी) और झूला की सवारी मिलती हैं। छींका बांस या बेंत का एक टोकड़ा है, जिसको नेपाली लोग चोको कहते हैं। पहाड़ी कूली उसमें आदमी को बैठा कर पीठ पर पीछे लटका लेते हैं और एक लाठी हाथ में लेकर उसी के सहारे से चलते हैं।

काठमांडू का मार्ग—सुगौली के रेलवे स्टेशन से १७ मील रकसौल, ३० मील सिमरावासा, ४० मील बिचकी, ४६ मील चूड़ियाघाटी, ५२ मील हिटाई, ६६ मील भीमपदी, ६८ मील सीसागढ़ी, ७१ मील ताम्बा खानि, ७९ मील चिटंग, ८१ मील थानकोट और ९० मील काठमांडू है। इन सब स्थानों में रहने के लिये मकान और खाने पीने का सब सामान मिलता है।

सुगौली के स्टेशन से हर्दिया कोठी की राह होकर १७ मील उत्तर अंगरेजी और नैपाल राज्य की सीमा पर रकसौल है। सुगौली से रकसौल तक रेल बनाने की तजवीज होती है। रकसौल से आगे १३ मील सिमरा वासा है। सिमरा वासा से नैपाली तराई का जंगल आरंभ होता है और जंगल के

बीच में बालू और कंकड़ की राह से १० मील पर बिचकी नामक स्थान पर पहुंचना होता है। बिचकीसे ६ मील चूड़ियाघाटी तक पहाड़ी रस्ताहै। चूड़ियां-घाटी से हिटाई तक ६ मील नीचा ऊंचा कठिन रास्ता मिलता है। सम्पूर्ण मार्ग के पास की भूमि बांस और वृक्षों के घने जंगल से ढंकी हुई है। हिटाई से आगे १४ मील भीमपदी तक तीव्रगामिनी नदी के किनारे किनारे मार्ग बहुत सुन्दर है। भीमपदी हिमालय के पांव पर स्थित है। वहां बाजार और गोले हैं। वहां तक बैल और टट्टू जाते हैं और हलकी गाड़ी भी जा सकती है। उससे आगे केवल कूली बोझ ले जाते हैं। भीमपदी से करीब २ मील सीसागढ़ी-किलेतक कड़ीचढ़ाईहै,जहां नेपाल के महाराज के अफसर रहते हैं। सीसा-गढ़ी से आगे ३ मील ताम्बाखानि तक पानीनी नामक नदी के किनारे मार्ग क्रमशः नीचाही होता चला गया है। ताम्बाखानि से आगे ८ मील चिटंग तक मार्ग बड़ा दुस्तर है। राहसर्वत्र ढालू है। इस रास्ते से धीरे धीरे पांव रख कर बड़े भयसे चलना होताहै। जगह जगह समतल भूमि है, जहां थक जाने से आदमी विश्राम कर लेताहै। चिटंग से उलटी सीधी चक्करदार राह से चन्द्रगढ़ी पहुंचना होता है।वहांसे फिर नीची भूमि मिलती है। ढालू मार्ग से २ मील उतर कर थानकोट में यात्री पहुंचते हैं। थानकोट से आगे ९ मील काठमांडू तक मार्ग सुन्दर और चौड़ा है।

काठमांडू—नेपाल की राजधानी काठमांडू (२७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश १२ कला पूर्व देशांतर में) हिमालय पहाड़ की एक घाटी में समुद्र के जल से लगभग ४५०० फीट ऊपर विष्णुमती और बागमती नदी के संगम के निकट, विष्णुमती के पूर्व किनारे पर एक सुन्दर शहर है। विष्णुमती नदी पर दो पुल बने हैं, जिन में से एक पर होकर एक सड़क शहर से हथियार खाना और परेड की भूमि तक और दूसरे पर होकर दूसरी सड़क सीधी शंभुनाथ के मंदिर को गई है। शहर के मकान जो खास कर ईंटे से बने हुए, और खपड़ें से छाए हुए हैं, २ मंजिले से ४ मंजिले तक बने हैं। उन में से बहुतेरों में काठ का बहुत काम है और खिड़कियां तथा बालाखाने बने है; जिनमें उत्तम नकाशी का काम है। काठमांडू में कभी मनुष्य

गणना नहीं हुई; किंतु शहर में ५००० मकान और ५०००० मनुष्य अनुमान किए गए हैं। शहर की सड़कें तंग और मैली हैं। महाराज का महल, दरबार स्कूल, वीर अस्पताल इत्यादि मकान देखने योग्य हैं। शहर की सम्पूर्ण सड़क और गलियों के बगलों में देवमंदिर देख पड़ते हैं। शहर के पूर्वोत्तर फाटक से दक्षिण राजा प्रतापमाली और उसकी रानी का बनवाया हुआ रानीपोखरी नामक तालाव के मध्य में एक मंदिर है। तालाव के पश्चिम किनारे पर एक ऊंचा पुल बना है। परेड की भूमि से पश्चिम पूर्व समय के नेपाल राज्य के प्राइम मिनिष्टर जनरल भीमसेन थापा का बनवाया हुआ एक पत्थर की नेव पर २५० फीट ऊंचा सुन्दर स्तम्भ है। बागमती के किनारे पर नेपाल के प्राइम मिनिष्टर सर जंगबहादुर के बनवाये हुए मंदिर के पास एक ऊंचे स्थान पर सर जंगबहादुर की प्रतिमा खड़ी है। काठमांडू से लगभग १ मील दक्षिण बागमती के उत्तर किनारे पर पुल के पास एक बड़ी इमारत है, जिसमें सर जंगबहादुर रहते थे। शहर से १ मील उत्तर अंगरेजी रेजीडेन्ट के रहने की कोठी है। शहर से पूर्वोत्तर गत प्राइम मिनिष्टर सर रणोद्धीपसिंह के रहने का स्थान फैला हुआ है। काटमांडू और इसकी शहर तलियों में लगभग १२००० फौज और १५० तोपें रहती हैं और कई एक मेगज़ीन बने हैं। काठमांडू के पड़ोस में भातगांव, पाटन और थानकोट कसबे हैं। काठमांडू के निवासियों में नेवार जाति के आदमी अधिक हैं। इनमें से लगभग आधे बौद्ध मतावलम्बी हैं।

काठमांडू से २ मील दक्षिण, पूर्व को झुकता हुआ, बागमती नदी के पार ललितपट्टन कसबा और ८ मील पूर्व, अग्निकोन को झुकता हुआ भातगांव कसबा है; जिसमें गुरु दत्तात्रेय का मन्दिर और महाराज का एक महल बना है और ब्राह्मण बहुत बसते हैं। काठमांडू से ४१ मील पश्चिम वायु कोन को झुकता हुआ गोरखा बस्ती है, जिसमें गोरखनाथ का एक मन्दिर बना हुआ है।

महाराज का महल—शहर के मध्य में पत्थर से बना हुआ बहुत बड़ा महाराज का महल है। इसमें उत्तम प्रकार से नकाशी का काम हुआ है। महल के उत्तर तालीजू का मन्दिर; दक्षिण बसन्तपुर और नया दरबार; पूर्व शाहीबाग और अस्तबल, और पश्चिम महल का प्रधान अग्र भाग है। महल

के आगे सुन्दर सड़क और बहुतेरे देवमन्दिर हैं, जिनमें से बहुतेरों के शिखर में एकहरी, दोहरी तथा तेहरी चौकूटी अर्थात् एक प्रकार की छाजनी, जो मुलम्मेदार तांबे के पत्तर या पीतल के पत्तरों से छाई हुई हैं, बनी हैं। चौकूटियों के चारों बगलों की ओरियानिओं में बहुतेरी छोटी घंटियां, जो हवे से बजती हैं, लगी हैं। मन्दिर उत्तम नक्काशी और रंगों से भूषित हैं। कई एक मन्दिरों के द्वार के पास पत्थर के २ बड़े सिंह बने हुए हैं और कई एक के आगे गरुड़ की प्रतिमा हैं। महल से कुछ दूर पर एक मंदिर के निकट पत्थर के २ स्तंभों में एक बहुत बड़ा घण्टा लटका है और एक मकान में ८ फीट व्यास वाले २ बड़े नक्कारे रक्खे हुए हैं। महल के अग्र भाग के आगे सड़क है।

तालीजू का मन्दिर—राजमहल के पास उत्तर ओर ऊपर लिखे हुए मन्दिरों के ढांचे का तालीजू का विशाल मन्दिर है। लोग कहते हैं कि सन् १५४९ में राजा महेंद्रमाली ने इसको बनवाया। केवल राजपरिवार के लोग इसमें पूजा करते हैं।

मुछंदरनाथ का मन्दिर—बागमती नदी के पास मुछंदरनाथ का सुन्दर मन्दिर है। मुछंदरनाथ नेपाल के प्रधान देवता हैं। लोग इनको नेपाल का रक्षक समझते हैं। मेख की संक्रांति के दिन बड़ी धूम धाम से मुछंदरनाथ की रथयात्रा का उत्सव होता है।

कथा ऐसी है कि एक समय नेपाल में १२ वर्ष निवर्षन हुआ। लगभग सन ४३७ ई० में नरेंद्रदास नामक एक नेपाली राजा एक प्रसिद्ध बौद्ध संत को आसाम से नेपाल में लाया। संत के आने पर बड़ी वर्षा हुई और अकाल जाता रहा। तब नरेंद्रदास ने उस संत के स्मरणार्थ उसके नाम से मुछंदरनाथ का मन्दिर बनवाया और एक सालाना तिहवार नियत किया, जो अब तक होता है और सब तिहवारों से बड़ा समझाजाता है।

पशुपतिनाथ का मन्दिर—महाराज के महल से १ कोस उत्तर एक चौगान के भीतर पशुपतिनाथ का मन्दिर है, जिस के चारो ओर दरवाजे और दालान बने हैं। मन्दिर के मध्य में प्रायः ३ हाथ ऊंची पाषाणमयी पंचमुखी पशुपतिजी की मूर्ति है। मूर्ति के चारो ओर लोहे का जंगला बना है।

मन्दिर के एक तरफ दालान से बाहर सोनहलापुलम्मेदार बहुत बड़ा नन्दी और एक तरफ दालान में घंटा है। मन्दिर के पूर्व तरफ विष्णुमती नदी बहती है, जिस में यात्री लोग स्नान करते हैं। नदी पर बड़ा पुल है, जिस से होकर भातगांव जाना होता है। जो लोग गंगाजल लेजाते हैं, वे उसको पंडाओं द्वारा पशुपतिनाथ पर चढ़ाते हैं। मन्दिर के समीप बहुतेरी पक्की दो मंजिली धर्मशालाएं बनी हैं, जिनमें यात्री लोग टिकते हैं।

फाल्गुन में पशुपतिनाथ के दर्शन का मेला होता है। कृष्ण पक्ष की शिवरात्रि के दिन मन्दिर में बड़ी भीड़ होती है। कभी कभी उस दिन नेपाल के महाराज पशुपतिनाथ के दर्शन के लिये आते हैं। दूसरे तीर्थों के समान नेपाल के पण्डे यात्रियों से कुछ हठ नहीं करते। वे थोड़ेही में प्रसन्न होजाते हैं। मन्दिर के आस पास कई मीलों के बीच में अनेक देव देवियों के मन्दिर हैं, जिन में गुह्येश्वरी, वागीश्वरी और गणेशजी प्रसिद्ध हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—लिंगपुराण—(७ वां अध्याय) पिशाच से देवता पर्य्यंत सब जीव पशु कहाते हैं, उन सब का स्वामी होने से शिवजी का नाम पशुपति पड़ा है।

दूसरा शिवपुराण—(८ वां खण्ड—१९ वां अध्याय) नेपालमें पशुपतिनाथ शिवलिंग हैं, वे महिष भाग अर्थात् भैंसे के शरीर के एक भाग हैं।

(२७ वां अध्याय) जब राजा पाण्डु के लड़के केदार में गए, कि केदारेश्वर के दर्शन करके अपने पापों से छूटें; तब शिवजी भैंसे का रूप धर कर वहां से भाग चले। उस समय उन्हों ने अति प्रेम से यह विनय किया कि हे प्रभो जो पाप हम को महाभारत के युद्ध में हुआ है, उस को तुम दूर करो और इसी स्थान पर स्थित होजाओ। तब शिवजी अपने पिछले धड़ से उसी स्थान पर स्थित हो गए और अगले धड़ से नेपाल में जा विराजे। वह हरिहर रूप से वहां सब को सुख देते हैं।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध-१३९ वां अध्याय) वाराहजी बोले कि नेपाल नामक स्थान में जो पशुपति नामक शिवजी हैं, उन के जटाजूट से श्वेतगंगा नामक तीर्थ प्रकट हुआ; जिसमे छोटी छोटी अनेक नदियां निकलकर गंडकी, कृष्णा,

आदि नदियों में मिलीं। और त्रिशूलगंगा नामक एक नदी निकली, जिस में अनेक पवित्र नदियां आकर मिल गईं। इन सब नदियों का संगम अति पवित्र है।

(२०९ वां अध्याय) शिवजी ने देवताओं से कहा कि हम हिमवान पर्वत के तट में नेपाल नामक देश में पृथ्वी को भेदन कर चारमुख धारण कर के उत्पन्न होंगे, तब हमारा नाम शरीरेश होगा। वहां हम घोर नागह्रद नामक कुण्ड के जल में ३० हजार वर्ष तक निवास करेंगे। जब वृष्णि कुल में उत्पन्न होकर श्रीकृष्णजी इन्द्र की सम्मति से दैत्यों के वध के निमित्त निज चक्र से पर्वत को तोड़ कर दानवों का संहार करेंगे, तब वह देश मुच्छों करके सेवित होगा, अर्थात् दानवों के मारने के अनन्तर वहां मुच्छ निवास करेंगे। तिस के कुछ काल वीतने पर सूर्य्यवंश के क्षत्रिय आकर उन मुच्छों का संहार कर उत्तम उत्तम कुल के ब्राह्मणों को वसावेंगे और चारो वर्णों को स्थापन कर हमारे लिंग की प्रतिष्ठा करेंगे। उस लिंग को पूजने से चारो वर्ण के मनुष्य सब भांति के सुख को प्राप्त करेंगे।

नेपालराज्य—तिव्वत और अंगरेजी राज्य के बीच में हिमालय के दक्षिणी सिलसिले पर नेपाल स्वाधीन राज्य है। इस के उत्तर तिव्वत की सीमा पर कुचक्रता; पश्चिम काली नदी, जिसको सारदा भी कहते हैं, बाद अंगरेजी राज्य के कमाऊं देश; दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण अंगरेजी राज्य में पीलीभीत, खीरी, बहराइच, गोंडा, वस्ती, गोरखपुर, चंपारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, भागलपुर और पुर्नियां जिले और पूर्व सिंगाथारीज और शिकम के पहाड़ी राज्य हैं। नैपाल की सबसे अधिक लम्बाई पूर्व से पश्चिम को लगभग ५०० मील और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को ७० मील से १५० मील तक और इस का क्षेत्रफल अनुमान से ५४००० वर्गमील है। राज्य की अनुमान की हुई मनुष्य-संख्या ३०००००० और मालगुजारी १०००००० रुपये से अधिक है। राजधानी और उस के आस पास के देश में १७००० और राज्य में १३०० फौज रहती हैं।

नेपाल राज्य का पहाड़ी सतह अत्यंत ऊवर खावर अर्थात् नीचा ऊंचा है। इस की ऊंची चोटियों में से एवरेस्ट पर्वत समुद्र के जल से २९००० फीट ऊंचा

है। पृथ्वी के जितने पहाड़ देखने में आते हैं, उन सबों से यह ऊंचा है। उत्तरीय सीमा की सम्पूर्ण चोटियां सर्वदा रहने वाली वर्फ की चोटियों के बराबर या उनसे अधिक ऊंची हैं। और राज्य की दक्षिण सीमा का देश, जो तराई कहलाता है और उस पर खेती की भूमि फैली है, नीचा और तर है। पहाड़ी घाटियां, जो बंगाल के मैदान से ३००० से ६००० फीट तक ऊपर हैं, बहुत तंग हैं। काठमांडू की घाटी समुद्र के जल से लगभग ४००० फीट ऊंची; पूर्व से पश्चिम को लगभग २० मील लम्बी और उत्तर से दक्षिण को प्रायः १५ मील चौड़ी है। ऊंची जगहों पर सर्दी अधिक रहती है।

जंगलों में जंगली जंतु बहुत हैं। निचली और मध्य की पहाड़ियों में अब तक हाथी रहते हैं। तराई में गेंडा, बाघ और तेंदुए बहुत होते हैं। वनों में बेश कीमती लकड़ियां, जो दूसरे देशों में जाती हैं, बहुतायत से हैं। पहाड़ियों में लोहा, तांबा और गंधक की बहुत खान हैं और मार्बुल आदि कई प्रकार के उत्तम पत्थर बहुत होते हैं, किंतु गाड़ी के मार्ग नहीं होने के कारण वे काम में नहीं लाए जाते। पहाड़ियों में स्लेट बहुत हैं। नैपाल राज्य में बनाई हुई सड़क बहुत कम हैं; किंतु सूखी ऋतुओं में गाड़ी और बैल चलते हैं। नदियों में नाव नहीं चलती हैं, किंतु लोग उन में लकड़ी बहा कर दूर दूर तक ले जाते हैं।

गल्ले, तेल के अनेक प्रकार के बीज, मवेसी, घी, लकड़ी चमड़ा मसाला इत्यादि नैपाल राज्य से अन्य देशों में जाते हैं और ऊनी और रेशमी असवाब नमक, चीनी, रुई इत्यादि वस्तु दूसरे देशों से नैपाल में आती हैं। तेजपात और बड़ी इलायची बहुत उत्पन्न होती हैं। नैपाल में चांदी का सिक्का मोहर कहलाता है और दो मोहर का मोहरी रुपया होता है। एक मोहर का दाम अंगरेजी रुपये का ६ आना ८ पाई होता है। तांबे के पैसे ३ प्रकार के होते हैं;—(१) बुटवलिया, जिस को गोरखपुरी भी कहते हैं (२) लोहिया और (३) गोलपैसा। ये तीनों पैसे उत्तरीय भारत के अंगरेजी राज्य में चलते हैं।

नैपाल के राज्य में पहाड़ों के पादमूल के पास कालीगंगा नामक नदी के किनारे पर मकर की संक्रांति के समय देवघाट का मेला होता है। मेला लगभग दो सप्ताह रहता है। उस में कपड़ा, बर्तन, मसाले इत्यादि वस्तु बिकती हैं। नैपाल

और अंगरेजी राज्य के बहुत लोग मेले में जाते हैं। नदी के दूसरे पार पहाड़ी पर देवनाथ महादेव का मन्दिर बना हुआ है। नदी में पार उतारने वाली नाव रहती हैं। ब्यापारी लोग बेतिया से चार पांच दिन में देवघाट पहुंचते हैं।

नेपाल की राजधानी काठमांडू है। गोरखा और ललितापट्टन भी अच्छे कसबे हैं। इस राज्य के मनुष्यों के प्रधान भोजन की वस्तु चावल है। बहुतेरे भागों में वर्ष में ३ फसिल होती है। पहाड़ियों में किसी किसी जगह हल और बैलगाड़ी देखने में आती है। वहां के लोग खेत बोने का काम हाथ से करते हैं। भेड़ और बकरियों पर बोझ लादे जाते हैं। तराई में अफीम, टेलहन और तंबाकू बहुत उत्पन्न होते हैं।

इस राज्य में तातारी और चीनी नसल की बहुत जात हैं। देशी निवासी में नेवारा बहुत बौद्ध मतवाले हैं। राजवंश के लोग, जिनकी संख्या कम है, गोरखा कहलाते हैं। उनकी भाषा हिंदी के समान है। वे लोग छोटे कद के होते हैं; परंतु बड़े लड़ाके हैं। सरकार अंगरेज बहादुर की फौज में गोरखों की कई पल्टन हैं। राज्य के पूर्वी भाग में आदि निवासी कौम; पश्चिमी भाग में नागर, सुरंग, नेवार, लेंबू, लेपचा, भूटिया, कासवार, थारु इत्यादि बहुत बसते हैं। राज्य के प्रधान निवासी गोरखाली हैं, उनमें ब्राह्मण तो पांडे और उपाध्याय और राजपूत कुश और थापा कहलाते हैं।

भारत गवर्नमेंट ने सन् १८२९ ई० में सती होने की रीति उठा दी, पश्चात् क्रम क्रम से भारतवर्ष के देशी रज्यों से भी यह चाल उठ गई; किंतु स्वाधीन हिंदू राज्य नैपाल में यह प्रथा अबभी प्रचलित है। जो स्त्री अपने पति के मरने पर सती होने की इच्छा प्रकट करती है, वह अपने पति की रथी के संग एक दूसरी रथी पर चढ़ कर सिन्दूर अपने शरीर में लगा कर अक्षत इत्यादि कई वस्तु छीड़ती हुई बहुत लोगों के साथ श्मशान में पहुंचती है। वहांके लोग एक-ही चिता पर मृतक के संग उस स्त्री को सुलाकर जलाते हैं। जलने के समय कई आदमी बांस से उस स्त्री को दबाए रहते हैं।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि काठमांडू शहर का नाम पहले मंजपा-

टन था, क्योंकि उसको मंजुश्री ने बसाया। बौद्ध नेवारा लोग कहते हैं कि मंजुश्री की तलवार की शकल में यह शहर बसा हुआ है। लगभग सन् ७२३ ई० में राजा गुनकमदेव ने काठमांडू को नियत किया। इसका वर्तमान नाम एक पुराने काठ के मकान से काठमण्डी हुआ। काठमण्डी का अपभ्रंश काठमांडू है। इस देश में मंदिर और मकान को लोग मंदी कहते हैं।

नेपाल का वर्तमान राजवंश गोरखा छत्री है। राजपूताने-मेवाड़ के चितौड़गढ़ का सिसोदिया राजपूत समरसिंह, जिस का विवाह दिल्ली के राजा पृथ्वीराज की बहन से हुआ था, सन् ११९३ ई० में महम्मदगोरी की लड़ाई में अपने शाले पृथ्वीराज के साथ मारा गया। समरसिंह का बड़ा पुत्र कल्याण अपने पिता के साथ परलोक को सिधारा। दूसरा पुत्र कुम्भकर्ण बीदर को चला गया और तीसरा पुत्र कमाऊं में जा बसा। ऐसा प्रसिद्ध है कि उस के वंशधर लोग पीछे पहाड़ी कन्याओं से विवाह करने लगे और गोरखा में, जो नेपाल राज में काठमांडू से पश्चिमोत्तर की ओर एक अच्छा कसबा है, जाकर रहने लगे। वहां वे लोग करीब दोसौ बरस तक रहे, उसके पश्चात् खास नेपाल के साथ उनका संबन्ध हुआ। गोरखा में रहने के कारण से वे लोग गोरखा जाति कहे जाते हैं।

नेपाल के प्राचीन काल का इतिहास ठीक तौर से ज्ञात नहीं होता है; किंतु ऐसा जान पड़ता है कि किसी एक राजा ने बहुत काल तक राज्य न किया। इस राज्य को कोई दिल्ली के बादशाह या कोई दूसरे एशिया के विजय करने वाले अपने अधिकार में कभी नहीं लाए। ऐसा कहा जाता है कि अवध के राजाओं में से एक राजा हरीसिंह ने, जिसको मुसलमानों ने निकाल दिया था, सन १३२३ ई० में इस को पूरी तौर से जीता, किंतु उसके पीछे का वृत्तांत ज्ञात नहीं होता है कि कब कौन राजा हुआ। भातगांव के सूर्यवंशी राजाओं में; जिन्होंने नेपाल में राज्य किया था, रणजीतमल अन्तिम राजा था। उस ने काठमांडू के विरुद्ध पृथ्वीनारायण से मित्रता की। उस मित्रता का फल यह हुआ कि सन् १७६८ ईस्वी में पृथ्वीनारायण ने उसका राज्य ले लिया। गोरखा लोग सन् १७६९ में राजा को पाटन में जीत करके संपूर्ण घाटी

के मालिक बन गए और काठमांडू में आ बसे और धीरे धीरे नेपाल की पहाड़ियो और घाटियों को अपने अधिकार में लाए। सन १७७१ में पृथ्वीनारायण मर गए। सन १७७५ में उनके पुत्र सिंहप्रताप अपने बच्चे पुत्र रणबहादुरशाह को छोड़ कर मर गए। लग भग सन १६९२ ई० में भारतवर्ष के गवर्नरजनरल लार्ड कर्नवालिस ने नेपालियों के साथ एक तिजारती संधि की।

गोरखे लोग कभी पूर्व में शिकम पर, कभी पश्चिम कमाऊं पर और कभी दक्षिण ओर गंगा के मैदानों पर चढ़ाई करते थे। जब गंगा के मैदान में अंगरेजी प्रजा को उन से दुख पहुंचा, तब अंगरेजी सरकार ने नेपाल पर चढ़ाई की। सन १८१४ की पहली चढ़ाई में अंगरेजी सेना परास्त हुई, किंतु उसी साल गरमी के मौसिम में जनरल अक्टरलोनी ने सतलज नदी से फौज उतार कर एक एक कर के नेपालियों के पहाड़ी किले जीत लिए। वह किले हिमालय की रियासतों में पंजाब गवर्नमेंट के आधीन अब तक विद्यमान हैं। दूसरे साल सन १८१५ ई० में अक्टरलोनी ने बड़ी तेजी के साथ पटने से काठमांडू की ऊपरी खाड़ी पर चढ़ाई कर दी। जब अंगरेजी फौज राजधानी के निकट पहुंची, तब नेपालियों ने सुलह किया। तारीख २८ नवम्बर सन १६१५ में संधि हुई। और ता० ४ मार्च सन १८१६ में सुगौली में अहदनामा पक्का हुआ। उस के अनुसार पूर्व में शिकम के राजा की भूमि, जो नेपालियों ने दबा ली थी, उस को लौटा दी और पश्चिम में काली नदी नेपाल राज्य की पश्चिम सरहद ठहरी। नैनीताल, मंसूरी और शिमला की सेहत देनेवाली जगहें अंगरेजों के हाथ आईं और काठमांडू में एक रेजीडण्ट का रहना करार पाया; परंतु दूसरे देशी राज्यों के समान नेपाल में राज कार्य्य में हस्तक्षेप करने का अधिकार रेजीडण्ट को नहीं है। यह स्वाधीन हिन्दू राज्य है।

सन १८१६ ई० में नेपाल के महाराजधिराज रणबहादुर शाह २१ वर्ष की अवस्था में परमधाम में गए। उनकी स्त्रियों में से १ स्त्री और रखेलिनियों में से १ रखेलिनीं ५ लौंड़ियों सहित उनके साथ सती हो गई। रणबहादुर शाह के पुत्र महाराजाधिराज राजेन्द्र विक्रमशाह उत्तराधिकारी हुए।

एक ऊंचे दरजे के आदमी का भतीजा सर जंगबहादुर हाल के प्राइम

मिनिष्टर थे, जो रानी के कहने से अपने चचा को मार कर फौज का कमाण्डर वने और नई मिनिष्टर कायम हुई। थोड़ेही दिन वाद नया प्रधानमंत्री मारा गया और जंगवहादुर सन् १८४६ ई० में प्राइम मिनिष्टर हुए। उसके पश्चात् जंगवहादुर को मारने के लिये कपट प्रवन्ध हुआ, किंतु जंगवहादुर ने कपट प्रवन्ध करने वाले के साथियों को मार डाला। रानी अपने दो पुत्रों के साथ देश से निकाली गई, राजा भी उनके साथ गए। राजा के वारिश महाराजाधिराज सुरेन्द्रविक्रमशाह राजसिंहासन पर वैठाए गए। कुछ दिन के वाद पहले राजा राजेन्द्रविक्रमशाह अपना राज्य पाने का उद्योग करने लगे, किंतु जंगवहादुर ने अपनी चातुरता से उनका मनोरथ सफल होने नहीं दिया; राजा कैदी वनाए गए।

जंगवहादुर सर्वदा अंगरेजी सरकार के मित्र थे। सन् १८५७ के वलवे में उन्होंने अंगरेजों को गोरखों की फौज कीं सहायता देकर अपनी मित्रता का सच्चा परिचय दिया था। जंगवहादुर सन् १८७७ ई० को तारीख २५ वीं फरवरी को मर गए, उनके साथ एक वड़ी रानी और २ छोटी रानियां सती हो गईं।

जंगवहादुर के वाद उनका भाई रणोद्वीपसिंह प्राइम मिनिष्टर हुआ। सन् १८८५ के नवम्वर में सर जंगवहादुर के एक भतीजे वीरशमशेरजंग ने रणोद्वीपसिंह और जंगवहादुर के एक लड़के और एक पोते को मार डाला और आप प्राइममिनिष्टर वन गया। नेपाल के वर्तमान राजा हिज हाईनेस शमशेरजंगवहादुर युवा अवस्था के हैं।

मुक्तिनाथ।

काठमांडू से उत्तर गंडकी नदी के वाएं किनारे मुक्तिनाथ एक तीर्थ है। दस वारह दिन में काठमांडू से लोग वहां पहुंचते हैं। मार्ग पहाड़ी है। वहां गंडकी नदी में, जिसको शालग्राम के निकलने के कारण लोग शालग्रामी और नारायणी नदी भी कहते हैं, वूड़ी मारने योग्य जल नहीं है। नदी में विविध भांति के सुन्दर असंख्य शालग्राम निकलते हैं। यात्रीगण वहां से अनेक शाल-

ग्राम अपने गृह को ले आते हैं । नदी के आस पास छोटे बड़े पन्द्रह बीस देवमन्दिर बने हुए हैं और ७ गर्म सोतों से पानी निकल कर नारायणी नदी में गिरता है । उनमें से अग्निकुंड का सोता एक मन्दिर के भीतर पहाड़ से निकलता है । उसके पानी पर ज्वालामुखी की गोरखडिब्बी के समान अग्नि की ज्वाला रहती है।

काठमांडू से ८ मंजिल उत्तर वर्फिस्तान में नीलकंठ महादेव हैं, वहां भी गर्म पानी का कुंड देखने में आता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—देवीभागवत (९ वां स्कंध--१७ वें अध्याय से २४ वें अध्याय तक) और ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृतिखंड के १५ वें अध्याय से २१ वें अध्याय तक) लक्ष्मीजी शाप के कारण से धर्मध्वज की पुत्री हुईं, तब उनका नाम तुलसी पड़ा । तुलसी का विवाह शंखचूड़ से हुआ । जब विष्णु ने ब्राह्मण रूप धर कर शंखचूड़ का कवच मांग लिया और छल से तुलसी से रमण किया, तब शंखचूड़ शिवके हाथ से मारा गया।तुलसी ने विष्णु को शाप कि तुम संसार में पाषाण रूप होगे । विष्णुने कहा कि तुलसीकी देह भरतखंड में गंडकी नामक नदी होगी । उसके पश्चात् तुलसी विष्णु लोक में चली गई । उसका शरीर गंडकी नदी और उसके केशों का समूह तुलसी वृक्ष हुआ । विष्णु शालग्राम शिला हुए (यह कथा शिवपुराण पांचवें खंड के ३८ वें और ३९ वें अध्याय में है) ।

बाराहपुराण—(१३८ वां अध्याय) एक समय विष्णु भगवान् तप कर रहे थे, शिवजी वहां प्रकट होकर उन से बोले कि हे भगवन् तप करते समय तुम्हारे गंडस्थान अर्थात् कपोल से स्वेद उत्पन्न हुआ है; इस स्वेदरूपी जल से लोक में गंडकी नामक नदी प्रसिद्ध होगी और तुम उस नदी के गर्भ में सदा निवास करोगे । जो मनुष्य संपूर्ण कार्तिक मास में इस नदी में स्नान करेंगे, वे मुक्तिफल पावेंगे ।

एक समय गंडकी नदी के एक ग्राह ने जलक्रीड़ा करते हुए एक हाथी का पैर पकड़ लिया, तब दोनों युद्ध करने लगे। उस समय वरुण देवता के निवेदन से विष्णु भगवान् ने वहां आकर सुदर्शन चक्र से ग्राह का मुख फाड़ कर

गज को जल से बाहर निकाला। उस समय चक्र के वेग से गंडकी की शिला बहुत ही चिन्हित होगई। उन चिन्हों से भावी वस वज्रकीट नामक क्रिमी उत्पन्न हुए और गंडकी में चक्र उत्पन्न होते हैं। विष्णु ने कहा कि भक्त की रक्षा के निमित्त हमारी आज्ञा से सुदर्शनचक्र ने गंडकी नदी में जहां जहां भ्रमण किया है, वहां सर्वत्र पाषाणों में सुदर्शनचक्र का चिन्ह होगया है। इस लिये पाषाणों का नाम गंडकीचक्र होगा। वह स्थान चक्रतीर्थ कहलावेगा। मनुष्य वहां स्नान करने से अति तेजस्वी होकर सूर्यलोक में निवास करेंगे। जिस दिन से शालंकायन के शिष्य नंदी आमुष्यायन को गोधन सहित मथुरा से लाए, उस दिन से उस स्थान का नाम हरिहरक्षेत्र हुआ।

जिस शालग्रामक्षेत्र में शिवजी ने विष्णु भगवान् को वरदान दे निवास किया, उस क्षेत्र में स्नान करके पितरों का तर्पण करने से पितरगणों को स्वर्ग मिलता है। शालग्राम क्षेत्र चारो दिशाओं में बारह बारह योजन है। वहां विष्णु भगवान शालग्राम रूप से सर्वदा निवास करते है (१३९ वां अध्याय) शाल-ग्रामक्षेत्र हरिहरात्मक अर्थात् विष्णु और शिव का रूप है।

पद्मपुराण—(पातालखण्ड, ७९ वां अध्याय) गण्डकी नदी के एक छोर में शालग्राम का महास्थल है। उसमें से जो पाषाण उत्पन्न होते हैं, वे शालग्राम कहाते हैं।

(उत्तरखंड, ७५ वां अध्याय) गण्डकी नदी में शालग्राम शिला बहुत होती हैं। वह नदी उत्तर में प्रकट हुई है, वहां नारायण सर्वदा स्थित रहते हैं। जो मनुष्य शंख और चक्र के चिन्ह धारण करके वहां निवास करता है, वह मृत्यु के पश्चात् चतुर्भुज रूप धारण करके विष्णु के लोक में जाता है। वहां अ-नेक प्रकार की बहुत मूर्तियां देख पड़ती हैं। चारो वर्ण के मनुष्य गण्डकी नदी के जल स्पर्श करने से ब्रह्महत्यादि पापों से विमुक्त हो जाते हैं। उस क्षेत्र को विष्णु भगवान ने रचा था। ब्राह्मण लोगों को आषाढ़ मास में उस स्थान पर जाकर शंख चक्रादि चिन्ह धारण करना उचित है। जो ब्राह्मण अपने बाएं हाथ में शंख और दहिने हाथ में चक्रादि चिन्ह धारण करते हैं वे मुक्ति पाते हैं।

(१२० वां अध्याय) शालग्रामशिला स्नान का जल पीने से मनुष्य को गर्भ-घास का भय छूट जाता है और नित्य ही शालग्राम के पूजन करने से जन्म मृत्यु का भय नहीं रहता। शालग्राम अनेक प्रकार के होते हैं,-वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, नारायण, हरि, विष्णु, कपिल नृसिंह, वाराह, मत्स्य, कूर्म, हयग्रीव, बैकुंठ, श्रीधरदेव, इत्यादि (इन के पहचान के आकार और चिन्ह यहां लिखे हुए हैं)।

(१३१ वां अध्याय) ब्राह्मण को ५ क्षत्रिय को ४ और वैश्य को ३ या १ शालग्राम को पूजना उचित है। शूद्र शालग्राम के दर्शन मात्रही से मुक्ति प्राप्त करते हैं। जो ब्राह्मण शंख चक्रादि से चिन्हित होकर शालग्राम शिला का पूजन करता है, उस पूजन से सब संसार पूजित होजाता है। और पितर कहते हैं कि हमारे कुल में वैष्णव उत्पन्न हुआ, अब वह हमारे कुल को विष्णु लोक में भेजेगा।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध—६६-वां अध्याय) चक्र करके अंकित शालग्राम-शिला के पूजन करने से बिना चिन्ह कौ मूर्ति का पूजन करना उत्तम है। एक रेखा वाले शालग्रामशिला को सुदर्शन, २ रेखा वाले को लक्ष्मीनारायण, ३ रेखा वाले को अच्युत, ४ रेखावाले को चतुर्भुज, ५ रेखावाले को वासुदेव, ६ रेखा वाले को प्रद्युम्न, ७ रेखावाले को संकर्षण, ८ रेखावाले को पुरुषोत्तम, ९ रेखा वाले को व्यूह, १० रेखा वाले को दशात्मक, ११ रेखावाले को अनिरुद्ध और १२ रेखा वाले को द्वादशात्मक कहते हैं। इससे अधिक रेखावाले शालग्राम को अनंत कहना उचित है।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग--३४ वां अध्याय) शालग्राम तीर्थ विष्णु की प्रीति को बढ़ाने वाला है। उस स्थान पर मृत्यु होने से साक्षात् विष्णु का दर्शन होता है।

दूसरा शिवपुराण—(८ वां खण्ड--१५ वां अध्याय) नेपाल में मुक्तनाथ शिवलिंग हैं।

पांचवा अध्याय ।

(सूबे बिहार में) दरभंगा, गौतमकुण्ड, (नैपाल-राज्य में) जनकपुर, (सूबेबिहार में) सोतामढ़ी, सीगेंश्वरनाथ और (नैपाल-राज्य में) वाराहक्षेत्र ।

दरभंगा ।

काठमांडू से ९० मील उत्तर पहाड़ी मार्ग से सुगौली, और सुगौली से दक्षिण-पूर्व रेलवे द्वारा ९४ मील समस्तीपुर जंक्शन को लौट आना चाहिए। समस्तीपुर जंक्शन से २३ मील (और मोकामा जंक्शन से ८३ मील) उत्तर दरभंगा का रेलवे स्टेशन है। सूबेबिहार के पटना विभाग में तिरहुत देश के पूर्वी भाग में छोटी बागमती नदी के बाए, अर्थात् पूर्व किनारे पर जिले का सदर स्थान और प्रधान कसवा दरभंगा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दरभंगा सहर में ७३५६१ मनुष्य थे; अर्थात् ३८२६७ पुरुष और ३५२९४ स्त्रियां। इनमें ५३९८७ हिन्दू, १९१८१ मुसलमान, १३२ कृस्तान और २६१ दूसरे थे । मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ४५ वां, बंगाल में ६ वां और बिहार में ३ रा शहर है। बहुतेरों का मत है कि दरभंगीखां ने दरभंगा को बसाया, इससे इसका यह नाम पड़ा । और बहुतेरे लोग कहते हैं कि द्वारबंग अर्थात् बंगाल के दरवाजे का अपभ्रंश दरभंगा शब्द है।

दरभंगा में सिविल कचहरियां, अनेक स्कूल और अस्पताल; शिवसागर तालाव के किनारे पर माधवेश्वर महादेव का मंदिर, अनेक बड़े बाजार, अस्पताल और महाराज के बाग के बीच में हाल की बनी हुई नई पेठिया और बहुतेरे सरोवर हैं । महाराज का पुराना महल और हाल का बनाहुआ नया राजमहल, बाग, अश्वशाला, और जंतूशाला देखने योग्य हैं । दरभंगा में तिजारत बहुत होती है। अनेक भांति के तेल के बीज घी और मकान बनाने

की लकड़ी वहां से दूसरे स्थानों में भेजी जाती हैं और गल्ला, नमक, चूना लोहा इत्यादि वस्तु दूसरे शहरों से वहां आती हैं।

दरभंगा से रेलवे लाइन तीन ओर गई है—पश्चिमोत्तर की लाइन पर २६ मील पर जनकपुर रोड, ४२ मील सीतामढ़ी और ६१ मील वैरागिनिया; पूर्व की लाइन पर १२ मील सकरी, ४३ मील निर्मली, ६७ मील प्रतापगंज और ७९ मील कनवा घाट; और दक्षिण २३ मील समस्तीपुर जंक्शन और ८३ मील मोकामा जंक्शन है।

दरभंगा के महाराज—सन् १७६२ ई० से दरभंगा शहर यहां के महाराज की राजधानी हुआ है। महाराज के पूर्व पुरुषे तिरहुत के राजाओं के पुरोहित थे। मुसलमानों ने तिरहुत को जीत लिया और वहां के राजा नष्ट होगये, तब उनके पुरोहित मैथिल ब्राह्मण महेश ठाकुर ने दिल्ली में जाकर वादशाह अकवर से राज्य प्राप्त किया; किन्तु सन् १७०० ई० में महेश ठाकुर के वंशज राघोसिंह के राज्य के समय में राजा की पदवी दृढ़ हुई। सन् १७७६ में माधोसिंह राज्य के उत्तराधिकारी हुए। सन् १८०८ में माधोसिंह के देहांत होने पर उनके पुत्र छत्तरसिंह दरभंगा के राज्य सिंहासन पर वैठे। इन्ही ने महाराज की पुस्तैनी पदवी प्राप्त की थी। सन १८३९ ई० में महाराज छत्तर-सिंह की मृत्यु होने पर उनके पुत्र महाराज रुद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए। सन् १८५० में महाराज रुद्रसिंह के देहांत होने पर उनके पुत्र महाराज महेश्वर सिंह राजगद्दी पर वैठे। सन १८६० ई० में महाराज महेश्वरसिंह अपने दो वच्चे पुत्र लक्ष्मीश्वरसिंह और रामेश्वरसिंह को छोड़कर मृत्यु को प्राप्त हुए। राज्य कोर्ट आफ वार्डस के अधिकार में हुआ। सन १८७९ में वर्तमान महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह वहादुर के० सी० आई० ई० राज्याधिकारी हुए, जिनकी अवस्था ३६ वर्ष की है।

महाराज की जिमीदारी दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, पुर्निया और भागलपुर इन पांच जिलों में फैली हुई, है, जिससे २४००००० रुपया माल गुजारी आती है, जिसमें से लगभग ४००००० रुपया अंगरेजी गवर्नमेंट को देना पड़ता है। महाराज की ओर से १५० मील लम्वी नई सड़क वनाई गई

है, नदियों पर बहुतेरे पुल बनाए गए हैं और ७००००० रुपये सिचाई के काम में खर्च किए गए हैं।

दरभंगा जिला—यह पूर्व समय के तिरहुत जिले का पूर्वी भाग है। सन् १७७५ ई० में तिरहुत जिले मे मुजफ्फरपुर और दरभंगा दो जिले बनाए गए। इसके उत्तर स्वाधीन नैपाल राज्य; पूर्व भागलपुर जिला; दक्षिण गंगा नदी और मुँगेर जिला और पश्चिम मुजफ्फरपुर जिला है। यह जिला पश्चिम दक्षिण से पूर्वोत्तर तक ९६ मील लंबा ३६६५ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है। जिले की प्रधान नदियां वागमा, गंडक, छोटी वागमती, कराई और कमला हैं। तिरहुत मे विवाहादि उत्सवों में चिउड़ा दही का भोजन सब भोजन से उत्तम समझा जाता है।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय दरभंगा जिले मे २७७००५३ और सन् १८८१ में २६३३४४७ मनुष्य थे, अर्थात् २३२३९८५ हिन्दू, ३०८९८५ मुसलमान, ३८५ कृस्तान और १५२ दूसरे, जो प्रायः सब कोल हैं। जातियों के खाने में ३४१११२ ग्वाला, १८९५३४ दुसाध, १७९२६३ ब्राह्मण, १३००७९ धानुक, १२९०२७ कोइरी, ११८५५६ भूमिहार, ११४८९१ मलाह, ९००८३ राजपूत, ८८६४१ चमार, ७९४४९ तली, ६७०९८ कुर्मी, ६६७९३ मुसहर, ६१३१५ ततवा, ४५१२४ कायस्थ, शेष इनसे कम संख्या की जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्यगणना के समय दरभंगा जिले के कसबे दरभंगा में ७३५६१, मधुबनी में १७५४४, रोसरा में १०८८० मनुष्य थे। इनके अलावे जिले में विसुनपुरा, सुलतानपुर और माधोपुर छोटे कसबे हैं।

दरभंगा जिले के मधुबनी कसबे से चार पांच मील पश्चिम सौराठ वस्ती के पास साल में मैथिल ब्राह्मणों का एक मेला होता है। वे लोग उसमें अपने लड़का लड़की के विवाह का लेनदेन पक्का करते हैं। लड़की अपने पिता के घर रहेगी या ससुर के घर, वहुतेरों में इस बात का दस्तावेज लिखा जाता है। जो लड़की विवाह होजाने पर अपने पिता के घर रहती है, उसके पुत्र अपने नाना के धन में भाग पाते हैं। बहुतेरे कुलीन ब्राह्मणों में एक के कई विवाह होते हैं। जो स्त्रियां अपने पिता के घर रहती हैं, उनके पति अपने ससुर के घर जाकर उनसे कुछ रुपया लेकर कई एक दिन वहां रहते हैं।

तौल का
मंदिर में
है और
मैदान में
ऽ में गच
नदो है,
एक वृक्ष
। कुंड

अहिल्या
मण का

ध्याय)
ती है।
ं तीनों
का फल
से वि-

मैथिला
से पूछा
का था;
ह ने मु-
कि मै
उसका
ो निक-

गौतमकुण्ड।

दरभंगा जंक्शन से १४ मील पश्चिमोत्तर सीतामढ़ी ब्रैंच पर कमतौल का स्टेशन है, जिससे २ मील पश्चिमोत्तर छोटी नदी के पास एक छोटे मंदिर में अहिल्या की मूर्ति है, जहां चैत्र नौमी को एक छोटा मेला होता है और स्टेशन से करीब १० मील पश्चिम की ओर विना वृक्षों के धान के मैदान में गौतमकुंड एक सरोवर है। उसके चारो बगलों पर घाट बना है, तल में गच किया हुआ है, पानी में छोटे छोटे ९ कुंड हैं और पासमें एक छोटी नदी है, जिसका जल गौतमकुंड में रहता है। गौतमकुंड के पास पाकड़ का एक वृक्ष और एक कोठरी में नृसिंहजी की मूर्ति है। बस्ती उससे बहुत दूर है। कुंड के पास एक साधु है।

गौतमकुंड से ३ मील पूर्व अहिल्याकुंड तीर्थ और वट वृक्ष के नीचे अहिल्या का चौरा है, जिसके पास दरभंगा के राजा का बनवाया हुआ रामलक्ष्मण का सुन्दर मन्दिर स्थित है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(वनपर्व्व—८४ वां अध्याय) गौतम के प्यारे वन में जाकर अहिल्याकुंड में स्नान करने से मोक्ष मिलती है। गौतम के आश्रम में जाने से पुरुष शोभा को प्राप्त करता है। यहां तीनों लोकों में विख्यात एक तड़ाग है। उसमें स्नान करने से अश्वमेध का फल होता है। उससे आगे राजर्षि जनक का कूँआ है, जिसमें स्नान करने से विष्णुलोक प्राप्त होता है।

वाल्मीकिरामायण—(बालकांड—४८ वां अध्याय) रामचन्द्र ने मिथिला के उपवन में प्राचीन और निर्जन आश्रम को देख महर्षि विश्वामित्र से पूछा कि यह आश्रम किसका है। मुनि बोले कि यह आश्रम गौतम मुनि का था; इस में वह अपनी स्त्री अहल्या के साथ रहते थे। किसी समय में इन्द्र ने मुनि रहित आश्रम को देख गौतम का वेष धारण कर अहल्या से कहा कि मैं तुम्हारे संग प्रसंग करूंगा। अहिल्या ने इन्द्र को पहचान करके भी उसका मनोरथ पूर्ण किया, पश्चात मुनि के डर से शीघ्रता से ज्योंही वह कुटी से निक-

ला, त्योंही पर्णशाला में पैठते हुए ऋषि देख पड़े । गौतम ने इन्द्र को मुनी वेष धारी और दुष्ट कर्म करनेवाला देख कर शाप दिया कि तू अंड कोष रहित हो जायगा । मुनि के ऐसे कहने पर इन्द्र के दोनों अंडकोष गिर पड़े। फिर मुनि ने अपनी स्त्री को यह शाप दिया कि तू इसी स्थान में अनेक सहस्र बर्ष पर्यन्त वास करेगी, तेरा भोजन केवल वायु होगा और तू किसी प्राणी को नहीं देख पड़ेगी; जब दशरथ के पुत्र रामचन्द्र इस वन में आवेंगे तब तू उनका सत्कार करके इस शाप से मुक्त हो अपने पूर्व शरीर को धारण कर मेरे पास आवेगी । ऐसा कह मुनि हिमाचल के शिखर पर जाकर तपस्या करने लगे। (४९ वां अध्याय) पितृगणों ने मेष का अंडकोष काट कर इन्द्रको लगा दिया। रामचन्द्र ने विश्वामित्र के ऐसे वचन सुन उनके संग उस आश्रम में प्रवेश किया और उस तपस्विनी को, जिसको सुर असुर कोई नहीं देख सकते थे, देखा। उसी क्षण अहिल्या के पाप का अंत हुआ। तब इन को वह देख पड़ी। राम और लक्ष्मण ने हर्ष से उसके चरणों को ग्रहण किया। अहिल्या ने भी गौतम के वचन को स्मरण कर राम के चरणों का स्पर्श किया और अतिथि सत्कार से इनकी पूजा की । इसके पश्चात अहिल्या शुद्ध होकर गौतम ऋषि से जामिली। रामचन्द्र मिथिला को चले।

जनकपुर।

दरभंगा जंक्शन से २६ मील पश्चिमोत्तर जनकपुर रोड का, जिस को पुपुड़ी भी कहते हैं, रेल्वे स्टेशन है। स्टेशन से २४ मील पूर्वोत्तर नेपाल राज्य के अंतर्गत तिरहुत में जनकपुर एक बड़ी बस्ती है। जनकपुर जाने का दूसरा मार्ग सकरी के रेलवे स्टेशन से है। दरभंगा से १२ मील पूर्व कोसी लाइन पर सकरी रेलवे का स्टेशन है, उससे ३८ मील उत्तर जनकपुर है। दोनों स्टेशनों पर सवारी के लिये बैलगाड़ी मिलती हैं।

जनकपुर में साधारण लोगों के मकान टट्टी और छप्पर से बने हुए हैं। महंत का मकान पक्का दो मंजिला है। उसके पासही दक्षिण एक विशाल मंदिर में भ्रातागणों के सहित रामचन्द्र का दर्शन होता है । उसके पास एक कोठरी

में महावीर की मूर्ति है। राममन्दिर से पूर्व गंगासागर और धनुषसागर, जिन में साधारण घाट बने हैं, दो तड़ाग; तड़ागों के निकट शिवजी, जानकीजी, रामचन्द्र और जनकजी के एक २ मन्दिर बने हैं। शिव, जानकी, और रामचन्द्र के मन्दिर से दक्षिण रामसागर और एक दूसरा तालाव है। महंत के मकान के पास वाले राममन्दिर से पश्चिम रतनसागर, दशरथतालाव, और अग्निकुण्ड है। जनकपुर के आस पास बहुतेरे कच्चे तड़ाग हैं। लोग कहते हैं कि यहां ७२ तड़ाग और ५२ कुटियां हैं। कुटियों में साधु लोग रहते हैं, उनके पास देवस्थान या देवमंदिर बने हुए हैं।

चैत्र सुदी नवमी को जनकपुर का प्रधान मेला होता है। नैपाली और भोटिए और भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों के बहुतेरे यात्री मेले में आते हैं। माल खूब बिकता है। अगहन सुदी पंचमी को सीताराम के ब्याह का उत्सव होता है। हाथी घोड़े आदि ठाटों से सज्जित होकर राममंदिर से बारात निकलती है और कई सौ गज पश्चिमोत्तर जानकी के मंदिर को जाती है। वहां सबको भोजन मिलता है। उस समय भी बहुत यात्री आते हैं।

जनकपुर से लगभग ६ मील दक्षिण-पूर्व एक तड़ाग के पास विश्वामित्र का मन्दिर है। जनकपुर से १४ मील दूर जंगल में धनुपा बस्ती के पास एक सरोवर के निकट पत्थर का बड़ा धनुष पड़ा है। यात्री लोग वहां जाकर धनुष का दर्शन करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(आदिपर्व-११३वां अध्याय) राजा पांडु ने मिथिला में जाकर विदेह नगर को परास्त किया। (सभापर्व-३० वां अध्याय) भीम ने विदेहपति राजा जनक को अति अल्प युद्ध में जीत लिया।

वाल्मीकिरामायण—(बालकांड—७१ वां सर्ग) जनक के वंश के राजा;—(१) राजा निमि, (२) मीथि, (३) जनक, (४) उदावसु, (५) नन्दीवर्धन, (६) सुकेतु (७) देवरात, (८) बृहद्रथ, (९) महावीर, (१०) सुधृति, (११) धृष्टकेतु, (१२) हर्यश्व, (१३) मरु, (१४) प्रातींधक, (१५) कीर्तिरथ, (१६) देवमीढ़, (१७) विबुध, (१८) महीध्रक, (१९) कीर्तिरात, (२०) महारोमा, (२१) स्वर्णरोमा और (२२) ह्रस्वरोमा हुए। ह्रस्वरोमा के सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र हैं। सीरध्वज की पुत्री सीता है।

उत्तरकांड—(१७ वां सर्ग) एक समय लंकापति रावण ने हिमालय के वन में बृहस्पति के पुत्र कुशध्वज की पुत्री वेदवती को तप करती हुई देखा तब उसने विमान से उतर कामातुर हो उसके माथे के केशों पर हाथ लगाया। तब वेदवती ने हाथ से अपने केशों को काटडाला और रावण को शाप दिया कि हे नीच! मैं तेरे वध के लिये फिर जन्म लेऊंगी। ऐसा कह वह अग्नि में प्रवेश कर गई और पीछे जनकराज के घर में अयोनिजा सीता रूप उत्पन्न हुई।

(बालकाण्ड—५० वां सर्ग) विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के सहित राजा जनक की यज्ञशाला में पहुंचे। राजा ने विश्वामित्र का आगमन सुन सत्कार पूर्वक उनको टिकाया। (६६ वां सर्ग) दूसरे दिन प्रातःकाल विश्वामित्रने राजा जनक से कहा कि ये दोनों राजा दशरथ के पुत्र आपका श्रेष्ठ धनुष देखना चाहते हैं। (६७ वां सर्ग) राजा जनक की आज्ञा से ५ सहस्र मनुष्य उस धनुष की संदूक को खींच लाए। विश्वामित्र की आज्ञा से रामचन्द्र ने सन्दूक के भीतर से धनुष निकाल कर उसे बीच में थांभा और लीला से उठाकर प्रत्यंचा से पूर्ण कर उसको दो खंड कर डाला। उसके उपरान्त राजा जनक ने अपने मंत्रियों को राजा दशरथ को बुलाने के लिए अयोध्या में भेजा। (६८ वां सर्ग) जनक के दूत तीन रात्रि मार्ग में टीक कर चौथे दिन अयोध्या में पहुंचे। उन्होंने जनकपुर का सब वृत्तान्त राजा दशरथ से कह सुनाया। (६९ वां सर्ग) राजा दशरथ चतुरंगिणी सेना और ऋषियों के संग अयोध्या से प्रस्थान कर चार दिन में विदेहनगर पहुंचे। (७३ वां सर्ग) रामचन्द्र का विवाह सीता से, लक्ष्मण का उर्मिला से, भरत का मांडवी से, और शत्रुघ्न का श्रुतिकीर्ति से हुआ। उस समय रामचन्द्र का वय १५ वर्ष का और सीता जी का ६ वर्ष का था। (७७ वां सर्ग) राजा दशरथ सम्पूर्ण सेना और पुत्रगणों के साथ जनकपुर से प्रस्थान करके अयोध्या पहुंचे। (विशेष कथा भारत-भ्रमण दूसरे खंड के तीसरे अध्याय में देखो)

विष्णुपुराण—(चौथा अंश-पांचवां अध्याय) क्रम से जनकपुर के राजाओं का नाम—(१) निमि, (२) विदेह, (३) उदावसु, (४) नंदिबर्धन, (५)

सुकेतु, (६) देवरात, (७) वृहद्रथ, (८) धृति, (९) विवुध, (१०) महाधृति, (११) कृतिरात्, (१२) महारोमा, (१३) सुवर्णरोमा, (१४) ह्रस्वरोमा, (१५) सीरध्वज अर्थात् जानकी के पिता हुए; वह पुत्र प्राप्ति के लिये सोने के हल से यज्ञभूमि को जोतते थे, उसी समय हल के अग्र भाग से सीता कन्या उत्पन्न हुई। सीरध्वज के भाई कुशध्वज सांकाश्य नगर के राजा हुए। (१६) भानुमान, (१७) शतद्युम्न, (१८) शुचि, (१९) उर्जवह, (२०) सत्यध्वज, (२१) कुणि, (२२) अंजन, (२३) (ऋतुजित, (२४) अरिष्टनेमी, (२५) श्रुतायु, (२६) सुपार्श्व, (२७) संजय, (२८) क्षेमारी, (२९) अनेना, (३०) मीनरथ, (३१) सत्यरथ, (३२) सत्यरथी, (३३) उपंगु, (३४) श्रुत, (३५) शाश्वत, (३६) सुधन्वा, (३७) सुभास, (३८) सुश्रुत, (३९) जय, (४०) विजय, (४१) ऋतु, (४२) सुनय, (४३) वीतहव्य, (४४) धृति, (४५) वहुलाश्व और (४६) कृति, यहां तक विदेहवंश चला।

आदिब्रह्मपुराण—(१७ वां अध्याय) श्रीकृष्ण ने मिथिलापुरी के पास द्वारिका के शतधन्वा को मारा, तव वलदेवजी मिथिलापुरी में चले गये। वहां के राजा ने वलदेवजी को सन्मान पूर्वक रक्खा। जब वलदेवजी मिथिलापुरी में रहते थे, तव हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन ने उनसे गदा विद्या सीखी थी।

सीतामढ़ी।

जनकपुर रोड अर्थात पुपुड़ी के रेलवे स्टेशन से १६ मील (दरभंगा जंक्शन से ४२ मील) पश्चिमोत्तर सीतामढ़ी का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से १ मील पर लखनदेई नदी के पश्चिम किनारे पर सूवे विहार के मुजफ्फरपुर जिले में सवडिवीजन का सदर स्थान सीतामढ़ी एक छोटा कसवा और तीर्थ स्थान है। सन् १८८१ ई० की मनुष्य-गणना के समय सीतामढ़ी में ६१२५ मनुष्य थे।

सीतामढ़ी में मुन्सफी कचहरी, वाजार, स्कूल और एक अस्पताल हैं। चावल, सखुआ की लकड़ी, तेल के वीज, चमड़ा और नैपाल के पैदावार की तिजारत होती है। शोरा और जनेऊ वहुत तैयार होते हैं। लखनदेई नदी पर लकड़ी का पुल बना है। चैत की रामनवमी के समय एक बड़ा मेला होता

है और २ सप्ताह तक रहता है। मेले के समय दूर दूर के यात्री लोग आते हैं। यह मेला बैल की खरीद विक्री के लिये प्रसिद्ध है। इसमें पीतल के वर्तन, मसाला, कपड़ा और हाथी की भी तिजारत होती है। सीतामढ़ी में एक घेरे के भीतर सीता का मन्दिर और चार पांच दूसरे मन्दिर और घेरे के आस पास में तीन चार देवमन्दिर हैं। इनमें सीता, रामचन्द्र, लक्ष्मण, शिव, हनूमान, गणेश, इत्यादि देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं और सीतामढ़ी के महंतका समाधिस्थान भी है। सीतामढ़ी कसबे से १ मील पश्चिम पुनउड़ा वस्ती के निकट एक पक्का सरोवर है। लोग कहते हैं कि इसी स्थान पर अयोनिजा सीताजी उत्पन्न हुई थीं। सरोवर के पूर्व एक बड़ी ठाकुरवाड़ी है। यात्रीगण सरोवर में स्नान करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—विष्णुपुराण—(चौथा अंश-पांचवां अध्याय) जनकपुर के राजा ह्रस्वरोमा के सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र थे, उनमें सीरध्वज मिथिला के राजा हुए। वह एक समय पुत्र कामना के निमित्त सोने के हल से यज्ञभूमि को जोतते थे, उसी समय हल के अग्र भाग से सीता कन्या उत्पन्न होगई।

सींगेश्वरनाथ।

दरभंगा से ६० मील पूर्व राघोपुर का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से २८ मील दक्षिण भागलपुर जिले में एक छोटी नदी के किनारे पर सींगेश्वर स्थान नामक वस्ती है, वहां नदी के किनारे पर एक घेरे के भीतर सींगेश्वरनाथ महादेव का, जिनका शुद्ध नाम शृङ्गेश्वरनाथ है, बड़ा मन्दिर स्थित है।

फाल्गुन की शिवरात्रि के समय सींगेश्वरनाथ का बड़ा मेला होता है, और दो सप्ताह तक रहता है। मेले में विकने के लिये हाथी बहुत आते हैं और घोड़े, अङ्गरेजी कपड़ा, जूता नैपालियों की लम्बी छूरी, जिसको वे लोग खुखुड़ी कहते हैं और वर्तन इत्यादि की तिजरात होती है। पुर्निया, मुंगेर, तिरहुत और नैपाल के बहुत सौदागर आते हैं। वैशाख की शिवरात्रि को फाल्गुन के मेले से छोटा मेला होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाराहपुराण (उत्तरार्द्ध २०७-वां अध्याय) एक समय शिवजी मन्दराचल के उत्तर किनारे के मुञ्जवान पर्वत से श्लेष्मातक वन में चलेगए और नंदीश्वर से कह गए कि तुम किसी के पूछने पर हमारे जाने का स्थान मत कहो। (२०८ वां अध्याय) उसके पश्चात् इन्द्र ने ब्रह्मा और विष्णु को साथ ले मुंजवान पर्वत पर आकर नंदीश्वर से पूछा कि भगवान शंकर कहां हैं। (२०९ वां अध्याय) जब नंदीश्वर ने शिवजी का पता नहीं बतलाया, तब देवता गण शिवजी को ढूंढ़ते ढूंढ़ते श्लेष्मातक वन में पहुंचे। वहां शिवजी ने मृग रूप धारण किया था। देवता गण उनको पहचान कर पकड़ने के लिये चारोओर से दौड़े। इन्द्र ने मृग के शृङ्ग का अग्रभाग जा पकड़ा, ब्रह्माने बिचला भाग पकड़ लिया और शृङ्ग का मूल भाग विष्णु के हाथ में आया। जब वह शृंग तीन टुकड़े होकर तीनों के हाथों में रह गया और मृग अन्तर्द्धान होगया, तब आकाशवाणी हुई कि हे देवताओं! तुम लोग हमको नहीं पासकोगे; अब शृंगमात्र के लाभ से संतुष्ट हो जाओ। (२१० वां अध्याय) इन्द्र ने शृङ्गके; निज खंड को स्वर्ग में स्थापित किया और ब्रह्मा ने अपने हाथ के शृङ्ग खंड को उसी स्थान में स्थापित करदिया। दोनों खंडों का गोकर्ण नाम प्रसिद्ध हुआ। विष्णु ने अपने हाथ के शृङ्ग खंड को लोक के हित के लिए स्थापित किया, उसका नाम शृङ्गेश्वर हुआ। जिन स्थानों पर शृङ्ग के खंड स्थापित हुए, उन स्थानों में शिवजी निज अंश कला से स्थित होगए। कुछ काल के पश्चात् रावण इन्द्र को जीत कर गोकर्णेश्वर को उखाड़ कर अमरावती पुरी से लंका को ले चला और कुछ दूर जाकर शिवलिंग को भूमि में रख संध्योपासन करने लगा। जब चलने के समय रावण के उठाने पर वह शिवलिंग नहीं उठा, तब रावण उसको वहांही छोड़कर लंका चला गया। उसी लिंग का नाम दक्षिण गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ और ब्रह्मा के स्थापित शृङ्ग के खंड का नाम उत्तर गोकर्ण है। (उत्तर गोकर्ण की कथा दूसरे खंड के गोला गोकर्णनाथ के वृत्तान्त में और दक्षिण गोकर्ण की कथा चौथे खंड के गोकर्ण में देखो)।

बाराहक्षेत्र।

सकरी के स्टेशन से ६३ मील और दरभंगा से ७५ मील पूर्व थोड़ा उत्तर बंगाल नर्थवेष्टर्न रेलवे का खतमी स्टेशन कोशी नदी के दहिने किनारे पर कनवाघाट है, जिसके उस पार इष्टर्नबंगाल स्टेटरेलवे का अंचराघाट स्टेशन है। वहां से १० कोस उत्तर पैदल या बैल गाड़ी की राह से कोशी नदी के किनारे हिमालय के पादमूल पर चतरागद्दी स्थान में पहुंचना होता है। चतरागद्दी से ३ कोस उत्तर बनखंडीनाथ की धूनी है, जहां अनेक साधु रहते हैं। धूनी सर्वदा जलती रहती हैं। बाराहक्षेत्र के यात्री उस धूनी में कुछ लकड़ी फेंक देते हैं। उससे आगे १० कोस उत्तर धवलागिरि का कठिन चढ़ाव है। पहाड़ का रास्ता एक दो हाथ चौड़ा है। कहीं कहीं समथल भूमि मिलती है, जहां पहाड़ियों के दो चार घर बने हुए हैं। वहां कमला नींबू बहुत होता है। पहाड़ पर खाने के लिये यही मिलते हैं। चतरागद्दी से मन्दिर तक पैदल अथवा कूली की पीठ पर छींके या झूले में बैठा कर, या नाव में बैठ कोशी नदी के मार्ग से जाना चाहिए। नाव का भाड़ा एक आदमी का ८ आना लगता है। कोशी नदी में नाव को ऊपर चढ़ना पड़ता है। नदी में अनेक चट्टान हैं। जल का बेग प्रबल है। कोशी नदी हिमालय से निकल कर करीब २२५ मील दक्षिण बहने के उपरांत भागलपुर के नीचे गंगा में मिलगई है।

कोशीनदी के किनारे नैपाल राज्य में धवलागिरि शिखर पर बाराहक्षेत्र है, जिस को कोकामुख भी कहते हैं। एक साधारण कद के मन्दिर में छोटी चतुर्भुज बाराह जी की मूर्ति है। मन्दिर के चारो ओर दीवार बना है और आस पास एक बिगहा समतल भूमि है। उत्तर ओर कोबरा नदी बहती है, जिस में स्नान करके यात्री लोग उस का जल बाराह जी पर चढ़ाते हैं। कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्नान और जल चढ़ाने को बड़ी भीड़ होती है। नैपाल सरकार की ओर से शान्ति रखने को पुलिस रहती है। कमला निम्बू सस्ता मिलते हैं और चिउड़ा भी मिल जाता है। खाने को सामग्री साथ लेजाना चाहिए। बाराहक्षेत्र का मेला कार्तिकी पूर्णिमा के ४ रोज पहले से ४ दिन पीछे तक रहता है।

मन्दिर से दो तीन मील दूर पहाड़ी के ऊपर सूर्य्यकुण्ड नामक पुराना तालाब है। नाव कोशीनदी के मार्ग से वाराहक्षेत्र से चतरागदी शीघ्र पहुंचती है क्योंकि पानी का उतार है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण—(बालकांड ३४ वां सर्ग) विश्वामित्र ने रामचन्द्र से कहा कि सत्यवती नामक मेरी जेठी बहन महर्षि ऋचीक से ब्याही गई थी, वह अपने पति के संग स्वर्ग में गई और पीछे लोक के हित के निमित्त पवित्र जलवाली कौशिकी नदी होकर हिमवान पर्वत से निकली; इसी लिये मैं अपनी बहन के स्नेह से हिमवान के पास निवास करता हूँ।

महाभारत—(वन पर्व्व-८७ वां अध्याय) गया की ओर कौशिकी नामक नदी है। विश्वामित्र वहीं ब्राह्मण बने थे। (अनुशासन पर्व्व २५ वां अध्याय) कौशिकी नदी में वायुभक्षी होकर त्रिरात्रि उपवास करने से गंधर्व्वनगर में वास होता है। (वनपर्व्व ८३ वां अध्याय) वाराह तीर्थ में वाराहरूपधारी विष्णु ने निवास किया था, वहां स्नान करने से अग्निस्टोम यज्ञ का फल मिलता है।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध-पहला अध्याय) कोकामुखक्षेत्र, जिसको शूकर-क्षेत्र भी कहते हैं, भागीरथी गंगा के निकट है। (२४ वां अध्याय) कोकामुख नामक क्षेत्र को महात्माजन वदरी भी कहते हैं। इस क्षेत्र में जल-बिन्दु नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊंचे पर्व्वत से जलधारा पड़ती है और एक विष्णुधारा नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊंचे पर्व्वत से मूसल के समान धारा पृथ्वी में गिरती है। उसी कोकामुख में विष्णुपद नामक स्थान है, जिसे वाराहशिला भी कहते हैं; सोम तीर्थ नामक स्थान है, जिसमें विष्णुनामांकित पंचशिला नामक भूमि प्रसिद्ध है; अग्निसर नामक तीर्थ है, जहां पांच धारा पर्व्वत की कन्दरा से निकलती हैं; ब्रह्मसर नामक गुप्त तीर्थ है, जहां ऊंचे से एक धारा शिला के ऊपर गिरती है; सूर्य्यप्रभ नाम अति पवित्र तीर्थ है, जिस में अग्नि समान अति जलती हुई जलकी धारा गिरती है, और कौशकी नामक पुण्य देने वाली नदी है। कोकामुख के समीप मत्स्यशिला नाम एक पवित्र तीर्थ है, जिस में

पर्व्वत के ऊपर से एक जल की धारा गिरती है। वाराह जी बोले कि कोका-मुख हमारा क्षेत्र पांच योजन विस्तार का है।

मत्स्यपुराण—(१९२ वां अध्याय) जहां जनार्दन भगवान वाराहरूप धारण कर सिद्ध होकर पूजित हुये हैं, वह वाराह तीर्थ है। वहां विशेप करके द्वादशी को जाकर स्नान करनेवाला पुरुष विष्णुलोक में प्राप्त होता है।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड--११ वां अध्याय) कोकामुख नाम परमोत्तम तीर्थ है। इस तीर्थ मे होकर इन्द्रपुरी जाने का रास्ता दिखाई देता है। पुष्कर के समान ब्रह्माजी की मूर्ति यहां भी निरन्तर रहती है।

आदिब्रह्मपुराण—(१०५ वां अध्याय) त्रेता और द्वापर की सन्धि में पितर-गण दिव्य मनुष्यरूप होकर मेरुपर्वत की पीठ पर विश्वेदेवों सहित स्थित हुए। चन्द्रमा से उत्पन्न हुई कान्तियुक्त एक दिव्य कन्या उन के आगे हाथ जोड़ कर खड़ी हुई और पितरों से बोली कि मैं चन्द्रमा की कला हूं; तुम से वरूंगी। मैं पहिले ऊर्जा नाम वाली थी; पश्चात स्वधा हुई और तुम ने मेरा कोका नाम किया है। पितरदेव उसके वचन को सुन कर मोहित होकर उस का मुख देखने लगे। तब विश्वेदेवा पितरों को योग से भ्रष्ट देख उन को त्याग कर स्वर्ग को चले गए। चन्द्रमा ने अपनी आत्मजा ऊर्जा को उस स्थान में न देख मन में ध्यान कर के जाना कि काम से पीड़ित हुई ऊर्जा पितरों को प्राप्त हो रही है। तब उन्हों ने पितरों को शाप दिया कि तुम योग से भ्रष्ट हो जाओ और इस ने जो तुम पर मोहित हो पतिभाव से तुम को वरा है, इस कारण से यह नदी होकर लोक में कोका नाम से प्रसिद्ध हो इस पर्वत के शिखर पर स्थित रहे।

निदान चन्द्रमा के शाप से पितर योगभ्रष्ट हो हिमवान पर्वत के नीचे जा पड़े और ऊर्जा भी कोका नाम से विख्यात नदी होकर वहां पर वेग से बहने लगी। पितर भी योग से हीन हो उस नदी को देखने लगे, तब वह एक उत्तम तीर्थ हो गया। उस पर्वत ने क्षुधा से पीड़ित पितरों को देख कर उनके भोजन के लिये बदरीबन तथा अमृत देने वाली गौं को आज्ञा दी और उस

कोका रूपी नदी का जल दुग्ध होगया। इसी तरह पाप युक्त होकर पितर १०००० वर्ष वास करते रहे। सब लोक स्वधाकार और पितरों से रहित और दैत्य आदि बली हो गए, तब वे सब विश्वेदेवों से रहित पितरों को देख कर चारो तरफ से आए। उन्हे आते देख कोका ने क्रोध से युक्त हो अपने वेग से हिमांचल को डुबा कर पितरों को घेर लिया। पितरों को अन्तर हुए देख राक्षस आदिक भय देने के लिये वहांही स्थित हो गए, पितर जल में दुःखित होकर हरि की शरण में गए, और उनकी बहुत स्तुति की। तब विष्णु ने दिव्य मूर्ति शूकर रूप धारण कर जल में डूबे हुए पितृगणों का उद्धार किया। शूकर रूप धारण करके पितरों का उद्धार करने से वहां विष्णुतीर्थ स्थापित हुआ। शूकरभगवान ने विष्णु से जल और अपने रोमों से उत्पन्न हुई कुशा को लेकर अपने पसीने से उत्पन्न हुए तिलों सहित उस उत्तम तीर्थ में पितरों का तर्पण किया। वाराहजी ने कहा कि कोका के जल का पान पापों का नाश करता है, उस तीर्थ में स्नान करनेवाला धन्य है। माघ मास के शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल कोका में स्नान करे और ९ दिन वहां ठहरे। एकादशी और द्वादशी को वहां रहना योग्य है।

नरसिंहपुराण—(३९ वां अध्याय) वाराहजी ने कोका नामक तीर्थ में वाराहरूप छोड़ कर वैष्णवों के हित के लिये उसको उत्तम तीर्थ बना दिया।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय) कोकामुख तीर्थ संपूर्ण काम का देने वाला है।

कूर्मपुराण--(उपरिभाग, ३४ वां अध्याय) कोकामुख नामक विष्णु का तीर्थ है, उसके दर्शन करने से सम्पूर्ण पातकों का विनास होजाता है और विष्णुलोक मिलता है। (४० वां अध्याय) वाराह तीर्थ में जनार्दन भगवान रहते हैं। वहां स्नानादिक कर्म करने से मनुष्य को विष्णुलोक में निवास होता है।

—o—

छठवा अध्याय।

(सूबे बिहार में) लक्षीराय जंक्शन, जमालपुर, मुंगेर, अजगयबीनाथ, भागलपुर, साहबगंज, राजमहल, मालदह और इङ्गलिसबाजार, गौड़, पांडुआ, मुर्शिदाबाद और बरहमपुर।

लक्षीसराय जंक्शन।

इष्टइण्डियन रेलवे के मोकामा जंक्शन से २० मील पूर्व-दक्षिण सूबे बिहार के मुँगेर जिले कै लक्षीसराय में रेलवे का जंक्शन है, जहां से कार्डलाइन या लूपलाइन से खाना जंक्शन जाकर कलकत्ते के निकट हवड़ा पहुंचना होता है। वैद्यनाथ; आसनसोल, रानीगंज, वर्दवान, हवड़ा, कलकत्ता इत्यादि के जानेवाले को कार्डलाइन से जाना चाहिए। इष्ट इण्डिन रेलवे का महसूल प्रति मील २½ पाई है।

(१) लक्षीसराय से पूर्व-दक्षिण कार्डलाइन पर;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ जमुई।

२७ गिद्धौर।

६१ वैद्यनाथ जंक्शन।

७९ मधुपुर जंक्शन।

१२४ सीतारामपुर जंक्शन।

१३० आसनसोल जंक्शन।

१४१ रानीगंज।

१४६ अंडाल जंक्शन।

१८७ खाना जंक्शन।

वैद्यनाथ जंक्शन से ४ मील पूर्व-दक्षिण देवघर या वैद्यनाथजी।

मधुपुर जंक्शन से २३ मील पश्चिम-दक्षिण गिरिडी।

सीतारामपुर जंक्शन से पश्चिम ५ मील बराकर और ३९ मील कटरसगढ़।

आसनसोल, जंक्शन से प-

श्चिम-दक्षिण बंगाल नागपुर रेलवे पर ४७ मील पुरुलिया, २२१ मील बामरा और २४४ मील झारसूगढ़ जंक्शन।

अंडाल जंक्शन से २४ मील पश्चिमोत्तर गौरागदी।

खाना जंक्शन से पूर्व दक्षिण ८ मील वर्द्धवान, ४६ मील मगरा, ५१ मील हुगली जंक्शन, ५४ मील चंदरनगर, ६१ मील सेवड़ाफूली जंक्शन, ६३ मील श्रीरामपुर और ७५ मील हवड़ा।

(२) लक्षीसराय से लुपलाइन पर पूर्व साहबगंज और साहबगंज से दक्षिण खाना जंक्शन,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

७ कजरा।

२५ जमालपुर जंक्शन।

४३ सुलतानगंज।

५८ भागलपुर।

७८ कहलगांव।

१०४ साहबगंज।

१२८ तीन पहाड़ जंक्शन।

१५४ पकउड़ सबडिवीजन।

१६८ मुराडोई।

१७८ नलहाटी जंक्शन।

१८७ रामपुरहाट सबडिवीजन।

२०४ साइन्थिया।

२४८ खाना जंक्शन।

जमालपुर जंक्शन से ५ मील पश्चिमोत्तर मुंगेर।

साहबगंज के मनिहारीघाट से इष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे के स्टेशनों की तफसील साहबगंज में देखो।

तीनपहाड़ जंक्शन से ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल।

नलहाटी जंक्शन से २७ मील पूर्व मुर्शिदाबाद के पास अजीमगंज।

जमालपुर।

लक्षीसराय से ७ मील पूर्व कजरा का रेलवे स्टेशन है, जहां से १½ मील उत्तर रेलवे लाइन और ओरियन गांव के पास एक पहाड़ी है। कहा जाता है कि इस पहाड़ी पर कुछ समय तक बुद्धदेव रहे थे और यहां एक प्रसिद्ध जलसा हुआ था। पुराने समय में यह यात्रा के लिए विख्यात था। यहां बुद्ध की निशानियां पाई जाती हैं।

लक्षीसराय जंक्शन से २५ मील पूर्व जमालपुर में रेलवे का जंक्शन है। सूबे बिहार के मुंगेर जिले में जमालपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जमालपुर में १८०८९ मनुष्य थे; अर्थात् १४११२ हिंदू, ३२९० मुसलमान और ६८७ कृस्तान।

रेलवे का काम और एंजन बनने का यह हिन्दुस्तान में प्रधान स्थान है। यहां ५५ एकड़ में कारखानें का काम होता है, जिसमें करीब १७ एकड़ जमीन छाई हुई है। यहां ३००० से अधिक हिंदूस्तानी आदमी और सैकड़ों यूरोपियन काम करते हैं। यूरोपियन लोगों के रहने के लिए कारखाने के पास मकान बने हैं। देशी कसबे और यूरोपियन बस्ती के बीच में रेल की लाइन है। युरोपियन वस्ती के पास गिर्जा, हम्माम और कई एक स्कूल बनेहुए हैं।

यह कारखाना सन १८६२ ई० में कायम हुआ। सन १८९१ में जो काम तैय्यार हुए उसकी कीमत १० लाख थी। कारखाने का काम बहुत तरक्की पर है। यहां लोहे के असबाव हरतरह के ढांले जाते हैं। सबसे बड़े ३० टन तक होते हैं। यहां के रोलिंग मिले में हर महीने में ४००टन छर बनते हैं। हिन्दुस्तान में रौलिंगमिले दूसरी जगह नहीं हैं। यहां ३½ टन का एक कल का हथउरा है। हिन्दुस्तान के कुल हिस्सों के सम्पूर्ण लाइनों के लिये लोहे के रेलवे असबाव यहां से जाते हैं।

जमालपुर के पास पहाड़ फोड़कर रेल की सड़क निकाली गई है।

ऋषिकुण्ड—जमालपुर से २ मील दूर पहाड़ी के ऊपर ऋषिकुण्ड नामक गरम पानी का कुण्ड है। पांच छ कुण्ड होकर पानी निकलता है। यहां मलमास में मेला होता है।

मुंगेर।

जमालपुर जंक्शन से ५ मील उत्तर थोड़ा पश्चिम और लक्षीसराय जंक्शन से रेलवे द्वारा ३० मील पूर्व मुंगेर का रेलवे स्टेशन है। सूबे बिहार के भागलपुर किस्मत में गंगा के दहिने किनारे पर (२५ अंश २२ कला ३२ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश ३० कला २१ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का प्रधान कसबा और सदरस्थान मुंगेर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मुंगेर में ५७०७७ मनुष्य थे; अर्थात् २७१८८ पुरुष और २९८८९ स्त्रियां। इनमें ४४१२१ हिन्दू, १२५७८ मुसलमान, ३२२ क्रुस्तान, ५२ जैन और ४ बौद्ध थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ६६ वां, बंगाल में ९ वां और सूबेबिहार में ६ वां शहर है।

यहां के बड़े बाजार में अच्छी अच्छी दुकाने हैं। इसमें बन्दूक, छुरी, पिस्तौल, आदि अच्छे बनते हैं। मुंगेर के पास छोटी छोटी कई पहाड़ी हैं। प्रधान सड़क दो बड़े तालावों के बीच में उत्तर से दक्षिण गई है। एक तालाव के पास पहाड़ी पर विजयानगर के महाराज का कर्णचौरा नामक मकान और दूसरे तालाव के निकट की पहाड़ी पर साहब-महल करके प्रसिद्ध एक सुन्दर मकान है। उसके पीछे शाहशुजा के रहने की इमारत है, जो अब जेलखाने के काम में आती है। भागलपुर के जज मुंगेर में आकर दौरे के मुकद्दमों का विचार करते हैं।

किला—गंगा के दक्षिण किनारे पर एक पहाड़ी के अखीर के पास करीब ४००० फीट लम्बा और ३५०० फीट चौड़ा एक पुराना क़िला है। किले का डौल दुरुस्त नहीं है। किले की दीवार में भीतर से मट्टी और बाहर से ईंटे दिए गए हैं। बहुतेरी जगहों में अब ईंटे नहीं हैं। उत्तर ओर गंगा और जमीन की ओर खाईं है। किले में उत्तर एक टीला है। लोग कहते हैं कि इस पर राजा कर्ण का गढ़ था, अब गढ़ की कुछ निशानी नहीं है, टीले पर किसी राजा का बंगला बना है। किले में एक तरफ जिले की कचहरियां और गंगा की तरफ जगह जगह अंगरेजों के बंगले हैं। किले से पूर्व और दक्षिण शहर बसा है।

घाट—किले के पास गंगाजी का कष्टहरनीघाट है। सीढ़ियां पक्की बनी हैं। घाट पर देवताओं के कई मन्दिर बने हैं। माघी पुर्णिमा के दिन इस घाट पर स्नान का मेला होता है। घाट से पश्चिम की ओर गंगा की बीचधार में एक पत्थर का चट्टान देख पड़ता है।

सीताकुण्ड—शहर से ५ मील दूर सीताकुण्ड है; वहां दीवार से घेरी

हुई ११ बीघा जमीन है। घेरे के भीतर राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न चारो भाइयों के नाम से अलग अलग ४ कुण्ड अर्थात् बहुत छोटे छोटे पोखरे बने हैं, जिनका जल ठंढा है और सीताकुण्ड नामक एक पांचवां कुण्ड है, जिसका पानी बहुत गरम है; उसमें कोई स्नान नहीं कर सक्ता है। वहां के ब्राह्मण कुंड का पानी लोटे से निकालकर यात्रियों के ऊपर छिड़कते हैं। कुण्ड के चारो तरफ लोहे का जंगला लगा है। कुण्ड से सर्वदा धुंआ निकलता है। कुण्ड का पानी एक नाला होकर बराबर बाहर गिरता है। घेरे के भीतर दो एक छोटे मन्दिर और एक छोटा मकान है। वहां माघ की पूर्णिमा को मेला होता है। इसके अतिरिक्त वैशाष और कार्तिक की पूर्णिमा और चैत्र की रामनवमी को भी वहां बहुत यात्री जाते हैं। वहां के पंडे गरीब हैं।

चण्डी का मन्दिर—सीताकुण्ड से ५ मील और गंगा से १ मील दूर चण्डी का स्थान है। वहां एकही पत्थर का अर्द्धगोलाकार गुम्बज के समान चण्डी का मन्दिर है। उसमें एक तरफ छोटा द्वार है, भीतर माथा ठेकता है, दीवार में चण्डी का आकार है, जिसको पूजा लोग करते हैं। मन्दिर के ऊपर गच किया हुआ है। लोग कहते थे कि यह मंदिर चंडी का उलटा हुआ कड़ाह है। राजा कर्ण इसी कड़ाह में कूद कर नित्य चंडी से सवामन सोना पाकर कष्टहरनीघाट पर दान देते थे।

मुंगेर जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३९२१ वर्ग मील है। इसके उत्तर भागलपुर और दरभंगा जिला; पूर्व भागलपुर जिला; दक्षिण संथाल परगना और हजारीबाग जिला और पश्चिम गया, पटना और दरभंगा जिले हैं। गंगानदी जिले के मध्य होकर जिले में ७० मील बहती है। गंगा के उत्तर जिले का छोटा भाग और दक्षिण बड़ा भाग है। उत्तर के भाग में गंडकी और तिलजुगा नदियां और उपजाऊ भूमि और दक्षिण भाग में पहाड़ियों का सिलसिला और कम उपजनेवाली भूमि है। गंगा से दक्षिण खानो से लोहा, सीसा, कंकड़ और कोयला निकलते हैं; पत्थर और स्लेट की भी खान हैं। जिले के दक्षिणी भाग में जंगल बहुत है, जंगली पैदावारों में महुआ अधिक होता है।

वृक्षों से गोंद इकट्ठा किया जाता है। जंगली बंवर और घास से रस्सियां बनाई जाती हैं। संथाल लोग बाघ और भालुओं को मार कर सरकार से इनाम लेते हैं।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय २०२५२१८ और सन् १८८१ में १९६९७७४ मनुष्य थे; अर्थात् १७७४०१३ हिंदू, १८७५१७ मुसलमान, १०९१ क्रस्तान, और ७१५३ संथाल और कोल। जातियों के खाने में २१७६१६ ग्वाला, १७५९९५ भूमिहार, १२३३३७ मुसहर, ११८९४० धानुक, १०८४३३ दुसाध, ९२६५२ कोइरी, ५९८६४ कानू, ५७२९१ ब्राह्मण, ५६०६७ राजपूत, ५६६३२ तेली, ५४०११ तांती, ५२६३४ चमार, ४८६३१ बनियां शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ में इस जिले के कसबे मुंगेर में ५७०७७; जमालपुर में १८०८९ और सेखपुरा, बधिया, बरबीघा, खुटिया, और मथुरापुर में दस हजार से कम मनुष्य थे।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि मुंगेर कसबा पूर्वकाल में मुद्गर मुनी के नाम से मुद्गरपुर या मुद्गराश्रम नाम से प्रसिद्ध था। क्योंकि मुद्गर मुनि यहां निवास करते थे। मुद्गर का अपभ्रंश मुंगेर है। कुछ लोगों का मत है कि विश्वामित्र के पुत्र राजा मुद्गर के नाम से इसका नाम मुंगेर हुआ था। लोग मुंगेर को राजा कर्ण की राजधानी कहते हैं, किंतु महाभारत या पुराणों में मुझको इसका कोई प्रमाण नहीं मिला। जान पड़ता है कि सन् ११९५ ई० में महम्मद बखतियार खिलजी ने मुंगेर को ले लिया था। गोर के अफगान बादशाह हुसेनशाह के पुत्र दनआल ने सन् १४९७ ई० में मुंगेर के किले को सुधारा था।

बंगाले के नवाब मीरकासिम ने, जो मुर्शिदाबाद में रहता था, अंगरेजों की हुकूमत से छुट जाने का मनसूबा बांधा और मुंगेर में आकर फौज दुरुस्त करके अंगरेजों की भांति उसे कवाइद सिखाई। उसने सन् १७६३ में अवध के नवाब को मिलाकर लड़ाई आरंभ की, घेरिया और ऊधानाला की लड़ाइयों में उसकी सेना परास्त हुई। वह भाग कर अवध के नवाब के पास चला गया इत्यादि। अंगरेजी अधिकार होने पर मुंगेर प्रसिद्ध हुआ। सन् १८१२ ई० में मुंगेर में सिविल स्टेशन बना। एक समय मुंगेर के मुसलमानो के पुराने किले में इष्टइंडियन कंपनी की एक फौज रहती थी।

अजगयबीनाथ।

जमालपुर से १८ मील (लक्षीसराय जंक्शन से ४३ मील) पूर्व भागलपुर जिले में सुलतानगंज का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से थोड़ी दूर उत्तर जहांगीरा गांव के पास गंगा के बीच धारा में एक चट्टान पर अजगयबीनाथ महादेव का मन्दिर है। यात्रीगण नाव में सवार हो चट्टान पर जाते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि वहां जह्नु मुनि का आश्रम था और बैजू नामक ग्वाला उसी स्थान से गंगाजल ले जाकर वैद्यनाथ जी पर चढ़ाता था। बहुतेरे लोग वहां से जल ले जाकर वैद्यनाथ जी पर चढ़ाते हैं। अजगयबीनाथ लिंगस्वरुप हैं। उन के पास जह्नुमुनि का स्थान और उनके मन्दिर के आस पास कई जीर्ण पुराने मन्दिर हैं। चट्टान के बगल में चट्टान काट कर गणेश, सूर्य, विष्णु, भगवती, महावीर आदि देवताओं की मूर्तियां बनी हुई हैं। माघ की पूर्णमासी से फागुन की शिवरात्रि तक चट्टान पर मेला होता है।

भागलपुर।

सुलतानगंज से १५ मील (लक्षीसराय जंक्शन से ५८ मील) पूर्व भागलपुर का रेलवे स्टेशन है। सूबे विहार में क़िस्मत और जिले का सदर स्थान, (२५ अंश १५ कला १६ विकला उत्तरअक्षांश और ८७ अंश २ कला २९ विकला पूर्व देशांतर में) गंगा के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर २ मील लम्बा और लगभग १ मील चौड़ा भागलपुर शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भागलपुर शहर और इसकी फौजी छावनी में ६९१०६ मनुष्य थे; अर्थात् ३४७०८ पुरुष और ३४३९८ स्त्रियां। इन में से ४८९१० हिन्दू, १९६६६ मुसलमान, ३०३ क्रुस्तान, १४४ जैन, ४३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी; २५ बौद्ध और १५ यहूदी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ४९ वां, बंगाल में ७ वां और बिहार में ४ था शहर है।

शुजागंज, नाथनगर, चंपानगर, मसूरगंज, आदि नामो से कई खंड होकर भागलपुर शहर बसा है। शुजागंज में रेलवे स्टेशन है। और यह सब महल्लों

से अधिक रवनकदार है। स्टेशन के निकट टोडरमल की उत्तम धर्मशाला बनी हुई है उसी में मैं टिका था। गंगा के तीर पर बूढ़ानाथ महादेव का सुन्दर मन्दिर बना है। भागलपुर में बूढ़ानाथ बड़े प्रसिद्ध देवता हैं। एक महंत के आधीन मन्दिर की बड़ी जायदाद है।

चंपानगर, जो पूर्व समय में बौद्ध राजाओं की राजधानी था। शुजागंज से ४ मील पश्चिम है। उसमें रामेश्वरदत्त ठाकुर का सदावर्त जारी है। स्टेशन से करीब २ मील एक पहाड़ी पर अङ्गरेजों की एक पुरानी कोठी है। स्टेशन से २ मील कमिश्नरी और जिले की कचहरियां हैं। स्टेशन से ३ मील एक जैन मन्दिर है, जहां जैन यात्री उत्साह से जाते हैं। मन्दिर के पास एक बड़ी सराय है। शहर में अङ्गरेजों के २ स्मरण स्तंभ और शहर में तथा इसके आस पास मुसलमानों के कई दरगाह हैं। करनगढ़ पहाड़ी पर देशी पल्टन रहती है।

भागलपुर तिजारत का स्थान है। यहां रेशम का बड़ा कार बार होता है और २८¼ गंडे के सेर से जिनिस विकते हैं। शहर में जल कल लगी है। भागलपुर का सेंट्रलजेल, दरी, कम्बल और पर्दा बनने के लिये मशहूर है। भागलपुर में एक देशी कालिज, सिविल अस्पताल, दवाई खाना, और कई मान्य जमिन्दार हैं।

भागलपुर जिला—जिले का क्षेत्रफल ४२६८ वर्गमील है। यह जिला गंगा के दोनों ओर है। इसके उत्तर नैपाल का राज्य; पूर्व ओर गंगा के उत्तर का पूर्निया जिला; पूर्व और दक्षिण गंगा के दक्षिण ओर संथाल परगना जिला और पश्चिम दरभंगा और मुँगेर जिला है।

जिले के पूर्वोत्तर भाग में जंगल है, जिसमें बाघ, भैंसे, और गैंडे रहते हैं। जिले में आम और ताड़ के बाग बहुत हैं। भागलपुर शहर के २० मील दक्षिण से पहाड़ी देस आरंभ होता है। पानी जमीन की सतह से थोड़ेही नीचे है। वृक्ष बड़े बड़े होते हैं। इस जिले में गंगा के दक्षिण चंदन नदी और उत्तर कोशी, तिलजुगा, डिमरा इत्यादि बहुत नदियां बहती हैं और रेशम के कीड़े बहुत पाले जाते है। अमरपुर, खदबली, बलुआ और सुलतानगंज तिजारती गांव है। गंगा से उत्तर सींगेश्वर स्थान गांव में हाथी का मेला होता है।

जिले में सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय २०२३३८८ और सन् १८८१ में १९६६१५८ मनुष्य थे; अर्थात् १७६४३०४ हिंदू, १८५५३३ मुसलमान, १५७३२ पहाड़ी जाति, ५७८ कृस्तान और ११ यहूदी। जातियों के खाने में ३४३८३० ग्वाला, १०१६६५ धानुक, ८२६०९ ततवा, ८२३०२ कोइरी, ७९५८४ मुसहर, ७६४०७ चमार, ७१४२० ब्राह्मण, ७०८६३ दुसाध, ६६९४६ तेली, ६०४९१ राजपूत, ४२३५१ भूमिहार, ३८३६३ कूर्मी, ३६३१९ कुँभार, ३५५१६ केवट, ३५१७४ बनियां, ३४७२४ कांदू, ३३९२७ नाई और शेष में दूसरी जातियां थीं। पहाड़ी जातियों में १७९०४ डुइयां, १३३८४ संथाल, ८९७७ भुंमिज और २३२२ कोल थे। भागलपुर जिले में केवल भागलपुर एक शहर है; कोलगंग और सोनवरसा छोटे कसबे हैं।

मंदरगिरि—भागलपुर जिले के बांका सबडिवीजन में लगभग ७०० फीट ऊंची मंदरगिरि नामक एक छोटी पहाड़ी है। उसके निकट दो तीन अन्य छोटी पहाड़ियां हैं। मंदरगिरि के ऊपर सीताकुण्ड और रामकुण्ड नामक सीतल जल के कुण्ड; शिखर पर मंदिर में भगवान का चरणचिन्ह और देवी का मस्तक, और पहाड़ी के पादमूल पर पापहरणी नामक पुष्करणी है। उससे दो मील पश्चिम बौलीगांव में मधुसूदन भगवान का मंदिर है। मंदिर से कुछ दूर पर एक बड़ा सरोवर है। पौष की संक्रांति के समय मेला लगता है और ३ दिनों तक रहता है। यात्री-गण पापहरणी पुष्करणी में स्नान करके मंदरगिरी पर एकत्र होते हैं और वहां से उतर कर मधुसूदन का दर्शन करते हैं। अधिकारी गण मधुसूदन भगवान को पापहरणी पुष्करणी में स्नान कराकर मंदर पहाड़ी के एक छोटे मंदिर में ठहराते हैं और संध्या के समय उनको फिर लेजाते हैं लोग कहते थे कि मंदरगिरि के नीचे एक दैत्य दबा हुआ है। विष्णु ने उसका सिर काटडाला और उसके धड़ को दबाने के लिये उस गिरि पर अपना चरण-चिन्ह रखते हैं। इसी से सब लोग पहाड़ी को पवित्र समझते हैं।

साहबगंज।

भागलपुर से ४६ मील (लखीसराय जंक्शन से १०४ मील) पूर्व साह-

बगंज का रेलवे स्टेशन है। सूवेविहार के संथालपरगना नामक जिले में गंगा के दहिने किनारे पर साहबगंज उन्नती करता हुआ तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय साहबगंज में ११२९७ मनुष्य थे; अर्थात् ९०८९ हिंदू, २०६४ मुसलमान, १२२ कृस्तान और २२ जैन।

गंगा के किनारे पर एक धर्मशाला बनी है; कसबे से सवईघास, जिसका कागज बनता है, दूसरी जगहों में बहुत भेजे जाते हैं।

साहबगंज के उसपार मनिहारीघाट से इष्टर्नबंगाल स्टेट रेलवे उत्तर और पूर्वोत्तर गई है। पूर्निया, दिनाजपुर, दार्जिलिंग, रंगपुर, ग्वालपाड़ा, गौहाटी इत्यादि के जानेवाले लोग उसकी गाड़ी में सवार होकर जाते हैं।

साहबगंज से ७ मील पश्चिम तेलियागढ़ी नामक उजड़ा हुआ पुराना किला है, एक समय गंगा उसके पास बहती थी।

साहबगंज से रेलवे लाइन ३ ओर गई है, तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २½ पाई लगता है।

(१) साहबगंज से दक्षिण इष्टइंडियन रेलवे।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२४ तीनपहाड़ जंक्शन।

५० पकउड़।

६४ मुड़ाडोई।

७४ नलहाटी जंक्शन।

८२ रामपुरहाट।

१०० सांइथिया।

१४४ खाना जंक्शन।

तीनपहाड़ जंक्शन से ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल।

नलहाटी जंक्शन से २७ मील पूर्व मुर्शिदाबाद के पास अजीमगंज।

खाना जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ८ मील वर्दवान, ४६ मील मगरा, ५१ मील हुगली जंक्शन, ५४ मील चंदरनगर, ६१ मील सेवड़ाफुली जंक्शन, ६३ मील श्रीरामपुर, और ७५ मील हबड़ा और खाना जंक्शन से पूर्वोत्तर ४६ मील रानीगंज, ५७ मील आसनसोल जंक्शन, १०८ मील मधूपुर जंक्शन, १२६ मील वैद्यनाथ जंक्शन, और १८७ मील लक्षीसराय जंक्शन।

(२) साहबगंज से उत्तर कुछ पश्चिम

इष्टर्नबंगाल स्टेट रेलवे, मनीहारी घाट से फासिला।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

७ मनीहारी।

२३ कठिहर जंक्शन।

४० पुर्नियां।

४५ कसवा।

८२ फर्बिसगंज।

९६ अचराघाट(कोसी के किनारेपर)

कठिहर जंक्शन से पूर्व २४ मील वरसूई जंक्शन, ३७ मील रायगंज, ७० मील दीनाजपुर और ८९ मील पार्वतीपुर जंक्शन। और वरसूई जंक्शन से ३५ मील उत्तर किसनगंज।

(३) साहबगंज से पश्चिम इष्टइंडियन रेलवे।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२६ कहलगांव।

४६ भागलपुर।

६१ सुलतानगंज।

७९ जमालपुर जंक्शन।

१०४ लक्षीसराय जंक्शन।

जमालपुर जंक्शन से ५ मील पश्चिमोत्तर मुंगेर।

राजमहल।

साहबगंज से २४ मील दक्षिण कुछ पूर्व तीनपहाड़ का रेलवे जंक्शन है। तीनपहाड़ से ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल तक रेलवे की शाखा गई है। सूबे विहार के संथाल परगना जिले में (२५ अंश, २ कला, ५१ विकला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश ५२ कला ५१ विकला पूर्व देशांतर में) गंगा के दहिने सब डिवीजन का सदर स्थान राजमहल एक छोटा कसवा है।

राजमहल एक समय बंगाल की राजधानी था; अब मट्टी के छोटे मकानों का, जिन में चंद अच्छे मकान हैं, एक छोटा कसबा है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय केवल ३८३९ मनुष्य थे। वर्तमान कसबे के पश्चिम मुसलमानों के पुराने शहर के खंडहर जंगल में ४ मील फैले हुए हैं। रेलवे स्टेशन से कई सौ गज दूर उत्तर से दक्षिण को १०० फीट लंबी संगीदालान नामक एक इमारत हीन दशा में खड़ी है। उसके मध्य में काले पत्थर के ३ दरवाजे हैं। लोग कहते हैं कि दिल्ली के वादशाह जहांगीर के पुत्र विहार के गवर्नर सल्तान शूजा के महल का यह हिस्सा है। कचहरी से ३ मील पश्चिम

मैनातालाव के दक्षिण एक ईंटे की इमारत और १०० गज दक्षिण मैनामसजिद है। इनके अलावे राजमहल में वहुतेरी पुरानी मसजिदें और मुसलमानों के स्मारक चिन्ह हैं। स्टेशन के पास सरकारी इमारतें वनी हुई हैं। गल्ला, तसर, पहाड़ी वांस, छोटी लकड़ियां इत्यादि वस्तु राजमहल से दूसरे स्थानों में भेजी जाती हैं।

इतिहास—प्रथम राजमहल का नाम आगमहल था। वादशाह अकवर का प्रसिद्ध जनरल राजा मानसिंह ने उड़ीसा को जीत कर लौटने पर सन् १५९२ ई० में आगमहल को सूवे वंगाल का सदर स्थान वनाया और उस का नाम राजमहल रख दिया। सन् १६०७ में इसलामखां ने राजमहल को छोड़ कर ढाके को सूवे का सदर स्थान वनाया, किंतु सन १६३९ में वादशाह जहांगीर के पुत्र सुल्तान शुजा ने फिर राजमहल को वंगाले का सदर स्थान नियत किया। अठारहवीं शदी के आरंभ में जव मुर्शिदकुलीखां ने मुर्शिदावाद को सूवे का सदर मुकाम वनाया, तव से राजमहल की घटती होने लगी। सन १८६३ में गंगाजी की प्रधान धारा राजमहल से ३ मील दूर हो गई।

मालदह और इंगलिस बाजार।

राजमहल से २४ मील दूर (२५ अंश १४ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ११ कला, २० विकला पूर्व देशांतर में) महानन्दा के दहिने किनारे पर पुराने मालदह से ४ मील दक्षिण सूवेविहार में भागलपुर विभाग के मालदह जिले का सदर स्थान इंगलिसवाजार कसवा है, जिस को अंगरेजी वाजार भी कहते हैं। राजमहल के समीप आगवोट गंगा के आर पार चलता है आगे देहाती सड़क है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इंगलिसवाजार में १३८१८ मनुष्य थे; अर्थात् ८०५७ हिन्दू, ५७४६ मुसलमान, ८ क्रस्तान, ४ जैन और ३ एनिमिष्टिक।

कसवे को वाढ़ से वचाने के लिये एक छोटा वांध वना है। इष्टइंडियन कंपनी की पुरानी कोठी में जिले की कचहरियां और संपूर्ण सरकारी आफिस हैं। कसवे में गल्ले की वड़ी तिजारत होती है।

इंगलिसबाजार से लग भग ४ मील दूर महानन्दा और कालिंदी के संगम के निकट पुराना मालदह, जिसको मालदा भी कहते हैं, एक छोटा कसबा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मालदह में ४६९४ मनुष्य थे। मालदह में बहुतेरे लोग रेशम के कीड़ों को पाल कर रेशम का काम करते हैं। वहां रेशमी कपड़ा अच्छा बुना जाता है और वहां के आम बहुत प्रसिद्ध हैं। मालदह अठारहवीं शदी में रुई और रेशम के काम के लिये बड़ा प्रख्यात था। वहां डच और फरासिसियों की कोठियां थीं। इंगलिसबाजार में सन १६५६ की नियत की हुई अंगरेजों की कोठी थी। मालदह से २५ मील दक्षिण महानन्दा और खाड़ीनदी के संगम के पास रहमपुर तिजारती कसबा है।

मालदह जिला—इस जिले का क्षेत्र फल १८९१ वर्ग मील है। इस के पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण गंगा नदी बहती है। यह जिला सन १८७६ ई० में राजशाही विभाग से भागलपुर विभाग में कर दिया गया। महानन्दा नदी जिले के मध्य होकर उत्तर से दक्षिण बहती है। जिले के पूर्व का आधा भाग ऊंचा है। जिले में महानन्दा के अतिरिक्त कालिंद्री, पूर्णभावा इत्यादि कई नदियां बहती हैं और बंगाल की प्रसिद्ध पुरानी राजधानी गौड़ और पांडुआ की दिलचस्प तबाहियां हैं।

जिले में सन १८९१ कि मनुष्य-गणना के समय ८१२८५५ और सन् १८८१ में ७१०४४८ मनुष्य थे; अर्थात् ३७९१५३ हिन्दू, ३२९५२५ मुसलमान, १७३४ पहाड़ी संथाल जो अपने पुराने मत में हैं, २६ कृस्तान, ७ यहूदी और ३ ब्राह्म। पहाड़ी कोमों में से ७००४४ हिन्दू में लिखे गए थे, जिन में से ६०७०० कोचवाली और राजवंशी, ७५७८ बीन, ४१८२ खरवार, ८९७ कोल, ८३३ संथाल और २५९ भुंइयां थे। खास हिन्दुओं में २३७५६ कैवरत, १६८७५ ग्वाला, १५७३६ तियर, १२००१ ब्राह्मण और शेष में दूसरी जातियां थी, राजपूत केवल ५१०४ थे।

इतिहास—मालदह जिले का प्राचीन इतिहास गौड़ और पांडुआ के इतिहास में देखो। सन् १६९६ में इष्टइंडियन कंपनी की कोठी मालदह में नियत

हुई। सन १८१३ में राजशाही, दीनाजपुर और पुर्नियां इन ३ जिले से निकाल कर मालदह जिला वना।

गौड़।

इंगलिसवाजार से ८ मील दक्षिण पश्चिम मालदह जिले में (२४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १० कला पूर्व देशांतर में) वंगाल की प्राचीन राजधानी गौड़ अति हीन अवस्था में विद्यमान है, जिसको लखनवती भी कहते है। पुरानी वस्तुओं के प्रेमियों के लिये यह वड़ा हृदयग्राही है। इस के किले और महलों में वड़ा जंगल होगया था; किंतु निवासीगण जंगल को साफ करके खेती वढ़ाते जाते हैं। शहरतलियों के साथ गौड़ का क्षेत्र फल २० से ३० वर्गमील तक था। खास शहर उत्तर से दक्षिण तक ७½ मील लंवा और १ से २ मील तक चौड़ा अर्थात् लगभग १३ वर्गमील क्षेत्रफल को छिपाता था। महानंदा और गंगा के वीच में गौड़ की तवाहियां फैली हुई हैं। गौड़ के पश्चिम भागीरथी के वर्तमान छोटी नाले में पहलें गंगा की प्रधान धारा थी। अव गंगा की धारा चार पांच कोस हट गई है। लगभग ६ मील लंवी किलावंदियों की एक लाइन भागीरथी के पुराने नाले से भोलाहाट के पास महानंदा के निकट तक टेढ़ी शकल में फैली हुई है। किले की भीति खास कर ईंटे से वनी हुई लगभग १०० फीट चौड़ी है। घुमाव के पुर्वोत्तर भाग के समीप एक फाटक है। उसके आस पास अनेक तालाव और एक मुसलमानी फकीर का स्मारक चिन्ह हैं। उससे पूर्वोत्तर ७१ फीट ऊंचा एक पुराना मीनार खड़ा है। किले की भीति के उत्तर आदिशूर और वलालसेन दो हिंदू राजाओं के महलों की निशानियां हैं और पीछे गौड़ की उत्तरीय शहरतली है। उसके पश्चिमी भाग में भागीरथी के निकट हिंदुओं का वनाया हुआ उत्तर से दक्षिण प्रायः १६०० गज लंवा, और पूर्व से पश्चिम तक ८०० गज से अधिक चौड़ा सागरदीघी नामक मीठे जल का वड़ा तालाव है। उसके किनारे ईंटे से वंधे हुए हैं। किनारों पर मुसलमानी इमारतें हैं, जिनमें मखदुमशाह जलाल का मकवरा प्रसिद्ध है। उस शहरतली के सामने शाहदुल्लापुर वाजार के पास गंगा के पुराने वेड़

का एक प्रधान घाट है। उस जगह दूर दूर से मुर्दे जलाने के लिये लाए जाते हैं। गौड़ में छोटे तालाव प्रत्येक स्थानों में देखे जाते हैं। स्थान स्थान में मकानों की नेव और पूजा के छोटे स्थानों की निशानियां देख पड़ती हैं। भागीरथी के किनारे पर उत्तर से दक्षिण तक लगभग १ मील लंबा और ६०० से ८०० गज तक चौड़ा मुसलमानो का किला फैला हुआ है। किले की दीवार इंटे से बनी हुई है। प्रत्येक कोनों के पास पाए और दक्षिण के कोने के निकट ४० फीट ऊंची और ८ फीट मोटी इंटे की दीवार से घेरा हुआ महल उजाड़ पड़ा है। महल से थोड़ा उत्तर शाही कबर स्थान है जिसमें हुसेनशाह और बंगाल के दूसरे स्वाधीन बादशाह दफन किए गए थे। वह स्थान निहायत उजड़ गया है। किले के भीतर एक उजड़ी हुई मसजिद और दूसरी कदमरसूल नामक छोटी मसजिद है। किले के पूर्व की दीवार से बाहर इंटे के एक ऊंचे टावर पर एक कमरा है, जिस पर जाने के लिये गोलाकार सीढ़ियां बनी हैं। किले से लगभग १½ मील उत्तर खाई से घेरा हुआ फूलबाग नाम से प्रसिद्ध एक स्थान है। उसके दक्षिण-पूर्व 'प्यास बारी' नामक खारा जल का एक बहुत बड़ा तालाब है। गौड़ शहर की दीवार के भीतर बहुतेरे दूसरे बड़े तालाब हैं। उनमें से कई एक में घड़ियाल रहते हैं। वहां के तालाबों में छोटी सागरदीघी उत्तम है। 'प्यास बारी' और किले के बीच में गौड़ में सब से बड़ी इमारत सुनहली मसजिद खड़ी है। इसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण तक १८० फीट, चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ६० फीट और ऊंचाई कारनिस के सिरो भाग तक २० फीट है। पहले इसके ऊपर ३३ गुंबज थे। गौड़ शहर के दक्षिण की दीवार में कोतवाली दरवाजा नामक सुन्दर बनावट का पुराना फाटक खड़ा है।

इतिहास—गौड़ के नियत होने का समय जान नहीं पड़ता है। ऐसा निश्चय है कि यह पूर्वकाल में हिन्दू राजाओं के आधीन बंगाल की राजधानी थी। इसी गौड़ से पंचगौड़ ब्राह्मण प्रसिद्ध हुए थे। कथा ऐसी है कि गौड़ के राजा आदिशूर ने कन्नौज के राजा से ५ वैदिक ब्राह्मण मांगा। कन्नौज में देश देश के विद्वान ब्राह्मण रहते थे। राजा ने ५ वैदिक ब्राह्मणों को गौड़ में भेज दिया। राजा आदिशूर ने अवध प्रदेश के गोंड़ा के ब्राह्मण को गौड़

की, मिथिला देश के ब्राह्मण को मैथिल की, कन्नौज के ब्राह्मण को कानकुब्जकी, सरस्वती के निकट के ब्राह्मण को सारस्वत की, और उत्कल देश के ब्राह्मण को उत्कल की पदवी दी। देशी लोग गौड़ के उजड़े पुजड़े महलों में से चंद को आदिशूर वल्लालसेन और लक्ष्मणसेन के कहते हैं। जान पड़ता है कि शहर का पुराना नाम लक्ष्मनावती था, जिसका अपभ्रन्श लखनवती है। गौड़ नाम भी वहुत पुराना है किन्तु यह राज्य का नाम ज्ञात होता है।

गौड़ का ठीक इतिहास मुसल्मानों के विजय के समय सन् १२०४ ई० से आरंभ होता है। लगभग ३०० वर्ष तक यह मुसलमानों के बंगाल का प्रधान बैठक था। उस समय के अन्त के भाग में वहुतेरी मसजिदें और मुसलमानों की दूसरी इमारतें वनी थीं, जो अवतक देखने में आती हैं। वंगाल के अफगान वादशाहों ने स्वाधीन वन जाने के पश्चात् गौड़ को छोड़ कर पांडुआ को राजधानी वनाया; किन्तु पीछे पांडुआ छोड़ दियागया और फिर गौड़ मुसलमानों की राजधानी हुआ। अफगान वंश के पीछे गौड़ से चंद मील दक्षिण-पश्चिम गंगा के किनारे पर गवर्नमेंट का सदर स्थान वनाया गया। सन् १५३७ में शेरशाह अफगान ने गौड़ को लूटा। उस समय से गौड़ की घटती आरंभ हुई। सन् १५७५ में दिल्ली के मुगल वादशाह अकवर ने गौड़ के सव से पिछले अफगान वादशाह दाउदखां को परास्त किया। शहर वरवाद हुआ।

पांडुआ।

मालदह से ८ मील, और इंगलिसवाजार से लगभग १२ मील (गौड़ से २० मील) पूर्वोत्तर मालदह जिले में पांडुआ का अदीना मसजिद है। पांडुआ को परुआ भी कहते हैं। एक पक्की ६ मील लंवी सड़क पांडुआ होकर गई है। मुसलमानों के प्रायः संपूर्ण स्मारकचिन्ह और लगातार शहर की निशानियां उसी सड़क के किनारों पर हैं। सिकंदरशाह ने सन् १३६० ई० में अदीना मसजिद को वनवाया। मसजिद उत्तर से दक्षिण को लगभग ५०० फीट और पूर्व से पश्चिम को ३०० फीट फैली हुई है। यह ऐसे ढव से वनी है कि इसकी दीवारों और खंभों से १२७ गुम्बजे भाग वन गए हैं। प्रत्येक भाग के ऊपर एक गुम्बज है; वाहरी

ओर वहुतेरी छोटी खिड़कियां वनी हुई हैं। खास मसजिद के मध्य का गुम्वज सतह से ६० फीट ऊंचा है। पांडुआ की संपूर्ण इमारतें पत्थर की हैं। गौड़ के समान पांडुआ में भी अव पहले के समान जंगल नहीं है। वहां के निवासी हल से जोत कर खेत वढ़ाते जाते हैं। क़िले की निशानी भी दूर तक देखने में आती हैं। मखदुमशाह जलाल और उसके पोते कुतवशाह के स्मारक चिन्ह वने हैं। वहां कार्तिक या अगहन में मेला होता है और ५ दिन रहता है। मेले में पांच छः हजार मनुष्य आते हैं।

इतिहास—पांडुआ आरंभ में गौड़ के वाहरी का एक पड़ाव था। पीछे दीहाती लोगों के रहने का प्रिय स्थान हुआ। वंगाल के अफगान वादशाह ने स्वाधीन होजाने के पश्चात् सन् १३५३ ई० में गौड़ को छोड़कर पांडुआ को राजधानी वनाया। जान पड़ता है कि तिजारती और कारीगर लोगों ने गौड़ को नहीं छोड़ा, केवल सरकारी कचहरियां पांडुआ में वनाई गई। पीछे पांडुआ को छोड़ कर फिर गौड़ राजधानी वना। किन्तु कुछ दिनों तक पांडुआ वादशाहों का दीहाती महल था। पांडुआ में सुनहली मसजिद, १० गुम्वजवाली लक्खीमसजिद, अदीना मसजिद, जो इस देश में सव से अधिक प्रसिद्ध इमारत है और वादशाहों का महल प्रधान इमारते हैं।

मुर्शिदावाद।

तीनपहाड़ जंक्शन से ५० मील (साहवगंज से ७४ मील) दक्षिण मुर्शिदावाद जिले के नलहाटी में रेलवे जंक्शन है। लोग कहते हैं कि राजा नल के नाम से इसका नाम नलहाटी है। नलहाटी वस्ती से कई एक सौ गज दूर पहाड़ी के नीचे पत्थर पर सीताजी का चरण-चिन्ह और १ मील दूर पार्वतीजी का वड़ा मंदिर है।

नलहाटी से पूर्व २७ मील की रेलवे शाखा भागीरथी गंगा के दहिने किनारे पर अजीमगंज को गई है। अजीमगंज मुर्शिदावाद जिले में एक वस्ती है, जिसमें कई एक धनी सौदागर रहते हैं और कई एक सुन्दर जैन मन्दिर वने हुए हैं। वाजार होकर एक पक्की सड़क गई है। अजीमगंज और मुर्शिदावाद के वीच में नाव चलती है।

अजीमगंज के सामने उस पार अर्थात् भागीरथी के वांए किनारे पर (२४ अंश ११ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १८ कला, ५० विकला पूर्व देशांतर में) सूबे बंगाल के नदिया विभाग में मुर्शिदाबाद जिले में प्रधान कसबा मुर्शिदाबाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मुर्शिदाबाद में ३५५७६ मनुष्य थे; अर्थात् १८०४६ पुरुष और १७५३० स्त्रियां। इनमें २०७८९ हिंदू, १२६१५ मुसलमान, २१३२ जैन और ४० क्रस्तान थे।

मुर्शिदाबाद एक समय बहुत बड़ा शहर था। यद्यपि इसकी मनुष्य-संख्या घट रही है, किंतु अब तक इसमें बहुतेरे धनी जैन सौदागर विद्यमान हैं और चंद वस्तु देखने योग्य हैं; दूर तक ईंटे के बहुतेरे मकान बने हुए हैं; मकानो के पास बांस का झाड़ और वृक्ष लगे हुए हैं और कई महलों में सुन्दर देवमन्दिर बने हुए हैं।

निजामत किले से अलग मुबारक मंजिल के निकट मनीबेगम की बनवाई हुई मसजिद; किले के बाहर बरहमपुर जानेवाली सड़क के पास घोड़े गाड़ी के मकान और घोड़े और हाथियों का बड़ा अस्तबल; और सामने कुछ दूर पर निजामत कालिज, जो नवाब के रिस्तेदारों की शिक्षा के लिये ७८००० रुपये के खर्च से बना है, देखने में आते हैं। कसबे के बाहर दक्षिण-पूर्व और मोती झील के पूर्वोत्तर के कटरे में मक्के की बड़ी मसजिद के ढांचे की बनी हुई नवाब मुर्शिदकुलीखां का मकबरा है। इसके ७० फीट ऊंचे दो मीनार हीन-दशा में खड़े हैं। इस अभिप्राय से सीढ़ी के नीचे नवाब की कबर बनी है कि सब लोगों के पांव उस पर पड़ेगें। उसके पड़ोस में तोपखाना था। सड़क से ६० गज दूर १७ फीट लंबी, जिसकी नल ६ इंच चौड़ी है, एक बड़ी तोप पड़ी है, उसपर सन् १६३७ का पारसी लेख है।

कसबे से २ मील दक्षिण एक मनोरम स्थान में मोतीझील है। झील में बहुतेरे घड़ियाल रहते हैं। पहले झील के बगलों में शिराजुद्दौला का बनवाया हुआ उत्तम महल था, उसकी चंद मेहराबियां अब तक देखने में आती हैं।

भागीरथी के दहिने किनारे पर मोतीझील के सामने मुर्शिदाबाद के नवाबों

का खुसवाग नामक पुराना कवरगाह है, वहां वहुतेरे मकवरों के अतिरिक्त एक मसजिद और अन्य दो इमारते हैं। एक मकवरे में सिराजुद्दौला और उसकी-स्त्री-की कवर है।

मुर्शिदावाद में धनी जैन सौदागर बहुत हैं। बहुत लोग रेशम के कीड़े पालते हैं और कोए को कातनेवालों के पास भेजते हैं। रेशमी कपड़ा और रूमाल बहुत तैयार होते हैं। सोने चांदी के कारचोवी और हाथीदांत का उत्तम काम वनता है।

कासिमवाजार में एक बंगाली राजा का सुन्दर महल वना है। राजवाड़ी के पास देवमंदिर के चारों बगलों के मकानों में अनेक देवमूर्तियां स्थापित हैं और वहां सदावर्त लगा हुआ है।

नवाव का महल—मुर्शिदावाद में दिलचस्पी की प्रधान वस्तु नवाव का महल है। वह भागीरथी के किनारे पर वहुत बड़ी इमारत इटेलियन ढांचे का वना हुआ है, जो सन् १८३७ ईस्वी में लगभग १७००००० रुपये के खर्च से १० वर्ष में तैयार हुआ था। वह महल ४१५ फीट लंबा, २०० फीट चौड़ा और ८० फीट ऊंचा है। अग्र भाग उत्तर है, मार्वुल का चमकीला फर्श वना है। जेवनार का मकान २९० फीट लंबा, जिसमें आइने जड़े हुए वहुतेरे दरवाजे हैं, वना हुआ है। इमारत के मध्य में गुँवज के नीचे १५० शाखाओं का एक वड़ा झांड़ लटका है और फर्श पर हाथीदांत का मनोहर तख्त है। दीवार में नवाव और उनके वंश के वहुतेरे लोगों की तस्वीरें टंगी हुई हैं। प्रधान दर्वाजे के दहिने जनाना किता है।

हाते के भीतर उत्तर के प्रधान फाटक के सामने सन् १२६४ हिजरी (सन् १८४७ इस्वी) का वना हुआ एक सुन्दर इमामवाड़ा खड़ा है।

खास महल को लोग आइनामहल कहते हैं। एकही घेरे के भीतर नवाव का महल, इमामवाड़ा और दूसरी इमारतें हैं। सव मिलाकर निज़ामत किला कहलाता है।

मुर्शिदावाद जिला—जिले के उत्तर से दक्षिण-पूर्व के कोन तक सीमा पर गंगा की प्रधान धारा पदमा; जो इस जिले को मालदह और राज-

शाही जिले से अलग करती है; दक्षिण वीरभूमि जिला और पश्चिम संथाल परगना जिला है। जिले का प्रधान कसबा मुर्शिदाबाद और सदर स्थान वरहमपुर है। गंगा की दूसरी धारा भागीरथी जिले के मध्य होकर बहती है। भागीरथी के दाहिने अर्थात् पश्चिम का देश सरद और अंकड़ीला है और उपजाऊ नहीं है, किन्तु पूर्व का देश जो पदमा, भागीरथी और जलांगी नदियों से घेरा हुआ है; बंगाल के सबसे अधिक उपजाऊ देशों में से एक है। गंगा के बाएं के हिस्से में भगवानगोला और धुलियान प्रधान बाजार और बाएं किनारे पर जंगीपुर, जियागंज, मुर्शिदाबाद, कासीमबाजार और वरहमपुर प्रधान स्थान है। इस जिले के मालिमापुर में प्रसिद्ध जगतसेठ का घर है। वह सरकार से कुछ पेंशन पाकर अब उसी से गुजारा करते हैं। कई छोटी धारा गंगा की धारा से निकली हैं और कई एक भागीरथी में गिरती हैं। जंगलों से मधुमक्खियों का मोम और लाही बनाई जाती है। जंगली जात संथाल और धांगड़, जूट और बूटी के वृक्षों पर लाह के कीड़े को पालते हैं। गांव वाले अपने घर पर रेशम के कीड़े को पालते हैं और कोवे को कातने वालों के पास भेजते हैं। साल में लाखों रूपये के रेशमी कपड़े तैयार होते हैं। जल वायु अच्छा नहीं है। जिले में नील की कई बड़ी कोठी हैं। मुर्शिदाबाद के कासिम बाजार से २५ मील दक्षिण सन् १७५७ की लड़ाई का प्रसिद्ध मैदान पलासी है।

सन् १८८१ में जिले का क्षेत्रफल २१४४ वर्ग मील और मनुष्यसंख्या १२२६७९० थी, अर्थात् ६३४७९६ हिन्दू, ५८९९५७ मुसलमान, ८७७ आदि निवासी, ६७५ जैन, ४७० क्रुस्तान, १४ ब्राह्म, और १ बौद्ध। जातियों के खाने में १००३५५ कैवरत, ३६९२७ सद्गोप, ३५४११ ग्वाला, ३३९३५ ब्राह्मण, ३०५६८ बागड़ी, २२५५० चमार, शेष में तांती, चंडाल, कोच, कायस्थ, बनियां; नापित, मूड़ी, काल्लू, हाड़ी, डोम; मदक इत्यादि थे। राजपूत केवल ८९५५ थे। सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जिले के कसबे मुर्शिदाबाद में ३५५७६, वरहमपुर में २३५१५, यमखंड़ी में ११६३१ और जंगीपुर में १०००० से कुछ कम मनुष्य थे।

इतिहास—बंगाल के बड़े नवाब मुर्शिदकुलीखां ने सन १७०४ ई० में ढाका को छोड़ कर मकसुदाबाद को सूबे का सदर स्थान बनाया और मकसुदाबाद का नाम बदल कर अपने नाम के अनुसार मुर्शिदाबाद रक्खा। उस समय वह गंगा की सौदागरी का बन्दरगाह था, वहां उसने एक महल बनवाया। मुर्शिदकुलीखां ने इकबाल के साथ तमाम मुल्क बंगाले पर २१ वर्ष राज्य किया और अपने दामाद और पोते को अपना राज्य छोड़ कर मरा; परन्तु सन् १७४० में अलीवर्दी खां हकदार वारिसों को निकाल कर खुद नवाब बन बैठा।

अलीवर्दी खां सन् १७५६ में मर गया और उसकी जगह उसका पोता सिराजुद्दौला, जब उसकी उमर १८ वर्ष की थी, गद्दी पर बैठा। वह दोही महीने के अन्दर अङ्गरेजों से बिगड़ कर एक भारी फौज के साथ कलकत्ते पर चढ़ गया। बहुत से अङ्गरेज नदी की राह से समुद्र की तरफ उतर गए और बाकी को उसने पकड़ लिया और काली कोठरी नामक किले के जेलखाने में रात होने पर बन्द करवा दिया। कोठरी बहुत तंग थी, इस लिये जब दूसरे दिन सुबह को दरवाजा खोला गया तो १४६ आदमियों में से २३ आदमी जीते निकले। जितनी फौज जमा होसकी, उसको लेकर अंगरेजी अफसर क्लैव और वाटशन ने मंदरास से आकर कुछ ऐसाही सामहना करने के पश्चात् कलकत्ते पर फिर अपना अधिकार करलिया।

क्लैव ने अलीवर्दी खां के दामाद मीरजाफर को सूबे बंगाल की गद्दी के दावा के लिए तैय्यार किया और आप १००० गोरे २००० तिलंगे और ८ तोपें लेकर पलासी की, जो मुर्शिदाबाद से लगभग २५ मील दक्षिण हैं, राहली। सिराजुद्दौला ३५०००, पैदल, १५००० सवार और ५० तोपें लेकर सामना करने को निकला। सन् १७५७ की तारीख २३ जून को, जब नवाब की फौज बे फिकरी से खाने पकाने में लगी थी, क्लैव ने दुश्मन के एक आगे के मोर्चे पर हमला किया। उस समय जब नवाब के बहुत से अफसर मारे गए तब मीरजाफर ने, जो अङ्गरेजों से मिला था, सिराजुद्दौला को यही सलाह दी कि आज फौज पीछे हटालीजिये कल लड़ेंगें। उसी समय नवाब सिराजुद्दौला

की तमाम फौज छितर बितर होगई, वह घबड़ा कर एक सांडिनी पर सवार हो भागा; किंतु राजमहल के पास से पकड़ कर मुर्शिदाबाद में लाया गया। मीरजाफर के लड़का मीरन ने उसको कतल करवाडाला।

अङ्गरेजों ने मीरजाफर को मुर्शिदाबाद में नायब की गद्दी पर बैठाया; परन्तु सन् १७६१ में इन्हों ने मीरजाफर को गद्दी से उतार कर इसकी जगह उसके दामाद मीरकासिम को नवाब बनाया।

मीरकासिम को नवाब हुये बहुत अरसा न हुआ था कि उसने अङ्गरेजों की हुकूमत से छूटजाने का मनसूबा बांधा। इस नियत से उसने सन् १७६३ में अपने रहने की जगह मुंगेर में मुकरर की और अवध के नवाब शुजाउद्दौला को मिलाकर अङ्गरेजों के साथ लड़ने का इरादा किया। झगड़ा बहुत बढ़गया, तमाम सूबे में फसाद फैल गया, अङ्गरेजों के २००० हिन्दुस्तानी सिपाही पटने में टुकड़े करडाले गए और २०० अङ्गरेज जो वहां और सूबे की दूसरी जगहों में मुसलमानों के हाथ पड़े काट डाले गए। घेरिया और उघानाला की २ बड़ी लड़ाइयों में मीरकासिम की फौज ने शिकस्त खाई, वह भाग कर अवध के नवाब के पास चला गया।

मीरकासिम की जगह पर मीरजाफर फिर नवाब बनाया गया। सन् १७६५ में मीरजाफार के मरने पर उसके भाई नजमुद्दौला को अङ्गरेजों ने गद्दी पर बैठाया, जो ५०००००० रुपया सालाना पेंशन पाता था। सन् १७६६ में नजमुद्दौला मरगया और उसका भाई सैफुद्दौला उसकी जगह बैठा। सन् १७७० में सैफुद्दौला के मरने पर उसका भाई मुबारकुद्दौला बंगाले का सूबेदार हुआ। वह नाबालिग था, कम्पनी ने उसके लिये केवल १६ लाख रुपया सालाना कबूल किया। सन् १७७२ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने दीवानी और फौजदारी कचहरियों को मुर्शिदाबाद से उठाकर कलकत्ते में नियत किया। सन् १७९९ में टकशाल मुर्शिदाबाद से उठा दिया गया। लगभग इसी समय जिले का सदरस्थान बरहमपुर हुआ, जहां पहलेही से छावनी थी। मुर्शिदाबाद के नवाब सन् १८८२ ई० तक १६००००० रुपया सालाना पेंशन पाते थे; किन्तु अब पेंशन घटा दी गई है।

बरहमपुर ।

मुर्शिदाबाद कसबे से ५ मील दक्षिण भागीरथी के बाएं किनारे पर मुर्शिदाबाद जिले का सदर स्थान बरहमपुर एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बरहमपुर में २३६१५ मनुष्य थे; अर्थात् १८७७९ हिन्दू, ४२०२ मुसलमान, २८५ एनिमिष्टिक, २३६ कृस्तान और १३ जैन ।

बरहमपुर में कई एक गिरजा, कबरगाह, कालिज और बारक से लगभग १ मील दक्षिण-पश्चिम जिले की कचहरियां, खजाना जेलखाना, और पागलखाना है ।

इतिहास—मुर्शिदाबाद के नवाब शिराजुद्दौला ने कासिमबाजार की अङ्गरेजी कोठी को तोड़दिया था, इसलिये सन् १७५७ की पलासी की लड़ाई के थोड़ेही पीछे फौजी बारक के लिये बरहमपुर चुना गया । सन् १७६५ में ३०२२७०० रुपये के खर्च से बारक तैयार हुआ ।

सन् १८५७ के बलवे के समय ता० २५ फरवरी को पहले पहल १९ वीं रेजीमेंट के सिपाहियों ने इसी जगह गोली बारूद लेने से इनकार किया था । उस समय वे बारकपुर भेजे गए और वहां उनसे अफसरों ने सम्पूर्ण हथियार छीन लिया । सन् १८७० में बरहमपुर से फौज उठा दी गई ।

सातवां अध्याय ।

(सूबे बिहार में) पुर्निया, (सूबे बंगाल में) दीनाजपुर, पार्बतीपुर जंक्शन, जलपाईगोड़ी, दार्जिलिंग, (देशीराज्य) शिकम और (स्वतंत्र राज्य) भूटान ।

पुर्निया ।

साहबगंज से उस पार गंगा के पास मनिहारीघाट पर इष्टर्न बंगाल स्टेट

रेलवे का स्टेशन है। साहबगंज से वहां तक आगबोट चलता है। मनिहारी घाट से उत्तर २३ मील कटिहर जंक्शन और ४० मील पुर्निया का रेलवे स्टेशन है।

सूबे बिहार के भागलपुर विभाग में संवरा नदी के पूर्व किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले का प्रधान कसबा पुर्निया है। सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय इस में १४५५५ मनुष्य थे; अर्थात् ९५७६ हिन्दु, ४७५७ मुसलमान, १३३ कृस्तान, ८४ जैन, ४ यहूदी और १ दूसरे।

पुर्निया में जिले की कचहरियां दीवानी और फौजदारी एक दूसरी से अलग है। उनके अलावे वहां जेलखाना, अस्पताल और कई स्कूल हैं और मामूली सौदागरी होती है तथा कई धनी महाजनों के अच्छे मकान बनेहैं। वहां का जलवायु अच्छा नहीं है। वहां बहुत बोखार हुआ करता है। किसी किसी वर्ष में तो सैकड़े पीछे ९० आदमी बोखार से बीमार हो जाते हैं; किंतु उनमें से बहुत कम आदमी मरते हैं।

पुर्निया जिला—जिले का क्षेत्रफल ४९५६ वर्गमील है। यह भागलपुर विभाग के पूर्वोत्तर का जिला है। इसके उत्तर नैपाल का राज्य और दार्जिलिंग जिला; पूर्व जलपाई गोड़ी, दीनाजपुर और मालदह जिले; दक्षिण गंगा नदी, बाद भागलपुर और संथाल परगना जिला और पश्चिम भागलपुर जिला है। जिले के आधे पश्चिमीभाग में मवेसी और भेड़ के झुंडों के चरागाह हैं और पूर्वी हिस्से के अपेक्षा उस भाग में बस्ती बहुत कम हैं। जिले की सम्पूर्ण नदियां गंगा में गिरती हैं। कोसी नदी नैपाल राज्य से ३ धाराओं से निकली है और अंगरेजी सीमा में पहुंचने पर उसकी चौड़ाई लगभग १ मील हो गई है। उसकी धार बड़ी तेज है। प्रति वर्ष उसका स्थान बदलता है। कालीकोसी दक्षिण ओर साहबगंज के सामने गंगा में गिरती है। महानन्दा नदी शिकम के पहाड़ों से निकल कर जिले के दक्षिण-पूर्व इस जिले में प्रवेश करके जिले के पूर्वी सीमा पर ८ मील तक बहती है। वहां से वह पहले पश्चिम को, उसके बाद दक्षिण को और अंत में पूर्व को बहती हुई मालदह जिले में जाकर गंगा में मिल गई है। महानंदा के किनारे पर कलियागंज, हल्दीबाड़ी, खड़खड़ी,

किशनगंज, दुलारगंज और बरसूई तिजारती गांव हैं। जिले में कोसी के किनारों पर और बालूदार टापुओं में तथा उत्तरी सीमा के जंगल में बाघ रहते हैं।

जिले में सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय १९४०६५५ और सन् १८८१ में १८४८६८७ मनुष्य थे; अर्थात् १०७६५३१ हिन्दू, ७७११३० मुसलमान, ८७९ कोल, ३२७ कृस्तान और १२ यहूदी। जातियों के खाने में १३१६२९ ग्वाला, ७१८३३ कोच, ४८४६५ राजपूत, ४४२२१ कैवरत, ३८१३१ तेली, ३५५८४ धानुक, ३४८२२ ब्राह्मण, ३१२१० बनियां, ३१२०९ मुसहर, १२७६१ कायस्थ और शेष में दूसरी जातियां थीं। जिले के कसबे पुर्निया में १५०१६, बसगांव में ६११८, सीतलपुर में ६००२, किसनगंज में ६०००, रानीगंज में ५१७८, भटबाग में ५७२३ और कसबा में ५१२४ मनुष्य थे। किसनगंज और खगड़ा में मुसलमान राजा हैं।

इतिहास—१३ वीं सदी में पुर्निया जिला मुसलमानों के आधीन हुआ। लोग कहते हैं कि उससे पहले जिले का दक्षिणी भाग बंगाल के अंतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेन के राज्य का एक भाग था। १७ वीं शदी में नवाब उस्तवालखां पुर्निया का फौजदार था। अबदुल्लाखां उसका उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७२२ में बभनारखां के मरने पर सयफखां पूर्निया का सूबेदार हुआ। सन् १७५६ में बंगाल के नवाब अलिवर्दीखां के दामाद सैयद अहमदखां के मरने पर सवक्तजंग उत्तराधिकारी हुआ। नवाबगंज के निकट की लड़ाई में सवक्तजंग मारा गया। सन् १७७० में एक अंगरेजी अफसर सुपरिंटेंडेंट नियत हुआ। कालीकोसी के स्थान छोड़नें के कारण क्रम क्रम से सन् १८२० ई० में पूर्निया कसबा रोगवर्द्धक स्थान हो गया। इधर उसकी जन-संख्या बहुत घट गई है। लगभग सन् १८३५ में सरकारी आफीस २ मील पश्चिम ऊची भूमि पर हटा दिये गए।

दीनाजपुर।

मनिहारीघाट से उत्तर २३ मील कठिहर जंक्शन और कठिहर से पूर्व

२४ मील बरसुई बाजार, ३७ मील दीनाजपुर जिले में एक सवडिवीजन रायगंज और ७० मील दीनाजपुर का रेलवे स्टेशन है । सूबे बंगाल के राजशाही विभाग में (२५ अंश ३८ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश ४० कला, ४६ विकला पूर्व देशांतर में) पूर्णभाभा नदी के पूर्व किनारे पर जिले का सदर स्थान दीनाजपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दीनाजपुर कसबे में १२२०४ मनुष्य थे; अर्थात् ६६६६ हिंदू, ५३७३ मुसलमान, ८६ कृस्तान, ७८ जैन और १ बौद्ध।

दीनाजपुर में सिविल कचहरियां, अस्पताल, पुलिसस्टेशन, स्कूल और एक राजा है। राजवाड़ी में कलियाजी का सुंदर मंदिर बना हुआ है।

दीनाजपुर कसबे से १८ या २० मील उत्तर जंगल में कंतजी का विशाल मंदिर स्थित है। मंदिर के सिरो भाग पर ९ शिखर बने हैं और नीचे से ऊपर तक अनेक भांति की सैकड़ों मूर्त्तियां बनी हुई हैं। वहां कंतजी के भोगराग का बड़ा प्रबंध रहता है। महापुआ प्रसाद मिलता है। कंगलियों को कच्ची रसोई खिलाई जाती है। कंतजी के मंदिर से लगभग २० मील पश्चिम जंगल में गोविंदजी का एक बड़ा मंदिर है।

दीनाजपुर जिला—यह राजशाही विभाग के पश्चिम का जिला है, जो बंगाल के दूसरे जिलों के साथ सन् १७६५ ई० में अंगरेजी अधिकार में आया। जिले का क्षेत्रफल ४११८ वर्गमील है। इसके पूर्व करतोआ नदी और पश्चिम महानंदा नदी है। महानंदा नदी जिले के पश्चिमी सीमा पर लगभग ३० मील बहती है। छोटी नदियां अनेक है। जंगली पैदावार मधुमक्खियों का मोम और सिंगहाड़े का फूल, जिससे कपड़े रंगे जाते हैं, इत्यादि और जंगली जानवरों में बाघ, तेंदुआ, भैंसे, सूअर, बारसींगा हरिन और कई प्रकार की बिल्लियां हैं। बाघ सघन वनों में और तेंदुए सर्वत्र मिलते हैं।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १५४०६५५ और सन् १८८१ में १५१४३४६ मनुष्य थे; अर्थात् ७९५८२४ मुसलमान, ७१६६२० हिंदू, १४३५ पहाड़ी संथाल और ४५७ कृस्तान। जातियों के खाने में ४०७१२३ राजबंशी, पाली और कोच तीनों मिलकर, ३७७८५ कैवरत, ३११३४ हाड़ी,

२११४९ बनियां, १३५६० जलुआ, १२७३५ नाई, ८९१३ ब्राह्मण, ६८३४ भूमिज, ६८१३ संथाल, ६०२४ कायस्थ, २८८५ राजपूत और शेष में दूसरी जातियां थीं।

पार्वतीपुर जंक्शन।

दीनाजपुर से १९ मील पूर्व पार्वतीपुर जंक्शन है। पार्वतीपुर से इष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे की लाइन ४ ओर गई है। तीसरे दर्जे का महसूल प्रति-मील २½ पाई लगता है। शिली गोड़ी से पश्चिमोत्तर दार्जिलिंग तक ५१ मील तक दार्जिलिंग हिमालय रेलवे है, जिसका महसूल प्रतिमील सवाआना है।

(१) पार्वतीपुर से उत्तर कुछ पश्चिम;

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

६१ जलपाईगोड़ी।

८४ सिलीगोड़ी।

१३५ दार्जिलिंग।

(२) पार्वतीपुर से पूर्व कुछ उत्तर;

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२२ रंगपुर।

३३ कौनिया।

३९ तिष्ठा जंक्शन।

५३ मगलहाट जंक्शन।

तिष्ठा जंक्शन से २६ मील पूर्व कुछ उत्तर यात्रापुर।

मगलहाट जंक्शन से उत्तर कुछ पश्चिम ३८ मील कुचविहार कसबे के पास तोरसा।

(३) पार्वतीपुर से दक्षिण;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४९ नवाबगंज।

८८ नाटउर।

११२ सारांघाट (पद्मा के बाएं)

१२४ दामुक दिया घाट।

(पद्मा के दहिने)

१४१ पोड़ादह जंक्शन।

१८६ बगुला।

१९८ रानाघाट जंक्शन।

२२० नईहाटी जंक्शन।

२३० बारकपुर।

२३४ सोदपुर।

२३७ बेलघरिया।

२३९ दमदम जंक्शन।

२४४ सियालदह (कलकत्ता)।

पोड़ादह जंक्शन से पूर्व ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया, और ४८ मील ग्वालंडो

ग्वालंडो से ब्रह्मपुत्र नदी के आगबोट के मार्ग से ७९ मील पूर्व दक्षिण चांदपुर, और

चांदपुर से २५ मील उत्तर नारायणगंज।

चांदपुर से आसाम बंगाल रेलवे पर ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्सम से दक्षिण पूर्व २५ मील फेनी, ५७ मील सीताकुण्ड, ६१ मील बलवाकुण्ड और ८१ मील चटगांव और लक्सम से उत्तर ७ मील लालमाई, १५ मील कुमिला और ४५ मील अखउरा।

नारायणगंज से उत्तर १० मील ढाका और ८५ मील मैमनसिंह।

रानाघाट जंक्शन से २१ मील पूर्व वनगांव जंक्शन, बनगांव से २६ मील पूर्वोत्तर जशर और जशर से ३५ मील दक्षिण-पूर्व खुलना और वनगांव से पश्चिम-दक्षिण २६ मील वारासत, ३४ मील दमदम छावनी और ३६ मील दमदम जंक्शन।

नइहाटी जंक्शन से ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन।

दमदम जंक्शन से पूर्वोत्तर २ मील दमदम छावनी, १० मील वारासत और ३६ मील वनगांव जंक्शन।

(४) पार्वतीपुर जंक्शन से पश्चिम;

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१९ दीनाजपुर।

५२ रायगंज।

६५ वरसुई जंक्शन।

८९ कठिहर जंक्शन।

वरसुई जंक्शन से ३५ मील उत्तर किसनगंज।

कठिहर जंकशन से उत्तर १७ मील पुर्निया और दक्षिण १६ मील मनिहारी और २३ मील मनिहारीघाट।

जलपाईगोड़ी।

पार्वतीपुर से ६१ मील उत्तर जलपाईगोड़ी का रेलवे स्टेशन है। सूबेबंगाल के राजशाही विभाग में तिष्टानदी के पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान जलपाईगोड़ी एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जलपाईगोड़ी में ७९३६ मनुष्य थे; अर्थात् ४२४५ हिन्दू, ३६४७ मुसलमान और ४४ दूसरे।

वहां पहले फौजी छावनी थी। सन् १८६९ ई० में वह जिले का सदर स्थान नियत हुआ। उस समय से वह प्रसिद्ध हुआ और उसकी मनुष्य संख्या बढ़ने लगी। उत्तरी बंगाल स्टेट रेलवे के खुलने से उसकी और भी उन्नति हुई है। वहां सिविल कचहरियां और सरकारी आफिसें बने हुए हैं।

जलपाईगोड़ी जिला—यह राजशाही विभाग के पूर्वोत्तर का जिला २८८४ वर्गमील क्षेत्र फल में फैला है। इसके उत्तर भूटान और दक्षिण कूच-विहार का राज्य और रंगपुर जिला है।

मैदानों में जगह जगह बांस, ताड़ और फलदार वृक्षों के बाग, जिनमें छोटी२ बस्तियां हैं, देखने में आते हैं। जिले के उत्तरीय भाग में पहाड़ी देश है। जिले में महानन्दा, करतोया, तिष्टा, जलधाका इत्यादि नदियां बहती हैं। पश्चिमी द्वार नामक सबडीवीजन में ४०० वर्ग मील से अधिक बचाया हुआ जंगल और जलपाई गोड़ी सबडिवीजन में केवल वैकुण्ठपुर नामक जंगल है। पश्चिमीद्वार के चरागाहों में चरने के लिए बंगाल से बहुत सी मवेशियां आती हैं। इस जिले में पहाड़ियों के निकट जंगली हाथी और बनैले मवेशियां और जंगलों में बाघ तेंदुए, भालू, गैंड़े, भैंसे इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं।

जिले में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५८१५६२ मनुष्य थे; अर्थात् ३६७८९१ हिन्दू, २०८५१३ मुसलमान, ४५०७ आदि निवासी अर्थात् जङ्गली ४८६ बौद्ध, ४५९ क्रस्तान और ६ जैन। खास हिन्दुओं में ३५८९६ तियर, २४५२७ बागड़ी, ५८३८ कैवरत, ५४५३ तातियां, ३९०९ ब्राह्मण, ३७८२ कायस्थ, २६७२ बनियां, १२६१ राजपूत और शेष में दूसरी जातियां थीं

दार्जिलिंग।

जलपाईगोड़ी से २३ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ८४ मील) उत्तर सिलीगोड़ी का रेलवे स्टेशन है, जहां से ५१ मील पश्चिमोत्तर दार्जिलिंग तक

दार्जिलिंग हिमालय रेलवे की छोटी लाइन गई है। यह लाइन केवल २ फीट चौड़ी है; गाड़ी भी बहुत छोटी छोटी हैं। ५१ मील जाने में ८ घंटा समय लग जाता है।

सिलीगोड़ी से ७ मील सुकना स्टेशन के पास गाड़ी की चढ़ाई आरंभ होती है। लाइन की घुमाव बहुत टेढ़ी है। पहाड़ के बगल ऊंचे दरख्तों और जंगलों से छिपे हुए हैं। १५ मील के पास पर्वत के एक छोटे शृङ्ग के चारो तरफ गाड़ी घुमती है और १००० फीट ऊंचे खड़े पहाड़ के किनारे पर लाइन निकली है। ३० मील पर कुरसियंग के पास, जो समुद्र के सतह से ५००० फीट ऊपर है, चाय का बाग और ५१ मील पर दार्जिलिंग का स्टेशन है। दार्जीलिंग (२७ अन्श, २ कला, ४८ विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अन्श, १८ कला, ३६ विकला, पूर्व देशांतर में) सूबे बंगाल के राजशाही विभाग में जिले का सदर स्थान एक प्रसिद्ध जगह है। यह बड़ी रनजीत नदी की घाटी के ऊपर १००० फीट ऊंचे एक सिल सिले पर बसा है। पहाड़ी के बगल में बिले और बंगले छितराए हुए हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दार्जिलिंग में १४१४५ मनुष्य थे; अर्थात् ८५८६ हिंदू, ३६५७ बौद्ध, १२९८ मुसलमान, ५२४ कृस्तान, ५२ सिक्ख और २८ जैन। अपरैल के पहिले यह मनुष्य-गणना हुई थी। अपरैल से अक्तूबर तक दार्जिलिंग की मनुष्य-संख्या बहुत बढ़ जाती है।

एक स्थान पर बाजा बजने की जगह और पानी पीने का एक हौज़ बना है। पुरांना सेक्रेटरियट एक चौड़े प्लेट (समतल भूमि) पर है। सेक्रेटरियट से ऊपर सेंट ऐन्ड्रू का चर्च है, जिसकी नेव का पत्थर सन् १८७० ई० में रक्खा गया। पुराना चर्च सन् १८४३ में बना। कसबे से १मील दूर एक पहाड़ी पर १५० सैनिकों के रहने योग्य बारक बना है।

चर्च से करीब १/२ मील बाद बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की बड़ी कोठी है। वह यहां गर्मी की ऋतुओं में समय समय पर रहते हैं।

कसबे के मध्य में प्रधान बजार देखने लायक है। एतवार के दिन उसमें इतनी भीड़ होती है कि उससे होकर निकलना मोशकिल होता है। वहां बहुत

लेपचा, लिम्बू, भुटिया, तिब्बती, नेपाली, पहाड़ी, हिन्दुस्तानी, काबुली, काश्मीरी और पारसी देख पड़ते हैं। सेंचल शृङ्ग के झरनों से नलद्वारा दार्जिलिंग में पानी जाता है।

दार्जिलिंग से १ मील दूर एक सुन्दर भुटिया बस्ती है, जिसमें तिब्बतन ढांचे का एक दिलचस्प बौद्ध मन्दिर बना हुआ है।

दार्जिलिंग से दुनियां की सबसे ऊंची पहाड़ी चोटियां देखी जा सकती हैं। इनमें सबसे ऊंची माउंट एवरेस्ट समुद्र के जल से २९,००२ फीट ऊंची है। यद्यपि उसका फासिला कम से कम १२० मील है, किन्तु वह स्याबू पहाड़ी से, जो दार्जिलिंग से ६ मील है, या जेला पहाड़ फौजी छावनी से देख पड़ती है। दूसरी चोटियां, जो दार्जिलिंग या जेला पहाड़से देख पड़ती हैं ये हैं;—

चोटियों का नाम			ऊंचाई फीट।
किंचि जंगा	...	...	२८१५६
जानू...	...	...	२५३०४
कब्रू...	...	...	२४०१५
चुमालरी	...	...	२३९४३
पौहन्द्री	...	...	२३१८६
डोंकिया	...	...	२३१७६
वौडिम्	...	...	२२०१७
नरसिंह	...	...	१९१४६
ब्लाक राक (काला चट्टान)		...	१७५७२
चोमुल्हारी	...	...	१७३२५

इनमें से किंचिजंगा ४५ मील, चुमालरी ८४ मील, डोंकिया ७३ मील और नरसिंह चोटी ३२ मील दूर पर है।

दार्जिलिंग से १० मील पर रंगमो नदी के साथ रनजीत नदी का संगम है। रनजीत की धारा घना जंगल होकर दौड़ती है। रंगमो नदी सन्मुख और ऊपर से आई है, जिसपर बेंत के पुल बने हैं। उस से नीचे रनजीत नदी का

तिष्टा नदी के साथ संगम है । तिष्टा अधिक गहरी, चौड़ी और तेज है। इसके किनारे किनारे सिलीगोड़ी जाने की राह है ।

दार्जिलिंग जिला—यह राजशाही विभाग के उत्तर का जिला १२२४ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । इसके उत्तर नदियों के सिलसिले, बाद शीकम का राज्य; पश्चिम ऊंची पहाड़ियों का सिलसिला, जो नेपाल राज्य से इसको जुदा करता है; पूर्व और दक्षिण जल्पाईगोड़ी और पुर्निया जिला हैं। समुद्र के जलसे इस जिले के मैदान की ऊंचाई केवल ३००फीट और मैदान की पहाड़ियोंकी ऊंचाई ६०००फीट से १००००फीट तक हैं। पहाड़ियों की चोटियों पर सघन जंगलों के मनोहर दृश्य देख पड़ते हैं। नीचले सिलसिले पर जहां तहां चाय के बाग हैं। जिले के पर्वत की सब से ऊंची फलालुम नामक चोटी १२०४२ फीट ऊंची है । जिले में तिष्टा, महानन्दा और बलासन प्रधान नदियां हैं। तिष्टा की प्रधान सहायक नदियों में से एक बड़ी रंजीत नदी है । इन दोनों नदियों के संगम से थोड़े नीचे तिष्टा पर लटकाऊ पुल बना है, जिसमे होकर तिब्बत के साथ इस जिले में सौदागरी होती है। महानन्दा इस जिले में छोटी धारा है और तराई के बालू में कुछ दूरतक अदृश्य रहती है। जिले के सरहद के बाहर इसमें कई छोटी छोटी नदियां मिल जाती हैं। जिले की खानों से कोयला, लोहा, तांबा और स्लेट निकलते हैं। पहाड़ियों में कई एक गुफा हैं, जिनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध गुफा दार्जिलिंग स्टेशन के कचारी पहाड़ी में है। यहां के देशी लोग विश्वास करते हैं कि यह गुफा तिब्बत में लासा तक चली गई है। ऊंची पहाड़ियों पर तेंदुआ, भालू, और कस्तूरी वाली हरिने होती हैं। बड़ी हरिन नीचले सिलसिलों पर और चन्द हाथी और बाघ मैदान के ऊपरी ढालू पर पाये जाते हैं। तराई में बाघ, गैंड़ा, हरिन, बनैले सूअर बहुत हैं ।

इस जिले में सन १८८१ की मनुष्य गणना के समय १५५१७९ मनुष्य थे; अर्थात् १२६७१७ हिन्दू, १८७७५ बौद्ध, ८२०४ मुसलमान, ८४२ कृस्तान, ६२४ जंगली कौमें, १४ ब्राह्मो और ३ सिक्ख। अबादी का बड़ा भाग जंगली कौम और वे जंगली लोग, जो अब मैदान के लोगों की चाल पर चलते हैं

होते हैं। इनमें नापित बहुत अधिक हैं। लेपचा बौद्धों में शामिल हैं। सन् १८८१ में ३०८०१ राजवंशी कोच थे। खास हिन्दुओं में १०७३९ ब्राह्मण ६३५ राजपूत और १०००० से अधिक दूसरी जातियां थीं।

इतिहास—अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन् १८३५ ई० में ३०००) रुपये वार्षिक खेराज पर १३८ वर्ग मील भूमि गर्मी के दिनों में अफसरों के रहने के लिये शिकम के राजा से खरीदा और पीछे उसका खेराज ६०००) रुपये कर दिए। उसके बाद शीघ्रही गर्मी के दिनों में सूबे बंगाल के अफसर लोग दार्जिलिंग में रहने लगे। रोगग्रस्थ यूरोपियन सिपाहियों के रहने के लिये स्थान बना। सन् १८३९ में डाक्टर कैंबल ने वहां का चार्ज लिया। उसने २० वर्ष सुपरिंटेंडेंट रहकर वहां बाजार, कचहरी, सड़क और चर्च बनवाया और दार्जिलिंग के दक्षिण फौजी छावनी नियत की। सन् १८४९ ई० में, जब सरकारी अफसर शिकम में कैद कर लिए गए, तब सन् १८५० में सरकारी फौज तिरस्कार के बदले लेने के लिये शिकम में भेजी गई। अंत में शिकम राज्य की तराई अर्थात् मोरंग जो पहाड़ियों के कदम के पास है, अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया और पहाड़ियों के दर्मियान की बहुत सी भूमि अंगरेजी राज्य में जोड़ ली गई। सन् १८६४ में तिष्टा के पूर्व का पहाड़ी देश इस जिले में कर दिया गया। सन् १८२६ ई० में पहले पहल हिन्दुस्तान में ऊपरी आसाम में चाय के दरख्त और बीज आए। सन् १८५६ में चाय का बाग दार्जिलिंग में नियत हुआ। अब लगभग ५०००० एकड़ भूमि पर लगभग २०० चाय के बाग बने हैं। सन् १८८२-८३ में, जब फसिल अच्छी थी, ८०००००० पौंड से अधिक चाय हुआ था। बंगाल के लेफ्टिनेंटगवर्नर प्रति वर्ष गर्मी के दिनों में कई महीने दार्जिलिंग में रहते हैं।

शिकम।

दार्जिलिंग के उत्तर शिकम एक पहाड़ी देशी राज्य है। इसके उत्तर और पूर्वोत्तर तिब्बत; पूर्व-दक्षिण स्वतंत्र राज्य भूटान; दक्षिण अंगरेजी राज्य में दार्जिलिंग जिला और पश्चिम स्वतंत्र राज्य नैपाल है। यह राज्य हिमालय के ऊंचे सिलसिले पर १५५० वर्ग मील के क्षेत्रफल में फैला है। इसके सब से

नीचे का मार्ग समुद्र के जल से १३००० फीट ऊपर है। शिकम राज्य में तिष्टा और उसकी सहायक नदियां पहाड़ियों के बहुत नीचे अति तिव्र वेग से बहती हैं। नदियों पर कई जगह बेंत का पुल बना है और कई जगह लोग घरनई से पार उतरते हैं। संपूर्ण बस्तियां और ढालू पहाड़ियां सघन वनो से छिपी हुई हैं। बांस बहुत बड़े और बेंत मोटे तथा बड़े होते हैं। बेंतों से हिमालय में पुल बनाए जाते हैं। वन और पहाड़ियों में बाघ, भालू, कस्तूरीवाले मृग, बनैले सूअर इत्यादि बनजंतु रहते हैं।

शिकम की अनुमानिक मनुष्य-संख्या ७००० है; अर्थात् प्रायः ३००० लेपचा, २००० भोटिया, १००० लेंबू और १००० दूसरे। इनमें अधिकांश लोग बौद्ध मत पर चलते हैं। बहुत बौद्ध पुजारी अपने अपने लामा अर्थात् गुरु के आधीन मठों में रहते हैं। लामा लोग बिना मालगुजारी दिए हुए जितना चाहे उतना खेत जोत सकते हैं। राज्य का प्रधान गांव तमलांग और कंटक, जिसमें काजी का सुंदर मकान बना है, और प्रधान मठ लएवर्ग है।

गेंहू, जव, जनेरा, और थोड़ा धान घाटियों में उपजते हैं। पश्चिम भाग में तेलहन भी होते हैं। बागों में केला, नारंगी और दूसरे फल बहुत होते हैं। तिब्बत के सौदागर शिक्रम होकर जाते हैं। शिक्रम के लोग टट्टू, भेड़ और जंगली पैदावारो को कपड़े, तंबाकू आदि चीजों से बदलते हैं।

राजधानी—शिकम की राजधानी तमलांग है, जहां जाड़े और बसंत-ऋतु में राजा रहते हैं। गरमी और बरसात में राजा अपने तिब्बत की मिलकियत चूंबी में बहुधा जाया करते हैं। तमलांग पहाड़ी पर राजा के महल के अतिरिक्त शिकम राज्य के बहुतेरे अफसरों के सुंदर मकान बने हुए हैं। प्रत्येक मकान के चारो ओर बांस या फलदार वृक्षों के कई झुंड हैं। शिकम का वर्तमान नरेश महाराज 'चोटाल शिक्यं नामग्यि' हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि शिकम के राजा का पुरुषा तिब्बत के लासा के पड़ोस से आकर कंटक में बसा। सन् १७७८ ई० में गोरखों ने शिकम पर आक्रमण करके राज्य का एक छोटा भाग लेकर सुलह कर लिया। सन् १७९२ में जब गोरखों ने दूसरी बार शिकम पर आक्रमण किया तब

चीनियों ने उनको खदेरा। नैपालियों के परास्त होने पर सन् १८१६ ई० में अंगरेज महाराज और नैपालियों से संधि हुई। उसके अनुसार शिकम के राजा का राज्य; जो नैपालियों ने छीन लिया था, उनको फिर मिल गया। सन् १८३५ में अंगरेजी सरकार शिकम के राजा से दार्जिलिंग लेकर उसके बदले में ३००० रुपया सालाना खिराज देने लगी। शिकमवाले अंगरेजी राज्य से लड़के चुरा कर उनको दास बना लेते थे और सन् १८४९ में शिकम के राजकर्मचारियों ने सफर करते हुए दो अंगरेजी अफसरों को पकड़ कर कैद कर लिया। तब उनको छुड़ाने के लिये अंगरेजी सेना गई। अंत में शिकम के राज्य का एक भाग अंगरेजी गवर्नमेंट ने ले लिया। तिस पर भी शिकम वाले अंगरेजी राज्य से लड़का चोरा ले जाते थे। सन् १८६१ में अंगरेजी सेना शिकम की राजधानी तक पहुंची, तब राजा ने परवश होकर सुलह किया। उसके अनुसार अंगरेजी गवर्नमेंट को शिकम में सौदागरी करने और सड़क बनाने का अधिकार होगया। सन् १८७३ में शिकम के वर्तमान महाराज ने दार्जिलिंग में आकर बंगाल के छोटे लाट से भेंट की थी। अब शिकम का राजा अंगरेजी सरकार के आधीन हो गया है।

भूटान।

शिकम से पूर्व हिमालय के पूर्व भाग में स्वाधीन राज्य भूटान है। इसके उत्तर हिमालय, बाद तिब्बत; पूर्व चीन; दक्षिण आसाम देश और जल्पाई गोड़ी जिला और पश्चिम शिकम है। सन १८६४ में सम्पूर्ण क्षेत्र फल अनुमान से २०००० वर्ग मील और मनुष्य-संख्या करीब १५०००० थी। संपूर्ण देश में ऊंचे और नीचा ऊंचा पहाड़ हैं। बहुतेरी नदियां तंग रास्ते से बहती हुई ब्रह्मपुत्र में गिरती हैं।

भूटिये लोग सख्त और दिलेरे होते हैं। उन का चमड़ा काला और चेहरे चीनियों के समान हैं। उन की आदत और बदन मैला है। उनकी खोराक चावल, जव का आटा; सलगम, गोस्त, खासकर सूअर का मांस और चाय है। सब दर्जे के लोग शराब आदि निशावाले अर्क पीते हैं। पुरुष ऊन का ढीला

कोट ठेहुने तक पहनते हैं; कमर पर कपड़े या चमड़े की पेटी वान्धते हैं और जूते में लगा हुआ पायजामा और पशम की या मोटे ऊन की टोपी पहनते हैं; और स्त्रियां लम्बा लवादा ढीले अस्तीन के साथ पहनती हैं। उस राज्य में कई भाईयों के एक ही स्त्री के साथ विवाह होने की रिवाज जारी है। वहां के लोग बराय नाम के बौद्ध मत वाले हैं; परन्तु वे भूत आदि की बहुत पूजा करते हैं।

पहाड़ी देश होने के कारण वहां खेती कम होती है। एक प्रकार के घोड़े जो टांघन कहलाते हैं, भूटान में पाले जाते हैं। भूटान के दक्षिण भाग में मोटे कंबल और कपड़े बनते हैं। भूटान में एक प्रकार के वृक्ष से कागज बनाया जाता है। वहां तलवार, बर्छी और तीर बनते हैं। प्रायः ऊंचे स्थानों पर वर्षा अधिक होती है। राज्य में पैदावार जिनिश और सौदागरी की वस्तुओं में से मालगुजारी ली जाती है।

३ या ४ मंजिल के मकान हैं। झोपड़ियों के चारो तरफ बहुतेरी जमीन जोतने के लिये तैय्यार की जाती है। गेहूँ, जव, मिलेट और सलगम प्रधान फसिलों में से हैं। भोटिए लोग पहाड़ियों के बगलों में काट कर चबूतरों के कत्तार बनाते हैं और उन पर खेती करते हैं। जंगलों में भांति भांति के बड़े वृक्ष हैं। पहाड़ियों के नीचले सिलसिले में बहुत हाथी, तिष्टा नदी के निकट बाघ, घाटियों में तेंदुआ और हरिन, बर्फों में कस्तूरीवाली हरन और पहाड़ियों के बगलों पर सूअर और गेंड़े मिलते हैं। तिब्बती भाषाओं में से एक वहां की भाषा है।

भूटान के राजा धर्मराजा कहलाते हैं और जो उन के राज्य में देश के प्रबन्ध करते हैं उन्हें देवराजा कहते हैं। वह तीसरे वर्ष कौंशिल द्वारा बदल जाता है। नीचे के ओहदेदार तनखाह नहीं पाते; परन्तु अपने मातहत के लोगों से जितना हो सकता है वे लेते हैं। लूटपाट सर्वत्र जारी रहता है।

धर्मराजा बुद्ध का अवतार समझा जाता है। उस के मरने के एक या दो वर्ष पीछे प्रायः एक अफसर के खान्दान में लड़के के शकल में नया अवतार होता है। वह मठ में शिक्षा पाता है और बालिग होने पर राजा होता है। प्रधान शहर अर्थात् राजधानी पुनाखा स्वभाविक अभेद्य स्थान में दार्जीलिंग

से ९६ मील पूर्वोत्तर वुगनी नदी के बाएं किनारे पर है। अंगरेजी राजदूत ने सन १८६४ में भूटान की फौज की संख्या ६००० अनुमान किया था।

इतिहास—भूटान पहले टेफूजातियों के अधिकार में था। टेफू कुच विहार के कोच खियाल किये जाते हैं। करीव २०० वर्ष हुए कि तिव्वत के सिपाहियों के एक जमायत ने टेफुओं को जीत कर उस देश को अपने अधिकार में कर लिया।

सन् १७७२ ई० में जव भूटियों ने कूचविहार पर चढ़ाई की, तव अंगरेजों के साथ उनका पहला सरोकार हुआ। कूचविहार के राजा के दरखास्त करने पर जव एक अंगरेजी फौज भेजी गई तव भूटिए लोग भाग गए। सन् १८२६ में जव अंगरेजों ने आसाम को लेलिया तव भूटिये लोग पहाड़ के पांव के पास की जमीन, जो द्वारें कहलाती हैं, ले चुके थे। उस के पश्चात् भोटियों ने अंगरेजी राज्य पर आक्रमण करके वासिन्दों को लूटा और उनको कैदी वना लिया। वे लोग वहुतेरों को जव कैदी वना कर ले गये तव अंगरेजी सरकार ने द्वारें को भूटियों से छीन लिया। पर भोटिये लोग द्वारों में अंगरेजी प्रजाओं पर अत्याचार करतेही रहे। सन् १८६५ में भूटान गवर्नमेन्ट ने एक लड़ाई के पीछे अंगरेजों को दूसरे देश के साथ वंगाल और आसाम के १८ द्वारों को देदिया और अंगरेजी प्रजाओं को, जिनको भोटिए लोग चोराले गए थे, छोड़ दिया।

आठवां अध्याय।

(सूबे वंगाल में) रंगपुर, (देशीराज्य में) कूचविहार, ब्रह्मपुत्र तीर्थ; (आसाम देश में) ध्युरा, ग्वालपाड़ा, गौहाटी और कामाख्या।

रंगपुर।

पार्वतीपुर जंक्शन से २२ मील पूर्वोत्तर (मनिहारी घाट से १३४ मील) रंगपुर का रेलवे स्टेशन है। सूबे वंगाल के राजशाही विभाग में घाघाट नदी

के उत्तर किनारे पर (२५ अंश ४४ कला ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १७ कला, ४० विकला, पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान रंगपुर एक कसवा है, जिस में माहीगंज, धाप और नवावगंज शामिल हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रंगपुर में १४२१६ मनुष्य थे; अर्थात् ७४३७ हिन्दू, ६६६७ मुसलमान, ७६ जैन, ३३ कृस्तान, २ वौद्ध और १ दूसरे। रंगपुर में सिविल कचहरियां, पुलिसस्टेशन, जेलखाना और अस्पताल है।

रंगपुर जिला—यह राजशाही विभाग के मध्य का जिला ३४८६ वर्ग मील क्षेत्र फल में फैला है। इसके उत्तर जलपाईगोड़ी जिला और कूच-विहार का राज्य; पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी वाद ग्वालपाड़ा और मैमनसिंह जिला; दक्षिण वुगड़ा जिला और पश्चिम दीनाजपुर और जलपाईगोड़ी जिला है।

इस जिले में कोई पहाड़ नहीं है। जिले के क्षेत्र फल के ३/४ भाग की भूमि जोती जाती है। धान, तंवाकू, आलू, ऊख, अदरख और अनेक भांति के तेल के वीज उत्पन्न होते हैं। विना जोती हुई भूमि पर नरकट और वेंत वहुत होते हैं। जिले के पूर्वी सीमा पर ब्रह्मपुत्र नदी वहती है। उस की सहायक नदियों में तिष्टा, ढइला, संकोस, करतोया, गंगाधर और दुधकुमार नदियां प्रधान हैं। इनमें तिष्टा अधिक प्रसिद्ध है, जिस का नाम पुराणों में तृष्णा और त्रिसोता भी लिखा है। यह सन ई० की १८ वीं शदी में गंगा में गिरती थी; किंतु सन १७८७ में अधिक वर्षा होने के कारण ब्रह्मपुत्र में गिरने लगी। तिष्टा के सहायक नदियों में करतोया, घाघी, मनास और गुजरिया प्रसिद्ध हैं। जिले में गवर्नमेंट को मालगुजारी देने के योग्य कोई जंगल नहीं है। पंगा गांव के पास ८ मील के घेरे में एक जंगल है, जिस में मोटा वेंत, जो छड़ी के लिये विकते हैं, वहुत उत्पन्न होते हैं। जिले में वेंत और नरकट वहुत होते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी के वालूदार टापुओं में वाघ और तेंदुए वहुत रहते हैं। साधारण प्रकार से वनैले भैंसे और सूअर और कई भांति की हरिन देख पड़ती हैं।

जिले में सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २०९७९६४ मनुष्य थे; अर्थात् १२७९६०५ मुसलमान, ८१६५३२ हिन्दू, १३९९ पहाड़ी और जंगली जो अपने पुराने मत पर चलते हैं, २७४ जैन, ८६ कृस्तान, ६० वौद्ध और ८

ब्राह्मो। जातियों के खाने में ४३२४९८ कोच, पाली और राजवंशी, जो अब हिन्दू के मत पर चलते हैं; ९२७९० तियर, ३६७९५ चंडाल, ३०६१२ कैवरत, २५१८० मदक, १३०४१ नाई, १२०७५ ब्राह्मण, जो मैथिल और कामरूपी दो प्रकार के हैं, ११४४९ कायस्थ, ८३८७ जलिया, शेष में दूसरी जातियां थीं, जिनमें २६९७४ वैष्णव और केवल २३२५ राजपूत थे। रंगपुर जिले के कसबे रंगपुर में १३३२०, वरखता में ११३९३, बोगदावाड़ी में १०८९२, ढीमला में १०५०३, गुरग्राम में ९६१६ और छतनाई में ९५०१ मनुष्य थे।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि रंगपुर पूर्व काल में राजा भगदत्त का, जिसकी राजधानी कामरुप जिले के गौहाटी थी, देहाती महल था। भगदत्त महाभारत के युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारा गया। सन १५०० ई० से पहले ३ घराने के राजाओं ने इस देश में राज्य किया था। इन में पहला पृथुराजा था, जिस की राजधानी की फैली हुई निशानियां जलपाईगोड़ी जिले में देख पड़ती हैं। दूसरे घराने में ४ राजा हुए, जिन को बंगाल और आसाम के लोग पाल घराने के राजा कहते हैं। पहला राजा धर्मपाल के शहर की निशानी जलपाईगोड़ी जिले में अब तक विद्यमान है। पाल घराने के तीसरा राजा भावचंद्र का नाम बंगाल में प्रसिद्ध है। तीसरे घराने में नीलध्वज, चक्रध्वज और नीलांबर ३ राजा हुए। नीलध्वज ने कामतापुर को बसाया। कूचबिहार के राज्य में उसकी तबाहियां १९ मील के घेरे में देख पड़ती हैं। कहा जाता है कि गौड़ के अफगान बादशाह हुसेनशाह ने, जिसने सन १४९७ से १५२१ तक गौड़ में राज्य किया था, राजा नीलांबर को छल से पकड़ कर रंगपुर को ले लिया; किंतु मुसलमानों ने इस देश में अपना अधिकार नहीं रक्खा। आसाम की पहाड़ियों से जंगली जातियों में से कोच लोग आकर बस गए, जो कूचबिहार में अब तक विद्यमान हैं। उनमें से राजा वीमू ने पूर्व ओर आसाम की खाड़ी में और दक्षिण रंगपुर तक अपना अधिकार फैलाया। उस की मृत्यु होने पर राज्य कई भागों में बँट गया। सन १६८७ ई० में औरंगजेब ने खास रंगपुर को अपने राज्य में मिला लिया। पीछे यह अंगरेजी सरकार के आधीन हुआ।

कूचविहार।

रंगपुर से ३१ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ५३ मील) पूर्वोत्तर मगलहाट में रेलवे जंक्शन है। उससे २८ मील उत्तर कुछ पश्चिम कूचविहार स्टेट रेलवे कूचविहार कसवे के निकट तोरसा नामक स्टेशन तक गई है।

बंगाल में प्रधान देशी राज्य की राजधानी (२६ अन्श, ११ कला, ३६ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अन्श, २८ कला, ५३ विकला, पूर्व देशांतर में) तोरसा नदी के निकट कूचविहार एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कूचविहार राजधानी में ११४९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७५९१ हिंदू, ३७१६ मुसलमान, ११० जैन, ६७ कृस्तान, ४ सिक्ख, २ बौद्ध और एक दूसरे।

हाल तक कसवे में ईंटे के राजभवन के चारो ओर चटाई और फूस की झोपड़ियां थी; किन्तु चंद वरसों से कसवे की वड़ी उन्नति हुई है। कसवे के प्रधान स्क्वेयर के उत्तर वगल में दो मंजिली इमारत, महाराज की कचहरी के मकान और आफिस; पूर्व अंगरेजी और वर्नेक्युलर स्कूल, छापाखाना और राज्य का दफ्तरखाना; और दक्षिण १ उत्तम इमारत, जिसमें ४ वड़े कमरे और दूसरे छोटे आफिस हैं, और मातहत दीवानी और फौजदारी कचहरियां हैं। स्क्वेयर के मध्य में सागरदीघी नामक वड़ा तालाव है। कसवे के प्रायः सव लोग इसी तालाव का पानी पीते हैं। पुराने वाजार के स्थान पर नया चौकोना वाजार वना है। वाजार के मकानों की छत लोहे की चादर से पाटी गई है। प्रधान सड़क वाजार होकर गई है। हाल में १२००००० रुपये के खर्च से एक उत्तम राजमहल वनाया गया है। इनके अलावे वहां पोष्टआफिस, जेलखाना, पुलिस-स्टेशन, कारीगरी का स्कूल और ब्राह्मसमाज की एक सभा है।

सौदागरी वहुत नहीं है। २ छोटी नदियां, जो तुरसा कहलाती हैं, कसवे को ३ ओर से घेरती हैं। इनमें केवल वरसात में नाव चलती है। एक सड़क रंगपुर से कूचविहार कसवे होकर जलपाईगोड़ी को गई है।

कूचविहार-राज्य—यह देशी राज्य, अंगरेजी राज्य से घेरा हुआ है।

इसके उत्तर जलपाईगोड़ी के पश्चिमी द्वार और दक्षिण रंगपुर जिला है। इसके अलावे रंगपुर और जलपाईगोड़ी जिले में कूचविहार राज्य के कई टुकड़े हैं। संपूर्ण राज्य का क्षेत्रफल १३०७ वर्गमील है। राज्य से महाराज को १३३३००० रूपये मालगुजारी आती है।

यह राज्य समतल मैदान में है। इसमें तिष्टा, सींगमारी, तोरसा, कालजानी, राधक, गदाधर इत्यादि लगभग २५ नदियां बहती हैं। इनमें बहुतेरी बहुत छोटी हैं। तिष्टा और राधक को छोड़ कर संपूर्ण नदियां गर्मी की ऋतुओं में स्थान स्थान पर विना नाव के पार होजाने योग्य रहती हैं। संपूर्ण नदियां उत्तर से ब्रह्मपुत्र में गिरती हैं। राज्य के अधिक भाग में खेती अच्छी तरह होती है। पूर्वोत्तर के कोने में कुछ जंगली देश हैं। वोने वाली भूमि में से ¾ भूमि पर धान उत्पन्न होता है। मैदान में किसानों के वथान के आस पास बांस के झुंड और फलदार वृक्षों के बाग देख पड़ते हैं। जूट, तंबाकू, तेल और लकड़ी राज्य से दूसरे स्थानों में भेजी जाती हैं। सैकड़ों मील सड़क बनी हैं। पहले दस वीस गाड़ी चलती थी, अब हजारहां चलती हैं। हाल में विद्या की बड़ी उन्नति हुई है। इस राज्य के लोग बस्ती बना कर इकठा नहीं रहते हैं। धनवान लोग अपना अपना मकान अलग अलग बनाए हैं।

इस राज्य में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ६०२६२४ मनुष्य थे; अर्थात् ४२७४७८ हिन्दू, १७४५३९ मुसलमान, १४४ जैन, ४८ कृस्तान और ४१५ दूसरे। जातियों के खाने में २९९४५८ राजवंसी, जो पहले के कोच जाति हैं, ५४१५२ तियर और मछुहा, १४१९२ बागड़ी, ५२०८ चंडाल, ४४३१ जोगी, ३५८६ कुर्मी, ३५३० ब्राह्मण, ३१९७ राजपूत, ३०५२ नाई, २६७८ कैबरत, २६४० जलिया, २५२२ कायस्थ थे; शेष में दूसरी जातियां थीं। कूचविहार राज्य में कूचविहार के अतिरिक्त कोई दूसरा कसबा नहीं है।

इतिहास—पूर्व काल में इस राज्य में कामरूप के पुराने हिंदू राजा की राजधानी थी, जिसको १५ वीं शदी के अन्त के भाग में गौड़ के अफगान बादशाहों ने विनाश करदिया। उनकी राजधानियों में से कई एक की निशानियां अब तक देख पड़ती हैं। उसके पीछे अंधेर का समय आया। जंगली

लोग पूर्वोत्तर से आकर लूट पाट करने लगे, जिनमें कोच लोग, जो अब राजवंसी कहलाते हैं, अगहर थे। उन्हों ने कूचविहार राज्य नियत किया। कोच वंश में वीसूसिंह पहला राजा था, जिसका पुत्र नरनारायण सबसे बड़ा राजा हुआ, जिसका राज्य सन् १५५० ई० से आरम्भ हुआ था। उसने सम्पूर्ण कामरूप देश को जीता और आसाम में अनेक मंदिर बनवाये। उजड़े पुजड़े मंदिरों के लेखों में अब तक उस राजा का नाम देख पड़ता है। उसने भूटान के राजा को कर देने के लिये मजबूर किया और दक्षिण-पश्चिम में, जो अब रंगपुर और पुर्निया जिले का भाग बना है, अपने राज्य को बढ़ाया। इसी के राज्य के समय नारायणी सिक्का चलाए गए थे, जो अभी तक कुछ २ चलते हैं। कोच राज्य की स्वाधीनता बहुत दिनों तक नहीं रही। नरनारायण ने अपने आधीन की आसाम की भूमि अपने भाइयों को बांट दी। अब तक वहां उनके वंशधर धनी जमींदार विद्यमान हैं। नरनारायण का पुत्र लक्ष्मीनारायण, जो कूचविहार में राज्य का उत्तराधिकारी था, कैदी बनाकर दिल्ली में भेजा गया। उसके पीछे राजघराना तीन भागों में बट गया। सन १७७२ ई० में भूटियों ने कूचविहार के राजा नाजिरदेव को निकाल दिया। तब अंगरेजी गवर्नमेंट ने नाजिरदेव के दरखास्त करने पर कूचविहार में अपनी सेना भेज कर भूटियों को खदेरा और सन १७७३ ई० में एक संधि की।

सन १८६३ ई० में कूचविहार के राजा अपने १० महीने के शिशु पुत्र वर्तमान कूचविहार नरेश को छोड़ कर मरगए। उस समय राज्य के प्रबंध के लिये अंगरेजी कमिश्नर नियत किया गया। पीछे राज्य की पैमाइश होकर मालगुजारी नियत की गई, पुलिस का सुधार हुआ, सड़कें बनाई गईं, डांकघर और टेलीग्राम आफिस कायम हुए, और नाबालिग राजा पटने में एक यूरोपियन अफसर से पढ़ा और पीछे उसने कलकत्ते के प्रेसीडेन्सी कालिज में आइन की शिक्षा प्राप्त की। सन् १८७८ में राजा ने सुप्रसिद्ध बाबू केशवचन्द्र सेन की पुत्री से अपना विवाह किया और उसी साल वह इंगलैण्ड गए। सन् १८८३ में महाराज, सर एन. नारायणभूप बहादुर जी. सी. आई. ई., जिनकी अवस्था इस समय ३० वर्ष की है, सबालिग होने पर राज्य के अधिकारी हुए; तब से उनको महाराज की पदवी मिली।

ब्रह्मपुत्र तीर्थ।

रंगपुर से ११ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ३३ मील) पूर्व कुछ उत्तर तिष्टा नदी के किनारे कौनिया तक रेल है। कौनिया से ६ मील तिष्टा के पूर्व किनारे के तिष्टा गांव तक आगबोट चलता है। तिष्टा से पूर्व १६ मील कुरीग्राम और २६ मील ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पर यात्रापुर है। तिष्टा से यात्रापुर तक रेल बनी है।

कुरीग्राम से १३ मील दक्षिण-पश्चिम और यात्रापुर से इससे कम दूर पर ब्रह्मपुत्र नदी का चिलमारी घाट है, जिसको ब्रह्मपुत्र तीर्थ भी कहते हैं। कुरीग्राम से देहाती मार्ग और यात्रापुर से ब्रह्मपुत्र नदी में नाव का रास्ता है।

ब्रह्मपुत्र नदी कैलास पर्वत में मानसरोवर के पास से निकल कर हिमालय के उत्तर में पूर्व की ओर बहने के उपरांत पश्चिम को लौटी है और फिर दक्षिण को बह कर दो धारों में बट गई है; जिनमें से पूर्व वाली धारा नदी के निकास से लगभग १७०० मील बहने के पश्चात् समुद्र में मिली है और पश्चिम की धारा जिसको यमुना और जनाई कहते है, गंगा की प्रधान धारा पदमा में जामिली है। ब्रह्मपुत्र को तिब्बत में यारु और सांपू कहते हैं। लोहित नदी के संगम होने के पश्चात् इसका नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा है और समुद्र में गिरने से ६० मील पहले यह मेगना कहलाता है। इसके निकट डिब्रूगढ़, शिवसागर, नवगांव, तेजपुर; गौहाटी, ग्वालपाड़ा और धुबड़ी प्रसिद्ध कसबे हैं।

चिलमारी घाट पर चैत सुदी ८ को ब्रह्मपुत्र स्नान का मेला होता है। जिस साल चैत की बुधाष्टमी होती है उस साल अधिक यात्री एकत्र होते हैं। यात्री गण चिलमारी घाट पर केवल एक रात निवास करके चले जाते हैं। वे लोग वहां के नियमानुसार लौटने के समय पीछे की ओर फिर कर घाट को नहीं देखते। ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि यमदग्नि के पुत्र परशुरामजी यहां आने पर मातृ-हत्या के दोष से विमुक्त होगए।

त्युरा।

जात्रापुर तक रेल है। वहां से आगबोट द्वारा लगभग २५ मील पूर्व

कुछ उत्तर धुवरीं जाना होता है। धुवरी से त्युरा तक लगभग ५० मील टट्टू की सवारी का मार्ग और टेलीग्राफ है। आसाम प्रदेश में (२५ अंश, २९ कला, ३० विकला, उत्तर अक्षांश और ९० अन्श. १६ कला १० विकला, पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से लगभग १३०० फीट ऊपर त्युरा पहाड़ी के सिलसिले पर गारो पहाड़ी जिले का सदरस्थान त्युरा एक गांव है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय त्युरा में ७४४ मनुष्य थे। वह जगह रोग वर्द्धक है। वहां लोगों को वोखार बहुत आता है। लकड़ी, वांस और फूस से मकान बने हुए हैं। सरकारी इमारतों में मामूली कचहरियां और आफिस, २०० कानेष्ट्रवुल के लिए बारक, डिपोटीकमिश्नर, पुलिस सुपरिटेंडंट और सिविलसरजियन के लिये बंगले बने हैं और एक अस्पताल और एक स्कूल है, वहां साल में औसत १२६ इंच वर्षा होती है।

गारोपहाड़ी जिला—इसके उत्तर ग्वालपाड़ा जिला; पूर्व खासी और जयंती पहाड़ियां जिला; दक्षिण और पश्चिम सूबे बंगाल का मैमनसिंह और रंगपुर जिला है। जिले का क्षेत्रफल ३१४६ वर्गमील है। सम्पूर्ण जिला पहाड़ी देश है। ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तर की पहाड़ियां नीची हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १०९५४८ मनुष्य थे; अर्थात् ८५६३४ पहाड़ियों में और २३९१४ मैदान में। गारो लोग स्त्री पुरुष सब कुरूप और काले होते हैं। इनके गाल की बड़ी हड्डियां, चौड़ा नाक, मोटा ओठ और लम्बा कान होता है। इनके दाढ़ी पर बाल बहुत कम जमता है। वे लोग अपने मुख पर जमे हुए बालों को तोड़ डालते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों अपने सिर के बालों को कभी नहीं कटवाते। पुरुष केवल डेढ़गज लंबे कपड़े का भगवा, जिसको वे लोग आपही बनाते हैं, पहनते हैं। स्त्रियों का वस्त्र इससे थोड़ा अधिक फैला रहता है। स्त्री और पुरुष दोनों एक छोटे कम्वल लिए रहते हैं, जो साधारण तौर से एक वृक्ष के छाल से बनाया जाता है। पूर्व के पहाड़ियों के गारो लोग खासिआ लोगों के समान छोटे अंगरखे पहनते हैं। पुरुष अपने कानों में ३—४ पीतल के बाले और गले में गुरिया का लच्छा पहना करते हैं। स्त्रियां अपने गले में कांच और पीतल के गुरिए

का लच्छा और कानों में बहुत बड़े और भारी बाला लगाती हैं। गारो लोगों का हथियार, तलवार, बरछी और ढाल है। इनकी घराऊ रीति और चाल खासिआ लोगों के समान है। स्त्रियां अपने घर की मालिक होती हैं। खासिआ लोगों में सम्पूर्ण घरऊ कामों में स्त्रियां बहुत मानी जाती हैं। युवा होने पर वर और कन्या का विवाह होता है। विवाह होने पर पुरुष अपने स्त्री के घर चला जाता है। पुरुष अपनी स्त्री के विना अनुमति से दूसरा विवाह नहीं कर सकता। वे लोग अपने मुर्दों को जलाकर उनकी राख अपनी झोपड़ी के दरवाजे के निकट गाड़ देते हैं। लाश जलाने के समय मृतक को मार्ग दिखाने के लिए एक कुत्ता बलिदान किया जाता है। हाल तक प्रधान के मौत के स्थान पर मनुष्य बलि दिये जाते थे।

इतिहास—सन् १८६६ ई० में गारो पहाड़ियों में एक अंगरेजी अफसर नियत हुआ। सन् १८६७ में त्युरा में डिपोटी कमिश्नर गए। सन् १८६८ में गारो पहाड़ी जिला नियत होकर त्युरा में सिविल स्टेशन बना। सन् १८७१ के अंत तक लगभग १०० गांव अंगरेजी अधिकार में हुए। सन् १८७३ के मई में सम्पूर्ण जिले का नकशा तैयार हुआ।

ग्वालपाड़ा।

यात्रापुर तक रेल है, वहां से आगबोट में जाना होता है। यात्रापुर से लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर ब्रह्मपुत्र के दहिने किनारे पर ग्वालपाड़ा जिले का सदर स्थान धुबड़ी एक बस्ती है। आगबोट धुबड़ी छोड़ने के दूसरे दिन दोपहर को ग्वालपाड़ा पहुंच जाता है।

आसाम प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के बांए अर्थात् दक्षिण किनारे पर यात्रापुर से लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ४१ कला, पूर्व देशांतर में) एक गावदुमी पहाड़ी के पादमूल के पास जिले में प्रधान कसबा ग्वालपाड़ा है, जो पहले जिले का सदर स्थान था।

ग्वालपाड़ा कसबे में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ५४४० और सन् १८८१ में ६६९७ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५१ हिंदू, २३७३ मुसलमान और १७३ दूसरे।

एक पहाड़ी पर मैदान से २६० फीट ऊपर सिविल स्टेशन बना है। वहां से ब्रह्मपुत्र की घाटी के उत्तम दृश्य और उत्तर ओर हिमालय के शिरो भाग पर बर्फ देख पड़ती है। पहाड़ी के पश्चिम ढालू पर देशी लोगों का कसबा बसा है। मकान लकड़ी के खंभे, चटाई और कास से बने हुए हैं। कसबा अब तक इस देश में प्रधान तिजारती स्थान है। इसमें बहुतेरे देशी सौदागर और पहाड़ी लोग, जो चमड़े आदि की सौदागरी के लिए नीचे आते हैं, देख पड़ते हैं।

ग्वालपाड़ा जिला—पूर्वकाल में एक ग्वाला आकर यहां बसा इसलिये इस देश का नाम ग्वालपाड़ा पड़ा। यह आसाम देश का पश्चिमी जिला ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपरी घाटी का दरवाजा बनता है। इसके उत्तर भूटान की पहाड़ियां और दक्षिण गारो पहाड़ियां का नया जिला है। जिले का क्षेत्रफल ३८९७ वर्ग मील और सदर स्थान ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तर किनारे पर धुबरी कसबा है। यह जिला ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तर किनारे पर ६५ मील और दक्षिण किनारे पर १२० मील फैला है। नदी के किनारों पर सघन बेंत और नर्कट और उसके बाद धान के खेत फैले हुए हैं। ब्रह्मपुत्र के उत्तर मानस, गदाधार और गंगा धार जिले की प्रधान नदियां हैं। जिले में विशेष करके पूर्वी द्वारों में बेशकीमती लकड़ी के जंगल हैं और बाघ, गेंड़ा, भैंसा इत्यादि जंगली जानवर बहुत रहते हैं। जंगली जानवर प्रति वर्ष बहुतेरे लोगों को मार डालते हैं। पहाड़ियों में मकान बनाने योग्य पत्थर निकाला जाता है।

इस जिले में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४४६२३२ मनुष्य थे; अर्थात् ३२९०६६ हिंदू, १०४७७७ मुसलमान, ११७१२ आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली, ५१३ कृस्तान, ७९ बौद्ध, ३९ जैन, ३२ ब्राह्म और १४ सिक्ख। जातियों के खाने में १९२३० जलिया, जो मछुहे का काम करते हैं, ११७१० गारो, ११२९४ कुलिता, जो ब्राह्मण का काम करते हैं, २९७० ब्राह्मण, १७३३ कायस्थ, ५७ राजपूत थे शेष में दूसरी जातियां थीं। पहाड़ी जातियों में राभ्न, मेच और कचारी ३ जाति अब हिंदुओं में लिखे जाते हैं और कोच ऊंचा-मरतबा रखने के कारण राजवंशी कहाते हैं और हिंदुओं में सामि-

ल हुए हैं । ग्वालपाड़ा जिला रोग कारक देश है और इसमें भूकंप बहुधा हुआ करता है। जिले में ग्वालपाड़ा के अतिरिक्त किसी गांव में ५००० से अधिक मनुष्य नहीं हैं। धुव्री और विजनी प्रसिद्ध वस्ती है ।

इतिहास—ग्वालपाड़ा सर्वदा बंगाल और आसाम के सीमा पर था। पूर्व काल में यह जिला कामरूप के हिंदु राज्य का एक भाग था। लोग कहते हैं कि पीछे यह कूचविहार के कोचों के अधिकार में हुआ । विजनी के वर्तमान राजा, जिनकी जमीन्दारी इस जिले में फैली हुई है, अपने को कूचविहार के एक राजा के छोटे पुत्र का वंशधर कहते हैं

गौहाटी ।

यात्रापुर तक रेल है । यात्रापुर से आगवोट द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी के मार्ग से लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर ग्वालपाड़ा और ग्वालपाड़ा से ९५ मील (यात्रापुर से १७५ मील) पूर्व गौहाटी जाना होता है । आसाम देश के कामरूप जिले का प्रधान कसवा और जिले का सदरस्थान (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४८ कला, पूर्व देशान्तर में) ब्रह्मपुत्र नदी के बाएं अर्थात् दक्षिण किनारे पर गौहाटी एक छोटा कसवा है । ब्रह्मपुत्र के किनारों पर या इसके आस पास ग्वालपाड़ा, गौहाटी और २ या ३ दूसरे स्थानों के अतिरिक्त सर्वदा रहने वाले मकान नहीं देख पड़ते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गौहाटी में १०८१७ मनुष्य थे; अर्थात् ७७७३ हिन्दू, २४०५ मुसलमान, ५१७ एनिमिष्टिक, ९९ कृस्तान, और २३ जैन। मनुष्य-गणना के अनुसार गौहाटी आसाम में दूसरा शहर है।

उत्तरी पहाड़ी के ढालू पर वर्ष में एक वार सौदागरी के लिए भोटिए लोग एकत्रित होते हैं। गौहाटी के निकट ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में उमानंद नामक छोटे चट्टानी टापू में एक मन्दिर है। गौहाटी के पड़ोस का पवन पानी रोग वर्द्धक है।

प्राचीन काल में गौहाटी का नाम प्रागज्योतिषपुर था। यहांही से श्रीकृष्णचन्द्र ने भौमासुर को मार कर १६१०० राजकुमारियों को, जिनको भौमा-

सुर ने छीन कर रक्खा था, द्वारिका में लेजाकर उनसे व्याह किया और महाभारत में प्रसिद्ध राजा भगदत्त की यही प्रागज्योतिषपुर राजधानी थी, जिन को कुरुक्षेत्र के संग्राम में अर्जुन ने मारा। भगदत्त के वंशधरों के महल और मन्दिरों की निशानियां अब तक उनकी पराक्रम की साक्षी देती हैं। मुसलमानों ने उसके वंश का विनाश किया था। लोग कहते हैं कि कूचविहार, दरंग, बिजनी और सीदली के राजा उसी वंश से हैं।

कामरूप जिला—यह जिला आसाम के ब्रह्मपुत्र घाटी में ब्रह्मपुत्र नदी के दोनों ओर ३८५७ वर्ग मील क्षेत्र फल में फैला है। इसके उत्तर भूटान देश; पूर्व दरंग और नौगांव जिला; दक्षिण खसिया पहाड़ियां और पश्चिम ग्वालपाड़ा जिला है। जिले का सदर स्थान गौहाटी कसबा है। ब्रह्मपुत्र के दक्षिण की पहाड़ियां चंद स्थानों में २००० से ३००० फीट तक ऊंची हैं। इनके ढालुओं पर चाय के बाग बनाये गए हैं। ब्रह्मपुत्र के दोनों ओर बहुतेरी छोटी नदियां ब्रह्मपुत्र में गिरती हैं। जिले में लगभग १३० वर्ग मील क्षेत्र फल में जंगल लगा है। हाथी, बाघ, तेंदुए, भालू, भेंड़ा, भैंसा, बड़ी हरिन और जंगली सूअर, खास कर जिले के उत्तर में बहुत होते हैं। बहुतेरे गांव जंगली जानवरों के भय से घेरान से घिरे हुए हैं। प्रति वर्ष जंगली जानवर बहुतेरे आदमियों को मार डालते हैं। जिले में मयूर पक्षी बहुत होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कामरूप जिले में ६४४९६० मनुष्य थे; अर्थात् ५६९९०६ हिन्दू, ५०४५२ मुसलमान, २३५२५ आदिनिवासी, ६९० बौद्ध, ३६६ क्रुस्तान, २० जैन और १ ब्राह्म। जातियों के खाने में १४०९२३ कोतीटा, ९९२९३ कचारी, ८१५५१ कोच, ५३२०३ केवट, ३६३३६ ब्राह्मण, २२७२३ राभा, शेष में कटानी, डोम, चंडाल, मिकिर, सुनरिया, इत्यादि जातियां थीं। राजपूत केवल २११ थे।

कामरूप जिला महापुरुषिया करके प्रसिद्ध वैष्णों का प्रधान स्थान है। इसमें ६१ मठ, जो सास्वत कहलाते हैं, प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त देवलायी करके प्रसिद्ध दूसरे बहुतेरे मठ हैं। कामरूप जिले में कई एक तीर्थ स्थान हैं। इनमें से एक महामुनि का बौद्ध मंदिर है, जहां हिमालय के उस पार के भी बौद्ध यात्री आते हैं।

इतिहास—अति पूर्व काल में राजा भगदत्त, जिसकी राजधानी प्रागज्योतिषपुर (वर्त्तमान काल की गौहाटी) थी, इस देश में राज करता था। उसको कुरुक्षेत्र के संग्राम में अर्जुन ने मार डाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा भगदत्त का राज्य पूर्व दिशा में मनीपुर की पहाड़ियों से करतोया नदी तक और सम्पूर्ण आसाम की घाटी पर फैला था। आईन अकबरी में लिखा है, कि भगदत्त के वंश में २३ उत्तराधिकारी राजा हुए। एक टीकाकार ने लिखा है, कि भौमासुर का पुत्र भगदत्त था; किंतु मुझको किसी पुराण में यह बात नहीं मिली।

देशी कहावत है कि इस देश में भुइयां लोग राज्य करते थे। यह निश्चय है कि पीछे कोच लोगों ने आसाम से आकर कूचविहार को जीता। सन् १२०४ ई० में मुसलमान बादशाहों के साथ कामरूप का संबंध आरम्भ हुआ। रंगामती का किला, जो अब ग्वालपाड़ा जिले में है, दिल्ली राज्य के अधीन पूर्वोत्तर में बाहरी का पड़ाव था। सन् १८२४ के पीछे आसाम के नीचे की घाटी को अङ्गरेजी गवर्नमेंट ने बंगाल में मिला लिया और ऊपरीघाटी आसाम के राजा पुरंदरसिंह के आधीन एक देशी राज्य बना; परंतु सन् १८३८ में पुरंदरसिंह का सम्पूर्ण राज्य गवर्नमेंट ने छीन लिया। सन् १८७४ ई० में आसाम प्रदेश एक चीफकमिश्नर के आधीन बंगाल से अलग एक देश नियत हुआ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(उद्योग पर्व्व, चौथा अध्याय) पूर्व के समुद्र के पास का रहने वाला भगदत्त है। (१९ वां अध्याय) राजा भगदत्त के संग चीन और किरात देश की सेना हस्तिनापुर में दुर्योधन की सहायता के लिए आई। (कर्ण पर्व्व पांचवां अध्याय) अर्जुन ने राजा भगदत्त को, जो पूर्व समुद्र के निकट के अनूपदेश के किरातों का स्वामी, इंद्र का प्यारा मित्र और क्षत्रियों के धर्म में सदा निरत रहने वाला था, कुरुक्षेत्र के संग्राम में मारडाला। (शांतिपर्व्व १०१ वां अध्याय) प्रागदेशीय योद्धा लोग हाथियों के युद्ध में निपुण होते हैं।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कंध ५९ वां अध्याय) श्रीकृष्णचन्द्र सत्यभामा

के सहित गरुड़ पर चढ़ भौमासुर के नगर प्रागज्योतिषपुर में गए। वहां पर्वत, जल, अग्नि, पवन और शस्त्र का किला था। भौमासुर, जिसका नाम नरकासुर भी है, गजारूढ़ सेना सहित बाहर निकला। बड़ा युद्ध करने के पश्चात् कृष्ण-भगवान ने पृथ्वी के पुत्र भौमासुर का सिर अपने चक्र से काट डाला और १६१०० कन्याओं को, जिनको भौमासुर ने छीन कर एकत्र किया था, पालकियों में बैठा कर चार चार दांत वाले ६४ हाथियों सहित द्वारिकापुरी में भेज दिया। वहां संपूर्ण कन्याओं से कृष्णभगवान का व्याह हुआ (यह कथा आदिब्रह्मपुराण के ९१ वें अध्याय में भी है)।

कामाख्या।

गौहाटी से लगभग २ मील पश्चिम (२६ अंश, १० कला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४५ कला, पूर्व देशांतर में) कामाख्या नामक पहाड़ी है। उसके सिर पर एक सरोवर के निकट कामाख्या देवी का, जिनको लोग कामाक्षा भी कहते हैं, सुन्दर मंदिर है। मंदिर में अंधियारा रहने के कारण दिन में भी दीप जलता है। मंदिर के पास मोदियों की अनेक दुकानें और पंडाओं के मकान बने हैं। हिंदुस्तान के सब विभागों से यात्री गण कामाख्या जाकर देवी का दर्शन करते हैं। माघ, भादो और आश्विन में उत्सव के समय बहुत लोग कामाख्या में एकत्र होते हैं।

शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में के भीमशंकर को शिवपुराण में कामरूप देश में लिखा हुआ है; किंतु बंबई के पास के भीमशंकर को लोग ज्योतिर्लिंग कहते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—देवीभागवत—(७ वां स्कंध ३८ वां अध्याय) कामरूप देश के कामाख्या भूमंडल में देवी का महाक्षेत्र है। भूमण्डल में इससे श्रेष्ठ स्थान देवी का नहीं है। वहां साक्षात् देवी प्रति मास रजस्वला होती हैं। वहां की सब पृथ्वी देवी रूप है। कामाख्या योनि मण्डल से पर और स्थान नहीं है।

पद्मपुराण—(पाताल खण्ड १२ वां अध्याय) शत्रुघ्नजी यज्ञ-अश्व की

रक्षा करते हुए, अहिछत्ता नामक बड़े नगर में पहुंचे । उसने एक देवालय देखकर अपने मन्त्री सुमति से पूछा कि यह मन्दिर किसका है। मंत्री ने कहा कि यह मन्दिर विश्व की माता कामाख्याजी का है, जिनके दर्शन मात्र से संपूर्ण सिद्धि उत्पन्न होती है। अहिछत्तापुरी के राजा सुमद ने इनकी पूजा की; तब से यह इस पुरी में स्थित हुई हैं और सब का शुभ करती हैं। (१३ वां अध्याय) राजा सुमद की आज्ञा से पुरजनों ने तोरणादिकों से अपने२ गृह भली भांति से संवारे। सहस्रों कन्या रम्य भूषणों से भूषित होकर हाथियों पर चढ़ कर शत्रुघ्नजी के सन्मुख उपस्थित हुईं और राजा अपनी सेना सहित शत्रुघ्नजी से जा मिले। जब राजा शत्रुघ्नजी को अपने राजमन्दिर को लेचले तब हाथियों पर चढ़ी हुई कन्याओं ने शत्रुघ्नजी के ऊपर लावा मिश्रित मोतियों की वर्षा की।

दूसरा शिवपुराण—(दूसरा खण्ड ३७ वां अध्याय) शिव की स्त्री सती दक्ष के यज्ञ में अपने श्वांस को ब्रह्माण्ड में चढ़ाकर शरीर को छोड़ निज लोक को गई। शिवजी ने दक्ष के यज्ञ विध्वंश करने के पश्चात् सती के शरीर को गंगा के तट में पड़ा हुआ देखा। तब वह उसको अपने शरीर में लपटाए हुए चारों ओर दौड़ने लगे। जिस२ स्थान पर सती के अंग गिरे वह सब स्थान सिद्धपीठ होगए। काम शैल पर सती की योनि गिरने से कामाख्या नाम देवी प्रकट हुई, जिनको कामरूपा कहते हैं।

वामनपुराण—(८४ वां अध्याय) प्रह्लाद ने कामरूप देश में जाकर पार्वती शिव का पूजन किया।

शिवपुराण—(ज्ञान संहिता ३८ वां अध्याय) शिव के १२ ज्योतिर्लिङ्ग हैं, जिनमें से डाँकिनी में भीमशंकर स्थित हैं। (४८ वां अध्याय) लंका के कुम्भकर्ण का पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटी के साथ सह्य पर्वत पर रहता था। उसने दस हजार वर्ष तक कठोर तप करके ब्रह्माजी से अप्रमेय वर लाभ किया। उसके पश्चात् वह कामरूप के राजा को परास्त कर बंदिखाने में रख कामरूप देश का स्वामी बन गया और देवता गण तथा ऋषिश्वरों को क्लेश देने लगा। कामरूप के राजा ने वन्दिखाने में पड़े हुए अपनी

स्त्री के सहित पार्थिव बनाकर शिवजी की आराधना करने लगा। उधर देव-ताओं ने शिवजी को प्रसन्न कर भीम के बिनाश के लिए उनसे प्रार्थना की। भीम ने जब सुना कि राजा बन्दिगृह में भी शिव की पूजा करता है तब राजा के पास जा उनको अनेक दुर्वचन कह कर उनके ऊपर तलवार चलाया। उसी समय शिवजी ने पार्थिव से निकल कर भीम की तलवार को अपने पिनाक से सौ टुकड़े कर डाला। भगवान शंकर और भीम दैत्य का भयंकर युद्ध होने लगा। उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछल ने लगा और देवतागण अति त्रसित हुए। जब नारद ने आकर शिवजी की प्रार्थना की तब उन्होंने हुंकाररूपी अस्त्र से संपूर्ण राक्षसो के सहित भीम को भस्म कर दिया। उस समय देवताओं ने शिवजी से प्रार्थना की कि हे भगवन्! आप लोक के हित के लिए इस स्थान में निवास करके इस दुष्ट देश को पवित्र कीजिए। शिव जी देवताओं के वाक्य स्वीकार करके उस स्थान में रह गए और भीम शंकर नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनके दर्शन और स्मरण करने से संपूर्ण पाप का विना-श होजाता है।

नवा अध्याय।

(आसाम देश में) शिलांग, सिलहट, सिलचर, और देशी राज्य मनीपुर।

शिलांग।

गौहाटी से ६४ मील दक्षिण (२५ अंश, ३२ कला, ३९ विकला, उत्तर अक्षांश और ९१ अन्श, ५५ कला, ३२ विकला पूर्व देशान्तर में) समुद्र के जल से ४९०० फीट ऊपर खसिया और जयंती पहाड़ियां जिले का प्रधान कसबा और आ-साम के चीफ कमिश्नर का सदर स्थान शिलांग एक छोटा कसबा है। गौहाटी से तांगा की डांक एक दिन में शिलांग चली जाती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के सहित शिलांग में ६७२० मनुष्य थे; अर्थात् ३०९५ हिंदू, २५११ एनीमिष्टिक, ५६६ मुसलमान, ५४० क्रुस्तान, १ बौद्ध और ७ दूसरे।

शिलांग में चीफकमिश्नर सर्वदा रहते हैं। मनुष्य संख्या बढ़ती जाती है। बहुत रुपये खर्च करके सरकारी इमारतें बनाई गई हैं और एक गिरजा बना है। नलद्वारा पानी सर्वत्र पहुंचता है। सप्ताहिक हाट लगता है। सन् १८८५ ई० में शिलांग की छावनी में २ पहाड़ी तोपों के साथ बंगाल पैदल की ४२ वीं रेजीमेन्ट थी। शिलांग में सालाना औसत ८७½ इंच वर्षा होती है। अगहन से चैत वा वैशाख तक जाड़ा रहता है। बर्फ कभी नहीं पड़ती है; किन्तु कभी २ सरदी से कम गहड़ा पानी जम जाता है।

खसिया और जयंतिया पहाड़ियां जिला—इस जिले के उत्तर कामरूप और नौगांव जिला; पूर्व नौगांव और कचार जिला; दक्षिण सिलहट जिला और पश्चिम गारो पहाडियां हैं। जिले का क्षेत्र फल ६१५७ वर्गमील और सदर स्थान शिलांग है।

खासी पहाड़ियों पर अङ्गरेजी गवर्नमेंट के आधीन छोटे छोटे बहुतेरे देशी राजा हैं और बहुतेरे गांव अङ्गरेजी हैं। जयंती पहाड़ियां अङ्गरेजी राज्य में हैं, जिसको सन् १८३५ में सरकार ने वहां के राजा से छीन लिया। खसिआ पहाड़ी पर पहाड़ी नदियां बहुत हैं। जंगलों में मधुमक्खी का मोम और लाही होती है और हाथी, गेंडे, बाघ, भैंसे, वनैली गाय इत्यादि सब प्रकार के वनैले जंतु रहते हैं और बहुतेरे आश्चर्य गूफा और खोह देखने में आते हैं, जिनमें से चेरापुंजी और रूपनाथ का खोह बहुत प्रसिद्ध है। रूपनाथ का खोह भूमि में बहुत दूर तक फैला है। कचार की सीमा पर कपिली नदी के किनारे एक गर्म झरना है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १६९३६० मनुष्य थे; अर्थात् १६०९७६ आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली जातियां, ५६९२ हिन्दू, २१०७ क्रुस्तान, ५७० मुसलमान और १५ ब्राह्म।

इस जिले में स्त्रियां मालिक हैं। पुरुष विवाह करने के पश्चात् अपने ससुर

के घर में रह जाता है। जो धन सम्पति पुरुष अपने घर मे ले आता है, वह उसके मरने पर उसकी सबसे छोटी बहिन पाती है, और विवाह के पहले की सम्पूर्ण जायदाद की वही वारिस होती है। विवाह के पश्चात की प्राप्त हुई जायदाद मृत पुरुष की स्त्री और लड़के पाते हैं; किन्तु जिले के भिन्नभिन्न प्रान्त में यह रीति बदली हुई है। दक्षिणी ढालु और घाटियों के निवासी विवाह के पहले और पीछे की उपार्जन की हुई सम्पति में भेद नहीं मानते। वहां मृत पुरुष की संतान सम्पूर्ण धन सम्पति की मालिक होती है। खसिया और जयंती पहाड़ियों में केवल शिलांग और जोआई अङ्गरेजी स्टेशन और चेरापुंजी और शोलापुंजी देशी कसबा है। गौहाटी और शिलांग के बीच में गाड़ी की एक अच्छी सड़क सन् १८७७ में बनाई गई। उसके कई एक वर्ष पीछे सन् १८८३ में वह चेरापुंजी तक ३० मील बढ़ाई गई।

इस जिले में नारंगी, आलू, तेजपात और सोंपारी बहुत होती हैं। जयंती पहाड़ियों में हल चलता है; किन्तु खसिया पहाड़ियों में केवल कुदाल से खेती होती है।

चेरापूंजी—खसिया पहाड़ियों के दक्षिण भाग में जेठ से कातिक तक भारी वर्षा होती है। चेरापुंजी के पास, जो इस जिले में शिलांग से ३० मील दक्षिण है, सन् १८७७ से १८८१ तक ४६३ इंच वर्षा हुई थी। लोग कहते हैं कि दुनियां की जानी हुई वर्षा मे सब से बड़ी वर्षा सन् १८७६ के १६ जून को चेरापूंजी में हुई। उस समय २४ घंटे में २४ इञ्च पानी गिरा था। सन् १८६१ में ८०५ इञ्च वर्षा हुई, जिसमें से केवल जून में ३६६ इंच हुई थी।

इतिहास—अङ्गरेजी सरकार ने सन् १८३५ में जयंती के राजा राजेन्द्रसिंह से जयंती पहाड़ियां छीन लीं। खसिया का राजा सन् १८३३ में सरकार के आधीन हो चुका था। पहले इस जिले का सदर स्थान चेरापूंजी था; किन्तु सन् १८६४ में शिलांग सदर स्थान बनाया गया। सन् १८७४ में जब आसाम एक चीफ कमिश्नर के आधीन हुआ तब शिलांग चीफ कमिश्नर का सदर स्थान बना।

आसाम देश—आसाम देश का क्षेत्रफल ४९००४ वर्गमील है। इस देश में कितनी जगह अब तक नापी नहीं गई है। देश के उत्तर भूटान; पूर्वोत्तर मिशमी पहाड़ियां; पूर्व ब्रह्मा और मनीपुर का राज्य; दक्षिण लुसाइयों के रहने वाली पहाड़ियां, टिपरा जिला और टिपरा का राज्य और पश्चिम सूबे बंगाल में मैमनसिंह, रंगपुर और जलपाईगोड़ी जिले तथा कूचविहार का राज्य है।

यह देश ब्रह्मपुत्र नदी के दोनों धार पर चीन की सीमा तक चला गया है और स्वभाविक ३ भागों में बटा है; अर्थात ब्रह्मपुत्र घाटी, सुरमा घाटी और मध्य के पहाड़ी देश में। इसमें पहाड़ियां और जंगल बहुत हैं, जिनमें दफला, मीरी, मिश्मी, नागा, कूकी, लुशाई इत्यादि जंगली जातियां बहुत रहती हैं। भारतवर्ष का कोई भाग इस देश के समान आर्द्र नहीं है। इसकी प्रधान नदी ब्रह्मपुत्र और सुरमा है; किन्तु लगभग ४० नदियां ऐसी हैं, जो वर्ष भर में किसी समय थाह नहीं होतीं। चैत्र से कार्तिक तक बड़ी वर्षा होती है। यह देश चाय के उपज के लिए प्रसिद्ध है। चाय के बागों में काम करने के लिये दूर दूर के देशों से आसाम में कूली लाये जाते हैं। आसाम में लोहा और कोयला बहुत निकलता है। जंगलों में हाथी और गैंडे बहुत रहते हैं। बहुतेरे लोग जंगलों से हाथियों को बझाकर दूसरे देशों में लेजाते है। जंगली लोग तसर के कीड़ों को ले आते हैं। इस देश में भूडोल बहुधा हुआ करता है।

आसाम प्रदेश में ११ जिले हैं;—सिलहट, कचार, ग्वालपाड़ा, कामरूप, दरंग, नवगांव, शिवसागर, लखिमपुर, नागा, खसिया पहाड़ियां और गारू। खसिया पहाड़ियां जिले के शिलांग में आसाम के चीफ कमिश्नर रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय आसाम देश में ५४७६८३३ मनुष्य थे; अर्थात् २८१९५७५ पुरुष और २६५७२५८ स्त्रियां। इनमें से २९९७०७२ हिन्दू, १४८३९७४ मुसलमान, ९६९७६५ जंगली जातियां इत्यादि, १६८४४ क्रस्तान, ७६९७ बौद्ध, १३६८ जैन, ८३ सिक्ख, ५ यहूदी और २५ अन्य थे। इनमें सैकड़े पीछे बंगाली भाषा वाले ५० मनुष्य, आसामी भाषा वाले २५$\frac{1}{8}$ मनुष्य, हिंदी वाले ४$\frac{1}{8}$ मनुष्य, कचारी भाषा के ३$\frac{1}{4}$ मनुष्य, खासी भाषा वाले ३$\frac{1}{8}$ मनुष्य, गारो भाषा वाले २$\frac{1}{8}$ मनुष्य और अन्य भाषा वाले ११ मनुष्य थे।

आसाम के कसबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय ५००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	कसबा	जिला	जन-संख्या
१	सिलहट	सिलहट	१४०२७
२	गोहाटी	कामरूप	१०८१७
३	डिब्रुगढ़	लखिमपुर	९८७६
४	बरपेटा	कामरूप	९३४२
५	सिलचर	कचार	७५२३
६	शिलांग	खसिया पहाड़ी	६७२०
७	ग्वालपाड़ा	ग्वालपाड़ा	५४४०
८	शिवसागर	शिवसागर	५२४९

अति पूर्व काल में आसाम प्रदेश महाभारत में प्रसिद्ध राजा भगदत्त और उनके उत्तराधिकारियों के आधीन था। बाद लगभग १३ वीं शदी में वह 'अहम' नामक पहाड़ी जातियों के अधिकार में हुआ। अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन् १७६५ ई० में आसाम के सिलहट और ग्वालपाड़ा जिले को; सन् १८२६ में आसाम का निचला भाग; सन् १८३० में राजा गोविन्दचंद्र के बिना वारिस मृत्यु होने पर कचार के मैदान का भाग; और सन् १८३८ में राजा पुरंदरसिंह को निकाल कर घाटी का ऊपरी हिस्सा अपने राज्य में मिला लिया। अङ्गरेजी अधिकार बहुत समय में धीरे धीरे पहाड़ी देशों पर फैलता गया। एक अङ्गरेजी अफसर सन् १८६८ में नागा पहाड़ी के 'समागुतींग' में रक्खा गया; किन्तु नागा जातियों की एक असभ्य जाति अब तक स्वाधीन है। सन् १८७४ में ११ जिले बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के अधिकार से निकाल कर एक चीफ कमिश्नर के आधीन आसाम देश बनाया गया।

सिलहट।

शिलांग से ३० मील दक्षिण कुछ पश्चिम चेरापूंजी और चेरापूँजी से लगभग ३० मील दक्षिण कुछ पूर्व (२४ अंश, ५३ कला, २२ विकला उत्तर

अक्षांश और ९१ अंश, ५४ कला, ४० विकला, पूर्व देशांतर में) सुरमा नदी के दहिने अर्थात् उत्तर किनारे पर आसाम देश में प्रधान कसवा और एक जिले का सदर स्थान सिलहट कसवा है। शिलांग से सिलहट तक चेरा होकर सड़क बनी हुई है और नारायणगंज से, जो सिलहट से पश्चिम दक्षिण की ओर बंगाल प्रदेश में है, सिलहट कसबे से लगभग १५ मील दूर नित्य आग-बोट आता है। उस सफर में आगबोट को दो दिन लगता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिलहट कसवे में १४०२७ मनुष्य थे; अर्थात् ७९७६ पुरुष और ६०५१ स्त्रियां। इनमें ७०२० मुसलमान, ६८८८ हिंदू, ७४ कृस्तान, ३६ जैन और ९ एनिमिष्टिक थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह आसाम प्रदेश में पहला शहर है।

यूरोपियन लोगों के मकान दो मील तक सुर्मा नदी के किनारे पर और कसबे के पीछे छोटी पहाड़ियों पर छितराए हुए हैं। वहां मामूली सरकारी इमारतें और एक सुन्दर गिर्जा बना हुआ है। शाहजलाल नामक फकीर की प्रसिद्ध मसजिद है, जहां दूर दूर से मुसलमान यात्री आते हैं।

सिलहट तिजारती कसवा है। चावल, ढाल, चमड़ा, सीतलपाटी, नारंगी पत्ती का छाता; जेवर इत्यादि वस्तु वहां से दूसरे स्थानों में जाती हैं और कपड़ा, निमक, चीनी, रेशम, मसाला इत्यादि सामान दूसरे स्थानों से वहां आते हैं। सिलहट में सीतलपाटी, हाथी-दांत और हड्डी के जेवर, पेटाढ़ा और मोढ़े अति उत्तम बनते हैं। वहां के समान उत्तम नारंगी किसी जगह नहीं होती। वहां ईद के तिहवार के समय मुसलमानों का मेला होता है, जो दो दिनों तक रहता है। सन् १८६९ के भारी भूकंप से सिलहट की इमा-रतों की बड़ी हानी पहुंची थी।

सिलहट जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ५४१३ वर्गमील है, जिसके उत्तर खशिया और जयंती पहाड़ियां जिला; पूर्व कचार जिला; दक्षिण टिपरा का राज्य और बंगाल के अङ्गरेजी राज्य का टिपरा जिला और पश्चिम बंगाल में मैमनसिंह जिला है। जिले के बड़े भाग में समतल भूमि है। स्थान स्थान में छोटी छोटी पहाड़ियां, जो टीला कहलाती हैं, देख पड़ती हैं। जिले में नदियां

बहुत हैं। आषाढ़ से कार्तिक तक जिले का पश्चिमी भाग नदियों के जल से समुद्र सा देख पड़ता है। लोग केवल नौकाओं द्वारा आवागमन करते हैं। बांस, ताड़ और दूसरे वृक्षों के कुंजों में गांव बसे हैं। जिले के दक्षिणी भाग के मैदानों में पहाड़ियों के ८ सिलसिले हैं; इनमें से किसी की ऊंचाई समुद्र के जल से १०० फीट से अधिक नहीं है। जिले के मध्य में इट्टा पहाड़ियां हैं। सिलहट कसबे के निकट की पहाड़ियां लगभग ८० फीट ऊंची हैं, जिनमें से बहुतेरी पर चाय की खेती होती है। जिले में सुरमा नदी की बहुतेरी शाखा और सहायक नदियां बहती हैं। जिले के दक्षिण-पूर्व के भाग में अच्छी लकड़ी होती है। जिले के जंगली पैदावारों में लकड़ी, बांस, छप्पर छाने योग्य घास, लाही, मधुमक्खियों का मोम, मधु, वृक्ष के रस से बना हुआ अगरअत्तर और जंगली जानवरों में बाघ, हाथी, भैंसा, गेंड़ा प्रधान हैं। जिले के पूर्व दक्षिण के भाग में हाथी पकड़ाए जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सिलहट जिले में १९६९००९ मनुष्य थे; अर्थात् १०१५५३१ मुसलमान, ९४९३५३ हिन्दू, ३७०८ जंगली जातियां, ३७९ कृस्तान और ३८ ब्राह्म। जातियों के खाने में १५७१३० कायस्थ, १२९६०९ चंडाल, १०२०६५ दास या हलवा, ८२१७० नाथ या जोगी, ४९६०० पाटनी, ४५४३४ ब्राह्मण, ४०४१२ माली, ३६४२२ सूँड़ी, ३५४०७ कैवरत, २७२६४ डोम, २६३३० धोबी और केवल ३६५८ राजपूत थे; शेष में दूसरी जातियां थीं।

इतिहास—मुसलमानों ने १४ वीं शदी के अंत में सिलहट जिले पर आक्रमण करके जिले के हिस्से को जीता। जयंतिया के राजा ने चंद अङ्गरेजी प्रजाओं को बल से छीन कर कालीजी को बलि चढ़ाया; इस लिये अङ्गरेजी सरकार ने सन् १८३५ ई० में उसका राज्य छीन कर अपने राज्य में मिला लिया। राजा इंद्रसिंह अपने मरने के समय सन् १८६१ ई० तक ६००० रुपया वार्षिक पिंशन पाता था। सिलहट जिला सन् १८७४ में आसाम की कमिश्नरी में मिला दिया गया।

सिलचर।

सिलहट कसबे से लगभग ८० मील पूर्व (२४ अंश, ४९ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अंश, ५० कला, ४८ विकला, पूर्व देशांतर में) बारक नदी के दक्षिण किनारे पर आसाम देश के कचार जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा तथा फौजी छावनी सिलचर है। सूखी ऋतुओं में सिलहट से कचार तक सुर्मा नदी में नाव पर जाना होता है। बरसात में नारायणगंज से कचार तक आगबोट चलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिलचर में ७५२१ मनुष्य थे; अर्थात् ५१४४ हिंदू, २२२४ मुसलमान, ८४ कृस्तान, ६३ एनिमिष्टिक, ५ जैन, १ बौद्ध, १ यहूदी और १ दूसरा।

सिलचर में एक सुन्दर गिर्जा हाल में बना है। सिविल स्टेशन और फौजी छावनी इत्यादि सरकारी इमारत बनी हुई हैं। माघ मास में एक मेला होता है, जो ७ दिन तक रहता है। मेले में बीस पचीस हजार मनुष्य और मनीपुर से विकने के लिये बहुत से टांघन (घोड़े) आते हैं। सिलचर से मनीपुर तक सड़क बनी हुई है, जिसको अङ्गरेजी गवर्नमेंट ने सन् १८३२ और १८४२ ई० के बीच में बनवाया था।

कचार जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३७५० वर्गमील है। जिले के पूर्व मनीपुर का राज्य और नागा पहाड़ी जिला; दक्षिण पहाड़ी देश, जिसमें लुशाई और कूकी पहाड़ी लोग रहते हैं; पश्चिम सिलहट जिला और जयन्ती पहाड़ी और उत्तर कपिली और ढयांग नदी बाद नौगांव जिला है। जिले का सदर स्थान सिलचर है। कचार जिले के ३ ओर पहाड़ियों के ऊंचे सिलसिले हैं; केवल पश्चिम सिलहट की ओर खुला मैदान है। मध्य में एक नदी पूर्व से पश्चिम बहती है, जिसमें वर्षा काल में आगबोट चलता है। बारक नदी कचार जिले में १३० मील बहती है। इन नदियों की सहायक बहुतेरी छोटी नदियां हैं। पहाड़ियों के नीचे ढालू भूमि पर चाय के बाग हैं। जगह जगह नीची भूमि पर धान की खेती होती है। बांस और फलदार वृक्षों के कुंजों

में, जिनकी दृश्य मनोरम है, लोगों की झोंपड़ियां बनी हुई है। जंगलों में हाथी, गैंडे, भैंसे, बाघ और वनैली बिल्ली देखने में आती हैं। खास करके भैंसे से खेत जोते जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कचार जिले में ३१३८५८ मनुष्य थे; अर्थात् २८१४२५ मैदान में और २४४३३ पहाड़ी देश में। इनमें से मैदान में १८६६५७ हिंदू, ९२३९३ मुसलमान, ९५७० पहाड़ी जाति, ७६५ कृस्तान, और ४० ब्राह्म और पहाड़ी देश में १०९४७ हिंदू, ३ मुसलमान, २ कृस्तान और शेष पहाड़ी जंगली मनुष्य थे। जातियों के खाने में कचारी ४४२५ मैदान में और १०८१० पहाड़ियों में; कूकी और लुशाई २७९४ मैदान में और ६४२० पहाड़ियों में; नागा ५१८४ मैदान में और ४०२१ पहाड़ियों में; मिकिर ६५१ मैदान में और ३०४५ पहाड़ियों में थे; शेष में अन्य जातियां थीं। कचार जिले में कूली बहुत हैं। इस जिले के लोग धान की खेती या चाय के बागों में काम करते हैं। जिले में सिलचर के सिवाय ५००० से अधिक मनुष्य की कोई बस्ती नहीं है।

इतिहास—सन् १८३० ई० में पिछला कचारी राजा मारा गया और देश अङ्गरेजी गवर्नमेन्ट के अधिकार में आया। खियाल किया जाता है कि इस पहाड़ी देश में कचारी राजा लोग रहते थे, जहां अब नागा जाति के लोग बसते हैं। उनकी राजधानी पहाड़ियों के पाव के निकट दीमापुर था। कचार के उत्तर भाग के पहाड़ी देश में अब तक कचारी लोग बसते हैं। कचार जिले में भूकंप बहुत होता है। सन् १८६९ ई० की १० वीं जनवरी के भूकंप से सिलचर का गिर्जा और सरकारी इमारतें गिर गईं; बाजार का बड़ा भाग उजड़ गया और पृथ्वी में दरार हो गए और सन् १८८२ ई० के १३ वीं अक्तूबर के भूकंप से सिलचर की पक्की इमारतों की बड़ी हानि हुई।

मनीपुर।

कचार से १०८ मील पूर्व आसाम में देशी राज्य की राजधानी मनीपुर है। कचार से मनीपुर तक पहाड़ी सड़क बनी है। नागापहाड़ी जिले के

कोहिमा छावनी से १८ मील दूर माओ है। माओ से दक्षिण मनीपुर तक घोड़े चलने योग्य एक पहाड़ी सड़क है।

सन् १८९१ ई० में मनीपुर के राजा कुलचंद्र ने आसाम के चीफकमिश्नर और अन्य कई अङ्गरेजों को मार डाला; इस लिये अङ्गरेजी सरकार ने उन के महल का बड़ा भाग और उनका देवमंदिर तोड़ डाला। राजा का खास महल छोड़ दिया गया है। राजा कालापानी भेजा गया। अब मनीपुर का एक छोटा लड़का राजा बनाया गया है। राज्य का प्रबंध अङ्गरेज महाराज करते हैं। मनीपुर में रेजीडेंसी है और अङ्गरेजी सेना रहती है।

मनीपुर राज्य—इसके उत्तर नागा पहाड़ी जिला और पहाड़ी देश, जिनमें नागा जाति के लोग बसते हैं और दूसरे लोग नहीं जासकते; पश्चिम कचार जिला; पूर्व ब्रह्मा का एक भाग और दक्षिण लूशाई, कूकी और सूती लोगों का देश है। इस राज्य में सख्त पहाड़ी देश के भीतर एक फैली हुई घाटी है। राज्य का क्षेत्रफल लगभग ८००० वर्गमील और खास घाटी का क्षेत्रफल ६५० वर्गमील है। साधारण तरह से पहाड़ी सिलसिले उत्तर से दक्षिण को गए हैं।

'लोगताक' झील के दक्षिण की घाटी घास के जंगल से पूर्ण बिना वृक्ष की है; किन्तु राज्य के उत्तर और पूर्व के भाग में बहुत बस्तियां देखने में आती हैं। फासिले पर उत्तर की पहाड़ियों के नीचे एक कोने में राजधानी मनीपुर है। देश के दूसरे भागों के अपेक्षा राजधानी के आस पास का देश अधिक आबाद है। कई एक नदियां उत्तर और पश्चिम से लोगताक नामक झील में प्रवेश करती हैं। लोगताक झील बहुत बड़ा है; किंतु प्रतिवर्ष छोटा होता जाता है। घाटी की लंबाई लगभग ३६ मील और इसकी सबसे अधिक चौड़ाई लगभग २० मील है। घाटी के बहुतेरे कूपों से नमक निकलता है, जिनमें प्रधान कूप राजधानी से १४ मील पूर्वोत्तर पहाड़ियों के पादमूल के निकट है। यही सब नमक मनीपुर में खर्च होता है। घाटी में कोई प्रसिद्ध नदी नहीं है। सब नदियों में बड़ी बारक नदी है। जंगलों में विविध प्रकार के वृक्ष देखने में आते है। बांस का जंगल सर्वत्र लगे हुए हैं। पहाड़ी देश में बहुतेरे हाथी,

बाघ, तेंदुए और भालू विचरते हैं। पूर्व और दक्षिण के भाग में गैंडे मिलते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि मनीपुर राज्य में जहरीले सर्प नहीं हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मनीपुर राज्य में १५४ बस्तियां, ४५३२२ मकान और २२१०७० मनुष्य थे; अर्थात् १३०८९२ हिंदू, ८५२८८ पहाड़ीकोम, ४८८१ मुसलमान, ७ कृस्तान और २ बौद्ध।

मनीपुर राज्य की स्त्रियां बड़ी परिश्रमी हैं। खेती के कामों के अतिरिक्त खरीदना, बेचना इत्यादि बहुतेरे कामों को वही करती हैं। भारतवर्ष के किसी स्थान में मनीपुर की स्त्रियों से अधिक परिश्रम करने वाली स्त्रियां नहीं हैं। वहां तिजारत, दुकान्दारी का काम प्रायः सब स्त्रियाही करती हैं।

राज्य के उत्तर भाग में खास करके नागा लोग और दक्षिण भाग में कूकी लोग बसते हैं। नागा लोग मामूली तवर से पगड़ी नहीं बांधते, किन्तु कूकी लोग सर्वदा सिर पर पगड़ी रखते हैं।

राज्य में धान, कपास, तेल के बीज, आलू, मकई, तम्बाकू और अनेक प्रकार की तरकारियां होती हैं। मनीपुर के टांघन घोड़े प्रसिद्ध हैं। अंगरेजी सरकार ने सन् १८३२ और १८४२ ई० के मध्य में मनीपुर से कचार तक सड़क बनवा दी। सन् १८८३ ई० में घोड़े चलने योग्य एक अच्छी सड़क मनीपुर से कोहिमा से १८ मील की दूर पर है, जो, बनाई गई। इनके अलावे घाटी में देशी सौदागरी के योग्य कई एक कच्ची सड़के हैं।

इतिहास—सन् १७१४ ई० में 'पामहीबा' नामक नागा हिन्दू मत में आकर गरीबनेवाज के नाम से मनीपुर का राजा बना। उसने कई बार ब्रह्मा मुल्क पर चढ़ाई की। उसके मरने के पश्चात् बह्मा वालों ने मनीपुर पर आक्रमण किया। तब मनीपुर के राजा जयसिंह ने अंगरेजी सरकार से सहायता मांगी। सरकार ने फौज भेजी; किंतु पीछे वह लौटाली गई। सन् १८२४ में अंगरेजी सरकार और बह्मा के राजा की पहली लड़ाई आरंभ हुई। जब ब्रह्मा वालों ने कचार, आसाम और मनीपुर पर आक्रमण किया तब मनीपुर के राजा गंभीरसिंह ने अंगरेज महाराज से सहायता मांगी। अंगरेजी सरकार ने अपनी फौज कचार की ओर भेजी और दुश्मनों को

खदेर कर कुबोघाटी ले ली। सन् १८२६ में जब सरकार को ब्रह्मावालों से संधि हुई तब उन्हों ने मनीपुर को स्वाधीन बनाया। सन् १८३४ में गंभीर-सिंह मर गया; उस समय उसका पुत्र चंद्रकीर्तिसिंह केवल एक वर्ष का लड़का था, इस लिये उसका चचा (गरीबनेवाज का परपोता) नरसिंह राज्य का मालिक बना। सन् १८३४ में अंगरेजी सरकार ने ब्रह्मा के राजा को कूबोघाटी लौटा दी और उसके बदले में मनीपुर के राजा को सालाना ६०३७० रुपया देने को कबूल किया। सन् १८५० में राजा नरसिंह की मृत्यु होने पर उस के भाई देवेन्द्र सिंह को अंगरेजी गवर्नमेंट ने मनीपुर का राजा बनाया; किंतु ३ महीने के बाद गंभीरसिंह के पुत्र चंद्रकीर्तिसिंह ने मनीपुर पर आक्रमण किया। देवेन्द्रसिंह कचार की ओर भाग गया और चंद्रकीर्तिसिंह राजा बन गया। सन् १८५१ की फरवरी में अंगरेज महाराज ने उस को राजा कबूल किया। सन् १८७९ में नागा लोगों की लड़ाई के समय चंद्रकीर्ति सिंह ने अंगरेजी सरकार की सहायता की; इस की कृतज्ञता में सरकार ने उसको के. सी. एस. आई. की पदवी दी।

सन् १८९० ई० में महाराज शूरचंद्रसिंह मनीपुर के राजा थे। उनके छोटे भाई कुलचंद्रसिंह युवराज और कुलचन्द्र से छोटे भाई टिकेंद्रजितसिंह सेना-पति थे और उनसे भी छोटे भाई अंगसिंह 'पक्का सेना' का काम करते थे। इन के अलावे महाराज के और भी ४ भाई थे। टिकेंद्रजितसिंह ने महाराज के विरुद्ध बिद्रोह मचाया। तारीख १२ सितम्बर की आधी रात में महाराज शूरचंद्रसिंह ने 'पक्कासेना' और कई एक सेवकों सहित भाग कर रेजीडेंन्सी में पन्नाह लिया और दूसरे दिन बृन्दाबन जाने के बहाने कर के अपने लोगों के साथ कलकत्ते का मार्ग पकड़ा। उसने कलकत्ते में पहुंच कर भारत गवर्नमेन्ट से सहायता मांगी। बड़े लाट लार्ड लैंसडौन ने उन की सहायता नहीं की। उन्होंने युवराज कुलचन्द्र को मनीपुर के महाराज बनाने और सेनापति टिकेंद्र-जितसिंह को मनीपुर से निकाल देने के लिये आसाम के चीफकमिश्नर क्विन्टन साहब को मनीपुर जाने की आज्ञा दी। आज्ञा पत्र में लिखा था कि टिकेंद्रजितसिंह मनीपुर में नहीं रहें, तो गवर्नमेन्ट कुलचंद्रसिंह को मनी-

पुर का महाराज स्वीकार करेगी। क्विन्टन साहब चार पांच सौ आदमियों सहित जिन में १७५ सिपाही थे, मनीपुर चले। उन्हों ने मन में निश्चय किया कि दरबार में युवराज, सेनापति आदि को बुला कर गवर्नमेंट की आज्ञा सुना दें और उसी समय सेनापति टिकेन्द्रजितसिंह को पकड़ लें। तारीख २२ मार्च को जब चीफकमिश्नर साहब मनीपुर की राजधानी से कुछ दूर ही थे, तब सेनापति २ पल्टन अपने साथ ले उनके स्वागत के लिये उनसे जा मिले। साहब के राजधानी के पास पहुँचने पर युवराज कुलचन्द्रसिंह भी उनसे मिले। चीफकमिश्नर ने दरबार के लिये दोपहर दिन नियत किया। दरबार के समय युवराज थे; पर सेनापति नहीं आए; इस लिये दरबार नहीं हुआ। साहब ने युवराज के पास कहला भेजा कि बिना सेनापति के आए दरबार नहीं होगा। दूसरे दिन ८ बजे दरबार के समय भी सेनापति नहीं आए; तब दरबार का समय १ बजे नियत हुआ। उस समय भी वह नहीं आए, तब मनीपुर के रेजीडेंट ग्रिमउड साहब ने मनीपुर के दरबार गृह में जाकर बड़े लाट की आज्ञा युवराज कुलचन्द्र सिंह से कह सुनाई और उस के पीछे सेनापति को समझाया कि आप मनीपुर से चले जाइए; पर सेनापति ने उनका कहना स्वीकार नहीं किया। चीफकमिश्नर ने राजमहल में मनीपुरी सेना को प्रवेश करते देख कर रेजीडेन्सी के हाते को दृढ़ कर रक्खा। ता० २४ मार्च को चीफकमिश्नर ने अंगरेजी सेना को सेनापति को पकड़ने की आज्ञा दी। सबेरे ५ बजे अंगरेजी सेना का आक्रमण आरंभ हुआ। मनीपुरी सेना उनसे लड़ने लगी। दिन भर युद्ध होता रहा। कई अंगरेजी अफसर घायल हुए। शाम को अंगरेजी सेना परास्त होकर रेजीडेन्सी के हाते में भाग गई। मनीपुरी सेना ने रेजीडेंसी के मकान को घेरलिया। उस के पीछे चीफकमिश्नर और कई एक अन्य अंगरेज युवराज और सेनापति से संधि की बात करने गए। उसी समय मनीपुर वालों ने उनको कैद कर लिया। कई अंगरेज मारे गए। रेजीडेंसी के भीतर के लोग निकल भागे। मनीपुरियों ने रेजीडेंसी को जला दिया। चीफकमिश्नर क्विंटन साहब, इत्यादि ५ अंगरेज घातकों द्वारा दाव से काट डाले गए। पीछे मनीपुर वालों ने सब देशी कैदियों को छोड़ दिया।

यह खबर पाकर अंगरेजी सेना ने तीन ओर से मनीपुर पर चढ़ाई की; एक कोहिमा होकर, दूसरी तम्म स्थान होकर और तीसरी सिलचर होकर। लग भग ३० अपरैल को मनीपुरी सेना कुछ मुकाबिला करने के पश्चात् परास्त होकर भागी। अंगरेजी सेना ने राजधानी पर अपना अधिकार कर लिया। क्विन्टन साहब आदि कई एक मृत अंगरेजों के सिर राजभवन के आंगन में गड़े हुए मिले, जो मरने के ३८ दिन बाद दफन किए गए। अंगरेजों ने महाराज के देव मन्दिर और राजमहल का बड़ा भाग तोड़ दिया। युवराज कुलचन्द्रसिंह, सेनापति टिकेंद्रजितसिंह इत्यादि प्रधान लोग क्रम क्रम से पकड़े गए। विचार करने के लिये मनीपुर में एक कमीशन बैठा। सेनापति 'टिकेंद्रजितसिंह' नायव सेनापति, बूढ़ा तॉंगल जेनरल और बहुतेरे अन्य राज कर्मचारी फांसी दिए गए और युवराज कुलचंद्रसिंह, उन के भाई अंगसिंह इत्यादि बहुतेरे लोग कालापानी भेजे गए। इन के लड़के वाले मनीपुर से निकाल दिए गए। राजवंश का एक छोटा लड़का मनीपुर का राजा बनाया गया। राज्य का प्रबंध अंगरेजी अफसर द्वारा होने लगा।

—•••—

दसवां अध्याय।

(आसाम देश में) तेजपुर, नवगांव, शिवसागर, कोहिमा, डिब्रुगढ़, और परशुरामकुण्ड।

तेजपुर।

गौहाटी से लगभग ८० मील पूर्वोत्तर आसाम प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के दहिने अर्थात् उत्तर किनारे पर (२६ अन्श, ३७ कला, १५ विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अन्श, ५३ कला, ५ विकला, पूर्व देशांतर में) दरंग जिले का प्रधान कसबा और सदर स्थान तेजपुर है। तेजपुर के निकट भैरवी नदी ब्रह्मपुत्र में मिली है। पहाड़ियों के दो सिलसिलों के बीच के मैदान में तेजपुर बसा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इसमें २९१० मनुष्य थे।

पहाड़ी पर यूरोपियन लोगों की कोठियां बनी हैं। देशी बस्ती में खपड़े और लोहे की चादर से छाए हुए बहुतेरे पक्के मकान हाल में बने हैं। वहां मामूली अनेक सिविल आफिस, जेलखाना, एक खैराती अस्पताल और एक अङ्गरेजी स्कूल है।

कचहरी के आस पास बहुतेरे स्तंभ और नकाशीदार पत्थर पड़े हुए हैं; इससे अनुमान होता है कि पूर्व काल में तेजपुर प्रसिद्ध स्थान था। तेजपुर के पड़ोस के जंगल में बहुतेरे मंदिरों की निशानियां देख पड़ती हैं। उस देश में तेजपुर प्रसिद्ध तिजारती जगह है। वहां चायवाले यूरोपियन बहुत रहते हैं। चाय उत्पन होने के लिये वह बहुत प्रसिद्ध स्थान है।

दरंग जिला—इसके उत्तर भुटिया, आका और डफला पहाड़ियां; पूर्व एक नदी के बाद लखिमपुर जिला; दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदी और पश्चिम कामरूप जिला है। जिले का क्षेत्रफल ३४१८ वर्ग मील और सदर स्थान तेजपुर है।

जिले में कई एक नदियां बहती हैं। मनुष्य संख्या कम है। खेती कम होती है। नरकट और बेंत के सघन जंगल हैं। हाथी, भालू, गेंड़े, भैंसे, बाघ, इत्यादि विविध प्रकार के बनैले जंतु रहते हैं। हिंसक जंतुओं के मारने वालों को सरकार से इनाम मिलता है। सन् १८८२—१८८३ में हाथी बझाने वालों से सरकार को २५६० रुपया महसूल मिला था। कई एक नदियों में खास करके भोरानी में बालू धोकर सोना निकाला जाता है। कई एक नदियां मैदान में कुछ दूर जाकर बालूदार भूमि में गुप्त हो जाती हैं और कई एक मील के पश्चात् फिर प्रकट होकर बहती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय दरंग जिले में २७३३३३ मनुष्य थे; अर्थात् २५१८३८ हिन्दू, १४६७७ मुसलमान, ४८५२ पहाड़ियों के मत वाले, ७२३ बौद्ध, ३७१ क्रस्तान, २७ जैन और १८ ब्राह्म। जातियों के खाने में ७२२०० कचारी, ४२०६१ कोच, २४४६० कलिता, १६६०९ जोगी (रेशम बिनने वाला) १५०९० राभा, १३९७० कैवट, ९४१८ डोम, (मछुहा), ८९२९ ब्राह्मण, ८७१८ गनक और शेष में दूसरी जातियां थीं; क्षत्री केवल ७२४ थे। जिले में सब से बड़ा कसबा तेजपुर, सबडिवीजन मंगलदाई और तिजारती बस्ती विश्वनाथ, हवाला मोहनपुर, नलबाड़ी और करुआगांव हैं।

नवगांव।

तेजपुर के दक्षिण ब्रह्मपुत्र के दूसरे पार अर्थात् उससे दक्षिण और कलंगा नदी के पूर्व किनारे पर आसाम प्रदेश में जिले का सदर स्थान नवगांव एक छोटा कसवा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय उसमें ४२५८ मनुष्य थे। नवगांव में जिले की सरकारी इमारतें और आफिस बने हुए हैं और लकड़ी, बांस तथा फूस से बनी हुई झोपड़ियों में वहां के लोग रहते हैं।

नवगांव जिला—इसके उत्तर ब्रह्मपुत्र नदी बाद दरंग जिला; पूर्व शिवसागर जिला और नागा पहाड़ियां; दक्षिण खासिया और जयंती पहाड़ियां जिला और पश्चिम कामरूप जिला है। यह जिला ३४१७ वर्ग मील क्षेत्रफल में फैला है। जिले के पूर्वोत्तर के कोने में मिकिर पहाड़ी और पूर्व भाग में ब्रह्मपुत्र के दक्षिण किनारे से कलंगा नदी के उत्तर किनारे तक कामाख्या पहाड़ी फैली है। उसके एक शिखर पर दुर्गादेवी का मन्दिर है। पहाड़ी के ढालुओं पर चाय की खेती होती है। कामाक्षा का प्रसिद्ध मन्दिर कामरूप जिले में है।

जंगलों में लाही, मधुमक्खियों का मोम, गोंद इत्यादि वस्तु होती हैं। जंगली जंतु प्रति साल बहुतेरे लोगों को मारडालते हैं। उनको मारने वाले मनुष्यों को गवर्नमेंट से नियमित इनाम मिलता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ३१०५७९ मनुष्य थे, अर्थात् २४९७१० हिन्दू, ४८४७८ पहाड़ी जंगली कोम, अर्थात मिकिर, गारो और कूकी, १२०७४ मुसलमान, २५४ कृस्तान, ३२ जैन और ३१ ब्रह्मो। जातियों के खाने में ४७४९७ मिकिर, ४२८७८ कोच, ४१६९५ लालुन, २५५९३ डोम, २३१४४ कलिता, १७८९६ केवट, १६६०९ काटनी, १२५५५ कचारी और शेष में दूसरी जातियां थीं। इन में ७५०२ ब्राह्मण, २३१२ कायस्थ और केवल ७७ राजपूत थे। नवगांव जिलेके जल वायु अत्यंत रोग वर्द्धक है।

शिवसागर।

नवगांव से १०० मील से अधिक पूर्वोत्तर और डिब्रुगढ़ से तीस चालिस

मील दक्षिण-पश्चिम ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण किनारे से ९ मील दूर एक छोटी नदी के किनारे पर (२६ अंश, ५९ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ९४ अन्श, ३८ कला, १० विकला, पूर्व देशांतर में) आसाम प्रदेश के जिले का सदर स्थान शिवसागर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय शिवसागर में ५८६८ मनुष्य थे; अर्थात ४४२५ हिन्दू, १३५१ मुसलमान और ९२ कृस्तान।

शिवसागर अहम वंश के राजाओं की राजधानियों में से एक था। अब तक उस समय का एक उत्तम तालाव ११४ एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है। उसके किनारे पर बहुतेरे पुराने मन्दिर विद्यमान हैं। नदी के दोनों किनारों के बाजारों में लोहे से छाए हुए बहुतेरे मकान और कई एक अच्छी दुकानें बनी हैं। प्रति दिन हाट लगता है। मारवाड़ी सौदागर रहते हैं। चावल और खास करके चाय शिवसागर से अन्य स्थानों में भेजे जाते हैं। तालाव के बांध के आस पास सरकारी इमारतें और यूरोपियन लोगों की कोठियां बनी हैं।

शिवसागर जिला—जिले का क्षेत्रफल २८५५ वर्ग मील है। इसके उत्तर और पूर्व लक्खिमपुर जिला; दक्षिण नागा पहाड़ियां जिला और पश्चिम नवगांव जिला है। जिले में जंगल घास और, बूह्मपुत्र की सहायक बहुत नदियां हैं। जिले के भीतर कोई पहाड़ी नहीं है। उत्तर की सीमा पर बूह्मपुत्र नदी बहती है। खेती योग्य अच्छी भूमि है। जंगलों में हाथी, गैंड़े, बाघ, भालू, भैंसे इत्यादि सब प्रकार के वन जंतु मिलते हैं। सन् १८८२—१८८३ में जंगली हाथियों को पकड़ने वाले लोगों ने सरकार को ८००० रुपया दिया था।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ३७०२७४ मनुष्य थे; अर्थात् २१५१२४ आदि निवासी, जो अपने मत पर अब तक चलते हैं और जो अब हिन्दू के मत पर चलते हैं, १३९०७६ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, ३०७ यूरोपियन और यूरेशियन, और ३ चीनी। इनमें मजहब के अनुसार ३३९६६२ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, १३८२९ आदिनिवासी जो अपने पुराने मत पर चलते हैं, ८०४ कृस्तान, २७६ बौद्ध, ३७ जैन और १ बूह्मो थे। जातियों के खाने में ११७८७२ अहम, ३३८१२ कलिता, २९९५२ चटिया, २४२४८ कोच

२२८६७ डोम, १८४९२ भूमिज, १९७५३ कचारी, १७७३६ केवट, ११६०७ ब्राह्मण, १०८३६ मीरी, ५४०४ कतानी और शेष में दूसरी जातियां थीं; जिनमें ३१०९ कायस्थ, और १४२८ राजपूत थे। इसजिले के जोरहाट और गोलाघाट में सौदागर लोग रहते हैं। नजीरा में आसाम के चाय कंपनी का सदर स्थान है। जिले में माड़वारी खास करके सौदागरी करते हैं।

इतिहास—शिवसागर जिले पर अङ्गरेजी अधिकार होने से पहिले अहम वंश के राजाओं ने ४०० वर्ष तक राज्य किया था। उनसे पहिले चटिया लोगों का अधिकार था। अहम लोगों की पहली राजधानी शिवसागर कसवे से थोड़ा दक्षिण-पूर्व गढ़वाल में थी। वहां अव तक दूर तक खंडहर देखने में आते हैं। राजमहल लगभग २ मील लंबी ईंटें की दीवार से घेरा हुआ था। वहां संपूर्ण स्थान में जंगल लग गया है। अहम लोगों की दूसरी राजधानी शिवसागर कसवे के दक्षिण रंगपुर था, जिसको सन् १६९८ ईस्वी में राजा रुद्रसिंह ने नियत किया था। उसके महल का खंडहर और उसका वनवाया हुआ 'जयसागर' में एक मन्दिर घने जंगल में अव तक विद्यमान है। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा रुद्रसिंह के वड़े पुत्र शिवसिंह ने लगभग सन् १७२२ में १५४ एकड़ में शिवसागर के वड़े तालाव को वनवाया। सन् १७८४ तक रंगपुर अहम लोगों की राजधानी था। उस वंश के राजा गौरीनाथ अपनी प्रजाओं के बागी होने पर डिसाई नदी के किनारे पर जोराहाट में भाग गया। वहां वह सन् १७९३ में मर गया।

अङ्गरेजी सरकार ने इस देश के हुकूमत करने वाला पुरंदरसिंह को नियत खिराज पर शिवसागर देदिया था; किंतु सन् १८३८ में उसको राज्यच्युत करके शिवसागर को अपने अधिकार में कर लिया।

कोहिमा।

आसाम प्रदेश में नागा पहाड़ी जिले का प्रधान स्थान कोहिमा एक गांव और फौजी छावनी है। वहां जिले के सिविल आफिस वने हैं। कोहिमा से १८ मील दूर माओ है। अंगरेजी सरकार ने सन् १८८३ ई० में माओ से मनीपुर तक घोड़े चलने के योग्य सड़क वनवा दी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कोहिमा और फौजी छावनी में १३८० मनुष्य थे, अर्थात् १३५१ पुरुष और २९ स्त्रियां। इनमें १२६९ हिन्दू, ९४ मुसलमान, २५ कृस्तान और २ दूसरे थे।

नागा पहाड़ी जिला—यह जिला नौगांव जिला और मनीपुर के राज्य के मध्य में है। इसके उत्तर शिवसागर जिला; पश्चिम नवगांव जिला और दक्षिण मनीपुर का राज्य है। इसका क्षेत्र फल लगभग ६४०० वर्ग मील है। जिले का सदर स्थान कोहिमा स्टेशन है। जिले में सर्वत्र जंगल, पर्वत और नदियां हैं। सर्वत्र मनुष्य नहीं जासकते। घाटियां और पहाड़ियां सघन वनों से ढपी हुई हैं। स्थान स्थान पर छोटी गहड़ी झील और दलदल हैं। मधुमक्खी का मोम, अनेक भांति की दारचीनी और रंग जंगली पैदावार है। कोयला, पत्थरभाठ और स्लेट खानों से निकाले जाते हैं। बहुतेरे स्थानों में गरम झरने हैं। वनों में हाथी, गेंडे, बाघ, तेंदुए इत्यादि बहुत होते हैं। ढांग, धनेश्वरी और यमुना नामक नदी इस जिले में प्रधान नदियां हैं। इनमें बरसात में छोटी नाव चलती हैं।

सन् १८८१ में मोटे तवर के अनुमान से जिले में ११०३०० मनुष्य थे; अर्थात् ९४००० अनेक भांति के नागा, ८८०० मिकिर, ३५०० कचारी, २६०० कूकी, १००० असामी और ४०० एटानिया। इन लोगों का खास हथियार बर्छो, दाव और ढाल है।

इतिहास—सन् १८६७ ई० में नागा पहाड़ी एक डिपूटी कमिश्नर के आधीन एक जिला बनाया गया। अब तक उस देश की पैमाइश ठीक तौर से नहीं हुई है। उसमें प्रायः सम्पूर्ण आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी जातियां बसती हैं, जिनको नागा कहते हैं। वे आसाम के अहम राजाओं के साथ मेल से रहते थे; किंतु देश पर अङ्गरेजी अधिकार होने पर उत्तर ओर नौगांव और शिवसागर जिलों में और दक्षिण-पश्चिम कचार में लूट पाट करने लगे। सन् १८३२ और १८५१ के बीच में उनको डरवाने के लिये हथियार बन्द अङ्गरेजी सेनाओं ने १० बार से अधिक उनके देशी पहाड़ियों में आक्रमण किए। नागा लोग अगम स्थानों में रहते हैं। १२ वें आक्रमण के पीछे सन्

१८८१ की फरवरी में भारत गवर्नमेंट ने निश्चय किया कि कोहिमा का अङ्गरेजी अधिकार कायम रहे; एक अङ्गरेजी रेजीमेंट सर्वदा पहाड़ियों में रहा करे और जिले का प्रबंध अङ्गरेजी राज्य के तौर पर किया जावे, उसके बाद ऐसाही सब प्रबंध हो गया।

डिब्रूगढ़।

शिवसागर से ४० मील से अधिक पूर्वोत्तर (२७ अंश, २८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ९४ अंश, ५७ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) ब्रह्मपुत्र और डिब्रू नदी के संगम से ४ मील दूर डिब्रू नदी के किनारे पर आसाम प्रदेश में लक्खिमपुर जिले का प्रधान कसवा और सदर स्थान डिब्रूगढ़ है। तेजपुर से डिब्रूगढ़ तक मार्ग के पास चाय के बाग फैले हुए हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय डिब्रूगढ़ और छावनी में ९८७६ मनुष्य थे; अर्थात् ७१०१ हिंदू, २३९५ मुसलमान, २३८ एनिमिष्टिक, ९० कृस्तान, ४७ जैन, ४ बौद्ध और १ दूसरे।

छावनी में लगभग ५०० लड़ाके सिपाही रहते हैं। आसपास हजारहां एकड़ भूमि पर चाय की खेती होती है और कई एक झरने और अनेक कोयले की खान हैं। चाय डिब्रूगढ़ से दूसरे स्थानों में भेजे जाते हैं।

लक्खिमपुर जिला—यह जिला आसाम प्रदेश के पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी के दोनों ओर लगभग ११५०० वर्ग मील में फैला हुआ है। जिले के अधिक विभागों में पहाड़ी जातियों के लोग रहते हैं, जो अंगरेजी गवर्नमेंट के साधारण अधिकार को स्वीकार नहीं करते। जिले का बंदोबस्ती हिस्सा हाल के पैमाइश से ३७२३ वर्ग मील हुआ है। जिले के उत्तर डफला, मीरी, अबर, और मिशमी पहाड़ियां; पूर्व मिशमी और सिंगाफो पहाड़ियां; दक्षिण नागा पहाड़ियां इत्यादि और पश्चिम शिवसागर और दरंग जिला है। उत्तर और पूर्व की सीमा निश्चय नहीं हुई है। ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक अनेक छोटी नदियां जिले में बहती हैं। जिले के सब भागों में बिना जोती हुई चरागाह की भूमि फैली हुई है। जंगली पैदावारों में प्रधान रेशम,

मधुमक्खी का मोम, रंग और भांति भांति की जड़ी बूटी हैं। इनको पहाड़ी लोग हाटों में बेचते हैं। जंगलों में हाथी, गेंडे, भैंसे, वनैली गाय, भालू, इत्यादि सब भांति के वनैले जंतु रहते हैं। गवर्नमेंट को हाथी फंसाने वालों से प्रति वर्ष २०००० रुपये से ३०००० रुपये तक मिलता है। इसके अलावे गवर्नमेंट हाथी पकड़नेवालों से प्रति हाथी १००) लेती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय हाल की पैमाइश की हुई ३७२३ वर्ग मील बंदोवस्ती हिस्से में १७९८९३ मनुष्य थे। उनमें विना पैमाइश की हुई भूमि के कुछ पहाड़ी कौम भी शामिल थे। इनमें १५२१९० हिंदू; १६३८२ पहाड़ी कौम, जो अब तक अपने मत पर हैं; ५८२४ मुसलमान; ४६५७ बौद्ध; ८३७ कृस्तान और ३ जैन थे। जातिओं के खाने में ५१५८८ अहम, १८६९९ कचारी, १६७०८ चोटिआ, ११७६५ डोम, ११६८७ मीरी, ७७४२ कलिता, ४५९८ कोच, २८८३ कापटी, शेष में दूसरी जातियां थीं, जिन में २०७० कायस्थ, १७९१ राजपूत और १३६३ ब्राह्मण थे। जिले में लक्खिमपुर और सदिया में देशी काम के लिये कपड़े तैयार होते हैं और थोड़ी तिजारत होती है।

परशुरामकुण्ड।

भारतवर्ष के पूर्वोत्तर की सीमा पर, जहां ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय पर्वत से निकल कर आसाम के मैदान में प्रवेश करती है, परशुरामकुंड है। जो पूर्वकाल में ब्रह्मकुंड करके प्रसिद्ध था। कुंड के चारो ओर पहाड़ियां हैं। ब्रह्मपुत्र की खास धारा पूर्वोत्तर से कुण्ड के समीप आई है। ऐसा प्रसिद्ध है कि ब्रह्मपुत्र नदी पर्वत से आकर इस कुण्ड में गुप्त हो गई और फिर आसाम के मैदान में प्रकट हुई, इसी कारण से अर्थात् ब्रह्मकुण्ड में गुप्त होकर फिर प्रकट होने से इस नदी का नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा। उस कुण्ड के पास ब्रह्मपुत्र नदी देवपाणि के नाम से प्रसिद्ध है और वहां से कुछ दूर नीचे आकर ब्रह्मपुत्र के नाम से विख्यात हुई है। कुण्ड के निकट कोई गृह नहीं है; दूर की पहाड़ी पर एक पहाड़ी वस्ती है। कुण्ड के समीप गुफा के भीतर १ झरना और बाहर २ झरने हैं। कुण्ड का जल बड़ा ठंढा है। यात्रीगण विशेष करके साधु सन्यासी दूर दूर से आते हैं और कुण्ड में गोता मार कर झरने के जल से स्नान करते हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि विष्णु के अवतार परशुरामजी ने २१ बार क्षत्रियों का विनाश कर कैं अंत में ब्रह्मकुण्ड पर परशु को त्याग दिया और वहां तपस्या करके वह पाप से विमुक्त हुए। तभी से उस कुण्ड का नाम परशुराम-कुण्ड हुआ।

ग्यारहवां अध्याय।

(सूबे बंगाल में) बुगड़ा, रामपुरबौलिया, कुष्टिया, ग्वालंडो, पवना, सिराजगंज, फरीदपुर, नोआ-खाली, सीताकुंड, बलवाकुंड, चटगांव, कोमिला, टिपरा, नारायणगंज, ढाका और मैमनसिंह।

बुगड़ा।

पार्वतीपुर जंक्शन से ४९ मील दक्षिण नवाबगंज रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन से ३० मील से अधिक पूर्व सूबे बंगाल के राजशाही विभाग में बुगड़ा-नदी के पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान बुगड़ा एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बुगड़ा में ६१७९ मनुष्य थे; अर्थात् ३४६३ मुसलमान, २६६७ हिन्दू और ४९ दूसरे। कसबे में देखने योग्य कोई इमारत या दूसरी बस्तु नहीं है; कालीतला और मालतीनगर दो हाट हैं।

बुगड़ा जिला—यह जिला ब्रह्मपुत्र नदी के पश्चिम १४९८ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है। जिले में बहुतेरी छोटी नदियां बहती हैं। जंगली पैदा-वारों में अनेक भांति के रंग और मधुमक्खियों का मोम है। जंगलों में बाघ, भैंसे, सूअर और तेंदुए रहते हैं। जिले में गाजीमियां के नाम से मुसल्मानों के बहुतेरे तिहवार और मेले होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जिले में ७३४३५८ मनुष्य थे;

अर्थात् ५९३४११ मुसलमान, १५०८६० हिंदू, ५४ जैन, २७ कृस्तान, २ वौद्ध और ४ दूसरे। जातियों के खाने में ११९५५ कोच, पाली और राजवंशी, १५५६६ कैवरत, ११३१४ वैष्णव इत्यादि, ९८९२ चंडाल और शेष में दूसरी जातियां थी; जिनमें ४६१४ ब्राह्मण, ३७४९ कायस्थ और केवल ३७२ राजपूत थे।

इतिहास—वुगड़ा का कोई खास इतिहास नहीं है। सन् १८२१ में राजशाही दीनाजपुर और रंगपुर से निकाल कर यह एक जिला वनाया गया। सन् १८६९ में यह स्वाधीन जिला वना और जिले में कलक्टर और मजिस्ट्रेट नियत हुए।

रामपुरवौलिया।

नवावगंज से ३९ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ८८ मील) दक्षिण नाटउर का रेलवे स्टेशन है। नाटउर राजशाही जिले में सवडिवीजन का सदर स्थान एक कसवा है; जिसमें सन् १८८१ में ९०९४ मनुष्य थे, अर्थात् ५३६८ मुसलमान, ३७२१ हिन्दू और ५ दूसरे। कसवे के मध्य में नाटउर के राजा का 'जो ब्राह्मण हैं', सुंदर मकान वना हुआ है।

नाटउर के रेलवे स्टेशन से ३० मील पश्चिम (२४ अंश, २२ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३८ कला, ५५ विकला पूर्व देशांतर में) पद्मा नदी के वाएं सूवे वंगाल के राजशाही विभाग में राजशाही जिले का सदर स्थान और प्रधान कसवा रामपुरवौलिया है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रामपुरवौलिया में २१४०७ मनुष्य थे; अर्थात् ११२५९ हिन्दू, १००४९ मुसलमान, ७८ कृस्तान, १३ जैन, १० वौद्ध और २ दूसरे।

कसवे की उन्नति हाल में हुई है। इसमें तिजारत वहुत होती है। पद्मा की वाढ़ कसवें में घुसजाती है। रामपुरवौलिया में जिले के प्रधान हाकिमों के अतिरिक्त कमिश्नर साहव भी रहते हैं।

कसवे से १५ मील पूर्व पोठिया गांव में एक वंगाली ब्राह्मण राजा है। वहां महाराज जगतनारायण राय की स्त्री महारानी भुवनमयी का वनवाया हुआ भुवनेश्वरनाथ महादेव-का विशाल मन्दिर देखने में आता है।

राजशाही जिला—यह जिला राजशाही विभाग के दक्षिण-पश्चिम के कोने में २३६१ वर्गमील क्षेत्रफल में फैलता है। इसके उत्तर दीनाजपुर और बुगड़ा जिला; पूर्व बुगड़ा और पवना जिला; दक्षिण गंगा अर्थात् पद्मा नदी और नदिया जिला; और पश्चिम मालदह और मुर्शिदाबाद जिला है। सदर स्थान रामपुरबौलिया है। जिले में जगह जगह ऊंचे स्थानों पर वृक्षों के कुञ्जों के बीच में बस्तियां देखने में आती हैं। सर्वत्र पोस्ते के खेत फैले हुए हैं। जंगल विशेष नहीं है। जिले के बहुतेरे लोग कीड़ों को पाल कर रेशम तैयार करते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जिले में १३३८६३८ मनुष्य थे; अर्थात् १०४९७०० मुसलमान, २८८७४९ हिन्दू, १२१ कृस्तान, ५५ बौद्ध, ४ जैन, २ यहूदी और ७ दूसरे। जातियों के खाने में ६३१३४ कैवरत, २९७९२ चंडाल,१७०८१ बैष्णव, १६५२३ ब्राह्मण, १३७७४ जलिया, ९२७३ ग्वाला और शेष में दूसरी जातियां थीं। राजपूत केवल १२३३ थे। जिले में रामपुरबौलिया, नाटउर और पोठिया यही ३ में ५००० से अधिक मनुष्य थे।

इतिहास—नाटउर के राजवंश का पहला राजा बड़ा धनी जिमीदार था। उसकी मिलकियत राजशाही करके प्रसिद्ध थी। वही राजशाही नाम अंगरेजी जिले का रक्खा गया। प्रथम इस जिले का सदर स्थान नाटउर था; किंतु वहां के जलवायु रोग वर्धक होने के कारण उसको छोड़ कर रामपुर-बौलिया सदर स्थान बनाया गया।

कुष्टिया।

नाटउर से ५३ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से १४१ मील) दक्षिण पोड़ादह जंक्शन और पोड़ादह से १० मील पूर्व कुष्टिया का रेलवे स्टेशन है। पहले सांराघाट से दामुकदिया घाट तक पद्मा नदी में १२ मील आगबोट में जाना होता है। सूबे बंगाल के नदिया जिले में पद्मागंगा के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर सबडिवीजन का सदर स्थान कुष्टिया एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कुष्टिया में ११११९ मनुष्य थे; अर्थात् ६०४९ मुसलमान, ५१३२ हिंदू और १८ कृस्तान।

कुष्टिया में सबडिवीजन की कचहरियों के मकान हैं और साधारण तिजारत होती है। यहां कोई देखने योग्य प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

पवना।

कुष्टिया के रेलवे स्टेशन से दस पंद्रह मील पूर्वोत्तर सूबे बंगाल के राजशाही विभाग में इच्छामती नदी के किनारों पर जिले का सदर स्थान पवना एक कसबा है। कुष्टिया से पवना आगबोट जाता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पवना कसबे में १६४८६ मनुष्य थे; अर्थात् ९०१४ मुसलमान, ७४४४ हिंदू, २७ कृस्तान और १ बौद्ध।

कसबा इच्छामती के दोनों किनारों पर बसा है। इसमें ५ बड़े बाजार, कई एक पक्की सड़कें, अस्पताल, स्कूल, नील की कोठी और जिले की कचहरियां हैं।

पवना जिला—यह राजशाही विभाग के दक्षिण-पूर्व के कोने में १८४७ वर्गमील में फैला है। इसके पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी की प्रधान धारा यमुना; और दक्षिण-पश्चिम गंगा की प्रधान धारा पद्मा बहती है। जिले का सदर स्थान पवना कसबा है; किंतु जिले में सबसे बड़ा कसबा और तिजारती स्थान सिराजगंज है। जिले में अनगिनत नदियां बहती हैं इस लिये बरसात में प्रत्येक गांव में नाव जा सकती है। संपूर्ण जिले में धान की खेती होती है। बस्तियों के आस पास बांस और वृक्षों के झुण्ड हैं। जिले में पद्मा की प्रधान शाखा इच्छामती नदी बहती है; बहुतेरी झील भी है और जगह जगह बाघ, तेंदुए और बनैले सूअर मिलते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पवना जिले में १३११७२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९४९९१८ मुसलमान, ३६१४३९ हिंदू, २२६ जैन, १४४ कृस्तान और १ बौद्ध। जातियों के खाने में ५३३१९ चंडाल, ३१२७९ जालिया, ३४६०२ कायस्थ, २६०४९ सुंडी, २३३०६ कैबरत, २०९७० ब्राह्मण और केवल ४५५ राजपूत थे; शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले का कसबा सिराजगंज में २३२६७ और पवना में १६४८६ मनुष्य थे।

इतिहास—प्रथम यह जिला राजशाही जिले का एक बड़ा भाग था। सन् १८३२ में यहां एक जंट मजिष्टर और डिपटी कलक्टर नियत हुए। सन् १८६१ में यहां के अफसर को मजिष्टर और कलक्टर का पूरा अधिकार मिल गया। सन् १८७३ में एक बलवा हुआ था, जिसको पुलिस ने दबाया। उस समय लगभग ३०० आदमी पकड़े गए, जिनमें से बहुतेरों को सजा दी गई।

सिराजगंज।

पवना से लगभग ५० मील सीधा पूर्वोत्तर (२४ अंश, २६ कला, ५८ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अन्श,४७ कला, ५ विकला पूर्व देशांतर में) ब्रह्मपुत्र नदी की प्रधान धारा यमुना के निकट सूबे बंगाल के पवना जिले में प्रधान कसबा और उस देश में प्रसिद्ध दरियाई बाजार सिराजगंज है। पवना से सिराजगंज होकर सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिराजगंज में २३२६७ मनुष्य थे; अर्थात् १२३३१ मुसल्मान, १०६१२ हिंदू, २११ जैन और ३३ कृस्तान।

सिराजगंज कसबे में १ बाजार और १२ पतली सड़कें हैं। नदी के किनारे पर नावों से उतरने के लिये ४ घाट बने हैं। बरसात में यमुना में बड़ी बाढ़ होती है। प्रति वर्ष उस नदी का स्थान कुछ बदल जाता है, इस कारण से उसके किनारे पर गोदाम या वृक्ष नहीं रहते हैं।

नदी में नावों का आमदरफत बहुत रहता है। बड़ी नावें बीच धारे में लंगड़ों पर रहती हैं और छोटी नावें नदी के स्वभाविक झुकावों में ठहरती हैं। तिजारती व्यापारी और दलाल लोग हलकी डोंगियों में इधर उधर फिरते हैं। झुण्ड के झुण्ड कूली माल उतारने और चढ़ाने में लगे रहते हैं। बहुत लोग प्रति दिन अपने मकानों से नदी के किनारे पर जाते हैं।

सिराजगंज में कई एक यूरोपियन कोठियां है। वहां देशी सौदागरों में प्रधान माड़वारी हैं, जिनको वहां के लोग कैंआ कहते हैं। उनके अतिरिक्त बंगाली सौदागर भी बहुत हैं। व्यापारी लोग चारो ओर के देश के खेतों के पैदावार छोटे छोटे व्यापारियों से सिराजगंज में खरीद कर कलकत्ते

भेजते हैं। सिराजगंज के व्यापार की प्रधान वस्तु नमक, तेल, तेल के बीज, जूट, पटसन, चावल, गल्ले, तंबाकू, चीनी और खुर्दा यूरोपियन चीजें है। अधिक व्यापार कलकत्ते के साथ होता है। रंगपुर में मनसिंह, कूचविहार, बुगड़ा, ग्वालपाड़ा, जलपाईगोडी इत्यादि के साथ भी सिराजगंज की सौदागरी होती है। सन् १८७३ के ३१ अगस्त को सिराजगंज में नावों की गिनती हुई; उस दिन वहां १४३६ नावों में १६२००० मन माल लदा था, जिसमें से तीन चौथाई जूट था और सन् १८७४ के ४ थी सितम्बर की गिनती के समय ११८९ नावों में १३९३०० मन माल था। सन् १८७६—७७ में उजान और भाटी दोनों ओर की नावें ४१६४४ गिनी गई थीं।

इतिहास—उन्नीसवीं शदी के आरंभ में सिराजअली नामक एक मुसलमान जमीन्दार ने कसबे में एक बाजार बनाया; उसी के नाम से उस कसबे का नाम सिराजगंज पड़ गया। उस समय कसबा यमुना नदी के किनारे पर था। सन् १८४८ की भारी बाढ़ से जब सिराजगंज बह गया, तब वहां के सौदागर लोग उस जगह से लगभग ५ मील पीछे नदी के नए किनारे पर जा बसे। पीछे नदी अपने पुराने स्थान पर चली गई; किन्तु सौदागर लोग वहांही रह गए। सन् १८७७ ई० में सिराजगंजमें बंगाल बंक की एक एजेंसी और ६ यूरोपियन कोठियां थीं।

ग्वालंडो।

पोड़ादह जंक्शन से ४८ मील पूर्व (पार्वतीपुर से १८९ मील और कलकत्ते से १५१ मील) ग्वालंडो का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के ढाके विभाग के फरीदपुर जिले में गंगा की प्रधान धारा पद्मा और ब्रह्मपुत्र नदी के संगम के निकट ग्वालंडो एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ग्वालंडो में ८६५२ मनुष्य थे; अर्थात् ४५०८ हिन्दू, ४१३० मुसलमान, और १४ दूसरे।

ग्वालंडो में सर्वदा रहने वाले मकान नहीं हैं, क्योंकि नदी के निकट की भूमि बदलती रहती है। बरसात में नदी की तेजी बेहद बढ़जाती है। प्रति

वर्ष ज्येष्ठ मास में वहां के निवासी गंगा के किनारे को छोड़ कर २ कोस दूर जा बसते हैं। रेलवे का स्टेशन भी उतनीही दूर चला जाता है। ग्वालंडो में बहुतेरी नाव रहती हैं।

लगभग २५ वर्ष पहले ग्वालंडो मछली मारने वालों का एक छोटा गांव था, जो अब वहुत प्रसिद्ध हुआ है। सन् १८७० में कुष्टिया से ग्वालंडो तक रेलवे बढ़ाई गई। कसवे में प्रति दिन बाजार लगता है, एक कचहरी का मकान है और बहुतेरे बंगाली और मुसलमान खास करके मारवाड़ी सौदागर रहते हैं। तम्बाकू, नमक, अनेक प्रकार के गल्ले और तेल के बीज की तिजारत होती है। वहां से वहुत मछलियां कलकत्ते भेजी जाती हैं।

ग्वालंडो से आगबोट प्रति दिन नारायणगंज को और तीन चार दिन पर आसाम के लिये धोबरी को जाते हैं।

फरीदपुर।

ग्वालण्डो से लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व छोटी पद्मा के दहिने अर्थात् दक्षिण (२३ अंश, ३६ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश ५३ कला, ११ विकला पूर्व देशांतर में) सूबे बंगाल के ढाका विभाग में जिले का सिविल स्टेशन फरीदपुर एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फरीदपुर में १०७७४ मनुष्य थे; अर्थात् ५७११ हिन्दू, ५००८ मुसलमान, ५१ कृस्तान और ४ बौद्ध।

कसवे के दक्षिण ढोलसमुद्र नामक मीठा पानी का झील और कसवे में एक गिरजा है। फरीदपुर में प्रति वर्ष के माघ में खेती की नुमाइश होती है और सन् १८८३ से ब्रह्मो समाज की एक सभा नियत हुई है।

फरीदपुर जिला—इसके उत्तर और पूर्व गंगा की प्रधान धारा पद्मा नदी; दक्षिण ननवा और भगनी नदी और दलदलों की लाइनें और पश्चिम कई छोटी नदियां हैं। जिले का क्षेत्र फल २२६७ वर्ग मील है। जिले की बस्तियां खास करके नदियों के किनारों पर मट्टी की झोंपड़ियों से बनी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय फरीदपुर जिले में १६३१७३४

मनुष्य थे; अर्थात् ९७४९८३ मुसलमान, ६५३९९२ हिन्दू, २७४१ क्रस्तान, १३ वौद्ध और ९ ब्रह्मो। जातियों के खाने में २४४९२३ चण्डाल, ८४१९३ कायस्थ, ४६९०५ ब्राह्मण, ३४४९१ सूण्ड़ी, २८६०७ जलिया, २४०१० कैवरत और शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जिले के सकवे मदारीपुर में १३७७२, फरीदपुर में १०७७४ और ग्वालण्डो तथा कुतवपुर में दस हजार से कम मनुष्य थे।

नोआखाली।

ग्वालण्डो के रेलवे स्टेशन से ७९ मील दक्षिण-पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी में आग बोट द्वारा चांदपुर जाना होता है। चांदपुर से आसाम बंगाल रेलवे गई है। चांदपुर से ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्सम से २९ मील दक्षिण-पूर्व फेनी का रेलवे स्टेशन है। फेनी से लगभग २५ मील दूर (२२ अंश, ४८ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ८ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तर में) सूबे बंगाल के चटगांव विभाग में नोआखाली खाल के दहिने किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसवा नोआखाली है, जिसको देशी लोग सुधाराम कहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नोआखाली कसवे में ५१२४ मनुष्य थे; अर्थात् २५६० हिन्दू, २५२८ मुसलमान और ३६ दूसरे।

कसवे में अनेक मसजिदें, सरकारी कचहरियां और तालाव बने हुए हैं। एक समय यह कसवा समुद्र के किनारे पर था; किन्तु अब समुद्र वहां से लगभग १० मील दूर है।

वहां के जमीन्दार सुधाराम मजुमदार ने वहां एक बड़ा तालाव बनवाया, तब से नोआखाली को देशी लोग सुधाराम कहते हैं।

नोआखाली जिला—इस जिले का क्षेत्रफल १६४१ वर्ग मील है। इसके उत्तर टिपरा का देशी राज्य और अङ्गरेजी जिला; पूर्व टिपरा का राज्य और चटगांव जिला; दक्षिण बंगाल की खाड़ी और पश्चिम मेगना है। इस जिले में ऊंची भूमि पर बस्तियां बनी हैं। वर्षा काल में बस्तियों के अति-

रिक्त देश में संवल जल फैल जाता है। तालावों के चारो ओर वांध वनाए गए हैं। जिले के पश्चिमोत्तर की सीमा के समीप समुद्र के जल से ६०० फीट ऊंची एक पहाड़ी का भाग है। समुद्र के किनारे पर नदियों से कई एक टापू वन गए हैं। इस जिले में वाघ, तेंदुए, सूअर, जंगली भैंसे इत्यादि वनैले जन्तु होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नोआखाली जिले में ८२०७७२ मनुष्य थे; अर्थात् ६०८५९२ मुसलमान, २११४७६ हिन्दू, ५८८ कृस्तान, ११४ वौद्ध और २ दूसरे। जातियों के खाने में ३७८७९ जोगी, ३७५६५ काय-स्थ, १८६४४ चंडाल, १६१५१ कैवरत, १५१५१ धोवी, १२६७१ नापित, १०९६३ ब्राह्मण, ८६०२ जालिया (अर्थात् मछुहा), ५९८१ सूण्डी थे; शेप में दूसरी जातियां थीं। जिले में कोई कसवा नहीं है। एक या दो वाजा-रों के अतिरिक्त इस जिले में सिलसिले से वसी हुई वस्ती नहीं है। प्रत्येक झो-पड़ी वृक्षों के वीच में अकेली खड़ी है। केवल नोआखाली जिसको सुधाराम कहते हैं, एक वड़ा गांव है।

इतिहास—सन् १७५६ ई० में इष्टइण्डियन कंपनी ने नोआखाली और टिपरा में अपनी कोठियां नियत कीं, जिनमें से चंद की निशानियां अव तक विद्यमान हैं। समुद्र के डाकू इस देश में वहुत दिनों से लूटपाट करते थे। पीछे उनको सजा देने के लिए एक ज्वांइट मजिस्ट्रेट कायम किया गया। इस नये प्रवन्ध के होने से इस जिले का नाम नोआखाली पड़गया।

सीताकुण्ड।

फेंनी के रेलवे स्टेशन से ३२ मील (लक्सम जंक्शन से ५७ मील) दक्षिण-पूर्व सीताकुण्ड का रेलवे स्टेशन है। वंगाल के चटगांव जिले में (२२ अन्श, ३७ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अन्श, ४१ कला, ४० विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से ११५५ फीट ऊपर सीताकुण्ड नाम-क पवित्र पहाड़ी का सिलसिला है। उसकी सव से ऊंची चोटी पर पवित्र सीताकुण्ड है, जिस का जल सदा गर्म रहता है। उसके जल के निकट जलती

हुई वत्ती लेजाने से उसकी भाफ बारूद के समान भभक उठती है। हिन्दुस्तान के प्रति विभागों के बहुतेरे यात्री वहां जाते हैं। सीताकुण्ड से लगभग ३ मील उत्तर एक पवित्र झरना है।

वलवाकुण्ड।

सीताकुण्ड के स्टेशन से ४ मील दक्षिण वलवाकुण्ड का रेलवे स्टेशन है। उसके निकट चटगांव जिले में वलवाकुण्ड एक प्रसिद्ध तीर्थ है। उस स्थान के कुण्ड में पानी के ऊपर ज्वालामुखी की भांति सदा आग वलती रहती है। सीताकुण्ड के समान वहां भी बहुत यात्री जाते हैं।

चटगांव।

सीताकुण्ड से २४ मील और लक्सम जंक्शन से ८१ मील दक्षिण-पूर्व (ग्वालंडो से १९१ मील) चटगांव का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल में समुद्र के किनारे से दस बारह मील पूर्व (२२ अन्श, २१ कला, ३ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अन्श, ५२ कला, ४४ विकला पूर्व देशान्तर में) कर्णफूली नदी के दहिने किनारे पर क़िस्मत और जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान क़सबा और बंगाल में प्रसिद्ध बंदरगाह चटगांव है, जिसको चिटागंग और इसलामाबाद भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय चटगांव म्युनिसिपेल्टी के भीतर २४०६९ मनुष्य थे; अर्थात् १४२५४ पुरुष और ९८१५ स्त्रियां। इनमें १६७५३ मुसलमान, ६२७५ हिन्दू, ७४२ कृस्तान और २९१ बौद्ध थे।

पहाड़ियों पर यूरोपियन लोगों की बहुतेरी कोठियां वनी हुई हैं। प्रधान सड़कें, जो उत्तर से दक्षिण को गई हैं, दीवान बाजार और चन्दनपुरा बाजार कहलाती हैं। यूरोपियन और देशी निवासियों के मकानों के अतिरिक्त अनेक सरकारी आफिस, गिरिजे, डाकबंगले और बड़ी बड़ी मसजिदें ईंटे की वनी हुई हैं और कई एक अस्पताल और स्कूल हैं। बहुतेरे कुण्ड और तालाब होने से और दूसरे अनेक कारणों से चटगांव का जल वायु बहुत ही रोग वर्द्धक है।

चटगांव क्रम क्रम से बढ़कर अब बड़ा तिजारती स्थान हुआ है। बन्दरगाह में विदेश और हिन्दुस्तान के शहरों से बहुत जहाज आते हैं। बन्दरगाह की सौदागरी बढ़ रही है। सन् १८८१-८२ में चटगांव में लगभग ७७१ जहाज आए और गवर्नमेंट को ६०८२० रुपया बन्दरगाह का महसूल मिला। वहां खास कर निमक बहुत आता है और वहां से धान चाय इत्यादि वस्तु दूसरे देशों में भेजी जाती हैं।

चटगांव जिला—जिले का क्षेत्र फल २५६७ वर्गमील है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर फेनी नदी है, जो नोआखाली और टिपरा के अंगरेजी जिले और टिपरा के राज्य से इस जिले को अलग करती है; पूर्व चटगांव का पहाड़ी देश और ब्रह्मा का आराकान देश; दक्षिण ब्रह्मा और पश्चिम बंगाले की खाड़ी है।

बंगाले की खाड़ी और चटगांव और आराकान के बीच में नीची पहाड़ियों के सिलसिले हैं। कर्णफूली और मंगू उस जिले की प्रधान नदियां हैं। जिले में सीताकुँड, सातखनिआ इत्यादि पांच प्रधान पहाड़ी सिलसिले हैं, जिन में से सीताकुँड के सिलसिले पर सीताकुन्ड और चंद्रनाथ नामक पवित्र चोटी (जिले में सबसे अधिक) ११५५ फीट ऊंची है। गल्ला, मट्टी का बर्तन, जलावन की लकड़ी, सूखी मछली और बांस की तिजारत नावों द्वारा होती है। समुद्र और नदियों की मछलियों से आबादी के एक बड़े हिस्से का निर्वाह होता है। सूखी मछलियां खास कर के चटगांव को भेजी जाती हैं। जंगलों में नरकट, बेंत और बांस बहुत उत्पन्न होते हैं और हाथी, बाघ, गेंडे, सूअर और तेंदुए बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय चटगांव जिले में ११३२३४१ मनुष्य थे; अर्थात् ८०१९८६ मुसलमान, २७५१७७ हिन्दू, ५४११० बौद्ध, १०५५ क्रस्तान, ८ ब्राह्म और ५ सिक्ख। जातियों के खाने में ७२३७० कायस्थ, २९३३४ शूद्र, २७३५१ योगी, (पटहेरा), २१३५५ ब्राह्मण, १५३८२ नाई, १५३१२ जालिया, ११४४६ धोबी, ८०३० बनियां और शेष में दूसरी जातियां थीं; इनमें केवल १०४० राजपूत थे। जिले के काक्स बाजार नामक छोटे कसबे में चाय की खेती होती है।

इतिहास—पूर्व काल में चटगांव जिला टिपरा के हिन्दु राजाओं के राज्य का एक हिस्सा था। १३ वीं या १४ वीं शदी में अफगान मुसलमानों ने इस जिले को जीता। १६ वीं शदी में जब बंगाल के राज्य के लिये मोगल और अफगानों में विवाद था, तब आराकान के राजा ने चटगांव को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। सन् १५८२ में अकबर के मंत्री टोडर मल ने इस के लगान का प्रबंध किया। उस समय चटगांव आराकान का एक देश था, जो सन् १६६६ तक वैसे ही रहा। सन् १६६४-६५ में बंगाल के गवर्नर शाइस्ता खां ने अपनी बड़ी फौज भेज कर आराकानियों को परास्त करके चटगांव को बंगाल में मिला लिया और चटगांव का नाम बदल कर इसलामाबाद नाम रक्खा। सन् ७६० में वर्दवान और मिदनीपुर जिले के साथ चटगांव जिला अंगरेजी अधिकार में आया।

सन् १८५७ के १८ वीं नवम्बर की रात में ३४ वीं देशी पैदल की दूसरी, तीसरी और चौथी कम्पनियां अचानक बागी हो गईं। उन्हो ने खजाना लूट लिया, जेलखाने मे कैदियों को छोड़ दिया और एक सिपाही को मार डाला। जब उन्हों ने पहाड़ी टिपरा की राहली तब अंगरेजों ने पीछा करके उनको छितर बितर कर दिया। पहाड़ी टिपरा के राजा और पहाड़ी लोगों ने इधर उधर फिरने वाले बागी सिपाहियों को पक कर अंगरेजी अफ्सरों के पास भेज दिया।

कोमिला।

लक्सम जंक्शन से १५ मील उत्तर (ग्वालंडो से १३५ मील) कोमिला का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के चटगांव विभाग में गोमती नामक नदी के किनारे पर (२३ अंश, २७ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, १३ कला, १८ विकला पूर्व देशान्तर में) टिपरा जिले का सदर स्थान कोमिला एक कसबा है। एक सड़क चटगांव से कोमिला होकर ढाका गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोमिला में १४६८० मनुष्य थे; अर्थात् ८५२० मुसलमान, ६०२३ हिन्दू, ८१ क्रस्तान, और ५६ बौद्ध।

कसबे को बरसात के पानी से बचाने के लिये एक बांध बांधा गया है। प्रधान सड़क के बगलों में सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं। एक मील घेरे का धर्मसागर नामक तालाब है, जिस को १८ वीं शदी में टिपरा के राजा ने बनवाया था। इसके किनारों पर यूरोपियन अफसरों की कोठियां और जिला स्कूल बना है। कोमिला में मामूली सरकारी कचहरियां और इमारतें; यूरोपियन लोगों के मकान, एक गिरजा और पोस्ट आफिस ईंटे के बने हुए हैं। इनके सिवा ईंटे के मकान बहुत कम हैं, क्यो कि टिपरा का राजा, जिसकी वह जमीन्दारी है, बहुत भारी भेंट लेकर ईंटे का मकान बनाने देता है। कोमिला से दाउदकंडी चटगांव, कम्पनीगंज, हाजीगांव, लक्सम, बीबी बाजार और लालमाई को गाड़ी की सड़कें गई हैं। सड़कों के नीचे स्थान स्थान पर पुल बनाए गए हैं।

टिपरा जिला—इस का क्षेत्र फल २४९१ वर्गमील है। इस के उत्तर मैमनसिंह और सिलहट जिला, पूर्व पहाड़ी टिपरा, दक्षिण नोआखाली जिला और पश्चिम मेगना नदी बाद मैमनसिंह, ढाका और बाकरगंज जिले हैं। जिले का सदर स्थान कोमिला है; किंतु ब्राह्मण बेरिया सबसे बड़ा कसबा है। जिले में केवल लालमाई सिलसिला पहाड़ी देश है। मैदान में अच्छी तरह से खेती होती है। खाल और नदियां सर्वत्र हैं। प्रायः सम्पूर्ण गांव ताड़, बांस और केलों के बागों में बसे हैं। इस जिले में सीतलपाटी का खढ़ बहुत उपजता है। जंगलों में बाघ और तेंदुए होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १५१९३३८ मनुष्य थे; अर्थात् १००७७४० मुसलमान, ५११०२५ हिन्दू, ३७४ बौद्ध और १९९ कृस्तान। जातियों के खाने में ८३०२३ चंडाल, ७१३७३ कायस्थ, ५५८४८ योगीजात, ५०२९० कैवरत, ३२९९० मूँडी, ३१५०२ ब्राह्मण, २२२५५ नाई और शेष में दूसरी जातियां थी। राजपूत केवल ११६२ थे। सन् १८९१ में इस जिले के कसबे ब्राह्मणबेरिया में १८००६ और कोमिला में १४६८० मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १७६५ में टिपरा जिला इस्टइंडियन कम्पनी के अधिकार में हुआ। सन् १७७२ में नोआखाली और टिपरा के लिये एक कलक्टर नियत हुआ। सन् १८२२ में टिपरा एक अलग जिला बनाया गया।

टिपरा राज्य।

टिपरा के अंगरेजी जिले से मिला हुआ पहाड़ी टिपरा एक देशी राज्य है। जिसको त्रिपुरा भी कहते हैं। इसके उत्तर सिलहट जिला; पूर्व लुशाई देश और चटगांव का पहाड़ी देश; दक्षिण नोआखाली और चटगांव जिला और पश्चिम अंगरेजी टिपरा जिला और नोआखाली जिला है। राज्य का क्षेत्रफल ४०८६ वर्ग मील है। अगरताला में, जो एक गांव है, टिपरा के राजा और अंगरेजी पोलिटिकल रहते हैं। पहाड़ियों के ५ अथवा ६ सिलसिले उत्तर से दक्षिण को समानांतर रेखा में गए हैं। औसत फासिले एक दूसरे से लगभग १२ मील है। पहाड़ियों का बड़ा भाग बांस के जंगल से छिपा है। नीची भूमि पर अनेक भांति के वृक्ष और दलदल है। जंगलों में हाथी बहुत मिलते हैं और गेंडे, बाघ, भालू, तेंदुए और अनेक भांति के बहुत सांप रहते हैं। राज्य का प्रधान फसिल धान है। राजा को राज्य से २५०:०० रुपया मालगुजारी आती है, किंतु अपने राज्य और अंगरेजी राज्य की जमीदारी दोनों मिलकर लगभग ५०००० रुपया मालगुजारी होजाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय टिपरा—राज्य में ९५६३७ मनुष्य थे; अर्थात् ४९९१५ पहाड़ियों पर और ४५७२२ मैदानों में। इनमें से पहाड़ियों पर, ३५२५७ टिपरा लोग, जो तीन प्रकार के होते हैं; ११६८८ रिआंग और हलाम; २७३३ कूकी; २११ चकमा, और २६ खासी और मैदानों में;—२६९९१ बंगाली मुसलमान, ९७३९ बंगाली हिंदू, ८८१३ मनीपुरी, ११३ बंगाली क्रस्तान और ६६ आसामी थे। इस राज्य में कोई कसबा नहीं है। राजधानी अगरताला मामूली गांव है।

अगरताला—कोमिला से ३८ मील उत्तर अगरताला तक सड़क बनी है। टिपरा राज्य में एक नदी के उत्तर किनारे पर टिपरा राज्य की राजधानी अगरताला एक गांव है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २१४४ मनुष्य थे। उसमें टिपरा के महाराज का एक महल, स्कूल, अस्पताल, जेलखाना और पुलिसस्टेशन बने हैं; कभी कभी राजा उस महल में रहते हैं।

पुराना अगरताला—वर्तमान राजधानी अगरताला से ४ मील पूर्व पुराना अगरताला है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ११८६ मनुष्य थे।

प्रथम टिपरा के राजा उस गांव में रहते थे; किंतु सन् १८४४ में नये-अगरताला में चले गए। वहां टिपरा के राजा और रानी के कई एक स्मारक चिन्ह बने हुए हैं। पुराने महल के स्थान पर नई इमारतें बनी हैं। टिपरा के राजा सन् १८७५ ई० से साधारण प्रकार से वहां रहते हैं। महल के निकट एक छोटे पवित्र मन्दिर में सोने, चांदी और दूसरी धातुओं से बने हुए १४ सिर हैं। पहाड़ी लोग टिपरा के देवता समझ कर उस मन्दिर का बड़ा मान्य करते हैं।

उदयपुर—पुराने उदयपुर से कई एक मील दूर गोमती नामक नदी के दक्षिण अर्थात् बाएं किनारे पर टिपरा के राजा उदयमानिक्य की पुरानी राजधानी पुराना उदयपुर है। उदयमानिक्य ने सोलहवीं शदी में राज्य किया था। टिपरा के राजा प्रथम उदयपुर में रहते थे। अब वह छोटी सी बस्ती है। वहां जंगल लग गया है। रुई, लकड़ी और बांस का बाजार लगता है। उदयपुर में त्रिपुरेश्वर का पुराना मन्दिर है। वह तीर्थ स्थान समझा जाता है। सालाना हजारों यात्री वहां जाते हैं। उसी मन्दिर के नाम से उस देश का नाम त्रिपुरा पड़ा, जिसका अपभ्रन्श टिपरा है।

इतिहास—इस राज्य में उदयपुर एक पुरानी पवित्र बस्ती है। उसके त्रिपुरेश्वर के मन्दिर के नाम से देश का नाम त्रिपुरा पड़ा, जिसका अप-भ्रन्श टिपरा है। टिपरा का राजवंश बहुत पुराना है। इसका इतिहास राजमाला नामक बंगला पुस्तक में और इतिहास लिखने वाले मुसलमानों की किताब में लिखा हुआ है। टिपरा के राजा अपने को चंद्रवंशी राजा ययाति के पुत्र द्रह्यु का वंशधर कहते हैं।

लोग कहते हैं कि धर्ममानिक्य के राज्य (सन् १४०७—१४३९ ई०) तक सालाना लगभग १००० मनुष्य बलिदान दिए जाते थे; किंतु धर्ममानिक्य ने आज्ञा दी कि तीन वर्ष पर नर बलिदान दिया जाय। इन्हीं की इच्छा से

राजमाला पुस्तक का पहला भाग बना था। टिपरा का राज्य अनेक बार पश्चिम में सुन्दर वन से पूर्व में ब्रह्मा तक और उत्तर में कामरूप पर्यन्त फैला था। सोलहवीं शदी में राजा शिधन्य ने अपने राज्य के चारो ओर के देशों पर आक्रमण किया। सन् १५१२ में टिपरा के जनरल नें चटगांव को जीता था और उसको बंचाने वाली गौड़ की फौज को परास्त किया था। उसी राजा के राज्य में मुगलों की भारी सेना बंगाल से आक्रमण करके ना काम-आव लौट गई; किंतु बादशाह जहांगीर के राज्य के समय सन् १६२० में मुगलों ने टिपरा पर आक्रमण करके उदयपुर राजधानी को ले लिया और राजा को कैद कर दिल्ली में भेज दिया। बादशाह नें खिराज लेने की शर्त पर राजा को छोड़ दिया; किंतु राजा ने खिराज देना अस्वीकार किया। सन् १६२५ में जब राजा कल्यानमानिक्य राजसिंहासन पर बैठा तब बादशाह ने फिर राजा से खिराज लेने के लिये टिपरा पर आक्रमण किया; किंतु मुसलमानी सेना परास्त होकर लौट गई। पीछे मुसलमानों ने बार बार आक्रमण करके नीचे की जमीनों को अपने अधिकार में किया। सन् १७६५ में वह भूमि, जो टिपरा का अंगरेजी राज्य है, अङ्गरेजों के अधिकार में आई।

सन् १८०८ से अङ्गरेजी सरकार टिपरा के सब राजाओं को राजसिं-हासन पर बैठाती है और उनसे नजर लेती है। हिंदुस्तान के देशी राजाओं से टिपरा अधिक स्वाधीन है। लोग कहते हैं कि वर्तमान टिपरानरेश महा-राज वीरचंद्रमानिक्यदेव वर्मन ९२ वां राजा है। इनकी अवस्था इस समय लगभग ५० वर्ष की है।

नारायणगंज।

नदी के मार्ग से ग्वालंडो से ७९ मील पूर्व-दक्षिण पूर्व कथित चांदपुर और चांदपुर से २५ मील उत्तर (२३ अंश, ३७ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ३२ कला, ५ विकला पूर्व देशांतर में) लखमिया और धवले-श्वरी नदी के संगम के निकट लखमिया के पश्चिम किनारे पर ढाका जिले में नारायणगंज एक तिजारती कसबा है। प्रति दिन आगबोट ग्वालंडो से नारा-यणगंज जाता है। नारायणगंज से उत्तर मैमनसिंह तक रेल बनी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नारायणगंज में १७७१९ मनुष्य थे; अर्थात् ९७१७ हिंदू, ७९०८ मुसलमान, ८९ कृस्तान और १ दूसरे।

कसवा नदी के किनारे ३ मील की लंबाई में फैला है। म्युनिसिपलिटी के भीतर मदनगंज है। नारायणगंज के आसपास सतहवीं शदी के मीर जुमला के वनवाए हुए कई एक किले और प्रायः सामने कदमरसूल नामक एक मसजिद है। कसवे से नमक, तंवाकू, जूट, कपास इत्यादि दूसरे शहरों में भेजे जाते हैं और जूट, मपक, चावल, चीनी, तंवाकू, अनेक भांति के तेल के वीज इत्यादि सामग्री अन्य स्थानों से वहां आती हैं। वहां जूट दवाने की कई एक कल हैं।

ढाका।

नारायणगंज से १० मील पश्चिमोत्तर (ग्वालंडों से ११४ मील) ढाका का रेलवे स्टेशन है। सूबे वंगाल में बूढीगंगा के वाएं किनारे पर (२३ अंश, ४३ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अन्श, २६ कला, २५ विकला पूर्व देशांतर में) किस्मत और जिले का सदर स्थान ढाका एक शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ढाके में ८२३२१ मनुष्य थे; अर्थात् ४५१९९ पुरुष और ३७१२२ स्त्रियां। इनमें ४१५६६ हिंदू, ४०१८३ मुसलमान, ४६७ कृस्तान, ७६ वौद्ध, १३ जैन, ९ एनिमिष्टिक, और ७ दूसरे थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३५ वां और सूबे वंगाल में तीसरा शहर है।

शहर नदी के साथ साथ लगभग ४ मील की लंबाई में वसा है। नदी की ओर उत्तम मकान वने हुए हैं। शहर की २ प्रधान सड़कें एक दूसरी को समान कोन में काटती हैं, जिनमें से एक लालवाग महल्ले से वौलाईकोल तक नदी के समानांतर रेखा में २ मील से अधिक लंवी और दूसरी चौड़ी सड़क, जिसके वगलों में सुन्दर मकान वने हैं; शहर के उत्तर ओर पुरानी छावनी तक १¼ मील लंवी है। पश्चिम ओर सड़कों के मेल के पास, जहां एक वाग है, चौक वना है। शहर के मकान चौमंजिले तक हैं। शहर के बीच में नदी के निकट यूरोपियन लोगों का महल्ला देखने में आता है। शहर में ढाका

के नवाव सरख्वाजा अवदुलगनी के. सी. एस. आई. का सुन्दर मकान बना हुआ है, जिनके वाप ने एक खैराती मकान बनवाया, एक स्कूल नियत किया, शहर की सफाई के लिये म्युनिसिपलिटी को ५० हजार रुपया दिया और जलकल अपने खर्च से बनवाया। नवाव के महल से आगे जाने पर अस्पताल की उत्तम इमारत मिलती है। कमिश्नर की कोठी से १०० गज दक्षिण एक गिरिजा और गिरिजा से ½ मील दूर कवरगाह है। इनके अतिरिक्त 'ढाका कालिज' की उत्तम इमारत और कई एक स्कूल हैं।

सत्रहवीं शदी का बना हुआ पुराना किला अब नहीं है। कटरा और लालवाग का महल, जो तैयार नहीं हुए थे, उजाड़ पड़े हैं। कसबे से ८ मील दूर धवलेश्वरी नदी और बूढीगंगा का संगम है।

ढाके का मलमल प्रसिद्ध है। सोने और चांदी की उत्तम प्रकार की वस्तु वहां बनती हैं और खास करके कलकत्ते में भेजी जाती हैं। कसीदे का काम, डोरिया, जामदानी, चारखाना इत्यादि सामान अब तक वहां बहुत तैयार किए जाते हैं। ढाके में मुहर्रम का तेहवार बड़ी धूमधाम से होता है। यूरोपियन और मारवाड़ी वहां अधिक तिजारत करते हैं।

ढाका जिला—इस के उत्तर मैमनसिंह जिला; पूर्व टिपरा; दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम वाकरगंज और फरीदपुर जिला और पश्चिम थोड़ी दूर के लिये पवना जिला है। अनेक नदियां इसकी स्वभाविक सीमा बनती हैं; पूर्व मेगना, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम पद्मा और पश्चिम यमुना नदी। जिले का क्षेत्रफल २७९७ वर्गमील है। धवलेश्वरी नदी जिले के मध्य में पूर्व से पश्चिम को बहती है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी नदियां जिले में हैं। मधुपुर जंगल को छोड़ कर दूसरा कोई वड़ा जंगल नहीं है। बहुतेरे लोग वरसात में अपने मवेशियों को चरने के लिये मधुपुर के जंगल में भेजते हैं। जिले के की नदियों की मछलियों से प्रतिवर्ष लगभग १ लाख रुपये की आमदनी होती है। वहां भूकंप बहुधा हुआ करता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ढाका जिले में २११६३५० मनुष्य थे; अर्थात् १२५०६८७ मुसलमान, ८५६६८० हिन्दू, ८७९९ कृस्तान, ४९

बौद्ध, ४३ ब्राह्म, और ९२ दूसरे। जातियों के खाने में २०२५१० चंडाल, ९२९०९ कायस्थ, ६०५४२ ब्राह्मण, ५७०१७ सूंड़ी, ४९२७४ जलिया, ४०४२२ कैवरत, २५३२७ ग्वाला और शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जिले के कसबे ढाके में ८२३२१ और नारायणगंज में १७७१५ मनुष्य थे। मानिकगंज, इत्यादि कई दूसरे छोटे कसबे हैं। जिले का प्रधान बाजार नारायणगंज है। मुन्सीगंज में प्रतिवर्ष एक बड़ा तिजारती मेला होता है और ३ सप्ताह तक रहता है। सन् १८८१ में इसजिले में ७९ इंच वर्षा हुई थी।

इतिहास—ढाके वृक्ष के नामसे या ढाकेश्वरी देवी के नाम से ढाका नाम की उत्पत्ति है। अति पूर्व काल में बलवान हिन्दू राजाओं से ढाका शासित होता था। जान पड़ता है कि मुसल्मानों के आक्रमण के पहले ढाका जिले का केवल एक भाग, जिस की सीमा पर धवलेश्वरी नदी थी, बंगाल के हिन्दू राज्य के आधीन था। नदी के दक्षिण विक्रमादित्य नामक एक राजा राज्य करता था, जिसके नाम से विक्रमपुर परगना है और उत्तर पाल खांदान के भुइआ राजाओं का राज्य था; इनकी राजधानी और महलों का खंडहर बंगाल के पूर्वी भाग के ब्रह्मपुत्र घाटी में अनेक जगह विद्यमान हैं। धवलेश्वरी नदी के उत्तर ढाका जिले के मधुवनपुर, सामर और दुरदुरिया में उनके समय का बहुतेरे मट्टी का काम और ईंटे के टीले देखने में आते हैं।

लगभग सन् १३२५ में महम्मद तोगलक ने वर्तमान ढाका जिले को गौड़ के राज्य में मिला लिया। सन् १५७५ में सुनहर गांव प्रधान तिजारती शहर था। सत्रहवी शदी के आरंभ में बादशाह जहांगीर के समय उस के सूबेदार इसलामखां ने राजमहल को छोड़ कर ढाके शहर को बंगाल का सदर स्थान बनाया। उस समय ढाका शहर का नाम जहांगीरनगर रक्खा गया और शहर उन्नत पर हुआ। पीछे अंगरेज, फरासीसी और डचवालों ने वहां अपनी अपनी कोठियां कायम की। ढाके का मलमल यूरप में प्रसिद्ध हुआ। सन् १६४५ में बादशाह शाहजहां के पुत्र सुलतान शुजा ने नदी के दक्षिण किनारे पर बड़ा कटरा बनवाया। सन् १६७७ में औरंगजेब के पुत्र महम्मद आजिम ने शहर

के पूर्व लालबाग के महल का काम आरंभ किया; किंतु उस का काम पूरा नहीं हुआ। सन् १६८३ में साइस्ताखां ने छोटे कटरे को बनवाया। सन् १६९० में इब्राहिम खां ने किला बनवाया। अठारहवी शदी के आरंभ में ढाका शहर की घटती हुई; क्यों कि सन् १७०४ में बंगाल के सूबेदार मुर्शिदकुली खां ने ढाके को छोड़ कर मुर्शिदाबाद को बंगाल की राजधानी बनाया। लोग कहते हैं कि उस समय ढाका शहर की शहर तलियां उत्तर ओर १५ मील तक फैली हुई थीं। अब तक बहुतेरी मसजिदें और ईंटे के मकान जंगल में छिपे हुए मिलते हैं। सन् १७५७ में ढाकें पर अङ्गरेजी अधिकार हुआ।

सन् १८५७ के बलवे के समय ढाके के किले में सिपाहियों की २ कंपनी थीं। मेरठ के बलवे के पीछे एक जंगी जहाज ढाके को बंचाने के लिये कलकत्ते से भेजा गया। किले के सिपाही बागी हो गए। अंत में ४१ बागी लड़ाई में मारे गए, बहुतेरे भागते समय नदी में डूब गए अथवा गोली से मर गए और चंद भूटान के जंगल में चले गए।

मैमनसिंह।

ढाके से ७५ मील (नारायणगंज से ८५ मील) उत्तर मैमनसिंह का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के ढाका विभाग में ब्रह्मपुत्र नदी की धारा के पश्चिम किनारे पर (२४ अंश, ४५ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २६ कला, ५४ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान मैमनसिंह एक कसबा है, जिसको नसीराबाद भी लोग कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मैमनसिंह कसबे में ११५५९ मनुष्य थे; अर्थात् ६५०८ हिन्दू, ४९२१ मुसलमान; ८८ कृस्तान, २७ जैन और ३ एनिमिष्टिक। कसबा तिजारत के लिये प्रसिद्ध नहीं है; उसमें २ पुराने मन्दिर, १ खैराती अस्पताल और छोटे बड़े कई स्कूल हैं। कसबे में सूर्यकांत आचार्य बहादुर एक जमीन्दार राजा है, जिन्हों ने ३० हजार रुपये के खर्च से टाउनहाल बनवाया और अपनी रानी के स्मरण चिन्ह के अर्थ मैमनसिंह के जलकल के लिये १ लाख १३ हजार रुपया चंदा दिया।

मैमनसिंह जिला—जिले का क्षेत्रफल ६२८७ वर्ग मील है। इसके उत्तर गारो पहाड़ी जिला; पूर्व आसाम का सिलहट जिला; दक्षिण-पूर्व टिपरा जिला; दक्षिण ढाका जिला और पश्चिम यमुना नामक नदी, बाद पवना, बुगड़ा और रंगपुर जिले हैं। जिले का बड़ा भाग समतल और मैदान है। मधुपुर जंगल के अतिरिक्त सर्वत्र खेती होती है। मधुपुर जंगल ढाका जिले के उत्तरी भाग से मैमनसिंह जिले के भीतर प्रायः ब्रह्मपुत्र नदी तक फैला हुआ है। इसकी औसत ऊंचाई मैदान से ६० फीट और सबसे अधिक ऊंचाई १०० फीट; लंबाई लग भग ४५ मील और चौड़ाई ६ मील से १६ मील तक; और क्षेत्रफल ४२० वर्ग मील है। यमुना नामक नदी जिले के पश्चिम सीमा पर ९४ मील बहती है। इस के अलावे ब्रह्मपुत्र, मेगना और अनेक छोटी नदियां जिले में हैं। जिले में बाघ अब कम हैं। मधुपुर के जंगल में भालू मिलते हैं। गारो और सुसंग पहाड़ियों में प्रतिवर्ष बहुत से हाथी पकड़े जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ३०५१९६६ मनुष्य थे; अर्थात् २०३८५०५ हिन्दू, ९८७३५५ मुसलमान, २५९५५ आदि निवासी और १५१ कृस्तान। जातियों के खाने में १४८३८० चंडाल, ९४२१७ कैवरत, ५०६१५ नाई, ५०१५२ ब्राह्मण, ४४३०८ सूँड़ी, ४३३९३ योगी, ३२०११ जलिया, ३११७१ कोच, २८७२४ बढ़ई और शेष में दूसरी जातियां थीं। राजपूत केवल २१६७ थे। सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसबे टंगइल में १७१७३, जमालपुर में १५३८८, किशोरगंज में १३१८८; मैमनसिंह में ११५५५ और शेरपुर में १०७४४ मनुष्य थे। जमालपुर एक समय फौजी स्टेशन था। प्रतिवर्ष सावन मास में किशोरगंज में मेला होता है।

बारहवां अध्याय।

(सूबे बंगाल में) कृष्णनगर, नदिया, संतीपुर, जशर, खुलना, वैरीसाल, नइहाटी, बारकपुर, दमदम और बारासत।

कृष्णनगर।

पोड़ादह जंक्शन से ४५ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से १८६ मील) दक्षिण और कलकत्ता के स्यालदह से ५८ मील उत्तर बगुला का रेलवे स्टेशन है। बगुला से १२ मील पश्चिम कृष्णनगर तक पक्की सड़क पर घोड़ा गाड़ी चलती है। मार्ग में हांसनगर का घाट उतरना होता है। सूबे बंगाल के नदिया विभाग में जलंघी नदी के बाएं किनारे पर (२३ अन्श, २३ कला, ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अन्श, ३२ कला, ३१ विकला पूर्व देशांतर में) नदिया जिले का सदर स्थान कृष्णनगर एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कृष्णनगर में २५५०० मनुष्य थे; अर्थात् १२४४४ पुरुष और १३०५६ स्त्रियां। इनमें १७१०६ हिन्दू, ७७५७ मुसलमान, और ६३७ कृस्तान थे।

कृष्णनगर तिजारती कसवा है। वहां मट्टी की रंगदार मूर्तियां बहुत सुन्दर बनती हैं और एक कालिज है। ग्वाड़ी महल्ले में मामूली सरकारी कचहरियां और आफिस बने हुए हैं। कृष्णनगर में नदिया के राजा का महल है।

नदिया।

कृष्णनगर की कचहरी से ६ मील (बगुला के रेलवे स्टेशन से १८ मील) पश्चिम सूबे बंगाल के प्रेसिडेन्सी विभाग के नदिया जिले में (२३ अन्श, २४ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अन्श, २५ कला, ३ विकला पूर्व

देशान्तर में) भागीरथी के दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर नदिया एक कसबा है, जिसको नवद्वीप भी कहते हैं। पहले यह भागीरथी के पूर्व किनारे पर था। अब तक कसबे के पश्चिम भागीरथी का खाल देख पड़ता है। कसबे के निकट खड़ुआ नदी भागीरथी में मिली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नदिया में १३३३४ मनुष्य थे; अर्थात् १२८५६ हिन्दू, और ४७८ मुसलमान।

पूर्व काल में नदिया संस्कृत पाठशालाओं के कारण प्रसिद्ध थी, वहां के पण्डित न्याय शास्त्र में बड़े प्रवीन होते थे। अब भी नदिया में संस्कृत के अनेक पाठशाला हैं, जिनमें दूर दूर से विद्यार्थी आकर विद्या पढ़ते हैं।

नदिया कसबे से लगभग २ मील दूर विद्यानगर, जो एक समय बड़ा गांव था, एक छोटी बस्ती है। उसी जगह चैतन्य महाप्रभु ने विद्या पढ़ी थी। वहां एक मन्दिर में उनकी मूर्ति है।

चैतन्य महाप्रभु—नदिया कसबा चैतन्य महाप्रभु की, जिनको कृष्ण-चैतन्य और गौरांग प्रभु भी कहते हैं, जन्म भूमि है। नदिया के एक मन्दिर में गौरांग प्रभु की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यात्रीगण प्रथम पुड़ामात्र और बूड़ाशिव के दर्शन करके तब गौरांग प्रभु के दर्शन करते हैं। प्रति वर्ष माघ में वहां एक मेला होता है। मेले में पांच सात हजार वैष्णव एकत्रित होते हैं।

चैतन्य महाप्रभु ने सन् १४८५ ईस्वी में नदिया के जगन्नाथ मिश्र ब्राह्मण की स्त्री के गर्भ से जन्म लिया। वह संपूर्ण बंगाल और उड़ीसे में विष्णु की भक्ति का उपदेश करते रहे। उन्होंने एक संत की पुत्री से अपना विवाह किया था; किन्तु २४ वर्ष की अवस्था में वह गृह को छोड़ कर उड़ीसे में चले गए। उसके पश्चात् वह १८ वर्ष तक विष्णु के उपासना का प्रचार करके सन् १५२७ ईस्वी में परमधाम को चले गए।

चैतन्य महाप्रभु का ऐसा मत था कि सब जाति के मनुष्य विष्णु की पूजा का समान अधिकारी हैं। सचाई और सर्वदा का भजन उनके उपदेश का सारांश था। उनके उपदेश के अनुसार केवल भक्तिही से नहीं किन्तु उसके

सोय ज्ञान होने से मोक्ष मिलती है और मोक्ष का माने केवल सत्ता का नष्ट होनाही नहीं है; किन्तु उसमें शरीर के दुर्गुण और विकार का दूर होजाना खास कर सामिल है।

चैतन्य के मत के संत लोगों में से अधिक लोग अपना ब्याह करते हैं और अपनी स्त्री पुत्रों के साथ कृष्ण के मन्दिर के निकट के गृह में निवास करते हैं। चैतन्य महाप्रभु को लोग कृष्ण भगवान् का अवतार समझते हैं। उनकी पूजा बंगाले, खास कर उड़ीसे में घर घर होती है। बहुतेरे लोग अपने अपने घर के छोटे मन्दिरों में नित्य उनकी पूजा करते हैं।

लगभग ३०० वर्ष हुए कि नाभाजी ने भक्तमाल ग्रन्थ पद्य भाषा में बनाया। उस में भक्त और संतों का यश वर्णन किया गया है। भक्तमाल में लिखा है कि श्रीनित्यानन्द कृष्णचैतन्य की भक्ति दशो दिशाओं में फैल गई। उन्होंने गौड़ देश (बंगाल) के पाखण्ड को दूर करके वहां के मनुष्यों को भजन में निरत किया और कृपा दृष्टि से असंख्य मनुष्यों को सुगति दी।

नदिया जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३४०४ वर्गमील है। इसके उत्तर राजशाही जिला; पूर्व पवना और जशर जिला; दक्षिण चौबीसपरगना जिला; पश्चिम वीरभूम, वर्दवान, और हुगली जिला और पश्चिमोत्तर मुर्शिदाबाद जिला है। नदिया जिले को गंगा की प्रधान धारा पद्मा नदी पवना और राजशाही जिले से; जलंगी नदी मुर्शिदाबाद जिले से; एक छोटी नदी दक्षिण-पूर्व की सीमा पर जशर जिले से अलग करती है और नदिया की पश्चिमी सीमा के पास भागीरथी बहती है। भागीरथी से जगह बदल कर जिले का एक पतला भाग, जिसमें नदिया कसबा है, भागीरथी के पश्चिम हो गया है। जिले का सदर स्थान कृष्णनगर है। सीमा की नदियों के अतिरिक्त पद्मा की बहुतेरी शाखा और जलंगी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियां जिले में बहती हैं। उस जिले में नदियों के किनारे पर कालीगंज, संतीपुर, करीमपुर, कृष्णनगर, स्वरूपगंज, मुन्शीगंज, गोपालनगर, आलमडंगा, कुष्टिया इत्यादि तिजारती जगह हैं। नदिया जिले में जंगली सूअर, तेंदुआ और सांप बहुत हैं, प्रति वर्ष लगभग ५०० मनुष्य सांप के काटने से और ५० जंगली जनवरों के मारने से मर जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नदिया जिले में २०१७८४७ मनुष्य थे; अर्थात् ११४६६०३ मुसलमान, ८६४७७३ हिन्दू, ६४४० क्रस्तान, २८ ब्राह्म और ३ दूसरे। जातियों के खाने में १२६०६३ कैवरत, ९३३८२ ग्वाला, ५९८९४ ब्राह्मण, ४०७८० कायस्थ, २३२३४ नाई और शेष में दूसरी जातियां थीं। केवल ६०४७ राजपूत थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उस जिले के कसबे संतीपुर में ३०४३७, कृष्णनगर में २५५००, नवद्वीप अर्थात् नदिया में १३३३४, कुष्टिया में १११९९ और चगड़ा, रानाघाट, कुमारखाली, मिहरपुर, वीरनगर में दस हजार से कम मनुष्य थे।

इतिहास—नदिया कसबे में राजा वल्लालसेन के पुत्र बंगाल के अंतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेन रहते थे। लोग कहते हैं कि उन्हीं ने सन् १०६३ ईस्वी में नदिया को बसाया और गौड़ को छोड़ कर इसको अपनी राजधानी बनाई। सन् १२०३ ई० में बख्तियार खिलजी के आधीन मुसलमानों ने नदिया को ले लिया और हिन्दू राजा के वंश का विनाश कर दिया।

नदिया के वर्तमान राजा, भट्टनारायण के वंशधर हैं। बंगाल के राजा आदिशूर ने, जिनकी राजधानी गौड़ थी, कन्नोज से ५ ब्राह्मणों को बुलाया, जिनमे सारस्वत, कानकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल ये ५ प्रकार के ब्राह्मण हुए, जो पंचगौड़ करके प्रसिद्ध हैं; उन्हीं पांचो में से एक भट्टनारायण थे। उनके वंश में सब से अधिक प्रसिद्ध महाराज कृष्णचंद्र हुए, जो सन् १७२८ ईस्वी में राजसिंहासन पर बैठे। वह बड़े विद्वान और दानी थे। सन् १७५७ में जब शिराजुद्दौला अंगरेजों से लड़ा, तब महाराज कृष्णचंद्र अंगरेजों के सहायक थे। उसके कृतज्ञता में अङ्गरेजी सरकार ने उनको राजेंद्र बहादुर की पदवी और १२ तोपें नजर दीं, जो अब तक महल में देखी जाती हैं। कृष्णचंद्र के पीछे के राजा भी पण्डित और दानी होते आए हैं, इस लिये नदिया कसबा और जिला न्यायशास्त्र और पण्डितों का घर होने की प्रसिद्धता प्राप्त की है। कृष्णचैतन्य महाप्रभु के जन्म होने के कारण नदिया कसबा पवित्र समझा जाता है।

संतीपुर।

भागीरथी (अर्थात् हुगली नदी) के किनारे पर (२३ अंश, १४ कला, २४ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २९ कला, ६ विकला पूर्व देशांतर में) नदिया जिले में सबसे बड़ा कसबा संतीपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-संख्या के समय संतीपुर में ३०४३७ मनुष्य थे; अर्थात् २११९७ हिन्दू, ९२३१ मुसलमान और ९ कृस्तान।

संतीपुर कपड़े की दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध है। उसमें देशी तिजारत बहुत होती है और गंगा स्नान का वह एक प्रसिद्ध स्थान है। वहां कार्तिक की पूर्णिमा के समय श्री कृष्ण की रासयात्रा का मेला होता है, जो ३ दिन रहता है। अंतिम दिन प्रधान सड़क होकर बड़ी धूमधाम से श्रीकृष्ण भगवान की सवारी निकलती है। मेले में पचीस तीस हजार आदमी आते हैं।

जशर।

बगुला के स्टेशन से १२ मील (पार्वती पुर से ११८ मील) दक्षिण राना-घाट जंक्शन, रानाघाट से २१ मील पूर्व बनगांव जंक्शन और बनगांव से २६ मील पूर्वोत्तर जशर का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के प्रेसीडेंसी विभाग में (२३ अंश, १० कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १५ कला, पूर्व देशांतर में) भैरव नदी के पश्चिम किनारे पर रेलवे स्टेशन से १ मील दूर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा जशर है, जिसको उस देश के लोग कसबा कहते हैं। उसका शुद्ध नाम यशहर है, जिस का अपभ्रंश जशर होगया है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जशर में ८४१५ मनुष्य थे; अर्थात् ४५११ हिन्दू, ३८२२ मुसलमान और १६२ दूसरे। म्युनिसिपल्टी की सीमा के भीतर पुराना कसबा, शंकरपुर, चंचरागांव और बदाहर है।

कसबे के चौक का नाम मछुहा बाजार है। कसबे के पश्चिम जिले की मामूली कचहरियां, जेलखाना और पुलिस की लाइन पक्की बनी हुई हैं।

इन के अतिरिक्त जशर में स्कूल, गिर्जा, एक खैराती अस्पताल, सन् १८८३ का वना हुआ श्रीरघुनाथजी का १ मन्दिर और २ कवरगाह हैं । कसवे से १ मील दक्षिण चंचरा वस्ती में जशर के राजा के महल की निशानी देखी जाती है। उस महल के निकट जशर के एक राजा का वनवाया हुआ चोरमारा नामक एक वड़ा तालाव है । लोग कहते हैं कि इस तालाव के पास राजा का जेलखाना था, इस लिये तालाव का चोरमारा नाम पड़ा।

जशर जिला—इस जिले का क्षेत्र फल २१२५ वर्ग मील है। इसके उत्तर और पश्चिम नदिया जिला, दक्षिण खुलना जिला और पूर्व फरीदपुर जिला है। जिले में कई एक छोटी नदियां वहती हैं।

सन् १८८१ ई० की मनुष्य-गणना के समय जशर जिले में १५७७२४१ मनुष्य थे; अर्थात् १४५२१७ मुसलमान, ६३१४३१ हिन्दु, ४७४ कृस्तान और ३१ व्राह्म। जातियों के खाने में ७८००२ जालिया, कैवरत, मल्लाह, पोडी इत्यादि; ६२६११ कायस्थ, ३७७५२ व्राह्मण, १०३ राजपुत और शेष में दूसरी जातियां थी। इस जिले के जशर कसवे में ८४१५, कोटचांदपुर में १२३१ और केशवपुर में ६४०५ मनुष्य थे।

सन् १७८१ ई० में गवर्नरजनरल ने जशर कसवे के निकट मुरली में एक कचहरी नियत होने की आज्ञा दी और पुरे तौर से जिले में अंगरेजी प्रवन्ध कायम हो गया ।

खुलना ।

जशर से ३५ मील दक्षिण-पूर्व (रानाघाट जंक्शन से ८२ मील) खुलना का रेलवे स्टेशन है। सूवे वंगाल के प्रेसीडेंसी विभाग में (२२ अंश, ४९ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ३६ कला, ५५ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान खुलना एक छोटा कसवा है।

खुलना के निकट भैरव नदी सुंदर वन में मिल गई है। ऐसा कहा जा सकता है कि खुलना सुन्दरवन की राजधानी है। इसमें ३ वाजार हैं, जिनमें से सेन का वाजार, जो सव में प्रधान है, भैरव नदी के पूर्व और दूसरे २ उस

नदी के पश्चिम किनारे पर हैं। खुलना में सरकारी कचहरियां बनी हुई हैं। खुलना होकर ढाका और बाकरगंज से चावल; सिलहट से चूना और नारंगी; सुन्दरवन से लकड़ी और राजशाही, पवना और फरीदपुर से तीसी और दाल कलकत्ता भेजी जाती हैं।

खुलना जिला—इसका क्षेत्रफल बिना नाप किया हुआ सुन्दरबन को छोड़ कर २०७७ वर्ग मील है। इसके पूर्व बाकरगंज जिला; दक्षिण सुन्दरवन, पश्चिम चौबीसपरगना जिला और उत्तर जशर जिला है। इस जिले के पश्चिमोत्तर के भाग में खजूर आदि वृक्षों के सुन्दर कुंज फैले हुए हैं। प्रत्येक बस्तियों के समीप बाग और कुंज लगे हुए हैं। नदी के किनारे के ऊंचे स्थानों पर मकान बने हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय खुलना जिले में १०७९९४८ मनुष्य थे; अर्थात् ५५५५४४ मुसलमान, ५२३६५७ हिंदू और ७४७ कृस्तान। जातियों के खाने में २८६५४ ब्राह्मण, ५५१ राजपूत और शेष में दूसरी जातियां थीं। इस जिले के कसबे सतखीरा में ८७३८, कालामोआ में ५९९५, कालीगंज में ५५५४, और देवहाट में ५५१४ मनुष्य थे।

इतिहास—लगभग १०० वर्ष से खुलना कसबा प्रसिद्ध हुआ है। एक समय वह कंपनी के नमक बनाने का सदर स्थान था। सन् १८८२ ई० में खुलना एक जिला बनाया गया।

बैरीसाल।

खुलना के रेलवे स्टेशन से लगभग ५० मील पूर्व (२२ अंश, ४१ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ९० अन्श, २४ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) बैरीसाल नदी के पश्चिम किनारे पर सूबे बंगाल के ढाका विभाग में बाकरगंज जिले का प्रधान कसबा और सदर स्थान बैरीसाल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बैरीसाल में १५४८२ मनुष्य थे; अर्थात् ८०४७ हिन्दू, ७०५४ मुसलमान, ३६७ कृस्तान और १४ बौद्ध।

बैरीसाल में मामूली सरकारी कचहरियां बनी हुई हैं। देशियों के मकान साधारण तरह से लकड़ी, वांस टट्टी और फूस से बने हैं।

बाकरगंज जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३६४९ वर्ग मील है। इसके पूर्व मेगना और शाहबाजपुर नदी, जिसके बाद नोआखाली और टिपरा जिला है; दक्षिण वंगाल की खाड़ी; पश्चिम जशर और फरीदपुर जिला और उत्तर ढाका और फरीदपुर दोनों जिले हैं। सदर स्थान बैरीसाल कसबा है। इस जिले में गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेगना तीनों की मिली हुई धारा बहती है। दूसरी बहुतेरी छोटी छोटी नदियां हैं। कोई पहाड़ी या टीला नहीं है। बस्तियों के चारो ओर वांस और सुपारी के कुंज लगे हुए हैं। जिले में वागिया, साळटी, रामसील इत्यादिक बहुतेरी झील हैं। भूमि से बहुत नमक तैयार किया जाता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बारकगंज जिले में १९००८८९ मनुष्य थे; अर्थात् १२६७६९४ मुसलमान, ६२४५९७ हिन्दू, ४७१७ बौद्ध, ३७१७ कृस्तान, ८३ ब्राह्म और १ यहूदी। जातियों के खाने में २६०७७ चंडाल, ८७८३४ कायस्थ, ४४७३६ ब्राह्मण, ३३४११ नापित, २१६२८ धोबी, २१५१८ जोगी, १८०८० कैवरत, १६८४५ सूँडी और शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय बाकरगंज जिले के कसबे बैरीसाल में १५४८२, और फीरोजपुर में १२२४६ मनुष्य थे।

बाकरगंज, जो सन् १८०१ ई० से पहले इस जिले का सदरस्थान था, खैराबाद और एक दूसरी नदी के संगम के पास है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ७०६० मनुष्य थे।

नइहाटी।

रानाघाट जंक्शन से २२ मील (पार्वतीपुर से २२० मील) दक्षिण और कलकत्ता के सियालदह से २४ मील उत्तर नईहाटी का रेलवे जंक्शन है; जहाँ से ५ मील की रेलवे लाइन पश्चिमोत्तर हुगली कसबे के पास जाकर इष्टइण्डियन रेलवे से मिली है; बीच में हुगली अर्थात् भागीरथी नदी पर रेलवे-पुल बना

हुआ है। सूबे बंगाल के प्रेसीडेन्सी विभाग के चौबीस परगने जिले में नइ-हाटी एक तिजारती कसबा है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय नइहाटी में २१७२४ मनुष्य थे; अर्थात् २४७६६ हिंदू, ४८०६ मुसलमान, १३५ कृस्तान और १७ बौद्ध।

बारकपुर।

नइहाटी से १० मील (पार्वतीपुर जंक्शन से २३० मील) दक्षिण और सियालदह से १४ मील उत्तर बारकपुर का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के चौबीस परगना जिले में भागीरथी के बाएं किनारे पर श्रीरामपुर के आमने सामने बारकपुर है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ बारकपुर में ५६६२७ मनुष्य थे;—इनमें से दक्षिणीय बारकपुर में ३५६४७ (अर्थात् २६१५१ हिन्दू, ८५१२ मुसलमान, १५२ कृस्तान, २४ सिक्ख, २ पारसी, १ बौद्ध और ५ दूसरे) और उत्तरीबारकपुर में जिसको नवाबगंज भी कहते हैं, २०९८० (अर्थात १६३३४ हिंदू, ४५०५मुसलमान, १३६ कृस्तान और५जैन) थे।

छावनी से दक्षिण २५० एकड़ भूमि पर एक सुन्दर पार्क बना हुआ है। उसमें खुबसूरती के साथ वृक्ष लगाए गए हैं और हिंदुस्तान के वाइसराय की दिहाती कोठी बनी है, जिसको लार्डमिंटो ने, जो सन् १८०६ से १८१५ तक भारतवर्ष का गवर्नरजनरल था, बनवाया और उसके बाद के गवर्नरजनरल मार्किसआफ हेस्टिंग्स ने बढ़ाया। बड़े लाटसाहब समय समय पर कलकत्ते से आकर के इस गवर्नमेंट हौस में रहते हैं। छावनी में यूरोपियन और देशी पलटन रहती है और लेडी केनिंग की कबर है।

रेशकोर्स के निकट हाथियों के सिखलाने का अस्तबल है। जो हाथी पूर्वी बंगाल के जंगलों मे पकड़ कर आते हैं वे आम तरह से सिखलाने के लिए वहां भेजे जाते हैं और तालीम के लिये चन्द महीनों तक अस्तबल में रक्खे जाते हैं।

इतिहास—सन् १७७२ ई० में बारकपुर में फौजी छावनी नियत हुई, इस लिये उसका नाम बारकपुर पड़ गया। सन् १८२४ में ४७ वीं बंगाल पैदल फौज को, जो बारकपुर में थी, ब्रह्मा की लड़ाई में जाने का हुक्म हुआ। उसके अफसर और सिपाहियों ने कहा कि हम लोग समुद्र की राह से नहीं जायगें। हम लोगों को दुसरी मार्ग से भेजा जाय और भत्ता दुगुना कर दिया जाय तब जा सकेंगे। तारीख १ नवंबर को वे लोग बागी हो गए। उन्होंने हथियार रख देने से इनकार किया। जब यूरोपियन आरटिलरी का एक बैटरी बागियों पर खोली गई, तब वे लोग अपने हथियारों को फेंक कर नदी की राह से भागे। उनमें से चंद गोली से मार दिए गए; चंद पानी में डूब गए; बहुतेरे को फांसी दी गई और उस रेजीमेंट के लोग काम से अलग कर दिए गए।

सन् १८५७ ई० में बारकपुर में बगावत हुई। वर्ष के आरंभ में फौजी स्टेशनों में यह बात फैली कि नया टोटा अपवित्र है; अंगरेजी सरकार देशी सिपाहियों की जात भ्रष्ट करके कृस्तान बनाना चाहती है। यह झूठा खियाल दिन पर दिन बढ़ने लगा। तारीख २१ मार्च को बारकपुर की छावनी के मंगलपांडे ने एक यूरोपियन अफसर को गोली से मारा; किंतु बगावत बढ़ी नहीं।

दमदम।

बारकपुर से ९ मील दक्षिण और कलकत्ते के सियालदह से ५ मील पूर्वोत्तर दमदम का रेलवे स्टेशन है, जहां से रेलवे शाखा दमदम छावनी और बारासत होकर बनगांव गई है। सूबे बंगाल के २४ परगना जिले में सबडिवीजन का सदर स्थान और फौजी छावनी दमदम है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय दक्षिण के दमदम में ११०३७ (अर्थात् ६२८६ हिंदू, ४६११ मुसलमान और ६० कृस्तान) और उत्तर के दमदम में, जिसमें फौजी छावनी है, १०३१६ मनुष्य, (अर्थात् ६३८८ हिंदू, २७१८ मुसलमान और १२१० कृस्तान) थे।

दमदम में सन् १८८३ ई० से फौज रहती है। वारक ईंटे के बने हुए हैं। स्टेशन से थोड़ी दूर पर बाजार है। गोली बनाने के लिये बहुत बड़ा कारखाना बना है।

वारासत।

दमदम जंक्शन से पूर्वोत्तर बनगांव की लाइन पर २ मील दमदम छावनी का और १० मील वारासत का रेलवे स्टेशन है। वारासत चौवीस परगना जिले में सबडिवीजन का सदर स्थान (२२ अंश, ४३ कला, २४ विकला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश, ३१ कला, ४७ विकला पूर्व देशांतर में) एक कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वारासत में १०५३३ मनुष्य थे; अर्थात् ५७०२ हिंदू, ४८०७ मुसलमान, और २४ दूसरे।

वारासत में सवडिवीजन की सरकारी इमारतें बनी हैं और थोड़ी तिजारत होती है।

इतिहास—सन् १८३४ ई० में नदिया और जशर के कई एक परगने से वारासत जिला बना; किंतु सन् १८६१ में ज्वांइट मजिस्ट्रेट वारासत से उठा दिया गया; वारासत चौवीस परगना जिले का एक सबडिवीजन बनाया गया।

तेरहवां अध्याय।

कलकत्ता

कलकत्ता।

गंगा की पश्चिमी शाखा भागीरथी के, जिसको हुगली नदी भी कहते हैं, बाएं अर्थात् पूर्व किनारे पर हवड़ा के सामने पूर्व (२२ अंश, ३४ कला, २ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २३ कला, ५१ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र से ८० मील उत्तर भारतवर्ष की राजधानी और बंगाल का प्रधान शहर कलकत्ता है।

कलकत्ते के पास के सियालदह के रेलवे स्टेशन से उत्तर ५ मील दमदम जंक्शन, २४ मील नइहाटी जंक्शन, २४४ मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३७१ मील दार्जिलिंग और दक्षिण ३८ मील "डायमंड हारवर" और कलकत्ते के निकट के हवड़े के रेलवे स्टेशन से पश्चिमोत्तर ६७ मील वर्द्धवान, ७५ मील खाना जंक्शन, २६२ मील (कार्ड लाइन से) लक्षीसराय जंक्शन, ३३२ मील पटना, ३३८ मील बांकीपुर जंक्शन, ३६८ मील आरा, ४६१ मील मुगलसराय जंक्शन, ४७६ मील बनारस, ५६४ मील इलाहाबाद, ६८४ मील कानपुर जंक्शन, ८२७ मील टुंडला जंक्शन, ८४३ मील आगरा किला, और ९५४ मील दिल्ली; हवड़े से पश्चिम ओर १३२ मील आसनसोल जंक्शन; ७५१ मील नागपुर, १११७ मील मनमार जंक्शन, और १२७८ मील बंबई का विक्टोरिया स्टेशन और हवड़े से नागपुर और मनमार जंक्शन होकर २११३ मील पश्चिम-दक्षिण मदरास है।

खास कलकत्ता शहर भागीरथी के किनारे पर लगभग ७ वर्ग मील के क्षेत्रफल में फैला है। इसकी लंबाई चितपुर से दक्षिण और खिदिरपुर से उत्तर ४½ मील और औसत चौड़ाई भागीरथी गंगा से पूर्व और सर्कुलर रोड से पश्चिम १½ मील है। खास शहर से पूर्व और दक्षिण-पूर्व नर्कुलडांगा, शिमला, सियालदह, एंटाली, बालीगंज, भवानीपुर, अलीपुर और खिदिरपुर (शहरतलियां) हैं। शहर में सड़कों की लंबाई १२० मील है। सड़कों पर रात्रि में गैस की लालटेन से रोशनी होती है। ट्रामगाड़ी चलने पर भी प्रधान सड़कों पर घोड़ेगाड़ी और एक्कों की भीड़ रहती है। सन् १८८९-१८९० ई० में कलकत्ते की म्युनिसिपेल्टी की आमदनी ४२१७१२१ रुपये और उसका खर्च ४१२७८३१ रुपये थे।

हवड़ा स्टेशन के पास आरमेनियन घाट के सामने भागीरथी गंगा की चौड़ाई लगभग ६०० गज है। राजमहल से आगे गंगा की दो धारा हो गई हैं। उनमें से प्रधान धारा पद्मा, जिसको पद्दा भी कहते हैं, फरीदपुर और ग्वालंडो होकर कलकत्ते से बहुत पूर्व समुद्र में गिरती है और दूसरी धारा भागीरथी, (जिसको हुगली भी कहते हैं) जो एक समय प्रधान धारा थी, चंद्रनगर,

हुगली और कलकत्ता होकर दक्षिण को बहती हुई कलकत्ते से लगभग ८० मील दक्षिण समुद्र में मिली है। पहिले समय में भागीरथी कालीजी के मंदिर के निकट होकर बहती थी। उसका भागर अर्थात् नाला, जिसमें यात्री लोग स्नान करके काली जी का पूजन करते हैं, अब तक विद्यमान है।

कलकत्ते के पास भागीरथी में नाव के पुल से दक्षिण कोसों तक सैकड़ों जहाज और आगबोट सर्वदा देखने में आते हैं। इन के मस्तूल और गुनरखों का सुंदर दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

कलकत्ते की हवा सर्द है; वहां वार वार और भारी वर्षा हुई करती है; किंतु लगातार नहीं। वहां औसत में सालाना वर्षा ६० इंच होती है। कलकत्ते का समय मदरास के समय से ३३ मिन्ट और दिल्ली के समय से ४६ मिन्ट अधिक और बंबई के समय से २९ मिन्ट कम है।

कलकत्ते के आस पास कागज इत्यादि के अनेक कल कारखाने हैं। कागज के कारखाने से सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के दफतर खाने के लिये सरकार ने २७० टन कागज खरीदा था। कलकत्ते में ओरियंटल इन्सियोरेन्स कंपनी के पास जिन्दगी का वीमा होता है। वह आदमी से उसके जीवन पर्यन्त प्रति महीने नियत रुपया लेकर उसके मरने पर उसके वारिस को एक नियत रकम देती है। प्रतिवर्ष आषाढ़ सुदी २ को कलकत्ते में जगन्नाथ घाट से जगन्नाथजी की धूमधाम से रथयात्रा होतीहै। कलकत्ते में महाराज यतिंद्र-मोहनठाकुर इत्यादि कई बंगाली जमीन्दारों को सरकार से महाराज तथा राजा की पदवी मिली है। यद्यपि बंबई की मनुष्य-संख्या कलकत्ते से कम नहीं है, किंतु कलकत्ते के समान विशाल और दृढ़ इमारतें बंबई में बहुत कम हैं।

रेलवे—कलकत्ते के निकट सें रेलवे लाइन ३ तरफ गई है। महसूल तीसरे दर्जे का फी मील २१⁄२ पाई लगता है।

(१) कलकत्ते से दक्षिण इष्टर्नबंगाल स्टेट रेलवे के सदर्न सेक्सन—	मील—प्रसिद्ध स्टेशन—
	३ बालीगंज।

१० सोनारपुर जंक्शन।
३८ डायमण्ड हारबर।

सोनारपुर जंक्शन से १८ मील दक्षिण पूर्व केनिंग।

(२) कलकत्ते से उत्तर इष्टर्नबंगाल स्टेट रेलवे—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—
५ दमदम जंक्शन।
७ बेलघरिया।
१० सोदपुर।
१४ बारकपुर।
२४ नइहाटी जंक्शन।
४६ रानाघाट जंक्शन।
५८ वगुला।
१०३ पोड़ादह जंक्शन।
१२० दामुकदियाघाट (पद्मा गंगा के दहिने किनारे पर)
१३२ सांराघाट (गंगा के बाएं)।
१५६ नाटउर।
१९५ नवावगंज।
२४४ पारवतीपुर जंक्शन।
३०५ जलपाईगोड़ी।
३२८ सीलीगोड़ी।
३७९ दार्जिलिंग।

दमदम जंक्शन से पूर्वोत्तर २ मील दमदम छावनी, १० मील वारासत, और ३६ मील वनगांव जंक्शन।

नइहाटी जंक्शन से ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन।

रानाघाट जंक्शन से पूर्व कुछ दक्षिण २१ मील वनगांव जंक्शन और ८२ मील खुलना।

पोड़ादह जंक्शन से पूर्व कुछ दक्षिण ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया और ४८ मील ग्वालंडो।

दामुकदियाघाट से आगबोट गंगा के उस पार सांराघाट को जाते हैं। दोनों स्टेशनों का फासिला १२ मील है। सूखी ऋतुओं में इसके बड़े हिस्से पर चंदरोजा लाइन बैठाई जाती है। सांराघाट के पास 'उतरी बंगाल रेलवे' आरंभ होती है।

ग्वालंडो से पूर्व थोड़ा दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदी में आगबोट जाती है, जिसकी राह में ७९ मील चान्दपुर और १०४ मील नारायणगंज है।

नारायणगंज से उत्तर रेल के रास्ते से १० मील ढाका और ८५ मील मैमनसिंह।

चान्दपुर से 'आसाम बंगाल रेलवे' द्वारा ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन।

लक्सम जंक्शन से दक्षिण थोड़ा पूर्व ५७ मील सीताकुण्ड, ६१ मील चलबाकुण्ड और ८१ मील चटगांव स्टेशन।

दामुकदियाघाट के स्टेशन से १२ मील पूर्व कुछ उत्तर सांराघाट स्टेशन तक, जो दूसरे पार में है, पद्मागंगा में आगबोट चलता है।

पार्वतीपुर जंक्शन से पूर्वोत्तर २२ मील रंगपुर, ३९ मील तिष्टा जंक्शन और ५३ मील मगलहाट और तिष्टा जंक्शन से पूर्व कुछ उत्तर २६ मील यात्रापुर।

पार्वतीपुर जंक्शन से पश्चिम कुछ दक्षिण१९मील दीनाजपुर, ६५ मील बरसुई जंक्शन और ८९ मील कठिहर जंक्शन।

(३)हवड़े से पश्चिमोत्तर 'ईष्टइण्डियन रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१२ श्रीरामपुर।

१४ सेंवड़ाफुली जंक्शन।

२१ चन्दरनगर।

२४ हुगली जंक्शन।

२९ मगरा।

६७ बर्दवान।

७५ खाना जंक्शन।

खानाजंक्शन से पश्चिमोत्तर कार्ड लाइन पर ४१ मील अंडाल जंक्शन, ४६ मील रानीगंज, ५७ मील आसनसोल जंक्शन, ६३ मील सीतारामपुर जंक्शन, १०८ मील मधुपुर जंक्शन, १२६ मील वैद्यनाथ जंक्शन और १८७ मील लक्षीसराय जंक्शन।

खाना जंक्शन से लूपलाइन पर उत्तर ६१ मील रामपुरहाट, ७० मील नलहाटी जंक्शन, १२० मील तीनपहाड़ जंक्शन, १४४ मील साहबगंज।

साहबगंज से पश्चिम ४६ मील भागलपुर, ६१ मील सुलतानगंज, ७९ मील जमालपुर जंक्शन और १०४ मील लक्षीसराय जंक्शन।

खास करके कूड़ा फेंकने और घाटों से माल लेजाने के लिये कलकत्ते शहर के बगलों पर, नदी के किनारे और सर्कुलररोड़ पर रेलवे बनी हैं।

रेलवे सबसे पहले सन् १८१८ ई० में विलायत में जारी हुई और सन्

१८५२ ई० में हिंदुस्तान में बनी। इस समय तक हिन्दुस्तान में १५ हजार मील से अधिक रेलवे लाइन बन चुकी हैं।

स्टीम कम्पनियां—पेनिनसुलार ऐंड ओरियेन्टल स्टीम नेवीगेशन कम्पनी के आगबोट १५ दिन पर कलकत्ते के जेटियों से लंदन के लिये खुलते हैं और मदरास कोलम्बो, एडेन, पोर्ट सेड, मार्सिलेस और प्लाईमोथ में मुसाफिरों को उतारते चढ़ाते हैं।

एक कंपनी के आगबोट नम्बर २३ गार्डनरीच से मार्सिलेस के लिये दो हफ्ते पर खुलते हैं और मदरास, पांडीचरी, कोलम्बो, गेली; एडन, स्वेज, पोर्टसेड, मेसिना, नेपुल्स और जेनवां में मोसाफिरों को चढ़ाते उतारते हैं।

एक कंपनी के आगबोट पन्द्रहवें दिन लंदन के लिये, ६ हफ्ते पर आष्ट्रे-लिया के लिये और एक हफ्ते पर बम्बे के लिये खुलते हैं और किनारे के सब बन्दरों पर लोगों को चढ़ाते उतारते हैं।

एक कंपनी के आगबोट रंगून, सिंगापुर, सिलोन, बम्बे, मरीटियस और एंडमन जाते हैं।

एक कंपनी के आगबोट हर पन्द्रहवें दिन लंदन के लिये खुलते हैं और कोलम्बो, स्वेज, पोर्टसेड, और माल्टा में मुसाफिरों को चढ़ाते उतारते हैं।

एक कंपनी के आगबोट पन्द्रहवें दिन लंदन के लिये कलकत्ते को छोड़ते हैं और मार्सिलेस और लिवरपुल के लिये बम्बे से खुलते हैं।

एक कंपनी के आगबोट पन्द्रहवें दिन कलकत्ते से खुल कर मदरास; को-लम्बो, स्वेज केनाल और माल्टा होकर लंदन को जाते हैं।

एक कंपनी के आगबोट महीने में एक बार कलकत्ते से लंदन के लिये खुलते हैं और कोलम्बों में मोसाफिरों को चढ़ाते हैं।

एक कंपनी के आगबोट करीब हर महीने में पेनेंग, सिंगापुर, और हंग-कंग के लिये कलकत्ते से खुलते हैं।

एक कंपनी के आगबोट हर शुक्र के दिन आसाम के लिये और हर मंगल को कचार के लिये खुलते हैं।

एक कंपनी के आगबोट मामूली दिनों पर बीच के स्टेशनों पर होते हुए आसाम में डिब्रूगढ़ को और हफ्तावारी उड़ीसे में चान्दवाली को जाते हैं।

एक कंपनी के आगबोट हररोज आरमेनियन घाट से मिदनीपुर और बीच के स्टेशनों के लिये खुलते हैं और उलबड़िया में मोसाफिरों को चढ़ाते हैं।

ट्रामवे—कलकत्ता ट्रामवे लाइनें यह हैं;—(१) सियालदह स्टेशन से बहूबाजार स्ट्रीट, डलहौसी स्क्वेयर और हेयर स्ट्रीट होकर स्ट्रेंड तक, (२) चितपुर से चितपुर रोड, सामिल करते हुये नम्बर १ पुलिस कोर्ट के नजदीक स्ट्रेण्ड तक, (३) रसापुग्ला से भवानीपुर, चौरंगी, एस्प्लानेड और बोल्ड-कोर्ट हौस स्ट्रीट होकर डलहौसी स्क्वेयर तक। इनके अलावे धर्मतला स्ट्रीट, वेलस्ली स्ट्रीट, एलियट रोड, कालिज स्ट्रीट, कर्नवालिस स्ट्रीट, स्ट्रेण्ड रोड इत्यादि होती हुई कई लाइनें बनी हैं। एक लाइन मैदान और पुल होकर खिदिरपुर गई है। इस भांति से करीब ५० मील सड़क पर ट्रामवे की लाइनें बनी हैं, जिन पर ट्रामगाड़ी चलती हैं। एक ट्रामगाड़ी को एक या दो घोड़े खैंचते हैं और उसपर पचीस तीस आदमी चढ़ते हैं। उस पर बैठने के लिये बेंच बने हुए हैं। आदमी जिस स्थान पर चाहे वहां उस पर चढ़ जाता है और जिस स्थान में इच्छा करे वहां उतरता है।

मनुष्य-गणना—सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय कलकत्ते में २६०७० पक्के और ४७३५१ कच्चे मकान थे। खास शहर और शहर तलियों में ८१०७८६ मनुष्यों की गणना हुई थी, जिनमें से खास शहर में ६८१५६० मनुष्य थे; अर्थात् ४४६७४६ पुरुष और २३४८१४ स्त्रियां। इनमें ४४४८४५ हिन्दू, २०३१७३ मुसलमान; २८९९७ क्रुस्तान, २१९९ बौद्ध, १३९९ यहूदी, ४९४ जैन, २८७ सिक्ख और १६६ पारसी थे। शहर से बाहर दो शहर तलियों में ५९५८४ मनुष्य थे, अर्थात् ३५८४२ पुरुष और २३७४२ स्त्रियां। इनमें ४३६८७ हिन्दू, १४९८५ मुसलमान, ९०७ क्रुस्तान, ३ जैन, १ बौद्ध और १ पारसी थे, और दक्षिणी शहरतली में ६९६४२ मनुष्य थे; अर्थात् ३७७९४ पुरुष और ३१८४८ स्त्रियां। इनमें ३९१३१ हिन्दू, २९९६४ मुसलमान, ४६६ क्रुस्तान, ५१ बौद्ध, १ जैन और २९ दूसरे थे।

मनुष्य-गणना के अनुसार कलकत्ता भारत वर्ष में दूसरा शहर है; किन्तु आस पास की शहरतलियां और हवड़ा के साथ वह पहला शहर होता है।

कलकत्ते में यूरोपियन, यूरेशियन, पोर्चुगीज, आरमेनियन, ग्रीक, यहूदी, चीनी, पारसी इत्यादि परदेशी और हिन्दुस्तान के प्रत्येक विभाग के हिन्दुस्तानी लोग बसे हैं।

कलकत्ते में गंगाजी के ज्वार भाटे का समय,—

तिथि	ज्वार आरम्भ				भाटा आरम्भ			
	दिन		रात		दिन		रात	
	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट
दशमी	६	८	६	१३	१०	५८	११	३
एकादशी	६	५६	७	१	११	४६	११	५१
द्वादशी....	७	४४	७	४९	१२	३४	१२	३९
तृयोदशी	८	३२	८	३७	१	२२	१	२७
चतुर्दशी	९	२०	९	२५	२	१०	२	१५
आमावश्या पूर्णिमा	१०	८	१०	१३	२	५८	३	३
प्रतिपदा	१०	५६	११	१	३	४६	३	५१
द्वितीया	११	४४	११	४९	४	३४	४	३९
तृतीया....	१२	३२	१२	३७	५	२२	५	२७
चतुर्थी...	१	२०	१	२५	६	१०	६	१५
पंचमी	२	८	२	१३	६	५८	७	३
षष्ठी	२	५६	३	१	७	४६	७	५१
सप्तमी	३	४४	३	४९	८	३४	८	३९
अष्टमी	४	३२	४	३७	९	२२	९	२७
नवमी	५	२०	५	२५	१०	१०	१०	१५

प्रति दिन ज्वार के समय पानी की ऊंचाई एकही समान अधिक होती है। समुद्र अपने हद्द मे अधिक (विना भारी तूफ़ान के) नहीं बढ़ता;

परन्तु आमावश्या और पूर्णिमा के ज्वार का जल प्रति दिन के नियम से अधिक ऊंचा होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(उद्योग पर्व्व-१५१ वाँ अध्याय) जैसे आमावश्या और पूर्णमासी को समुद्र की तरंग उठती है, वैसेही पांडवों की सेना का महा कोलाहल शब्द आकाश मंडल को स्पर्श करने लगा। (मत्स्य-पुराण— १२२ वां अध्याय) चन्द्रमा के बढ़ने घटने के अनुसार समुद्र बढ़ता घटता है। पूर्णिमा और आमावश्या के दिनों में समुद्र १५०० अंगुल बढ़ता और घटता है। वाल्मीकिरामायण—(अयोध्याकांड—१४ वां सर्ग) सत्यता के कारण समुद्र अपने थोड़ी भी मर्य्यादा को नहीं छोड़ता (अर्थात् अपने हद से अधिक नहीं बढ़ता) है।

पानी की नल—बारकपुर से २ मील उत्तर के मनीरामपुर से हुगलीनदी का पानी कलद्वारा कलकत्ते में पहुंचाया जाता है। पंप का स्टेशन और पानी के सब हौज वेलिंटन स्केयर में हैं और वैसाही पंप का स्टेशन हेलीडे स्ट्रीट के पास हाल में बना है। पीने लायक पानी की नल लगभग २३२ मील लम्बी है। प्रति दिन २ करोड़ गेलन पानी खर्च होता है। इसके सिवा सड़कों पर छिड़कने के लिये बिना तय्यार किया हुआ पानी आता है, जिसकी नल ६६ मील लंबी है। सन् १८७० ई० में पानी की नल खुली। सन् १८९१ की जनवरी तक १ करोड़ ५५ लाख रुपए इस काम में खर्च पड़े थे। पंप का नया स्टेशन भवानीपुर में बना है, जिसमें नित्य ४० लाख गेलन पानी तय्यार होकर शहर के दक्षिण हिस्से में (पश्चिम) खिदिर-पुर के डक से (पूर्व) बालीगंज तक जाता है।

कलकत्ते की पुलिस—कलकत्ता शहर हाईकोर्ट के मातहत है। पुलिस का प्रधान हाकिम पुलिस कमिश्नर कहलाता है, जिसको और दिपोटी कमिश्नर को बंगाल के 'लेफ्टिनेंटगवर्नर' मोकर्रर करते हैं। पुलिस के लिये कलकत्ता शहर उत्तरीय, दक्षिणीय और मध्य तीन भागों में विभक्त है। प्रत्येक भाग में एक सुपरिंटेंडेंट और ६ थाने रहते हैं। प्रत्येक थाने में १

इन्स्पेक्टर है। चौथा भाग हुगली नदी है, जिसके लिये १ सुपरिंटेंडंट और ३ थाने हैं। तीनों में एक एक इन्स्पेक्टर रहते हैं। एक शाखा भी है, जिसमें एक सुपरिंटेंडेंट है।

खास शहर के प्रबंध के लिये ३ सुपरिंटेंडेंट, २५ इन्स्पेक्टर, ८ दारोगा, ३१ सर्जिएन्ट (हवलदार), ६९ करपोरल (नायक), ५१ स्पेशल कांसटिवल और ११०० कांस्टिवल हैं। सुपरिंटेंडेंटों के साथ रिजर्वड् फोर्स १६२ आदमी और सवार पुलिस और गवर्नमेंट गार्ड में ५ इन्स्पेक्टर और ३०५ आदमी हैं।

पुलिस कचहरी की नई इमारत, जिसका नम्बर १७ है, लालबाजार स्ट्रीट में सन् १८९० ई० के अक्तूबर में खुली।

मजिस्ट्रेट के काम के लिये उत्तरीय और दक्षिणीय दो भागों में कलकत्ता तकसीम है;—उत्तरीय भाग के मोकद्मे को उत्तर-भाग के प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट और दक्षिणीय भाग के मोकद्मे को चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट देखते हैं। फौजदारी मोकद्में देखने के लिये हफ्ते में ३ रोज वेंच वैठती है, जिसमें मामूली तरह से ३ मजिस्ट्रेट रहते हैं, जो अपने में से एक प्रधान चुन लेते हैं। म्युनिसपल्टी के मोकद्मे देखने के लिये हफ्ते में ३ दिन कचहरी होती है, जिसको एक आनरेरी मजिस्ट्रेट देखते हैं।

सबर्बन पुलिस—यह भी पुलिस कमिश्नर के मातहत है। २४ परगने जिले में कमिश्नर और दिपोटी कमिश्नर दोनों को मजिस्ट्रेट का अख्तियार दिया गया है। कलकत्ता शहर से वाहर के हिस्से उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में तकसीम हैं। हर एक में एक सुपरिंटेंडंट और ७ थाने हैं। प्रत्येक थाने में १ इन्स्पेक्टर या सब इन्स्पेक्टर रहते हैं। फौजदारी मोकद्में देखने के लिए दो पुलिस कचहरी हैं। उत्तरी हिस्से के मोकद्मे को सियालदह का सबडिविजनल अफसर और दक्षिणी हिस्से के मोकद्मों को अलीपुर का दिपोटी मजिस्ट्रेट देखता है। बाहरी हिस्से की खबरगीरी के लिये २ सुपरिंटेंडंट, १२ इन्स्पेक्टर, ४ सब इन्स्पेक्टर, २ दारोगा, १६ हवलदार, २६ नायक, और ६२५ कांस्टिबल हैं।

अन्य मुल्क के आफिसें—

नाम मुल्क आदि	नम्बर आफिस	पता
अमेरिका-आफिस	३	एस्प्लानेड रो पूर्व।
वेल्जियम	७	लियन्स रेंज।
डेनमार्क	४	फेर्लीप्लेस।
फ्रांस कंसल जनरल का आफिस	४	रसल ष्ट्रीट।
जरमन एम्पायर कंसल जनरल का आफिस	४०	चौरंगी रोड।
ए० कंसल का आफिस	२—३	क्लैव रो।
ग्रीसकंसल का आफिस	२३	केनिंग ष्ट्रीट।
इंपिरियल और रायल अष्ट्रो	१३६	केनिंग ष्ट्रीट।
हंगारियन कंसल का आफिस		
इटली आफिस	९५	पार्क ष्ट्रीट।
नेदरलैंड्स आफिस	११	लालबाजार।
परसिया—आफिस	५	वेटिङ्ग ष्ट्रीट।
पोर्चुगाल—आफिस	१	वैं सी टार्ट रो।
स्याम-आफिस	१९	राधाबाजार।
स्पेन-आफिस	१	वैं सी टार्ट रो।
स्वेडिस् नरवेजियन-आफिस	१	लालबाजार।

धर्मशाले—नीचे लिखी हुई धर्मशालाओं में ३ दिन तक मोसाफिर टिक सकते हैं। सब में रसोई के चौके और पायखाने बने हैं। हर मंजिलों में मोसाफिर रहते हैं।

हेरिसनरोड (नई सड़क) और चितपुर रोड के मेल के पास हेरिसनरोड के उत्तर बगल में (नम्बर १६५) रामकिसुनदास और गिरधारीमल की धर्मशाला है, जिस के आंगन के बगलों में तीनमंजिले मकान बने हैं।

रामकिसुनदास, गिरधारीमल की धर्मशाले के पास हेरिसन रोड के दक्षिण बगल (नम्बर १५०) रामदेव बनियां की तीन मंजिली छोटी धर्मशाला है।

ऊपर लिखी हुई धर्मशालाओं से पश्चिम-दक्षिण मलिक स्ट्रीट के पूर्व बगल में (नम्बर ५४३) राय सूर्य्यमल बहादुर की तीन मंजिली धर्मशाला है।

शहर—कलकत्ते शहर के दो भाग हैं; उत्तरी और दक्षिणी; सर्कुलर रोड से पश्चिम हुगली नदी तक बैठक खाना, बहूबाजार स्ट्रीट, और लाल-बाजार-स्ट्रीट है, जिस से दक्षिण के शहर को दक्षिणी भाग और उत्तर के शहर को उत्तरी भाग कहते हैं।

उत्तरी भाग में डेलहौसी-स्क्वेयर के पश्चिमोत्तर के कारबारी हिस्से को छोड़ कर प्रायः सब हिन्दुस्तानी लोग रहते हैं। सड़क चौड़ी नहीं हैं। चन्द हिस्सों में ऊंचे मकान बने हैं और बहुतेरे हिस्सों में देहाती मकान हैं।

उत्तरी भाग में प्रधान स्ट्रीट अर्थात् सड़क, जो उत्तर से दक्षिण गई हैं, ये हैं;—स्ट्रैंडरोड; चितपुररोड; कार्नवालिस-स्ट्रीट और कालिज-स्ट्रीट,जो एकही लाइन में हैं और दोनों के निकट एक एक स्क्वेयर और एक एक तालाब है; और ऐम्हरेष्ट-स्ट्रीट और पूर्व से पश्चिम जाने वाले स्ट्रीट ये हैं;—कोलूटोला-स्ट्रीट, जिस की लाइन में पश्चिम केनिंगस्ट्रीट और पूर्व मिर्जापुर स्ट्रीट है; हेरिसन रोड, जो हुगली के पुल से सियालदह के रेलवे स्टेशन तक है; मछुआ बाजार रोड, जिस की लाइन में पश्चिम काटन स्ट्रीट है; बीडनस्ट्रीट, जिस की लाइन में पश्चिम नीमतल्ला स्ट्रीट है और उसके बीच में एक स्क्वेयर बना है; और ग्रे स्ट्रीट; जिस की लाइन में पश्चिम शोभाबाजार-स्ट्रीट है। इन में का हेरिसन-रोड ७५ फीट चौड़ा है; वह सन् १८९२ में तैयार हुआ; उस पर बिजुली की रोशनी होती है।

उत्तरीय भाग में राधाबाजार, पुराना और नया चीनाबाजार और बड़ा-बाजार प्रधान बाजार हैं। राधाबाजार और चीनाबाजार में सराब, तेल, और अनेक प्रकार के असबाब, कपड़ा और बहुत किसिम के माल बिकते हैं। वहां जानकार आदमियों को उचित दाम पर चीज मिलती है; पर सौदागर लोग पहले दूना तक दाम कहते हैं। बड़ाबाजार में खुरदा माल, कश्मीरीशाल, जौहरी की चीजें, बेशकीमती पत्थर, बर्तन, दवा, कपड़े इत्यादि वस्तु बिकती हैं।

दक्षिणीय भाग के वहूबाजार से दक्षिण, धर्मतल्ला से उत्तर और वेंटिक-ष्ट्रीट से पूर्व के हिस्से में हिन्दुस्तानी लोग, नीचे के दरजे के यूरोपियन, पोर्चुगीज और बहुत वहां के वासिन्दे रहते हैं। वहां घनी वस्ती, देहाती मकान, तंग गली और खराब नाले हैं।

धर्मतल्ला से उत्तर चान्दनीचौक नामक वाजार है और उस हिस्से में निऊ मारकेट नाम का भी एक वाजार वना है।

धर्मतल्ला से दक्षिण वेंटिक-ष्ट्रीट के पास से करीव २ मील लम्वा और ८० फीट चौड़ा चौरंगीरोड नामक सड़क है, जिसके पूर्व किनारे पर उत्तम मकान वने हुए हैं, जिन में वहुतेरे अपने हाते में और वहुतेरे वाग में खड़े हैं। मकानों के आगे (पश्चिम) किले का मैदान हुगली गंगा तक फैला है। दक्षिण की तरफ के मकानों के आगे सुन्दर वरंडे वने हैं। उनमें वहुतेरे मकान तीन मंजिले हैं जिनमें लंबे, चौड़े तथा ऊंचे कमरे वने हुए हैं।

चौरंगीरोड के समानान्तर पूर्व वेलस्ली-ष्ट्रीट नामक उत्तम सड़क है, जो करीव करीव सीधी चली गयी है। वह चौड़ी सड़क वेलस्ली स्क्वेयर और वेलिंटन स्क्वेयर होकर गई है। वेलिंटन स्क्वेयर में वड़ा हौज और नया वाटर-वर्क्स (पानी की कल) का पंपिंग-स्टेशन है।

वेलस्ली ष्ट्रीट के पूर्व टोटोला महल्ला है, जिस के उत्तर धर्मतल्ला, दक्षिण कलिंगा और पूर्व सर्कुलर रोड है। उसमें खास कर के मुसलमान खलासी और लेसकार रहते हैं।

चौरंगीरोड से पूर्व-दक्षिण सर्कुलर रोड तक पार्कष्ट्रीट है। पार्कष्ट्रीट और उसके दक्षिण के महल्लों में प्रायः यूरोपियन लोग वसे हैं। कलकत्ते के उत्तम मकानों में से चन्द मकान वहां हैं। २५ वर्ष के अन्दर वहां अंगरेजी मकान वहुत वढ गये हैं और कई नई सड़कें, कई स्क्वेयर और वहुतेरे मकान वने हैं। पहले वहां देशी लोगों की वस्ती थी।

कलकत्ते शहर के पूर्व की सीमा पर सर्कुलर रोड है। वहां कई उत्तम मकान देखने में आते हैं और सड़क के किनारों पर खुबसूरती के साथ दरख्त लगाये गये हैं। मैदान में कई उत्तम तालाव हैं।

शहर के यूरोपियन हिस्से, जिन में वहुत कारोवार होता है, क्लैव स्ट्रीट, हेयर-स्ट्रीट, हेस्टिंग-स्ट्रीट, क्लैव रो, एसप्लानेड, ओल्डकोर्ट, हौस-स्ट्रीट, और डेलहौसी स्क्वेयर हैं और प्रधान यूरोपियन दुकानें, जिन में से कई एक वहुत उमदे हैं, डेलहौसी स्क्वेयर, ओल्डकोर्टहौस स्ट्रीट और गवर्नमेंट प्लेस में देख पड़ती हैं।

फोर्ट विलियम (किला)-कलकत्ता शहर के दक्षिण, हुगली गंगा के पूर्व किनारे पर फोर्ट विलियम नामक उत्तम किला है। किले के पश्चिम गंगा और तीन ओर वहुत वड़ा मैदान है। सन् १७५७ ई० में लार्ड क्लैव ने इसकी नेव दी। करीव सन् १७७३ ई० में २ करोड़ रुपये से अधिक के खर्च से किला तैय्यार हुआ। उसकी शकल ८ पहली है, पर वरावर नहीं। उनमें से ५ पहल जमीन की ओर और ३ गंगा की तरफ हैं। किले के चारो तरफ ३० फीट गहड़ी और ५० फीट चौड़ी सूखी खाई है, जो जरूरत होने पर गंगा के पानी से भरदी जासकती है। किले में सेंटजर्ज गेट, ट्रेजरीगेट, चौरंगी गेट,पलासी गेट, कलकत्ता गेट और वाटर गेट नाम से ६ फाटक हैं। प्रत्येक फाटक पर एक मकान है, जिनमें फौज का कमांडर इनचीफ और प्रधान अफसर लोग रहते हैं। किले के भीतर वारकों की कत्तार, तोपखाना, भंडार घर, मेगजीन और परेड की जमीन हैं। वारकों में यूरोपियन और देशी फौजों के लोग रहते हैं। वाटर गेट के पास उत्तम तोपखाना है, जिसमें दुश्मनों और दूसरों से लिये हुए हर किसिम के छोटे वड़े गोलों के नमूनें, हर किसिम के हथियार, और हजारों हथियार, जो इस्तमाल के लिए तैय्यार हैं, रक्खे हुए हैं। कोयले घाट स्ट्रीट में तोपखाने के इन्स्पेक्टर जनरल के आफिस में दरखास्त करने पर तोपखाना देखने की इजाजत मिलती है। किले में एक यूरोपियन रेजीमेन्ट और एक देशी पैदल रेजीमेंट रहता है और १०००० आदमी रह सकते हैं। किले से ६०० तोप दग सकती हैं। पृथ्वी में पहले पहल सन् १३७८ ई० में अग्नि अस्त्र (अर्थात् तोप, बन्दूक) का व्यवहार हुआ। सन् १८०७ ई० में टोपी की कल्पना हुई और सन् १८३४ से वंदुकों के काम में टोपी लाई जाती है; पहले वंदूक के घोड़े में चकमक का टुकड़ा लगाया जाता था। सन् १८९१

की मनुष्य-गणना के समय किले में ३४६८ मनुष्य थे; अर्थात् ३११९ पुरुष और ३४९ स्त्रियां।

सन् १६९८ ई० में दिल्ली के बादशाह की तरफ से ईष्ट इंण्डियन कम्पनी को अपनी हिफाजत के लिये किले बनाने का हुक्म मिला। उस समय के इंगलैंड के बादशाह 'फोर्ट विलियम' के नाम से पहला फोर्ट विलियम किला बनाया गया। कोयलाघाट ष्ट्रीट से उत्तर और फेरली प्लेस से दक्षिण वह किला था। उस के चारो तरफ खाई नहीं थी। उसका विस्तार पूर्व से पश्चिम २१० गज, दक्षिण १३० गज और उत्तर १०० गज था। उस में ४ बुर्ज थे, हर एक पर १० तोप रक्खी जाती थीं। उसी किले के नाम से वर्तमान किले का नाम फोर्ट विलियम पड़ा।

लार्ड नेपियर की प्रतिमा—किले से पश्चिम-दक्षिण घास जमी हुई गोलेकार जमीन पर कमांडर इन्चीफ लार्ड नेपियर की धातु की प्रतिमा है; वह जंगी पोशाक पहने हुये प्रिंसेप्स घाट की तरफ मुख किये हुये घोड़े पर सवार है।

लार्ड डफरिन की प्रतिमा—यह सन् १८८४ ई० से १८८८ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे। किले से करीब २०० गज पूर्व चौमुहानी सड़क के बीच में, जहां से किले में २ रास्ते गये हैं, एक खूबसूरत पायसतून पर इनकी उत्तम पत्थर की प्रतिमा है, जो चन्दे से बनी है। इसके बनाने में ४१ हजार रुपया खर्च पड़ा है।

लार्ड सर जेम्स उटरम की प्रतिमा—यह लार्ड डफरिन की प्रतिमा से पूर्व पार्कष्ट्रीट के फाटक के सामने धातु से बनी हुई घोड़े पर सवार है। यह लेफ्टिनेन्ट जनरल और बड़ा जवांमर्द था, जो ६० वर्ष के होकर सन् १८६३ ई० में मरा।

एशियाटिक सोसाइटी—यह नम्बर ५७ पार्कष्ट्रीट में है, जो सन् १७८४ ई० में एशियाखंड के इतिहास, सिल्प, साहित्य, आदि के शोध करने के लिये कलकत्ते में कायम हुई। महीने के पहिले बुध को इसकी बैठक होती

है। इसमें करीब ३०० मेम्बर और एक बड़ी लाइब्रेरी (पुस्तकालय) है, जिसमें १५ हजार जिल्द से अधिक पुस्तकें रक्खी हैं, जिन में ५ हजार से अधिक संस्कृत, अरबी, ब्राह्मी, नैपाली, पारसी, और हिन्दी की पुस्तकें हाथ की लिखी हुई हैं। सोसाइटी में सिक्के, ताम्बा की सनदें, तस्वीरें, नकशे इत्यादि जो रक्खे हैं वे देखने लायक हैं। आनरेरी सेक्रेटरियों के पास दरखास्त करने पर लाइब्रेरी और सिक्कों को आदमी देख सकते हैं।

अर्ल मेयो की प्रतिमा—यह सन् १८६९ ई० से हिन्दुस्तान के गवर्नरजनरल और वाइसराय थे, जो सन् १८७२ की तारीख १८ फरवरी को एण्डेमन टापू में एक खूनी के हाथ से ५० वर्ष की उमर में मारे गये। अर्ल मेयो बड़े नेक और सर्व हितैषी थे। लार्ड डफरिन की प्रतिमा से पूर्वोत्तर की ओर मीनार से तीन चार सौ गज दक्षिण चौमुहानी सड़क पर धातु से बनी हुई घोड़े पर सवार इनकी उत्तम प्रतिमा है।

किले के मैदान का मीनार—गवर्नमेंटहौस से पूर्व-दक्षिण और धर्मतल्ला बाजार से दक्षिण १६५ फीट ऊंचा सर डेविड अकतरलोनी का मनुमेंट अर्थात् समाधिस्तंभ है। उसके सिर पर चढ़ने के लिए उसके भीतर २६३ सीढ़ियां बनी हैं। ऊपर चढ़ने से सारा शहर दिखाई देता है। पुलिस कमिश्नर के पास दरखास्त करने पर उसकी कुंजी मिलती है। अकतरलोनी ने हैदरअली के समय से हिन्दुस्तान की लड़ाईयों में काम किया था और सन् १८२३ ई० में मालवे और राजपूताने में रेजीडेंट था।

मसजिद—धर्मतल्ला ष्ट्रीट के कोने के पास श्रीरंगपटन के सुविख्यात टीपू सुलतान के पुत्र प्रिंस गुलमहम्मद ने सन् १८४२ ई० में एक बड़ी मसजिद बनवाई, जिसमें नित्य सैकड़ों मुसलमान निमाज पढ़ते हैं।

पारसियों का अग्निमन्दिर—यह २६ नं० एजरा ष्ट्रीट में है। प्रसिद्ध पारसी सौदागर मिष्टर रुस्तमजी कवासजी ने सन् १८३७ में इसको बनवाया।

पारसी टावर—यह बेलियाघाट रोड में है। इसको नौरोजी सरोबजी पारसी सौदागर ने सन् १८२२ में तैय्यार कराया था।

म्युनिस्पल बाजार—यह म्युनिस्पल आफिस ष्ट्रीट के दक्षिण बड़ा भारी तीन रोख का चौमुहा मकान है, जो सन् १८७४ ई० में ६ लाख ६५ हजार रुपये के खर्च से तय्यार हुआ। इसमें यूरोपियन लोगों के खर्च की सामग्री विकने के लिए सजी रहती है। इसके बाद जष्टिस लोगों ने धर्मतल्ला बाजार को ७ लाख रुपये में खरीद किया।

प्रेसीडेन्सी जेल—यह जनरल हस्पिटल के पास मैदान में १८ फीट ऊंची दीवार से घेरा हुआ है। इसमें एक तिमंजिला मकान है, जो खियाल किया जाता है कि सिराजुद्दौला का दिहाती मकान था। इस जेल में औसत १३०० कैदी रहते है, जिनमें ८० से १०० तक यूरोपियन, यूरेसियन, आरमेनियन, और यहूदी हैं। इनमें से बड़े मैयाद वाले लगभग ७०० कैदी बंगाल गवर्नमेंट के लिये छापे और किताब की जिल्दबंदी के काम और छोटे मैयाद वाले कैदी तेल पेरने और गेहूं पीसने का काम करते हैं। जेल के छापेखाने से हर महीने में औसत ७० लाख से ८० लाख तक फार्म निकलते हैं। कैदियों के वर्ष दिन के काम का कीमत लगभग १२०००० रुपये हैं। सुपरिंटेंडेंट के पास दरखास्त करने पर जेलखाने देखने की इजाजत मिलती है।

अलीपुर का जेल—यह जेल वेलवेडियर और भवानीपुर के पुल के बीच में अत्युत्तम जेलखाने का नमूना है। इसमें १७३४ कैदी रह सकते हैं। लगभग १२०० कैदी दस्तकारी के काम में लाये गए हैं। खास करके बिनाई का काम होता है। सुतरी कल द्वारा काती जाती है। बिनाई हाथ से होती है। इसके अलावे इस जेल में बंगाल के छोटे जेलों के काम के लिए खाने, पीने और पकाने के बरतन बनते हैं और लोहे और लकड़ी का काम होता है। बढ़ई और लोहार भी दूसरे जेल के काम के लिये यहां सिखलाये जाते हैं। जेल देखने का दरखास्त २४ घंटे पहले सुपरिंटेंडेंट के पास देना चाहिये। एतवार के दिन कोई जाने नहीं पाता है।

मुजरिम लड़कों को चाल सुधारने का स्कूल—यह अलीपुर के जेल के सामने सन् १८८०-८१ ई० में कायम हुआ। नवजवान मोजरिमे तालीम के कैद में रक्खे जाते हैं। इनको अच्छे और सेहतवर खोराक दिया

जाता है और तरक्की के लिये पेशा सिखलाया जाता है। वे डेस्क, अलमारी, कुरसी, पलंग, इत्यादि चीजें बनाते हैं। उनमें लोहे और टीन के काम करने वाले, जिल्द बान्धने वाले और छापने वाले भी हैं। सुपरिंटेंडेंट से दरखास्त करने पर इसको देखने का हुक्म मिलता है।

सेंटपाल्स कैथेड्रल--यह गिरजा के मैदान के अखीर दक्षिण में है। इस इमारत की सब से अधिक लम्बाई २४७ फीट, चौड़ाई, ८१ फीट और उंचाई २०१ फीट है। खास गिरजा १२७ फीट लम्बा और ६१ फीट चौड़ा है। इसमें ५० हजार पाउण्ड अर्थात् ५ लाख रूपया खर्च पड़ा; जो हिन्दुस्तान और इंगलैंड के लोगों के चन्दे से आया था। गिरजा सन् १८४७ में खुला। इसके पास अंगरेजों के बहुत मनूमेंट अर्थात् समाधि चिन्ह हैं, जिनमें १६ मशहूर हैं।

सेंट जान्स-चर्च-यह पुराने कबरगाह की जमीन पर सन् १७८७ में २ लाख के खर्च से तैय्यार हुआ। सन् १८११ और १८६३ में इसकी तरक्की हुई। इसमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं। यहां प्रसिद्ध अंगरेजों की बहुत कबरें हैं।

सेन्ट जेम्स चर्च--यह लोवर सर्कुलर रोड पर २४४ फीट लंबा, १९४ फीट चौड़ा और ६५ फीट ऊंचा है; जिसमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं। यह सन् १८६४ में तय्यार हुआ। जमीन के कीमत के अतिरिक्त इसमें २ लाख रुपया खर्च पड़ा।

स्कूल और कालिज--कलकत्ते में प्रेसीडेंसी कालिज, संस्कृत कालिज, मेडिकल कालिज, इंजिनियरिंग कालिज, बिशप्स कालिज, कलकत्ता मदरसा, डाक्टर डफका स्कूल इत्यादि हैं, जिनमें कई स्कूल लड़कियों के लिये भी हैं। किसी में बिना फीस के लोग पढ़ाये जाते हैं, किसी में यतीम याने बिना मा बाप के लड़के शिक्षा पाते हैं, किसी में गाना बजाना और किसी में हुनर के काम सिखलाये जाते हैं।

अस्पताल--कालिज-स्ट्रीट पर मेडिकल कालिज का अस्पताल दुनियां के बड़े अस्पतालों में से एक है। इसमें ३०० मरीज रह सकते हैं। इसके पास तीन मंजिला एंडिन हस्पिटल है।

अस्पताल के पूर्वोत्तर आई इनफर्मरी याने आंख की दवा का सफाखाना है। इसमें ५०० मरीज रह सकते हैं।

प्रेसीडेंसी हस्पिटल में मरीजों को प्रतिदिन डवल कमरों के लिये ५ रुपये और १ कमरे का २ रुपये देना पड़ता है। इसमें १२१ मरदों के लिये, १८ औरतों के लिये और १२ लड़कों के लिए बिस्तर हैं।

स्ट्रेण्ड रोड के उत्तर मेओ नेटिव हस्पिटल है। इसमें १२० रोगी रह सकते हैं। अस्पताल के सामने दरिया के किनारे के घाट पर शहर के मुर्दे जलाये जाते हैं।

कोढ़ी खाना—यह एम्हर्ष्ट स्ट्रीट में है।

इण्डियन मिउजियम–(अजायबखाना)—यह किले के मैदान के पूर्व चौरंगी रोड पर (नंबर २७ और २८) है। यह ता० १ फरवरी से ता० १ नवम्बर तक १० बजे से ५ बजे तक और ता० १६ नवम्बर से ३१ जनवरी तक १० बजे से ४ बजे तक हर रोज आम लोगों के लिए खुला रहता है, पर विद्यार्थियों के सिवा दूसरे लोगों के लिए बिफे और शुक्र को बन्द रहता है। ता० १ मई से १५ मई तक और ता० १ नवम्बर से १५ नवम्बर तक सफाई और मरम्मत के लिए बन्द रहता है। बन्द के दिनों में अफिसरों में से एक के पास दरखास्त करने पर आदमी बरामदों में जासकता है।

अजायबखाने का अगवास चौरंगी रोड पर ३०० फीट लम्बा है और इसकी चौड़ाई सदर स्ट्रीट की तरफ २७० फीट है। अगवास की तरफ का दो मंजिला मकान बहुत ऊंचा है। दो बाजुओं में, जो आगे निकले हुए हैं, और मध्य के पेशगाह में उमदे खंभे लगे हैं। एक चौड़ी सीढ़ी, जो दोनों ओर खुली हुई है, पेशगाह में ऊपर तक चली गई है। एक कमरे में, जो ८० फीट लम्बा और ३० फीट चौड़ा है, मेहराबों के ३ कतार डवल सीढ़ी के घर में चले गये हैं, जहां से दहिने और बाएं ऊपर को सीढ़ी गई हैं।

अजायबखाने का आंगन १८० फीट लंबा और १०५ फीट चौड़ा है, जिसमें घास, पेड़ और पौधे लगे हैं। आंगन के चारों बगलों पर मेहराबदार सायबान हैं; दो तले पर भी चारों तरफ बरंडा है। पूर्व और पश्चिम ग्यारह ग्यारह और उत्तर और दक्षिण सात सात मेहराबियां बनी हैं।

इमारत के चारो कोनों के प्रत्येक कमरा ४४ फीट लंबा और ४० फीट चौड़ा है। अजायबखाने की इमारत सन् १८७९ ई० के पीछे तय्यार हुई। इसके बनाने में १ लाख ४० हजार पाउण्ड खर्च पड़ा।

इसमें संपूर्ण एसिया की अद्भुत और अनोखी चीजें भरी हैं। जल और थल के अद्भुत धातु, वनस्पति तथा जीव कृत्रिम और स्वभाविक दोनों प्रकार के लाकर के इसमें रक्खे गए हैं। फल, फूल, पेड़ों की टहनिया, मरे हुए जीव जन्तु और नए नए भांति के पक्षी, कीट, पतंग इत्यादि शीशों के भीतर ऐसे दवे के अर्क देकर रक्खे गए हैं कि सब ताजे और जीवित जान पड़ते हैं। इनके अलावे इसमें भांति भांति के अन्न, वस्त्र, वर्तन, पसारी की चीजें, इत्यादि के नमूने रक्खे गए हैं। इसके समान अजायबखाना भारतवर्ष में दूसरा नहीं है।

पहले नीचेवाले कमरों में चारों तरफ देख कर. तब प्रधान सीढ़ी से चढ़ कर ऊपर के मंजिल में चारो तरफ देखना चाहिये।

नीचे के दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण के कमरों में अशोक के समय की बौद्ध मूर्तियां, जो २००० वर्ष से पहले की हैं; एक बहुत पुराना तोरन (फाटक); पटने की दो बड़ी मूर्तियां; बुध गया से लाये हुए अशोक के समय के कई खंभे के नमूने और पत्थर के हिस्से और मथुरा की संगतराशी और लेख हैं। कमरे के दक्षिण खिड़की के आगे ६ फीट ऊंची बुद्ध की मूर्ति है। दरवाजे के बाएं गुप्त बरामदे में दीवार के आस पास बुद्ध सम्बन्धी संगतराशी का उत्तम सिलसिला है। दूसरा गुप्त-बरामदा १६० फीट लम्बा और ४० फीट चौड़ा है। (गुप्त राजाओं ने चौथी और पांचवीं शतक में उत्तरी हिन्दुस्तान में राज्य किया था)। बौद्ध सम्बन्धी संगतराशी दहिने और ब्राह्मण सम्बन्धी औ जैन सम्बन्धी बाएं तरफ है। उड़ीसे के हिन्दु के मन्दिरों की संगतराशी के नमूने का सिलसिला बाएं की दीवार में लगा है। दूसरा सिलसिला बम्बे का है। बनारस के पास के सारनाथ से, जो चीजें आई हैं, वह अधिक मशहूर हैं। एक मार्बुल का टुकड़ा है, जिससे बुद्ध का जन्म, शिक्षा और मौत जाहिर होता है। बरामदे के सामने ब्राह्मण सम्बन्धी संगतराशी है, जिनमें से बहुतेरे कालिंजर, विहार, गौड़, कटक, इत्यादि से और चन्द जावा टापू से आये हैं।

बीच में शीशे लगे हुए वाक्स हैं, जिनमें से एक में अनेक भांति के वेश कीमती पत्थर और दूसरे टुकड़े हैं, जो सन् १८८१ में बुद्धगया के मन्दिर के पास उसको खोदते समय मिले थे। दूसरो में पुराने समय के कुम्हार के वरतन और धात और पत्थर के औजार हैं। एक दूसरे वाक्स में पत्थर की कुल्हाड़ी और (लड़ाई वाला) पत्थर का हथियार, जो पुराने समय में हिन्दुस्तान में वनते थे, हैं। चौथे वरामदे में पत्थर पर लेख, वहुतेरी किसिम की इल्मी इमारतें और एफ्रिका के इजिप्ट देशका एक मोमी भी है। मोमी मुर्दे की उस लाशको कहते हैं, जिसको इजिप्ट के लोग मोम आदि मसाले देकर ऐसी तरकीव से रखते थे कि वह सड़ती गलती नहीं।

पूर्व के कमरे में लम्बे वाक्सों में समुद्र के जानवरों के नमूने हैं। उनमें से चन्द समुद्र के घास पात के समान मालुम होते हैं, पर वें सव मरे हुए जानवर हैं। वाएं तरफ और वीच के टेवुल वाक्सों में सीप, घोघा, कौड़ी, वड़ा केकड़ा; हर किसिम की तितलियां, उचुरुंग, कीड़े, रेशम के कीड़े, विच्छी, इत्यादि मृत जानवर हैं।

उत्तर के कमरे में हर किसिम के धातु और पत्थर के टुकड़े इत्यादि हैं और पश्चिमोत्तर के कोने के कमरे में वहुत नकशे टंगे हुए हैं।

सीढ़ीघर के सिर के पास वर्दवान के महाराज महतावचन्द वहादुर की (सन् १८७७) दी हुई महारानी विक्टोरिया की मार्वुल की प्रतिमा है, जिसके पीछे पेशगाह के ऊपर ८९ फीट लम्वा, ५० फीट चौड़ा और ५० फीट ऊंचा लाइब्रेरी का वड़ा हाल है, जिसमें सन् १८८७ ई० में करीव १३००० जिल्द पुस्तकें थीं। लाईब्रेरी के पास के वरामदे में किड़े, मकोड़े के नमुने हैं।

दक्षिण के वरामदे में मरे हुए चिड़ियों का झुन्ड है। इसमे दक्षिण-पूर्व के कमरे में सूखे हुए कीड़े मकोड़े हैं। वहां चमड़े और मांस निकालकर जानवरों की समूचा देह की हड्डियां जैसे के तैसे खड़ी की गई हैं, जिनमें एक वड़ी कच्छू की हड्डी है।

पूर्व के कमरे में वाघ, सिंह, गेंडा, हरिन, भैंसे, विल्ली, नेवला, खरगोस, गधे, आदि दूध पिलानेवाले जानवरों की देह के सिलसिले उत्तम तरह से लगे हैं।

समुद्र के एक महा मच्छ की तमाम हड्डी ४१ फीट लम्बी है। एक बड़ा मच्छ का जबरा है, जो मच्छ १०० फीट लम्बी होगी। ११ फीट ऊंचे एक हाथी की समूची हड्डी है। दीवारों में बहुत किसिम के जानवरों की सींगें लटकाये गये हैं। वहां शिवालिक पहाड़ की एक बिल्ली शेर के समान बड़ी है। किड़ों के दरमियान एक मगर १८ फीट और एक सांप १८ फीट लम्बा है। पूर्वोत्तर के कमरे में खास करके मछलियां हैं।

अजायब घर के पूर्वोत्तर के कोने से पूर्व उसमें लगा हुआ तीन मंजिला नया अजायब खाना बना है, जिसकी दीवार की लम्बाई सदर ष्ट्रीट के अगवास पर २५६ फीट और छत की ऊंचाई ८४ फीट है। उस इमारत और उसके असवाव में ३ लाख रुपया खर्च पड़ा है।

नीचे के मंजिल में हिन्दुस्तान की अनेक कोमों की जिन्दे के समान मूर्तियां, उनकी पूजा की चीजें, पोशाक, जेवर, हथियार, काम का औजार, बर्तन, इत्यादि सामान हैं।

दूसरे मंजिल में बहुत नफीस कारिगरी की चीजें; असली और नकली जवहरियों की चीजें; चान्दी, पीतल और ताम्बे की चीजें; कारचोबी और फुलकारी का काम; कुम्हार की बनाई चीजें; वार्निस किया हुआ काम; लकड़ी, हाथीदांत और मार्बुल काटकर बने हुए असबाब, सींग के असवाब; चमकीले हथियार; चटाई, दौरी, इत्यादि सामान हैं।

इनके अलावे अजायबखाने में अनेक भांति के कपड़े, लैस, कारचोबी के काम, लकड़ी और हाथीदांत की बनी चीजें, कुम्हार की बनाई चीजें, घातकी दस्तकारी, हिंदूस्तान के मैदान और पहाड़ के बसनेवाले खास कोमों अर्थात् कोल, संथाल, मुंडा, जाट, राजपूत, ब्रह्मा के कैरेन, ऐंडमन के नेग्राइट, इत्यादि की प्रतिमूर्तियां, रंग, तेळ, तेल के बीज, दवा, सूत, सींझने वाली चीजें, इत्यादि हैं।

गवर्नमेंट हौस (बड़े लाट की कोठी)—यह टेलीग्राफ आफिस से दक्षिण पश्चिम है। इसके दक्षिण २ मील तक किले का मैदान है। ६ एकड़ के बाग के उत्तर भाग में यह खड़ा है। बाहर के घेरे में उत्तर और

दक्षिण दो दरवाजे बने हैं; पूर्व और पश्चिम दो दो उमदे फाटक के रास्ते हैं। गवर्नर जनरल मार्किस आफ वेलस्ली के हुकुम से सन् १७९९ ई० में इसकी नेव पड़ी और सन् १८०४ में १३ लाख रुपये के खर्च से यह तय्यार हुआ।

गवर्नमेंटहौस के ४ बाजू हैं । इसका बड़ा दरवाजा उत्तर है। प्रवेश करने पर देवढ़ी के भीतर दहिने मार्किस आफ वेलस्ली की उजले मार्बुल की प्रतिमा देख पड़ती है। खाना खाने के कमरे में सफेद मार्बुल का फर्श लगा है। एक थ्रोनरूम याने शाहीतख्त का कमरा है । सुलतान टीपू का शाहीतख्त ईसमें रक्खा गया, इस लिये इसका नाम थ्रोनरूम पड़ा। इनके अतिरिक्त नास्ता का कमरा, कौन्सिल-कमरा इत्यादि हैं। खाना खाने के कमरे और उसके पास के कमरों के ऊपर नाच घर है। कमरों में हिन्दुस्तान के बहुतेरे गवर्नर जनरलों की और दूसरे बहुतेरे शरीफों की तस्वीरें हैं।

दक्षिण के दरवाजे के सामने सिक्ख-लड़ाई से लाई हुई पीतल की एक उत्तम तोप है, जिस के दोनों तरफ सेरंगापाटन की लड़ाई से लाई हुई २ पीतल की तोपें हैं, जिन पर शेरों के सिर और पंजे अजब तरह से बने हैं और उत्तर के दरवाजे के सामने एक तरफ काबुल की लड़ाई से लाई हुई और दूसरी ओर हैदराबाद से लाई हुई पीतल की तोपें हैं।

ट्रेजरी—यह गवर्नमेंट हौस से पश्चिम बहुत बड़ी तीन मंजिली इमारत है, जिस के कई बाजू बने है। इस का काम सन् १८८२ ई० में आरंभ होकर सन् १८८४ में समाप्त हुआ।

लार्ड हार्डिंग की प्रतिमा—यह गवर्नमेंट हौस के पूर्व-दक्षिण तीन कोनी जमीन पर मिले हुए धातु से बनी हुई घोड़े पर सवार है। प्रतिमा और घोड़े की बनावट उत्तम है, जो आम लोगों के चन्दे से बने हैं । लार्ड हार्डिंग सन् १८४४ ई० से १८४८ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे।

लार्ड लारेंस कीप्रतिमा—गवर्नमेंट हौस के दक्षिण-दरवाजे के पास मिले हुए धातु से बनी हुई पूरी लम्बी इनकी प्रतिमा खड़ी है। लार्ड लारेंस सन् १८६४ ई० से १८६९ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे।

लार्ड केनिंग की प्रतिमा—यह गवर्नमेंट हौस के पश्चिम-दक्षिण तीन कोनी जमीन पर मिले हुए धातु से बनी हुई घोड़े पर सवार है। लार्ड केनिंग सन् १८५६ ई० से १८६२ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे।

सर इस्टुआर्ट कालिवन की प्रतिमा—यह गवर्नमेंट हौस के पश्चिम सड़क के पास तीन कोनी जमीन पर खड़ी है। प्रतिमा मार्बुल की बनी हुई पूरी लंबी है। सर इस्टुआर्ट कालिवन सन् १८८७ से १८९० ई० तक बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे।

टाउनहाल—गवर्नमेंट हौस से पश्चिम और हाईकोर्ट से पूर्व टाउन हाल है, जिस को सन् १८०८ ई० में कलकत्ते के वासिन्दों ने ७० हजार पाउंड के खर्च से बनवाया (इस समय १६ रुपये का एक पाउंड होता है)। इस में आम लोगों की कमीटी होती है।

यह इमारत दो मंजिली है। गाड़ी खड़ी होने का बरंडा उत्तर तरफ बना है, जिसमें गोलेकार बहुत मोटे और ऊंचे ८ स्तंभ लगे हैं। दक्षिण के कमरे में कूच-विहार की वर्तमान महारानी के पिता केशवचन्द्रसेन की बड़ी तस्वीर और अन्य लोगों की मार्बुल की ४ आधी मूर्तियां और पूर्व तथा पश्चिम दो मंजिले पर जाने की सीढ़ियां हैं। दोनों सीढ़ियों पर मार्बुल की दो दो आधी प्रतिमा देखने में आती हैं। कमरे के दक्षिण १७२ फीट लम्बा और ६५ फीट चौड़ा बड़ा हाल (कमरा) है, जिसमें गोलेकार बीस बीस खंभाओं के दो कत्तार हैं। हाल के मध्य में उत्तर तरफ महाराज रामनाथ टैगोर बहादुर सी. एस. आई. की मार्बुल की प्रतिमा मार्बुल की कुर्सी पर बैठी है और पश्चिम किनारे पर हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (१७८६-१७९३) मार्किस आफ कार्नवालिस की मार्बुल की प्रतिमा खड़ी है। इस हाल के दक्षिण एक दक्षिण रूख का दालान है, जिसमें हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (१७७४—१७८५) वारेन हेष्टिंग की मार्बुल की प्रतिमा खड़ी है, जिसके दोनों बगलों पर दो छोटी प्रतिमा हैं।

ऊपर के उत्तरवाले कमरे में, जिस में दोनों बगलों पर नीचे से सीढ़ी

गई हैं, छोटी बड़ी २३ तस्वीरें और मार्बुल की ४ आधी प्रतिमा है, जिन में मार्किस आफ वेलेस्ली,महारानी विक्टोरिया, लार्ड मेटकाफ, लार्डलेक्, द्वारिका-नाथ टैगोर इत्यादि की तस्वीरें और राजा सर राधाकंत बहादुर, प्रसन्नो कुमार टैगोर इत्यादि की प्रतिमा हैं। इस कमरे के दक्षिण नीचे वाले बड़े हाल के ठीक ऊपर नीचेही के समान हाल है। इस में मानिकजी रुस्तमजी, सर विलियम ग्रे, क्लैव इत्यादि की ६ तस्वीरें हैं। हाल मे दक्षिण नीचे के दालान के ऊपर दोनों कोनों पर ४३ फीट लम्बे और २१ फीट चौड़े दो कमरे हैं और मध्य में ८२ फीट लम्बा और ३० फीट चौड़ा एक कमरा है, जिस में २ तस्वीरें लगी हैं।

नीचे का मंजिल २३ फीट और ऊपर का २९½ फीट ऊंचा है। नीचे के मंजिल में मार्बुल का औ ऊपर के मंजिल में टीक की लकड़ी के तख्तों का फर्श है।

लार्ड विलियम वेंटिक की प्रतिमा—टाउन हाल के सामने दक्षिण पूरी लम्बी, मिले हुए धातु से बनी हुई, इन की प्रतिमा खड़ी है। यह सन् १८२८ से १८३५ ई० तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे।

हाईकोर्ट—टाउनहाल से थोड़ा पश्चिम नई हाईकोर्ट है, जो सन् १८७२ ई० में तय्यार हुई। इस जगह पर पुराना सुप्रीमकोर्ट और ३ मकान थे। बड़ा चौगान (अंगनई) के पूर्व और पश्चिम बगलों पर दो मंजिली और उत्तर और दक्षिण तीन मंजिली इमारत हैं। चौगान पूर्व से पश्चिम को लंबा है। इसके उत्तर और दक्षिण सत्रह सतह और पूर्व और पश्चिम नव नव मेहराबियां बनी हैं; तीन तरफ एकहरा और दक्षिण तरफ दोहरा बरंडा है। बरंडों के पीछे कमरे हैं। चौगान में फुलवाड़ी और इस के मध्य में कल के पानी का एक छोटा हौज है। प्रधान दरवाजा दक्षिण, आम लोगों की गाड़ी के (३) दरवाजे पूर्व और पीछे के (३) दरवाजे पश्चिम हैं।

उत्तर को छोड़ कर तीन तरफ ऊपर जाने के लिये सीढ़ियां बनी हैं। प्रधान सीढ़ी दक्षिण के टावर में है। उसी जगह सर एडवार्ड हाइड ईष्ट की प्रतिमा देखने में आती है।

दूसरे मंजिल में ७ कचहरियां, जज लोगों और वारिष्टरों के कमरे, जज लोगों की लाइब्रेरी, और वार लाइब्रेरी, वकीलों के कमरे, और एटर्नियों के कमरे इत्यादि हैं। दूसरे मंजिल में चारो ओर चौगान की तरफ और वाहर दक्षिण तरफ तीनों मंजिल में वरंडे हैं।

दक्षिण-पश्चिम के कोने में चीफ जस्टिस की कचहरी में तीन चीफ जस्टिसों की तस्वीरें हैं। दक्षिण-पूर्व के कोने के पास के सेशन जज की कचहरी में तीन अङ्गरेजों की वड़ी तस्वीरें हैं, जिनमें २ चीफ जस्टिस थे। अपील के दूसरे दरजे की कचहरी में, जो प्रधान सीढ़ीवर से पश्चिम है, हाईकोर्ट के पहला देशी जज कश्मीर के रहनेवाले शंभुनाथपण्डित की वड़ी तस्वीर है। पूर्व वारिष्टरों की लाइब्रेरी और पूर्व के कोने में एटर्नियों की लाइब्रेरी है। प्रायः सव कचहरियां दक्षिण तरफ हैं। उनमें और उन के आगे के वरंडे में वारिष्टर, वकील और साधारण लोगों की भीड़ रहती है। कचहरियों में सर्वसाधारण लोगों के वैठने के लिये वहुत सी वेंच और कुर्सियां रक्खी हुई हैं।

ऊपर वाले तीसरे मंजिल में टैक्सिंग आफिसर, क्लार्क आफ दी क्राउन, कोर्ट रिसीवर; इनसालवेंट कचहरी का प्रधान क्लार्क, लीगल रिमेंब्रेसर और ऐडवोकेट जनरल के चेम्बर आदि के आफिस हैं।

इस समय हाईकोर्ट में एक चीफ जस्टिस और १२ जज हैं, जिनमें २ हिंदू, १ मुसलमान और वाकी सव अङ्गरेज हैं। इस हाईकोर्ट के आधीन वंगाल, विहार, ऊड़ीसा, छोटा नागपुर, और आसाम है, जो २००५४७ वर्ग मील में फैलते हैं और उनमें ७६८२३८२० आदमी रहते हैं।

हाईकोर्ट में इन्साफ के काम इप्तदाई और अपील २ हिस्सों में तकसीम हैं। इप्तदाई में केवल कलकत्ते शहर के मोकदमे होते हैं और अपील में फौजदारी और दीवानी मोकदमें, अपील और निगरानी होकर जिले और दूसरी मातहत की कचहरियों से आते हैं; हाईकोर्ट की इप्तदाई कचहरी की अपील भी इसी में होती है। कचहरी वेंचों में तकसीम है। हर एक वेंच में एक, दो या इससे अधिक जज रहते हैं। जिस वेंच में एक जज है, उसकी

अपील अधिक जजों की वेंच में होती है। सुप्रीमकोर्ट और सदर दीवानी अदालत दोनों मिल कर सन् १८६२ ई० में हाईकोर्ट वनी।

लार्ड नार्थब्रूक की प्रतिमा—यह सन् १८७२ से १८७६ ई० तक हिंदुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे। हाईकोर्ट के दक्षिण के खास दरवाजे के सामने पायसतून पर इनकी पूरी लंबी प्रतिमा है, जो आम लोगो के चन्दे से वनी थी। पायसतून पर अङ्गरेजी, वंगला, पारसी, और हिन्दी लेख हैं।

वंगाल वंक—हाईकोर्ट से पश्चिम हुगली गंगा के किनारे पर कलकत्ते की उत्तम इमारतों में से वंगाल वंक की इमारत है। इसका अगवास गंगा की ओर है। इसकी छत और दीवारों में सुनहरी मीनाकारी का काम वना है और इसके फर्श में काले और सफेद मार्वुल के तख्ते जड़े हुए हैं। यह वंक सन् १८०९ ई० में कायम हुआ था। इसमें परामिसरी नोट इत्यादि का सरकारी काम होता है।

एडेनगार्डन—वंगाल वंक से दक्षिण वावूघाट के पास एडेनगार्डन है। इस वाग में हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (सन् १८३६ से ४२ तक) लार्ड आकलेंड की वहिन मिस एडेन की प्रतिमा खड़ी थी, जो थोड़े दिनों से हाईकोर्ट के पास की सड़क पर रक्खी गई है। यह स्थान सुवह और शाम को टहलने के लिये वहुत खुशनुमा है। इसमें लम्बी चौड़ी जमीन पर घास जमाई गई है; घुमाव के रास्ते वने हैं; जगह २ फूल और झाड़ लगे हैं; रात में रोशनी होती है और अच्छे मौसिम में शाम को सैकड़ों आदमी टहलते हैं। वाग के पश्चिम हिस्से में नियत दिन के शाम को एक सुन्दर अठपहले वंगले में अङ्गरेजी वाजा वजते हैं। वाग के पास कलकत्ते के क्रिकेट की जमीन है। एक जगह पानी के वगल पर एक वरमिज पैगोडा (ब्रह्मा देश का मन्दिर) खूवसूरती के साथ खड़ा है, जो सन् १८५४ की ब्रह्मा की लड़ाई के पीछे ब्रह्मा के शहर प्रोम से लाया गया और सन् १८५६ में यहां वनाया गया। इसके पांच खंभाओं के चार कत्तारों के ऊपर अजव तरह से एक के ऊपर दुसरे; चारो तरफ से क्रम से छोटे होते हुए ८ छप्पर हैं।

लार्ड आकलेंड की प्रतिमा—यह सन् १८३६ से १८४२ ई० तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे। इनकी धातु की प्रतिमा एडेनगार्डन के उत्तर फाटक के सामने खड़ी है।

सर विलियम की प्रतिमा—यह जंगी जहाज की फौज के कमांडर थे; इनकी सफेद मार्बुल की प्रतिमा एडेनगार्डन के दक्षिण हुगली नदी के किनारे पर खड़ी है।

वालंटियरों की इमारत—हाईकोर्ट से दक्षिण स्वीमिंगबाथ (तैरने का हम्माम) और एडेन गार्डन के बीच में गंगा की तरफ मुख करके कलकत्ते के वालंटियरों की इमारत खड़ी है। हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय लार्ड लैंसडौन ने सन् १८८९ ई० की पहली अप्रेल को इसकी नेव का पत्थर रक्खा। सन् १८९० की फरवरी में चन्दे के खर्च से इमारत तय्यार हुई। इमारत और इसके सामान में करीब ८०००० रुपया लगा है। इसमें ५०००० हथियार आदि सामान रह सकते हैं और एक बहुत बड़ा कमरा है, जिसमें पांच छः सौ मेम्बर, जिनका नाम लिखा है, बैठते हैं।

तैरने का हम्माम—इसको सन् १८८७ में लेफ्टिनेंट गवर्नर ने खोला। रेजिष्टर में ४०० से अधिक नहानेवाले आदमियों का नाम लिखा है। इमारत का काम बहुत अच्छा है। इसकी छत लोहे की है। हम्माम १०० फीट लम्बा और ३४ फीट चौड़ा है। इसके पानी की गहराई ६ फीट से ९½ फीट तक बदला करती है। महीने में एक दफे पानी निकाल कर हम्माम साफ कर दिया जाता है। असबाब पहनने के कमरे टीक की लकड़ी के बने हैं। हर दरजे और हर कौम के लोगों को इस हम्माम में नहाने का समान अधिकार है।

छोटी अदालत—हेयर ष्ट्रीट के उत्तर बगल पर पोष्ट-आफिस से दक्षिण पुराने पोष्ट-आफिस की जगह पर छोटी अदालत की तीन मंजिली इमारत है। सन् १८७२ ई० में इसका काम आरंभ हुआ; १८७४ में यह खुली। यह ३३० फीट लम्बी और औसत में ६० फीट चौड़ी है। इसके हर

एक मंजिल में उत्तर और दक्षिण वरंडे हैं। नीचे के मंजिल १८ फीट और दूसरे और तीसरे मंजिल पचीस पचीस फीट ऊंचे हैं। आम लोगों के जाने का दरवाजा वंकहाल-ष्ट्रीट में पूर्व तरफ है। ऊपर के मंजिलों की कचहरि-यों में जाने के लिये ३ चौड़ी सीढ़ियां वनी हैं। इस समय छोटी अदालत में ५ जज रहते हैं। देशी जज को छोड़ कर दूसरे संपूर्ण जज और रजिष्ट्रार वारिष्टर हैं। इस अदालत में २००० रुपये तक करजे के मोकद्दमें देखे जाते हैं।

मेटकाफ हाल—यह हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (सन् १८३६ ई०) लार्ड मेटकाफ के यादगार में हेयर ष्ट्रीट और ष्ट्रेण्डरोड के मेल के पास छोटी अदालत से पश्चिम दरिया के किनारे पर सन् १८४४ ई० में चन्दे के खर्च से तैयार हुआ। हाल दो मंजिला है, जिसके चारो तरफ गोलेकार वड़े वड़े २८ खंभे लगे हैं। प्रधान दरवाजा पूर्व है। नीचे के मंजिल खेती और वागवानी की सोसाइटी (मजलिस) के दखल में है और ऊपर वाले में कलकत्ता-पव-लिक लाइब्रेरी (आम पुस्तकालय) है। दरवाजे के सामने लार्ड मेटकाफ की आधी प्रतिमा देखने में आती है।

डलहौसी स्केयर और लालदीगी—टेलीग्राफ आफिस के उत्तर और करेंसी वंक से पश्चिम डलहौसी स्केयर है। इसके मध्य में एक वड़ा तालाव है, जिसके चारोतरफ सड़क वनी है और उत्तम वाग लगा है। स्केयर के चारो ओर लोहे के जंगले का घेरा; चारो कोनों पर टीन के पायखाने और दक्षिण वगल पर मध्य में इमारत के वरंडे में लार्ड हेष्टिङ्ग की मार्बुल की प्रतिमा खड़ी है। यह सन् १७७४ से १७८५ ई० तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे।

पोष्ट आफिस—डलहौसी स्केयर के पश्चिम किनारे के निकट कोयला-घाट ष्ट्रीट के कोने के पास पुराने किले की जगह पर खुवसूरत वनावट का पो-ष्ट-आफिस है, जो ६३०५१० रुपये के खर्च से तय्यार होकर सन् १८६८ई० में खुला। इसमें ऊंचे ऊंचे २ मंजिल हैं। पूर्व और दक्षिण खुवसूरत खंभे लगे हैं। दक्षिण-पूर्व का कोन अर्ध गोलाकार है। वहां उत्तम खंभे लगे हैं और उससे होकर एक ऊंचे गोलेकार हाल में जाना होता है, जिस में लेटर-वक्स है।

टेलीग्राफ आफिस—इसका काम सन् १८७३ ई० में आरंभ हुआ। यह शहर के उत्तम और बड़ी इमारतों मे से एक है। इसके प्रधान हिस्से का चेहरा उत्तर ओर डलहौसी स्कैयर की तरफ है। इसके तीन बाजू हैं। पूर्व ओर १२० फीट ऊंचा एक टावर बना है। पूर्व के बाजू का रोख पुराना कोर्ट-हौस स्ट्रीट की तरफ है। दूसरा बाजू पश्चिम और तीसरा बीच में है। इनमें इमारत का प्रधान हिस्सा और पूर्व का बाजू तीन मंजिला है और दूसरे दोनों बाजू दो मंजिले हैं। यह इमारत ईंटे से बनीहुई ७० फीट ऊंची है। इसमें उत्तर तरफ मध्य में आमलोगों के आमादरफ्त का दारवाजा बना है।

इस इमारत में बंगाल डिविजन का सुपरिंटेंडंट डाइरेक्टर जनरल, डिपोटी डाइरेक्टर जनरल, ऐसिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट, टेलीग्राफ के माष्टरें, आदि बहुत अफसर रहते हैं और यह टेलीग्राफ का प्रधान आफिस है।

करेंसी आफिस—यह डलहौसी स्कैयर के पूर्व, पश्चिम मुख की ऊंची इमारत है। इसके नीचे के मंजिल में करेंसीनोट की खरीद बिक्री और छोटे बड़े नोटों की परस्पर बदली होती है। कोई आदमी हो चोरी गये हुए नोटों के नम्बरों से मिलाकर उसको नोट के बदले में रुपये या रुपये के बदले में नोट मिलजाता है।

दरवाजे पर लोहे का खुबसूरत फाटक लगा है। मध्य का हाल बहुत बड़ा है। प्रवेश करने वाले के बाएं नये नोटों के फारमों के सन्दूकों का कत्तार है, जिनमें लाखों किरोड़ों रुपये के नोट रहते हैं। चांदी किले के तहखाने में रहती है, किन्तु जरूरी काम के लिये यहां के तहखाने में रक्खी जाती है। ऊपर वाले कमरे खुबसूरत हैं, जिनमें इटेलियन मार्बुल के फर्श लगे हैं।

यह इमारत पहले आगरा और माष्टरमैन के बंक के लिये बनी थी। उसके काम बंद होजाने पर सरकार ने इसको खरीद लिया।

अगारा बंक—करेंसी आफिस के पूर्व उसमें लगा हुआ आगरा बंक की तीन मंजिली खुबसूरत इमारत है। इसके नीचे के मंजिल में दक्षिण-पूर्व के कोने के पास बंक का आफिस है। तीन मंजिले पर बंक का अफसर रहता है। मैं इसी बंक में टिका था।

इस वंक का हेड आफिस लन्दन में है, जिसकी शाखा मद्रास; वम्बे, आगरा, करांची, लाहौर, रंगून, संगाई और एडिम्बरा में हैं।

पशु क्लेश निवारिनी सभा—इसका आफिस राधावाजार ष्ट्रीट पर १११ नंवर का है। यह सभा सन् १८६२ में कायम हुई; तवसे सन १८९० ई० तक इसके एजेंटों द्वारा पशुओं को क्लेश देनेवाले ८३६९३ आदमी की सजा हो चुकी है। पशु क्लेश निवारन के लिये पहले सन् १८६९ में एक्ट १ और सवसे पीछे सन् १७८० में एकट ११ पास हुए। इस समय इसका सभापति आनरेवुल मिष्टर जष्टिस नरीश हैं। सभा का खर्च चन्दे और जुर्माने से चलता है। सभा की तरफ से जानवरों के पानी पीने के लिये ३ तालाव और सड़कों पर जगह जगह ४९ चरन वने हैं।

वंगाल सेक्रेटरीयट (कंपनी वारक)—यह डलहौसी स्केयर के उत्तर सड़क के वगल पर तीन मंजिली इमारतों का सिल सिला है, जिसके दक्षिण का अगवास ६६० फीट लम्बा है। इमारतों के वढ़ाव और तवदील करने में १० लाख रुपये खर्च पड़े हैं। इसमें वंगाल सेक्रेटरीयट, जुडिसियल, पोलिटिकल, रेवीन्यू एजूकेशनल, पवलिक वर्क, इरीगेशन, आदि आफिसें वने हैं।

कष्टम हौस—डलहौसी स्केयर के पश्चिमोत्तर के कोने के पास ष्ट्रैंड रोड पर सन् १८२० ई० का वना हुआ कष्टम हौस है, जिसमें आमदनी और रफतनी माल का महसूल लिया जाता है। इसमें लगे हुए वहुत गोदाम हैं।

सन् १८९०—९१ ई० में यहां के वन्दरगाह में ३३९६१३७२२ रुपये का माल आया और वन्दरगाह से ४३७०९०६६१ रुपये का माल गया और हर किसिम की रफतनी से १८६८००६ रुपया और आमदनी से २६३८९१६ रुपया और निमक से २१९६८१५४ रुपया महसूल आया।

पोर्ट एंड शिपिंग आफिस—गवर्नमेंट ने सन् १८९० ई० में कष्टम हौस और पोर्ट कमिश्नर के आफिस के वीच में इसको वनवाया। सन् १८९१ की पहली जनवरी से इसमे पोर्ट अफसर का काम आरंभ हुआ और शिपिंग

माष्टर और पोर्ट का हेल्थ अफसर रहने लगे। वन्दरगाह सम्बन्धी काम के योग्य यह उत्तम आफिस है।

बंगाल वराडेड वेयर हौस—यह केनिङ्ग-ष्ट्रीट से पश्चिम क्लैव ष्ट्रीट में है, जो सन् १८३८ ई० में कायम हुआ। यह आफिसों का कतार है और कमसियल विल्डिंग कहलाता है। जो चीजें वाहर से आती हैं और जिन पर महसूल लगता है वे इसके जिन्सखाने और गोदामों में जमे होती हैं। वाहर जाने वाली चीजों के रहने का यहां कम काम पड़ता है।

निऊ सिनेगग—यह केनिंग-ष्ट्रीट पर यहूदी लोगों की मजहवी पूजा की इमारत है, जो सन् १८८४ ई० में खुली। यह १५० फीट लम्बी और ८२ फीट चौड़ी है। इसके खंभे और दरवाजे इत्यादि में मार्वुल के तख्ते लगे हैं और सोनहुले काम हैं! गुम्वज की शकल की छत में नीले रंग पर सोने की सितारें वनी हैं। इसका खास हिस्सा ९२ फीट लंवा, ३३ फीट चौड़ा और ५२ फीट ऊंचा है। फर्श मार्वुल का लगा है। एक वुर्ज १४० फीट ऊंचा है, जिसके ऊपर चढ़ने के लिये भीतर सीढ़ियां हैं। इसमें एक घड़ी लगी है, जिसके चारो तरफ ४ डायल हैं।

ईष्ट इण्डियन रेलवे कम्पनी का आफिस—यह कष्टम हौस से उत्तर, फेयर्ली प्लेस में दक्षिण तरफ ४०० फीट लम्बा और १८० फीट चौड़ा है। इसके वनाने में लगभग ३५०००० रुपया खर्च पड़ा था। इसमें पत्थर का काम वहुत है। प्रधान आफिस का फर्श मार्वुल से वना है।

टकसाल घर—यह हवड़ा के पुल से २०० गज उत्तर ष्ट्रेण्डरोड पर सड़क के पूर्व वगल की वड़ी जमीन पर है। यहां चान्दी और ताम्वे की दो टकसाल हैं। चान्दी की टकसाल की उत्तम इमारत सन् १८३१ ई० में खुली। खास इमारत से दक्षिण टकसाल के अंजन के लिये पानी का तालाव वना है। ताम्वे की टकसाल सन् १८६५ ई० में खुली। चान्दी की टकसाल के मध्य के चौगान में सोना चान्दी के तहखाने हैं। ताम्वे और चान्दी की टकसाल के वीच की वड़ी जमीन पर लोहा और पीतल गलाने का घर और वढ़ई और लोहारों का कारखाना है।

सिक्के बनाने के लिये, चान्दी और सोना जिस में $\frac{११}{१२}$ या इस से अधिक निराला हो, बंक और सौदागरों से लिया जाता है। सोना एक महीने में १ हजार तोले से अधिक नहीं लिया जाता। सोना चांदी आदि धातु ३ घंटे आग पर गलने पर सांचे में ढाले जाते हैं; पीछे जांच होकर उसके सिक्के तय्यार होते हैं।

टकसाल में नीचे लिखे हुए सिक्के बनाए जाते हैं,—हिन्दुस्तान-गवर्नमेंट के लिये सोने के मोहर; चान्दी के रुपये, अठनी, चौअनी, दोअनी और ताम्बे के पैसे, आधे पैसे और पाई।

अलवर-राज्य के लिये चान्दी के रुपये।

बीकानेर-राज्य के लिये चान्दी के रुपये।

धार-राज्य के लिये ताम्बे के पैसे, आधे पैसे और पाई।

देवास-राज्य के लिये ताम्बे के पैसे और पाई।

सिलोन-गवर्नमेंट के लिये ताम्बे के ५ सेंट, सेंट, आधा सेंट और चौथाई सेंट।

स्ट्रेट्स-गवर्नमेंट के लिये ताम्बे के सेंट, आधा सेंट और चौथाई सेंट।

इम्पीरियल ब्रिटिश ईष्ट एफ्रिका के लिये ताम्बे के पैसे।

इन के अतिरिक्त फौजी अफसर और सिपाहियों तथा कालिज और स्कूल के विद्यार्थियों को इनाम देने के लिये तगमा भी यहां बनते हैं।

जान पड़ता है कि कलकत्ते की टकसाल दुनियां के सब टकसालों से बड़ी है। ताम्बे और चान्दी के करीब १० लाख सिक्के इसमें एक दिन में तय्यार हुए हैं।

जो आदमी टकसाल देखना चाहे उस को गुरुवार को टकसाल देखने के लिये पहिलेही मंगल के दिन मिंट के माष्टर के पास दरखास्त करना चाहिये। ६ आदमी से अधिक को एक साथ जाने की इजाजत नही मिलती और १० पास तक मिलता है। बीफे के सिवा दूसरे दिन के लिये भी मिंट के माष्टर खास पास देते हैं। मिंट देखने का उत्तम समय ११ बजे से १ बजे तक है। उस समय गली हुई चान्दी ढाली जाती है।

जैन मन्दिर–मानिकतल्ले के बाग में राय बदरीदास मुकीम बहादुर का जैन मन्दिर है; यह कलकत्ते के सब मन्दिर और मसजिदों से बहुत सुन्दर है। मन्दिर एक सुन्दर बाग में बना है। बाग में तालाव, सड़क, चबूतरा और मकान बने हुए हैं। जैनों की सालाना यात्रा बड़े खर्च और धूमधाम से कलकत्ते की सड़कों से निकलती है।

मदनमोहन जी का मन्दिर–यह प्रसिद्ध मन्दिर बाग बाजार में है। हजारहां आदमी इस में दर्शन को आते हैं। जन्माष्टमी और रथयात्रा के दिनों में यहां बड़ी भीड़ होती है।

सत्यनारायण जी का मन्दिर–बड़ी बाजार की तूलापट्टी में सत्यनारायण का विशाल मन्दिर है। यहां नित्य कलकत्ते के बहुत लोग दर्शन को आते है।

कलकत्ते की शहर तलियां–चौवीसपरगने जिले के मजिष्टर और कलक्टर के आधीन कलकत्ते की शहरतलियां २३ वर्ग मील में फैलती हैं, जिनमें नीचे लिखी हुई प्रधान हैं—

काशीपुर–शहर से उत्तर काशीपुर एक गांव है, जहां सरकारी तोप बनने की कल, चीनी के कारखाने और अमीरों के कई विले (मुफसिल के मकान) बने हैं। काशीपुर के पास एक कृषीशाला है, जिसमें अमेरिका इत्यादि कई देशों के हर तरह के फूल; कन्द, फल, साग के बीज और पेड़ बिकते हैं और विद्यार्थियों को कृषी विद्या सिखलाई जाती है।

साततालाब–काशीपुर से उत्तर बाबू स्यामाचरण मलिक का प्रसिद्ध विला (मुफसिल का मकान) है, जिस में अच्छी चित्रकारी हुई है और खोद कर मूर्तियां बनाई गई हैं। विले के चारो तरफ की छोटी नहर तालावों से मिली है। नहर पर जगह जगह पुल बने हैं। साततालाब के पास सील घराने वाले का एक उत्तम विला है।

चितपुर–काशीपुर से दक्षिण चितपुर गांव ३०० वर्ष से अधिक का पुराना है। यहां पूर्व समय में चित्रकाली को आदमी बलि दिये जाते थे।

नकुलडंगा-चितपुर के पुल लांघने पर एक वस्ती से आगे दक्षिण तरफ नकुलडंगा मिलता है, जहां गैस कम्पनी का बड़ा कारखाना है।

सियालदह-खास कलकत्ते शहर के पूर्व हेरिसन रोड के पूर्वी छोर के पास सियालदह है, जहां से 'कलकत्ता ओर सौथ इष्टर्न रेलवे' ३८ मील दक्षिण-पूर्व डायमंड हारवर तक और 'इष्टर्न बंगाल रेलवे' २०८ मील उत्तर सीलीगोड़ी तक गई है।

एंटाली—यह सियालदह से दक्षिण एक वड़ी वस्ती है, जहां यूरोपियन लोगों के वहुत मकान हैं और म्युनिस्पेल्टी का कारखाना वना है।

वालीगंज-यहां खुला हुआ मैदान है, जिसके पास अनेक वारक अर्थात् सैनिकगृह और गवर्नर जनरल के अंगरक्षक फौज की कवायद की जगह हैं। मैदान के चारो तरफ और सड़कों के पास फैली हुई जमीन पर यूरोपियन लोगों के रहने के लिये उत्तम मकान वने हैं।

भवानीपुर-कलकत्ते से दक्षिण भवानीपुर में देसी लोगों की घनी वस्ती है। इसमें धातु के वरतन वनाने वाले वहुत से हिन्दू कारीगर रहते हैं और एक पागल खाना और जलकल के पंपका नया स्टेशन है।

कालीजी-भवानीपुर से दक्षिण हाईकोर्ट से लगभग ४ मील दूर भागीरथी गंगा की छोड़ी हुई नाले के निकट कालीघाट नामक वस्ती में कालीजी का मन्दिर है। वस्ती में पंडे लोगों ही का अधिक मकान देखने में आते हैं। यह नाला हेष्टिंग्स पुल के निकट भागीरथी में मिला है।

काली के वर्तमान मन्दिर को सन् १८०९ई० में वेहाला के चौधरियों ने वनवाया। मन्दिर से नाले तक पत्थर की सड़क वनी है। मन्दिर के पास महादेवजी का मंदिर है। दर्शक लोग नाले में स्नान करके कालीजी की पूजा करते हैं। दर्शकों से पैसे मांगनेवाली वहुत गरीव लड़की और स्त्रियां मन्दिर के पास रहती हैं। चैत्र और आश्विन के नवरात्रों में दर्शन और पूजा की अधिक भीड़ होती है।

कोई कोई कहता है कि जव शिवजी सती के मृत शरीर लेकर फिरते थे तव सती के चरण की अंगुलियां यहां गिरी थीं; तभी से यह स्थान हुआ।

यहां पहले भागीरथी गंगा की प्रधान धारा थी, जिस के स्थान पर वर्तमान नाला है। इसी काली के नाम से पूर्वकाल में कलकत्ता का नाम कालीकोट्ट था। पहले समय में यहां देवीजी को मनुष्य बली दिए जाते थे।

टालीगंज—कालीघाट से दक्षिण टालीगंज में चर्चमिशनरी सोसाइटी का स्टेशन है, जिस के पास रामनाथमंडल के (सन् १७९६ ई० के) बनवाये हुए बहुत देवमन्दिर स्थित हैं।

रसापुगला—यहां मैसूर के टीपूसुलतान के खान्दान के लोगों के मकान हैं।

अलीपुर—भवानीपुर से दक्षिण-पश्चिम अलीपुर बस्ती है। यहां बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की कोठी, देसी पल्टन के मक़ाम, जिले का जेलखाना, २४ परगना जिले का सदर मक़ाम, साधारण और लड़ाई सम्बन्धी आफिस, टेलीग्राफ की सामग्री तय्यार करने का कारखाना और सरकारी चिड़िया खाना है।

लेफ्टिनेंट गवर्नर की कोठी—अलीपुर की फैली हुई भूमि पर बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की उत्तम कोठी बनी है। इस के ऊपर के मंजिल में लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के रहने का सलतनत और दरबार हाल इत्यादि हैं। कोठी के आसपास बहुत दरख्त लगे हैं और एक तालाब बना है। पश्चिम के फाटक के आगे अलीपुर की सड़क है।

चिड़ियाखाना—लेफ्टिनेन्ट गवर्नर की कोठी के पास टोलीज नाला के दक्षिण किनारे पर अलीपुर का सरकारी चिड़ियाखाना अर्थात् पशुशाला है। यहां बड़े घेरे के भीतर एक बड़ा बाग है, जिस में जगह जगह पशु, पक्षी, कीड़े और दरियाई जानवरों के रहने के लिये योग्य-स्थानबने हैं, जिन में हाल की गिनती के अनुसार ५०० मेमल (अर्थात् दूध पीने वाले जानवर), ४०० चिड़िये और १३४ कीड़े हैं। मेमलों में बहुतेरे किस्म के बाघ, हरिन, बन्दर; कई एक गैंड़े, भालू, भेड़िया, शृगाल, नीलगाय, साहिल, खरगोस, मूसा, भुसूँडी और एक सिंह, एक जुराफ (जंगली ऊंट); पक्षियों में बहुतेरे

तरह के सुतुरमुर्ग, विलायती मुर्गी, चीलह, वतक, सूगे, मोर, कबूतर; और कीड़ों और जलजन्तुओं में बहुतेरे किसिम के सांप, मछली और घड़ियाल शामिल हैं। जुराफ ऊंट के समान होता है; पर इस का मुख बैल के समान है; इस की पीठ पर कूबड़ नही होता; यह दौड़ने में बहुत तेज होता है।

सन् १८७५ ई० में इस बाग का काम आरंभ हुआ। सन् १८७६ की पहली जनवरी को महारानी विक्टोरिया के पुत्र प्रिंस आफ वेल्स ने इसको जल्लूस किया। उसी साल की मई में सर्व साधारण लोगों के लिये यह खुल गया। तीन चार वर्ष में इसके सब काम पूरे हो गये। नुमाइस के साल १८ लाख ८ हजार ५३२ आदमियों ने इसको देखा। देखनेवाले को एक आना महसूल लगता है।

अलीपुर का बाग—यह बाग हिन्दुस्तान की खेती और बागवानी की सोसाइटी का है, जिसके कमरे मेटकाफ हाल में है। यहां मेम्बरों को बांटने के लिये दरख्त लगाये जाते हैं और सालाना फूल की नुमायश होती है। बाग के एक हिस्से में गुलाबों की बड़ी कियारियां और दरख्तों के उत्तम नमूने हैं।

खिदिरपुर—अलीपुर से पश्चिमोत्तर कलकत्ते शहर के दक्षिण की सीमा पर खिदिरपुर में देसी लोग फैल से बसे हैं। वहां एक गिरजा, मिलीटरी आर्फन स्कूल, और सरकारी डकयार्ड्स हैं।

खिदिरपुर का डक—इसका काम सन् १८८६ ई० में आरंभ होकर अब तय्यार हुआ है। ४३ एकड़ जमीन पर डक का पानी है। इसके बनाने में २ करोड़ ५० लाख रुपया खर्च पड़ा है। इसमें सब से बड़े १४ ष्टीमर रह सकती हैं। जहाज और ष्टीमरों को इसमें रहने से तूफान का डर नहीं रहता।

गार्डनरीच—यह हेष्टिंग्स पुल के दक्षिण बहुत पुरानी और प्रसिद्ध जगह है। हुगली नदी के किनारे २ मील तक खूबसूरत मकान बने हुए हैं, जो सन् १७६८ से १७८० ई० तक बने थे। यहां अवध के नवाब वाजिद-अली शाह सन् १८५७ से सरकारी पेंशन पाकर रहते थे। सन् १८८७ ई० में उनके मरने पर सरकार ने उनकी जायदाद नीलाम कर दी।

कम्पनी बाग—इस शाही नबातीबाग को सन् १७८६ में ईष्ट इंडिया कम्पनी ने कायम किया। यह गार्डनरीच के मटियाबुर्ज के सामने गवर्नमेंट एनजिनियरींग कालेज के पास हवड़ा जिले में भागीरथी के पश्चिमी किनारे पर एक मील फैला है। बाग का फाटक भागीरथी के पुल से ३¼ मील दक्षिण है। हवड़ा और शिवपुर गांव होकर एक अच्छी सड़क वहां गई है, जिससे आदमी आसानी से बाग में पहुंचते हैं और भागीरथी की नावद्वारा भी आदमी बाग में जाते हैं। बाग दिन भर खुला रहता।

यह बाग २७२ एकड़ जमीन पर है। बाग में बहुतेरी सड़कें बनी हैं। गाड़ी पर चढ़ कर सब जगह आदमी जा सकता है। बाग के पश्चिमोत्तर के कोने के पास हवड़ा फाटक से प्रवेश करने पर पहिले एक वट के वृक्ष के दोनों तरफ दो पीपल के वृक्ष मिलते हैं। फाटक के दोनों तरफ दो पतली सड़क और सामने एक चौड़ी सड़क गई है। देखने वालों को चौड़ी सड़क से आगे जाना चाहिये।

थोड़े आगे जाने पर सड़क के दोनों तरफ पानी की दो चादर मिलती हैं। उससे आगे कजुआरिन के दरख्तों के कुंज से बाहर निकल कर एक भूमि के बड़े टुकड़े पर सड़क जाती है, जहां सड़क के दोनों तरफ खजूर लगे हैं। उससे आगे एक नहर पर ३ पुल हैं। नहर पार होने पर दहिने फूल-बाग मिलता है, जहां कियारियों में खजूर, फूल और फलों के वृक्ष लगे हैं।

फूल और पौधे का एक बंगला है; जिसके फूलों की शोभा गरमी की ऋतुओं में जाहिर होती है और दूसरी ऋतुओं में इन पौधों की डांटी और पत्तियों की खूबसूरती फूलों से भी अधिक देख पड़ती है। बंगले के खंभे और सस्तीर लोहे के हैं। बंगले के सामने बाग के कायम करने वाले जनरल कीडका मनूमेंट है। उससे आगे जाने पर एक सड़क मिलती है, जिससे चन्द सौ गज आगे जाने पर एक चौड़ी सीधी सड़क दहिने देख पड़ती है, जो वटके वृक्ष के पास गई है।

यह वट-वृक्ष करीब १२५ वर्ष का है। जमीन से ५½ फीट ऊपर इस की जड़ का घेरा ५१ फीट और इसके सिरका घेरा लगभग ९०० फीट है। इसकी

शाखों से करीब ३०० बरोह निकल कर नीचे जमीन पकड़ गये हैं । बहुतेरे लटके हुए बरोह गांठ फोड़े हुए बांसों को खड़े करके उन के पोरों में कर दिये गये हैं। उससे वे बांसों के अन्दर होकर जल्दी जमीन पकड़ लेते हैं। बट वृक्ष से आगे जाने पर एक मनुमेंट मिलता है, जिस से आगे देवदारु के दोहरे कतार होकर सड़क दहिने झुकती है।

बहुत आगे जाकर दहिने घूमने पर पौधों से पूर्ण अठपहले बनावट का एक बंगला मिलता है। उसका ढांचा लोहे का है, जिस पर लोहे के जाल लगाये गये हैं; ऊपर घास का पतला छप्पर और मध्य में गुम्बज है। बंगले का व्यास २१० फीट है, उसका हर एक पहल ८५ फीट लंबा है। उसके मध्य के गुम्बज की ऊंचाई ५० फीट है। बंगले में बहुतेरे घुमाव के रास्ते बने हैं और भूमि पर तथा बहुतेरे गमलों में अनेक भांतिके पौधे लगाए गए हैं। उसको अंगरेजी में पामहौस कहते हैं।

पामहौस के पश्चिम तरफ आगे जाने पर झील के किनारे आदमी पहुंचते हैं, जिसमें थोड़े पानी के चिड़ियें हैं। झील के पास फूल और पौधे का एक तीसरा बंगला है, जिसकी ऊंचाई पामहौस और अर्चिडहौस के बीच बीच है।

कम्पनीबाग में प्रायः सब देशों के दरख्त लगाये गये हैं। लोहे के पत्तरों पर बहुतेरे वृक्षों का वृत्तांत लिख कर के उनके पास खड़े कर दिये गए हैं।

हुगली गंगा के पास के कल कारखाने—शिवपुर और रामकृष्टोपुर के पास जूट दबाने और इसकी दस्तकारी के लिये बहुत बड़ी इमारतें हैं।

हवड़ा के उत्तर गुसरी गांव में रुई का मिल (कल कारखाना) है।

हवड़ा से ६ मील उत्तर रेलवे-स्टेशन के पास बाली नामक बस्ती है, जिसमें सन् १८९१ में १६७०० मनुष्य थे। वह पवित्र स्थान समझा जाता है और उसमें हजारों घर ब्राह्मण रहते हैं। उसके पास गंगा के किनारे पर एक उत्तम मकान में एक बड़ा पुस्तकालय और पढ़ने और लेक्चर देने के कमरे हैं और बाली में कागज का एक मिल है।

बाली के सामने 'बड़ानगर' बस्ती में बोरा बनाने का एक मिल है। उससे थोड़े उत्तर एक बस्ती में सन् १८५२ के बने हुए बहुतेरे देव मन्दिर हैं।

रिसेरा नामक एक छोटे गांव के पास जूट का मिल है। वहां रिसेरा हौस नामक एक उत्तम पुराना मकान है।

रिसेरा के सामने नदी के बांए किनारे पर अगरपाड़ा में एक गिरजा और एक स्कूल है। उससे १/२ मील आगे एकही जगह शिव के २४ मन्दिर हैं, जिससे १ मील आगे बारकपुर है।

सोदपुर—सियालदह के रेलवे स्टेशन से १० मील उत्तर सोदपुर का रेलवे स्टेशन है। सोदपुर में पिंजरापोल नामक प्रसिद्ध पशुशाला है। प्रति वर्ष गोपाष्टमी (कार्तिक शुक्ल अष्टमी) को पिंजरापोल का मेला होता है। आर्य्य-सन्तान वहां गौवों की पूजा करते हैं। मेले के समय कलकत्ते से स्पेशल गाड़ी खुलती है।

सात वर्ष हुए कलकत्ते-बड़ेबाजार के अनेक मारवाड़ी, खत्री, भाटिये और बंगाली इत्यादि धार्मिक पुरुषों ने गौवंश की रक्षा के निमित्त पिंजरापोल स्थापित किया। उसमें सन् १८९० ई० में ७०९ गौ, बैल और बछड़े; १३० घोड़े इत्यादि बीमार तथा लंगड़े चार पाये; और ३५५ चिड़िये थे।

इतिहास—काली के नाम से कलकत्ता नाम की स्टष्टि है। अठारहवीं शदी की किताबों में कलकत्ता का नाम कालीकोटा लिखा है।

सन् १६३६ में मुगल बादशाह शाहजहां ने इष्टइंडियन कम्पनी को बंगाले के साथ तिजारत करने की आज्ञा दी। सन् १६४० में अंगरेजी कोठी हुगली में कायम हुई।

सन् १६८६ ई० में अंगरेजी एजेंट हुगली की कोठी छोड़कर सतानती को चले गये, जो हुगली अर्थात् भागीरथी नदी के किनारे पर एक गांव था। अब वह जगह टकसाल से सोभाबाजार तक कलकत्ते का हिस्सा बनी है। पीछे बादशाह औरंगजेब के फौजदार ने अंगरेजी एजेंट पर हमला किया, जिससे अखीर में एजेंट को सतानती छोड़ कर मदरास जाना पड़ा। उसके पश्चात् बादशाह ने अंगरेजी तिजारत से अपना फायदा समझ कर लूटी हुई चीजों का ६० हजार रुपया हरजा देकर अंगरेजी एजेंट मिष्टर चार्नक को मदरास से बोला लिया। चार्नक ने सन् १६९० ई० के २४ अगस्त को वर्तमान कलकत्ता शहर की नेव दी।

सन् १६९८ में बादशाह की तरफ से कम्पनी को अपनी हिफाजत के लिये किला बनाने का हुकुम मिला। जिस जगह पर अब कष्टमहौस और जनरल पोष्ट-आफिस है उसी जगह किला बना और उस समय के इङ्गलैंड के बादशाह विलियम के नाम से किले का नाम फोर्ट विलियम पड़ा।

सन् १७०० ई० में औरंगजेब के पुत्र प्रिंस आजीम ने कीमती नजर लेकर कम्पनी को सतानती, कलकत्ता और गोविन्दपुर इन ३ गावों को खरीदने का हुकुम दिया, जो हुगली गंगा के किनारे पर चितपुर से कूलीबाजार तक थे और कलकत्ता क्लाइब ष्ट्रीट के उत्तर बाबूघाट तक करीब १०० गज की लंबाई में था।

सन् १७१६ में फर्रुखशियर की तरफ से कम्पनी को कलकत्ते के दक्षिण हुगलीनदी के दोनों किनारे ३७ गांव खरीदने का हुकुम मिला; पर बंगाल के नवाब मुर्शिदकुलीखां ने जमीन खरीदने से उसको गुप्त भाव से रोका; परन्तु उस हुकुम से कम्पनी को सौदागरी में बहुत मदद मिली; इस से कलकत्ते की उन्नति होने लगी।

सन् १७२० में कलकत्ते में जमीन्दारी आफिस कायम हुआ। वह कलकत्तेके लोगों के दीवानी और फौजदारी मुकद्दमों को देखता था। सन् १७२४ में यूरोपियन लोगों के मुकद्दमें देखने के लिये एक महकमा कायम हुआ। सन् १७२६ में मद्रास, बम्बे और बंगाल जुदे जुदे ३ हाते बनाए गए।

सन् १७४२ में महाराष्ट्रों ने बंगाल पर आक्रमण करके बालासोर से राजमहल तक मुल्क को बरबाद करके अन्त में हुगली को दखल करलिया। वहां के बासिन्दे कलकत्ते में भाग गये। उस समय अंगरेजी प्रेसीडेंट को हुकुम मिला कि सतानती के उत्तर हिस्से से गोविन्दपुर के दक्षिण हिस्से तक कम्पनी की जगह खाइसे घेर दी जाय। ६ मास में ३ मील खाई तय्यार हुई, जो मरहठों की खाई कही जाती थी; वह पीछे भर दी गई। सन् १७४८ में महाराष्ट्रों के हमले से बचने के लिये एक कमीटी नियत हुई।

सन् १७५६ ई० में बंगाल के नवाब अलीवर्दीखां के मरने पर उसका पोता सिराजुद्दौला नवाब बना। सन् १७५७ में उसने कलकत्ते पर आक्रमण करके अंगरेजों को निकाल दिया; पर थोड़ेही दिन बाद अंगरेजों ने सिराजुद्दौला

को जीत कर कलकत्ते को दखल करके अलिवर्दीखां के दमाद मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाया (मुर्शिदाबाद के वृतान्तों में देखो)।

सन् १७५७ में वर्तमान फोर्टविलियम किले का काम आरंभ हुआ। नया किला तय्यार होने पर पुराना किला धीरे धीरे बरबाद होगया।

सन् १७७३ में पार्लियामेंट की तरफ से कम्पनी को नया अहदनामा हुआ, जिसके अनुसार यह नियम बना कि कलकत्ते के गवर्नर को गवर्नर जनरल बनाया जाय, उनको २५ हजार पाउण्ड तनखाह मिलै, मदद के लिये कौंसल कायम हो और तमाम अंगरेजी हिन्दुस्तान इनके मातहत रहे और एक सुप्रिमकोर्ट (बड़ी कचहरी), जिसमें एक चीफ जष्टिस और ३ जज रहें, कलकत्ते में कायम हो। सन् १७७४ में २५०००० रुपये सालाने तनखाह पर वारेन हेष्टिंग पहले पहल हिन्दुस्तान के गवर्नरजनरल हुए।

हिन्द के गवर्नर और गवर्नरजनरलों की फिहरिस्त, जो 'इष्ट इण्डिया कम्पनी' के राज्य में हुए; नीचे है,—

नम्बर नाम और हिन्द में आने का समय।

(१) पहला गवर्नर लार्डक्लैव सन् १७५८ ई०।
(२) हारीवरिलस्ट सन् १७६७।
(३) जानकारटिएर सन् १७६९।
(१) पहला गवर्नरजनरल वारेन हेष्टिंग सन् १७७४।
(२) सरजान मेकफर्सन सन् १७८५
(३) मार्किस आफ कार्नवालिस-सन् १७८६।
(४) सरजान शोर (लार्ड टेनमथ) सन् १७९३।
(५) सर एलूरेड क्लार्क सन् १७९८।
(६) लार्ड मारिंगटन (मार्किसआफ वेलस्ली) १७९८।
(७) मार्किसआफ कर्नवालिस दूसरी बार सन् १८०५।

नम्बर नाम और आने का समय।

(८) सरजार्जवाली सन् १८०५।
(९) अर्ल आफ मिन्टो सन् १८०६।
(१०) अर्ल आफ माइरा (मार्किस आफ हेस्टिंग) सन् १८१५।
(११) जान एडम सन् १८२३।
(१२) अर्ल एम्हरेष्ट सन् १८२३।
(१३) लार्ड विलियम केवेंडिस वेंटिक सन् १८२८।
(१४) सर चार्ल्स मेटकाफ सन् १८३५,
(१५) लार्ड आकलेंड सन् १८३६।
(१६) अर्ल आफ एलेनबरा सन् १८४२,
(१७) वैकौन्ट हार्डिंग सन् १८४४।
(१८) अर्ल आफ डेलहौसी (पीछे से मार्किस) सन् १८४८।
(१९) अर्ल केनिंग सन् १८५६।

हिन्द के वाइसराय, जो बादशाही राज्य में हुए, नीचे लिखे जाते हैं;

नम्बर नाम और आने का समय।	नम्बर नाम और आने का समय।
(१) अर्ल केनिंग सन् १८५८।	(६) अर्ल आफ लिटन सन् १८७६।
(२) अर्ल आफ एलजिन सन् १८६२	(७) मार्किस आफरिपन सन् १८८०।
(३) सरजान लारेंस (लार्ड लारेंस) सन् १८६४।	(८) लार्ड डफरिन सन् १८८४।
(४) अर्ल आफ मेयो सन् १८६९।	(९) लार्ड लैंसडौन १८८८।
(५) अर्ल आफ नार्थ ब्रूक सन् १८७२	(१०) लार्ड एलगिन सन् १८९२।

चौबीस परगना जिला—यह प्रेसीडेंसी विभाग के दक्षिण-पश्चिम का जिला है। इसके उत्तर नदिया जिला; पूर्वोत्तर जशर जिला; पूर्व खुलना जिला और सुन्दर वन; दक्षिण समुद्र तक फैला हुआ सुन्दर वन और पश्चिम हुगली नदी अर्थात् भागीरथी है। इस जिले का क्षेत्रफल (सुन्दर वन की विना नापी हुई भूमि और कलकत्ते का ३१ वर्ग मील क्षेत्रफल को छोड़ कर) २०९७ वर्ग मील है। कलकत्ते की दक्षिणी शहरतली अलीपुर जिले का सदर स्थान है। एक खास अफसर सुन्दरवन की मालगुजारी का प्रबंध करता है। इस जिले के उत्तर का भाग बड़ा उपजाऊ है और पूर्वोत्तर का भाग ऊंचा है। इसमें जगह जगह ताड़ के कुंज लगे हैं। प्रत्येक बस्तियों के आस पास बाग लगे हुए हैं। जिले के दक्षिण के भाग में ३ जंगल हैं; इनके अतिरिक्त सुन्दरवन से उत्तर इस जिले में परती जमीन नहीं है। जिले में हुगली, विद्याधरी, पियाली, कालिंदी और इच्छामती ये ५ प्रधान नदियां और कई एक नहर हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय चौबीस परगना जिले में १६१८४२० मनुष्य थे; अर्थात् १००३११० हिंदू, ६०४७२३ मुसलमान, ९९२८ क्रस्तान, ४१४ पहाड़ी और जंगली, २३० बौद्ध, १० पारसी और ५ ब्राह्म। जातियों के खाने में २१७१८७ मलाह, मछुहा, इत्यादि; १४५४९६ कैवरत, ७८६५४ बागड़ी, ६२६७० ब्राह्मण, ५६६८२ ग्वाला, ३७१७१ तियर, ३६५८६

चमार, ३००१३ कायस्थ, ६०५४ बनियां, ४०७२ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शहर कलकत्ते को छोड़ कर चौवीस परगना जिले के कसबों में इस भांति मनुष्य थे;—कलकत्ते की दक्षिणी शहरतली में ६९६४२, दो शहरतलियों में ५१५८४, दक्षिणी बारकपुर में ३५६४७, बड़ानगर अर्थात् उत्तरी शहरतली में ३४२७८, नइहाटी में २१७२४, उत्तरीय बारकपुर में २०१८०, बसीरहाट में १५१०१, बदुरिया में १२७४४, दक्षिणी दमदम में ११०३७, राजपुर में १०९४०, उत्तरी दमदम और छावनी में १०३९६ और बारासत, जयनगर, गोबरडंगा, इटंडा में दस हजार से कम मनुष्य थे।

इतिहास—मुगलों के राज्य के समय चौवीसपरगना 'सातगांव' सरकार का एक हिस्सा था। सातगांव, जो अब हुगली जिले में हुगली नदी के पश्चिम किनारे पर एक साधारण बस्ती है, एक समय बंगाल का प्रधान बन्दरगाह था।

सन् १७५७ ई० के २० सितम्बर की संधि के अनुसार बंगाल के नवाब मीरजाफर ने इस जिले की ज़मीन्दारी हक इष्ट इंडियन कंपनी को दे दिया। उस समय यह कलकत्ते की जमीन्दारी या चौवीसपरगना की जमीन्दारी करके प्रसिद्ध था और इसका क्षेत्रफल केवल ८८३ वर्ग मील था। सन् १७५९ में दिल्ली के बादशाह ने लार्ड क्लाइव को चौबिसपरगना में जागीर की सनद दी, जिसके अनुसार पुरा मालिकाना हक जिन्दगीभर के लिये क्लाइव को और उसके बाद सर्वदा के लिये इष्टइंडियन कम्पनी को मिल गया। कलकत्ते शहर और बंदरगाह पर पहिलेही से कंपनी का अधिकार हो गया था।

चौवीसपरगना जिले के हाकिमों का अखतियार कलकत्ते शहर पर नहीं है। सन् १८६१ में चौवीसपरगना जिले में ८ सबडिवीजन नियत हुए;—डायमंड हारबर, अलीपुर, बरुईपुर, दमदम, बारकपुर, बारासत, बसरहाट और सतखीरा। सन् १८८२ में खुलना जिला बनने पर सतखीरा सबडिवीजन उसमें कर दिया गया।

बंगाल प्रदेश—इसमें ४ सूबे हैं;—बंगाल, विहार, उड़ीसा और छोटा नागपुर। बंगाल प्रदेश के पूर्व आसाम; दक्षिण बंगाले की खाड़ी; पश्चिम मदरास हाता, मध्यदेश, रीवां का राज और पश्चिमोत्तर देश; और उत्तर नैपाल, शिकम और भूटान के राज्य हैं। यह लेफ्टिनेंटी सन् १८५९ ई० में नियत हुई; इसके लेफ्टिनेंट गवर्नर कलकत्ते के पास अलीपुर में रहते हैं। सन् १८९१ के अनुसार इस प्रदेश के अङ्गरेजी राज्य का क्षेत्रफल १५१५४३ वर्ग मील और देशी राज्यों का क्षेत्रफल ३५८३४ तथा दोनों का १८७३७७ वर्ग मील है। यह देश भारतवर्ष के संपूर्ण देशों से अधिक आबाद और उपजाऊ है, इसमें धान बहुत उत्पन्न होता है।

बंगाल प्रदेश में ९ भाग और ४७ जिले इस भांति हैं;—(सूबेबंगाल में) (१) वर्दवान विभाग में हुगली, हवड़ा, वर्दवान, वीरभूमि, बांकुड़ा और मेदनीपुर; (२) प्रेसीडेंसी विभाग में चौबीसपरगना (और कलकत्ता), नदिया, जशर, मुर्शिदाबाद और खुलना; (३) राजशाही विभाग में पबना, राजशाही, बुगड़ा, रंगपुर, दीनाजपुर, दार्जिलिंग, जलपाईगोड़ी और बाकरगंज; (४) ढाका विभाग में फरीदपुर, ढाका और मैमनसिंह; (५) चटगांव विभाग में नोआखाली, चटगांव, पहाड़ी चटगांव और टिपरा; (सूबेबिहार में) (६) भागलपुर विभाग में मालदह, पुर्निया, भागलपुर, मुंगेर और संथाल परगना; (७) पटना विभाग में गया, पटना, शाहाबाद, सारन, चंपारन, मुजफ्फरपुर और दरभंगा; (सूबे उड़ीसे में) (८) उड़ीसा विभाग में वालासोर, कटक, पुरी, बांकी और अंगोल. (सूबे छोटा नागपुर में) (९) छोटा नागपुर विभाग में हजारीबाग, लोहारडागा, मानभूमि और सिंहभूमि जिला।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बंगाल के अङ्गरेजी राज्य में ७१३४६१८७ मनुष्य थे; अर्थात् ३५५६३२११ पुरुष और ३५७८३६८८ स्त्रियां। इनमें ४५२२०१२४ हिंदू, २३४३७५९१ मुसलमान, २२९४५०६ जंगली जातियां इत्यादि, १९०८२९ क्रस्तान, १८११२२ बौद्ध; ७०४२ जैन,

१४४७ यहूदी, ४१२ सिक्ख, १७९ पारसी, ५७१८ जिनका कोई मजहब नहीं लिखा गया और १७ छोटे छोटे मजहबवाले थे। इनमें सैकड़े पीछे ५३ बंगला भाषा वाले, ३६½ हिन्दी भाषा वाले, ६½ उड़िया भाषा वाले, २ संथाली भाषा वाले और २ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

बंगाल प्रदेश में अर्थात् बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन के शहर और कसबे, जिन में सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय १० हजार से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या
१	कलकत्ता	२४परगना	६८१५६०
	दो शहर-तलियां	तथा… …	६९५८४
२	पटना और बांकीपुर	पटना …	१६५१९२
३	हवड़ा	हवड़ा …	११६६०६
४	ढांका	ढांका …	८२३२१
५	गया	गया …	८०३८३
६	दरभंगा	दरभंगा…	७३५६१
७	कलकत्ते की दक्षिणी शहर-तली	२४परगना	६९६४२
८	भागलपुर	भागलपुर…	६९१०६
९	छपरा	सारन …	५७३५२
१०	मुंगेर	मुंगेर …	५७०७७
११	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९२
१२	बिहार	पटना …	४७७२३
१३	कटक	कटक …	४७१८६
१४	आरा	शाहाबाद…	४६१०५
१५	दानापुर	पटना …	४४४१९
१६	श्रीरामपुर	हुगली …	३५९५२
१७	दक्षिण-बारकपुर	२४परगना	३५६४७
१८	मुर्शिदाबाद	मुर्शिदाबाद…	३५५७६
१९	बर्दवान	बर्दवान …	३४४७७
२०	बड़ानगर	२४परगना	३४२७८
२१	हुगली और चिंसुरा	हुगली …	३३०६०
२२	मेदनीपुर	मेदनीपुर …	३२२६४
२३	संतीपुर	नदिया …	३०४३७
२४	नइहाटी	२४परगना	२१७२४
२५	पुरी	पुरी… …	२८७९४
२६	कृष्णगढ़	नदिया …	२५५००
२७	चटगांव	चटगांव …	२४०६९
२८	बरहमपुर	मुर्शिदाबाद	२३५१५
२९	सिराजगंज	पबना …	२३२६७
३०	बेतिया	चंपारन …	२२७८०
३१	सहसराम	शाहाबाद…	२२७१३
३२	हाजीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
३३	रामपुर बौलीया	राजशाही…	२१४०७

नं०	शहर या कसवा	जिला	जन-संख्या
३४	उत्तरीय वारकपुर	२४ परगना	२०९८०
३५	वालासोर	वालासोर…	२०७७५
३६	रांची	लोहारडागा	२०३०६
३७	वांकुड़ा	वांकुड़ा …	१८७४३
३८	डुमरांव	शाहावाद …	१८३८४
३९	वैद्यवटी	हुगली …	१८३८०
४०	विष्णुपुर	वांकुड़ा …	१८१९०
४१	जमालपुर	मुंगेर …	१८०८९
४२	ब्राह्मण वैरिया	टिपरा …	१८००६
४३	टंगैल	मैमनसिंह	१७९७६
४४	नारायणगंज	ढाका …	१७७१५
४५	सिवान	सारन …	१७७०९
४६	केंद्रपाड़ा	कटक …	१७६४७
४७	मधुवनी	दरभंगा	१७५४४
४८	वाली	हवड़ा …	१६७००
४९	हजारीवाग	हजारीवाग	१६६७२
५०	पवना	पवना …	१६४८६
५१	वक्सर	शाहावाद	१५५०६
५२	वरिशाल	वाकरगंज	१५४८२
५३	जमालपुर	मैमनसिंह	१५३८८
५४	वसरहाट	२४ परगना	१५१०९
५५	कुमिला	टिपरा …	१४६८०
५६	पुनिया	पुनिया …	१४५५५
५७	रंगपुर	रंगपुर …	१४२१६
५८	दार्जिलिंग	दार्जिलिंग	१४१४५
५९	किशोरगंज	मैमनसिंह	१३९८८
६०	घटाल	मेदनीपुर…	१३९४२
६१	इंगलिसवाजार	मालदह…	१३८१८
६२	रानीगंज	वर्दवान…	१३७७२
६३	मदारीपुर	फरीदपुर…	१३७७२
६४	रिविलगंज	सारन …	१३४७३
६५	सोनामुखी	वांकुड़ा …	१३४६२
६६	नवद्वीप	नदिया …	१३३२४
६७	मोतीहारी	चंपारन …	१३१०८
६८	वदुरिया	२४ परगना	१२७४४
६९	लालगंज	मुजफ्फरपुर	१२४१३
७०	जगदीशपुर	शाहावाद	१२४७५
७१	वाढ़	पटना …	१२३६३
७२	फीरोजपुर	वाकरगंज	१२२४६
७३	दीनाजपुर	दीनाजपुर	१२२०४
७४	पुरुलिया	मानभूमि	१२१२८
७५	जाजपुर	कटक …	११११९२
७६	मैमनसिंह	मैमनसिंह	११५५५
७७	टेकारी	गया …	११५३२
७८	चंद्रकोना	मेदनीपुर	११३०९
७९	साहवगंज	संथाल-परगना…	११२९७
८०	कुष्टिया	नदिया …	१११११९
८१	कांडी	मुर्शिदावाद	१११३१
८२	दक्षिण-दमदम	२४परगना	११०३७
८३	राजपुर	२४ परगना	१०९४०
८४	रोसरा	दरभंगा…	१०८८७
८५	चत्तरा	हजारीवाग	१०७८३
८६	फरीदपुर	फरीदपुर	१०७७४
८७	शेरपुर	मैमनसिंह	१०७४४
८८	उत्तरीय दमदम	२४ परगना	१०३१६
८९	भवुआ	शाहावाद	१०२१६
९०	खरवार	मेदनीपुर	१०८०३

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बंगाल के देशी राज्यों के ३५८३४ वर्ग मील क्षेत्रफल में ३२९६३७९ मनुष्य थे; अर्थात् १६७३१८६ पुरुष और १६२३१९३ स्त्रियां। इसमें २६०३८९० हिन्दू, ४५८५५५ जंगली जातियां, २२०७५६ मुसलमान, ५६७९ जिनका कोई मजहब नहीं लिखा गया, ५५९५ बौद्ध, १६५५ क्रुस्तान, २२८ जैन, १६ अन्य, और ५ सिक्ख थे। इनमें सैकड़े पीछे ४५ १/४ उड़िया भाषा वाले १९ ३/४ बंगला बोलने वाले, १५ १/४ हिन्दी वाले, ८ १/४ संथाली भाषावाले, ३ १/४ टिपरा भाषा के, ३ १/२ मुण्डा आदि और ५ अन्य भाषा वाले मनुष्य थे। बंगाल के देशी राज्यों के केवल २ कसबे में ५ हजार से अधिक मनुष्य थे;—कूचविहार राज्य के कूचविहार में ११४९१ और उड़ीसा महाल के खांडपाड़ा में ५०५१।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बंगाल प्रदेश की जातियों में से नीचे लिखी हुई जातियों के लोग इस भांति पढ़े हुए थे।

जाति	प्रति १००० में	
	पुरुष	स्त्री
बैद्य ...	७३४	११९
करन	६०४	१६
कायस्थ	५५५	४१
ब्राह्मण ...	४७७	२३
बनियां	२८०	४

सूबे बंगाल—सूबे बंगाल अर्थात् खास बंगाल के, जिसके निवासी बंगाली कहे जाते हैं, पूर्व आसाम; दक्षिण बंगाले की खाड़ी; दक्षिण-पश्चिम

বাংলা বর্ণমালা

অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ ৠ ঌ এ ঐ ও ঔ অং অঃ

ক খ গ ঘ ঙ চ ছ জ ঝ ঞ ট ঠ ড ঢ ণ ত থ

দ ধ ন প ফ ব ভ ম য র ল ব শ ষ স হ

কা কি কী কু কূ কে কৈ কো কৌ ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ ৮ ৯
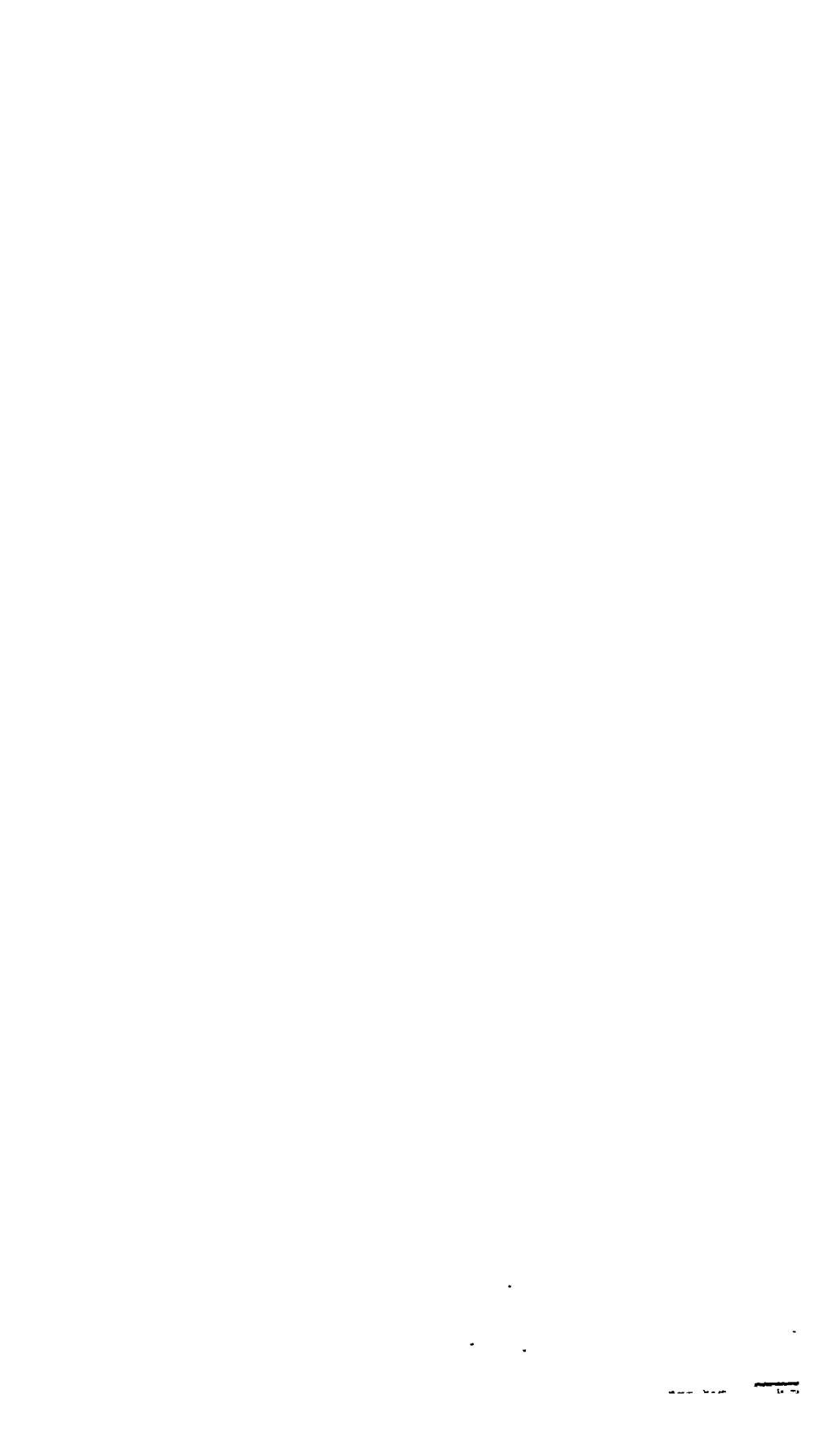
बंगाल प्रदेश में उड़ीसा, पश्चिम बंगाल प्रदेश में सूबे बिहार और छोटा नागपुर; और उत्तर स्वतंत्र राज्य भूटान है। खास बंगाल में बर्द्धवान, प्रेसीडेंसी, राजशाही, ढाका और चटगांव इन ५ किस्मतों में २६ जिले हैं। सूबे बंगाल में गंगा, ब्रह्मपुत्र, तिष्टा, दामोदर, रूपनारायण इत्यादि नदियां बहती हैं; बर्द्धवान जिले में कोयले की प्रसिद्ध खानें हैं; कई एक जिलों में कपड़े और रेशम की दस्तकारी होती है और खजूर की चीनी बनती है।

महाभारत और पुराणों में बंगाल का नाम वंग लिखा है; किन्तु ठीक नहीं जान पड़ता है कि वंगदेश की सीमा किस स्थान से किस स्थान तक थी। महाभारत-आदिपर्व के १०४ वें अध्याय में लिखा है कि बली नामक एक राजा की सुदेष्णा स्त्री थी। उसने एक अन्धे ऋषि से संभोग किया, जिससे अंग, वंग, कलिंग, पुंड्र और सुह्म ५ पुत्र उत्पन्न हुए। उनके नाम से एक एक देश प्रख्यात हुआ; अर्थात् अंग के नाम से अंग देश, वंग के के नाम से वंगदेश, कलिंग के नाम से कलिंगदेश, पुंड्र के नाम से पुंड्रदेश और सुह्म के नाम से सुह्मदेश।

सूबे बंगाल के दिहाती मकानों की दीवारें टट्टियों की और छप्पर फूस के होते हैं। बस्तियों के मकानों के झूंड अलग अलग रहते हैं। बहुतेरे मकानों के आस पास केले, खजूर, नारियल इत्यादि के वृक्ष लगाये जाते हैं। बहुतेरे हिंदू अपने अपने गृह के पास देवता के अर्थ एक कोठरी रखते हैं।

खास बंगाले में अधिक धान उत्पन्न होता है और लाखों आदमी दूसरे देशों से आकर इस सूबे में व्यापार या नौकरी करते हैं। इस देश के बहुतेरे लोग रेशम के किड़ो को पालते हैं और रेशम संबंधी काम करते हैं। बंगालियों की भाषा बंगला है, जिसमें संस्कृत शब्द बहुत मिले हुए हैं। इनके शरीर निर्बल हैं; किन्तु इनकी बुद्धि प्रबल होती है; वे इस समय अंगरेजी शिक्षा में निपुण हो कर बड़े बड़े ओहदे पाते हैं। बंगाले की अनेक स्त्रियां भी प्रतिवर्ष बी. ए. एम. ए. पास करती हैं।

सर्वसाधारण बंगाली धोती के ऊपर कुर्ता या कोट पहन कर कंधे पर चादर रखते हैं। इनका सिर प्रायः सर्वदा उघार रहता है। भारतवर्ष के

अन्य हिंदूओं के समान इनमें शिखा रखने की रीति नहीं है। इनमें स्नान करने की चाल बहुत है। वे हिंदू-धर्म में बड़े दृढ़ होते हैं और अपने धर्म के लिये बड़ा आन्दोलन करते हैं। बंगाल की स्त्रियों में पर्दे में रहने की चाल बहुत कम है; वे प्रायः झीने कपड़े पहनती हैं; कुर्ते या चोली पहनने की रीति इनमें नहीं है।

बंगालियों का साधारण भोजन साक, भात और मछली है। बहुतेरे धनी लोग मछली के वास्ते अपने मकान के पास दीग्गी बना रखते हैं।

आश्विन के नवरात्र में बंगाले के स्थान स्थान पर कालीजी की पूजा का उत्सव बड़े धूम धाम से होता है। कालीजी और शिव आदि देवताओं की मृणमय विचित्र प्रतिमा बनाई जाती हैं। बंगाली लोग बड़े उत्साह से कालीजी की पूजा करते हैं और अंत में दशहरे के दिन प्रतिमाओं को नदी के जल में बिसर्जन कर देते हैं।

बंगाले में ब्राह्म समाज नाम की एक नई संप्रदाय नियत हुई है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भारतवर्ष में इस संप्रदाय के ३४०० मनुष्य थे, जिनमें ७०८ कलकत्ते शहर में थे। राजा राममोहन राय ने इस समाज के मत की नेव दी; जिनके उद्योग से भारत-गवर्नमेंट ने सन् १८२९ ई० में आइन द्वारा सती होने की रीति बंद करदी। सन् १८३० में कलकत्ते में इस मत की नेव पड़ी। उसी सन् से ब्राह्म सम्वत् आरंभ हुआ। राजा राममोहन राय के १० वर्ष हिंदूस्तान छोड़ देने से ब्राह्म समाज निर्वल होगया था। सन् १८४२ में देवेंद्रनाथ टैगोर इस समाज में मिल कर लोगों को धीरे धीरे एक ईश्वरकी पूजा में विश्वास दिलाने लगे। "एकमेवाद्वितीयंब्रह्म-नेहनानास्तिकिंचन" इत्यादि श्रुति उन लोगों का मूल है। ब्रह्मैवएकमिदमग्र-आसीत्नान्यत्किञ्चनासीत्तदिदंसर्वमसृजत्। तदेवनित्यंज्ञानमनन्तंशिवं स्व-तंत्रंनिरवयवंएकमेवाद्वितीयम्सर्वव्यापिसर्वनियन्तृसर्वाश्रयंसर्ववित् सर्वशक्तिम-द्ध्रुवंपूर्णमप्रतिममिति। एकस्यतस्यैवोपासनयापारत्रिकमैहिकंचशुभम्भवति। तस्मिन्प्रीतिस्तस्यप्रियकार्यसाधनञ्चतदुपासनमेव॥ अर्थात्—पूर्व में एक ब्रह्महीं था और कुछ न था। उसने संपूर्ण पदार्थ उत्पन्न किये। वही

ब्रह्म नित्य, ज्ञानस्वरूप, अनन्त, कल्याणकारी, स्वतन्त्र, निरवयव, एकही, अद्वितीय, सर्वव्यापी,सर्वनियन्ता,सर्वाधार, सर्वज्ञ; सर्वशक्तिमान्, अचल, पूर्ण और अनुपम है। एकही उसकी उपासना से परलोक और इसलोक में शुभ होता हैं। ब्रह्म में मीति करना और उसके मिय काम करना उसकी उपासना ही है। यही ब्राह्म समाजियों का मत है। वे लोग जाति विभाग की रीति को नहीं मानते हैं। सन् १८४५ में चारों वेदों से बातें निकाल कर एक ग्रन्थ बनाया गया और इस मत के लोग उसको शिक्षा के कामों में लाने लगे। सन् १८४७ तक इस समाज के मत में ७६७ मनुष्य शामिल हुए। सन् १८५८ में २० वर्ष की अवस्था के बाबू केशवचन्द्रसेन इस समाज में आमिले; उस समय १० वर्ष के बीच समाज बहुत उन्नति कर चुका था; बंगाल के भिन्न भिन्न देशो में उसकी शाखा नियत हो चुकी थी। देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशवचंद्रसेन के मिला हुआ असर से चन्द इस्तमाली सुधार हो गये। केशवचन्द्रसेन की वक्तृता बड़ी हृदय ग्राहक थी। वह ब्राह्म समाज में बड़े प्रसिद्ध हुए। उनकी पुत्री का व्याह कूचविहार के वर्त्तमान महाराज से हुआ। वह सन् १८८४ ई० में मर गए। कलकत्ते से ब्राह्म समाज वालों की "तत्वबोधिनी मतिका" नामक एक अखबार निकलता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सुन्दरवन छोड़ करके सूबे बंगाल का क्षेत्रफल ७०४३० वर्ग मील था। जातियों के खाने में २००६३४० कैवरत, १५६४०७० चंडाल, १०७६८५४ ब्राह्मण, १०५६०९३ कायस्थ, ७२०३०२ वा-गड़ी, ६१३१३२ ग्वाला, ५४७७३२ सदगोप, ५१५०४२ तेली और कालू, ४३८५४५ वैष्णव, ४०९६६२ चमार और मोची, ३८२५०६ सूण्डी, ३७४६५५ जालिया, ३२४५६८ पोड़, ३१७७८९ बनिया, २८५६२० लोहार, २६२४१८ बाउरी, २५२२९६ कुम्हार, २२८६७५ तियर, ११०५३९ राजपूत, ८७५३६ बैदिया और बाकी में दूसरी जातियों के लोग थे।

इतिहास—सन् ईस्वी की बारहवीं शदी के अन्त तक बंगाल में गंगा के नीचे की घाटी में बहुतेरे छोटे छोटे राजा राज्य करते थे। सन् १२०० से बंगाल में मुसलमानों का विजय आरंभ हुआ। लगभग सन् १२१० से

१३३६ तक बंगाल की हुकूमत करने वाले गवर्नरों को मुसलमान बादशाह लोग कायम करते थे। सन् १३३६ से १५३९ तक मुसलमान गवर्नर स्वाधीन रहे। सन् १५३९ में पठानों ने बंगाल को अपने अधिकार में कर लिया। सन् १५७६ में दिल्ली के बादशाह अकबर नें पठानों का विनाश करके बंगाल को मुगलों के राज्य में मिला लिया। सन् १७६५ में इष्टइंडिया कंपनी ने बिहार और उड़ीसे के साथ बंगाल को लेलिया। प्रथम मुसलमानों ने समय समय पर हिंदुओं के तीर्थों को नष्ट भ्रष्ट करते थे, मन्दिरों को तोड़ते थे, इनकी धर्म पुस्तकों को जलाते थे और इनके धर्म कर्म में अनेक भांति की बाधा डालते थे; अंगरेजों के राज्य होने से यह सब विपत्ति जाती रही; हिंदू इत्यादि सब मत के लोग स्वतंत्र भाव से अपने अपने मत का पालन करने लगे।

हवड़ा।

कलकत्ते के सामने पश्चिम भागीरथी गंगा के दूसरे पार अर्थात् दहिने किनारे पर सूबे बंगाल के बर्द्धवान विभाग में जिले का सदर स्थान हवड़ा एक शहर है, जिसको कलकत्ते की शहरतली कहना चाहिए। जो लोग पश्चिम से कलकत्ता जाते हैं, वे हवड़े में रेलगाड़ी से उतर भागीरथी को पुल द्वारा पार होकर कलकत्ते में पहुँचते हैं। वहां भागीरथी पर नावों का पुल बना है। मंगल और शुक्रवार को पुल का एक भाग २ घंटे तक खोल दिया जाता है; उस मार्ग से संपूर्ण नाव और जहाज पुल से निकल जाते हैं। पुल पर बिजुली की रोशनी होती है। पुल से दक्षिण बहुतेरी नाव तैयार रहती हैं, जो एक पैसे लेकर आदमी को पार उतार देती हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हवड़ा में ११६६०६ मनुष्य थे; अर्थात् ७०४७७ पुरुष और ४६१२९ स्त्रियां। इनमें ८६२४७ हिंदू, २८३६६ मुसलमान, १८६७ कृस्तान, ५६ एनिमिष्टिक, २९ बौद्ध, १० यहूदी, ७ जैन और २४ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्ष में २४ वां और सूबे बंगाल में दूसरा शहर है।

रेलवे स्टेशन से लगभग १ मील उत्तर चुरू वाले राजा शिवबक्स बागला

बहादुर की दुमंजिली धर्मशाला बनी हुई है, जिसमें मुसाफिर लोग ३ दिन तक टिक सकते हैं। स्टेशन से दक्षिण गंगा के किनारे पर बर्नकम्पनी का बड़ा कल कारखाना है, जिसमें रेल, पुल, मकान इत्यादि के काम के लिये लोहे और पीतल के सरंजाम तैयार होते हैं। इनके अतिरिक्त हवड़े में इष्ट इण्डिया रेलवे का बड़ा स्टेशन, अनेक प्रकार के मिल अर्थात् कल कारखाने; बहुतेरे स्कूल और कलकत्ते के सौदागरों के दिहाती मकान बने हुए हैं और एक मजिष्टर रहता है। शिवपुर के दक्षिण प्रसिद्ध कंपनीबाग और इंजिनियरिंग कालिज है।

हवड़ा जिला—यह जिला वर्द्धवान विभाग में हुगली जिले के दक्षिण ४७३ वर्ग मील में त्रिभुजाकार फैला हुआ है। इसके उत्तर बालीखाल और हुगली जिले की दक्षिणी सीमा; पूर्व भागीरथी नदी; दक्षिण भागीरथी और रूपनारायण नदी और पश्चिम रूपनारायणनदी है। जिले में बहुतेरी छोटी नदियां, उलबड़िया और मिदनीपुर नहर और अनेक झील हैं। इस जिले में हवड़ा और उलबड़िया २ सबडिवीजन हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय हवड़ा जिले में ६३५३८१ मनुष्य थे; अर्थात् ५००८७० हिंदू, १३२११८ मुसलमान, २०९१ क्रूस्तान, २४२ एनिमिष्टिक, ३७ बौद्ध, १३ यहूदी, ६ ब्राह्म, ३ जैन और १ पारसी। जातियों के खाने में १५५६५३ कैवरत, ५४९४३ बागड़ी, ३९१४१ ब्राह्मण, १७३७० ग्वाला, १५८४९ कायस्थ, १५६२३ तियर, १४२५० तांती, १४१३८ पोड़, १२६९२ सद्गोप और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। राजपूत केवल १०३९ थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के हवड़ा कसबे में ११६६०६ और बाली में १६७०० मनुष्य थे। जिले में शामपुर भी एक छोटा कसबा है।

चौदहवां अध्याय।

गंगासागर

गंगासागर।

गंगासागर-स्नान का मेला मकर की, संक्रान्ति को, जो पौष या माघ में होती है, प्रतिवर्ष होता है। मेले के समय-कलकत्ते में साधुओं की बहुत जमात आती हैं, जिनको वहां के रईस लोग आगबोट और नावों में वहां से गंगासागर भेजते हैं और खाने पीने की सामग्री उनके साथ कर देते हैं। दुकान्दार भी नावहीं पर जाते हैं। कलकत्ते से ३८ मील दक्षिण 'डायमंड हारवर' तक रेल है; परन्तु उससे आगे बिना नाव के काम नही चलता, इस लिए प्रायः सब लोग कलकत्ते से नाव और आगबोटों में चढ़कर गंगासागर जाते हैं। नाव समुद्र के भाठा होने पर दक्षिण जाती है और ज्वार होने पर दक्षिण से उत्तर को चलती है।

मैं १६ रुपये पर आती जाती के लिये एक नाव भाड़ा करके उस पर सवार हो गंगासागर चला और खाने के सरंजाम और दो मटुके में पानी अपने साथ लेलिया। नाव भागीरथी में दक्षिण चली।

हवड़े से ७½ बजे नाव खुली और १¼ घंटे पर कंपनीवाग, ३¼ घंटे पर चंडियलहाट और वावड़ी गांव के सामने और ५ घंटे पर उलवड़िया पहुँची। कलकत्ते से चंडियलहाट तक गंगा के दोनों किनारे जगह जगह कल कार-खानों की ऊंची ऊंची चिमिनी देख पड़ती हैं।

कलकत्ते से १५ मील दक्षिण भागीरथी गंगा के वाएं किनारे पर हवड़ा जिले के सबडिवीजन का सदर स्थान उलवड़िया एक छोटा कसवा है। ष्टीमर हर रोज कलकत्ते के आरमेनियन घाट से खुल कर उलवड़िया में नहर द्वारा मेदनीपुर, जाता है। उलवड़िया से एक अच्छी सड़क मेदनीपुर, वालासोर और कटक होकर जगन्नाथपुरी तक पहुंची है।

उलवड़िया से आगे दामोदर नदी के मोहाने के सामने फुल्टा नामक एक

बड़ी वस्ती है। उससे आगे कलकत्ते से २० मील पर गंगा के दहिने मेदनीपुर जिले में लगभग ६००० मनुष्यों की वस्ती तमलूक है। वह पूर्व समय में वहुत मशहूर शहर और बौद्धों का एक वन्दरगाह था, जहां चीन का मुसाफिर फाहियन पांचवीं शदी के शुरू में सिलोन जाने के लिए उतरा था। उससे लगभग २५० वर्ष पीछे चीनीयात्री हायनतशांग ने इसको बौद्धों का प्रसिद्ध वंदरगाह लिखा था। तमलूक में एक मन्दिर है, जिसको वहां के लोग 'दरगाह भामा' या भोना कहते हैं। वह स्थान एक अजीव तेहरी दीवार से घेरा हुआ है। शुरू में वह वौध मन्दिर था।

तमलूक से १५ मील से अधिक दक्षिण जाने पर भागीरथी गंगा का जल छितरा गया है। दहिने और वाएं उस खाड़ी का जल फैला हुआ है, जिसको लोग ढोल समुद्र कहते हैं। गंगासागर के यात्री वाएं किनारे से जाते हैं। वाएं तरफ एक के वाद दूसरे ३ वंगले देख पड़ते हैं।

वांए चलने पर दो तीन घंटे में 'डामण्डहारवर' में नाव पहुंच जाती है, जो कलकत्ते से नदी की राह से ४८ मील और रेलवे द्वारा ३८ मील है।

डायमंड हारवर चौवीसपरगने जिले में एक सवडिवीजन का सदर स्थान है। उसके उत्तर हाजीपुर एक वड़ी वस्ती है। डायमंड हारवर में एक कस्टमहौस, मुनसिफी आदि सवडिवीजन की कचहरियां, और चिंग्रीखाल फोर्ट नामक एक छोटा किला है। रेल की ५ ट्रेन कलकत्ते से वहां जाती हैं। उससे २ मील उत्तर रूपनारायण नदी गंगा में गिरती है। डायमंड हारवर से आगे जाकर जहाज और आगवोट दहिने घूमते हैं और कजरी होकर; जो डायमंड हारवर से २० मील दूर भागीरथी के मुहाने के पास है, आगे समुद्र में जाते हैं।

डायमन्ड हारवर से चलने पर १/४ घंटे के पीछे चौपहला वुर्ज, १३/४ घंटे पर तीन महला वुर्ज, २१/२ घन्टे पर लकड़ी का खंभा और ३ घंटे पीछे वाएं तरफ टेंगराहाट गांव मीला। वहां वाजार लगता है; वहां से कलकत्ते तक करीव ४८ मील एक सड़क गई है। टेंगराहाट के पास काशीपुर एक वस्ती है। उस से आगे नदी के समान तंग खाड़ी मिलती है।

टेंगराहाट से चलने से १० घंटे पर एक दूसरी तंग खाड़ी में बाएं किनारे के पास मेरी नाव लगी, जहां से १२ मील आगे गंगासागर लोग बतलाते हैं। वहां यात्रियों की सैकड़ों नाव लगी थीं और जंगल से सूखी लकड़ी लाकर वे लोग रसोई बनाते थे। वहां मट्टी के बरतन बिकते थे।

वहां से चलने पर ६ घंटे में गंगासागर नाव पहुँची। मार्ग में खाड़ी के दोनों तरफ सघन जंगल है और जगह जगह छोटी छोटी नालियां जंगल से निकल कर खाड़ी में मिली हैं।

कलकत्ते से गंगासागर; अर्थात् सागर टापू जल मार्ग से लगभग ९० मील दक्षिण है। मेरी नाव पूरे ३ दिन में वहां पहुँची, जो तीन दिनों में ३८ घंटे चली। ज्वार होने पर नाव बांध दी जाती थी। मैं गंगासागर से लौटने पर भी ३ दिन में कलकत्ते पहुंचा।

गंगासागर में एक खाड़ी उत्तर से आकर समुद्र में मिली है। मकर की संक्रांति के समय उस संगम से उत्तर खाड़ी के पश्चिम किनारे पर करीब १ मील जंगल काट कर मेला बसाया जाता है। मेले में सड़कें निकाली जाती हैं। कलकत्ते से बहुत दुकानें और बंगाल से बहुत चटाइयां बिक्री के लिये वहां जाती हैं। इस वर्ष १००० से अधिक नाव और सात आठ आगबोट उस खाड़ी में लगे थे। मेले में लाखो आदमी जुटे थे। बहुतेरे लोग नावों में रहते थे और बहुतेरे आदमी टापू पर तारपत्त की चटाइयों के घर बना कर उनमें ठहरे थे। किनारे के पास दोहरी और तेहरी नाव लगी थीं। वहां का जमीन्दार नाववालों से फी डांड़ ४ आना महसूल लेता है।

मेले से पश्चिम दूर तक जंगल है, जिसमें सूखी लकड़ी बहुत मिलती है और बाघ, हरिन, सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। कई साल बाघों ने कई यात्रियों को मारडाला था।

ऐसा लोग कहते हैं कि गंगासागर में कपिलजी का स्थान गुप्त होगया था; उसको वैष्णव प्रधान रामानन्दजी ने प्रकट किया। संगम के पास एक टट्टी के ओसारे में घिसी हुई बहुत पुरानी कपिलजी की मूर्ति थी, जिनके दहिने राजा भगीरथ और बाएं रामानन्दजी की वैसीही बहुत पुरानी मूर्ति-

यां खड़ी थीं। यात्री लोग संगम पर स्नान करके समुद्र को नारियल, फल या फूल और कोई कोई पंचरत्न (मोती, हीरा, जमुरद, पोखराज, मूँगा) चढ़ाते हैं और कपिलजी का दर्शन और पूजन करते हैं। वहां की चढ़ी हुई पूजा अयोध्या के मठ के साधु लेते हैं। कपिलजी के स्थान से थोड़ा उत्तर मीठा जल का एक कच्चा पोखरा है, जिसमें मेले के समय कोई स्नान नहीं करने पाता; पीने के लिये घड़े में भर कर पानी लोग लेजाते हैं। पोखरे के भीण्डे पर फूस टट्टी की वनी हुई छोटी छोटी ४ कुटियां हैं। उससे कुछ दूर उत्तर खारा जल का दूसरा पोखरा और उससे भी उत्तर खारा जल का एक छोटा तीसरा पोखरा है, जिसके भीण्डे पर फूस टट्टी से वनी हुई साधुओं की ३ कुटियां वनी हैं।

समुद्र और खाड़ियों का जल खाने पीने के काम में नहीं आता और अंन्धियारी रात में उछालने पर गोड़सार की भौरआग के समान देख पड़ता है।

गंगासागर तीर्थ में कोई पंडा नहीं रहता। मकर की संक्रांति के समय वहां तीन दिन स्नान होता है; किन्तु मेला ५ दिन तक रहता है। मकर की संक्रांति के अतिरिक्त कार्तिक की पूर्णिमा को भी कुछ लोग गंगासागर जाते हैं; पर उस समय वाजार तथा दुकानें नहीं जातीं।

इस समय वहां सागर और गंगा के संगम का चिन्ह नहीं है। पहिले उस जगह संगम था। अव उस जगह समुद्र की खाड़ी है; गंगा का मुहाना पीछे हट आया है। कुछ काल से राजमहल से कुछ आगे वढ़ कर गंगा दो धाराओं में वंट गई हैं;—उनमें से प्रधान धारा पूर्व में ग्वालंडों के पास ब्रह्मपुत्र से मिलकर सहवाजपुर नामक टापू के सामने समुद्र में गिरती है, इसको पदमा तथा पद्मा कहते हैं और दूसरी धारा भागीरथी और हुगली के नाम से हुगली और कलकत्ते होकर दक्षिण को वहने के उपरान्त सागर टापू के पास समुद्र में मिली है। दोनों मुहाने के वीच में डेढ़ दो सौ मील के फासिले में गंगा की सैकड़ों धारा समुद्र में गिरती हैं; पानी की वहुतायत से उस जगह सघन जंगल रहता है; उसी जंगल का नाम सुन्दर वन है। आस पास के लोग गंगासागर को सागर तीर्थ और उस टापू को सागर टापू कहते हैं। पहिले वहुतेरे

अशुभ लड़के गंगासागर के समुद्र में फेंक दिए जाते थे। अंगरेज महाराज ने उस चाल को रोक दिया।

एक आगबोट मकर की संक्रांति के समय यात्रियों को कलकत्ते से गंगासागर पहुंचाता है और वहां से जगन्नाथ पुरी में उनको जगन्नाथजी का दर्शन करा कर फिर कलकत्ते में पहुंचा देता है।

सागर टापू में अब बहुत कम लोग रहते हैं। लोग कहते हैं कि उस में एक समय २००००० मनुष्य बसते थे, जो सन् १६८८ ई० की एक रात में बाढ़ से बह गए। हाल में टापू की कुछ भूमि जोती जाती है। सन् १८१२ ई० की नाप से टापू की सूखी भूमि १४३२६५ एकड़ हुई थी। कुछ दिनों तक टापू में नमक बनाया जाता था। सागर टापू में एक लाइट हाउस, जिस का काम सन् १८०८ में आरंभ हुआ; टापू के उत्तर टेलिग्राफ आफिस और दक्षिण-पश्चिम के अंत में एक अबजरवेटरी है। सन् १८६४ की तुफान से सागर टापू के ५६२५ मनुष्यों में से केवल १४८८ बंचे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अत्रिस्मृति—(६५ वां श्लोक) जिस मनुष्य को सांप काटा हो वह समुद्र के दर्शन से शुद्ध होता है।

महाभारत—(वनपर्व्व—८४ वां अध्याय) गंगा और समुद्र के संगम में स्नान करने से दस अश्वमेध का फल होता है।

(१०७ वां अध्याय) राजा सगर के यज्ञ-अश्व उनके ६० हजार पुत्रों से रक्षित होकर जल रहित समुद्र के तट पर आने पर अंतर्द्धान होगया। सगर के पुत्रों ने एक स्थान पर पृथ्वी को फटी हुई देखा। तब वे उस बिल को खोदने लगे। वह बिल समुद्र था। वे खोदते खोदते पाताल तक चले गयें। उन्होंने वहां देखा कि कपिलजी के पास घोड़ा घूम रहा है। तब वे लोग कपिलजी को निरादर करके घोड़ा पकड़ने को दौड़े; किंतु कपिलजी के तेजरूपी अग्नि से सब लोग जलकर भस्म होगये। (१०८वां अध्याय) राजा सगर के पुत्र असमंजस, असमंजस के अंशुमान, अंशुमान के दिलीप और दिलीप के पुत्र राजा भगीरथ हुए। भगीरथ ने जब सुना कि हमारे पितरों को महात्मा कपिल ने भस्म कर दिया था उस कारण से उनको स्वर्ग नहीं मिला तब हिमांचल पर

जाकर एक सहस्र वर्ष घोर तप किया। तव गंगाजी प्रकट होकर बोली कि हे राजन ! तुम क्या चाहते हो। भगीरथ बोले कि कपिल के क्रोध से जले हुए हमारे पुरुषों को तुम अपने जल से स्नान कराकर स्वर्ग में पहुंचावो। गंगा ने कहा कि हे राजन् ! तुम शिवजी को प्रसन्न करो; स्वर्ग से गिरती हुई हमको वही अपने सिर पर धारण करेंगे। भगीरथ ने कैलाश में जाकर घोर तपस्या करके शिवजी को प्रसन्न किया और उनसे यही वरदान मांगा कि आप गंगा को अपने सिर पर धारण करें (१०९ वां अध्याय) जब भगवान शिव ने राजा के वचन को स्वीकार किया तव हिमांचल की पुत्री गंगा बड़ी धारा से स्वर्ग से गिरी। गंगा को शिवजी ने भूषण के समान अपने सिर पर धारण कर लिया। गंगा शिव के सिर पर मोती की माला के समान शोभित होने लगी। उसने राजा से कहा कि कहो अब मैं किस मार्ग से चलूं। राजा भगीरथ जिधर राजा सगर के ६० हजार पुत्र मरे पड़ेथे उधरही चले। उन्हो ने गंगा को समुद्र तक पहुंचा दिया। गंगा ने समुद्र को (जिसको अगस्त्य मुनि ने पीलिया था) अपने जलसे पूर्ण करदिया। भगीरथ ने अपने पुरुषों को जलदान दिया।

(११४ वां अध्याय) पांडव लोग गंगा और समुद्र के संगम पर पहुंचे। उन्होंने ५०० नदियों के संगम में स्नान किया। अनन्तर वे लोग समुद्र के किनारे किनारे कलिंग देश की ओर चले, जहां वैतरनी नदी बहती है।

(सगर के पुत्रों के भस्म होने की और गंगा के समुद्र में आने की कथा वाल्मीकिरामायण में बालकाण्ड के ३८ वें अध्याय से ४३ वें अध्याय तक; पद्मपुराण के स्वर्ग खंड के ७८ वें अध्याय में; बृहन्नारदीय पुराण के ८ वें अध्याय में; दूसरे शिवपुराण के ११ वें खण्ड के २१ वें अध्याय से २२ वे अध्याय तक और श्रीमद्भागवत के ९ वें स्कन्ध के ८ वें और ९ वें अध्याय में है)

वाराहपुराण—(१७० वां अध्याय) गंगासागर संगम में स्नान करने से मनुष्य की ब्रह्महत्या दूर होती है।

कूर्म्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता-उत्तरार्द्ध-३६ वां अध्याय) सब समुद्र विशेष रूप से पुण्य देने वाले हैं।

श्रीमद्भागवत—(तीसरा स्कन्ध, ३३ वां अध्याय) भगवान कपिलदेवजी

अपने पिताके आश्रम (सिद्धपुर) में माता की आज्ञा लेकर ईशाण कोण की ओर (गंगासागर में) गये। वहां समुद्र ने उनका पूजन कर उनके रहने का स्थान दिया। अब तक कपिलदेवजी त्रिलोक की शान्ति के निमित्त योग धारण करके उसी स्थान पर विराजमान हैं।

पंद्रहवां अध्याय।

(सूबे उड़ीसे में) कटक, तप्तकुंड, भुवनेश्वर, और खंडगिरि।

कटक।

कलकत्ते के कोयलेघाट से सप्ताह में कई बार कई कंपनी के आगबोट यात्रियों को लेकर के खुलते हैं। एक आदमी का भाड़ा दो रुपया लगता है और आगबोट पर चढ़ानेवाली डोंगी का महसूल प्रति आदमी को दो आना अलग देना पड़ता है। चांदवाली में आगबोट से उतरना होता है। वहां से छोटे छोटे आगबोट नदी और नहर के मार्ग से यात्रियों को कटक पहुंचाते हैं। कटक से ५३ मील जगन्नाथपुरी तक सुन्दर सड़क बनी है। मकर की संक्रांति के समय कलकत्ते से एक कंपनी का आगबोट समुद्र के मार्ग से पुरी तक जाता है। वह यात्रियों को मकर की संक्रांति से एक दिन पहले गंगासागर में पहुंचाता है; संक्रांति के दूसरे दिन वहां से चल कर तीसरे दिन कलकत्ते से २७७ मील दूर पुरी में पहुंच जाता है; ३ रात पुरी में रह कर वहां से लौटता है और यात्रियों को लेकर उसके दूसरे दिन कलकत्ता पहुंच जाता है। एक आदमी के जाने आने का भाड़ा पहले दरजे का ५०), दूसरे दरजे का ३०) दरमियानी दरजे का १८) और तीसरे दरजे का १२) रुपया लगता है। समुद्र साधारण तरहसे कार्त्तिक से फागुन तक हलकी हवे के साथ शांत रहता है; इसके भीतर की यात्रा अच्छी है।

मैं एक बड़े आगवोट में, जिसपर रात्रि में विजली की रोशनी होती है, कोयलेघाट पर चढ़ा। आगवोट सवेरे ५ वजे खुला और १० वजे रात को चांदवाली में पहुंच कर वैतरनी नदी में लग गया। वहां बाजार है और यात्रियों के टिकने के लिये मोदियों के मकान वने हैं। कलकत्ते से जल के मार्ग से ३ मील कंपनीवाग, ६ मील रायगंज, २९ मील फल्टाहौस, ३६ मील लोवर फल्टा, ४८ मील डायमंड हारवर, ६८ मील कजरी और लगभग २०० मील चांदवाली है। चांदवाली से १२ कोस पश्चिम वैतरनी नदी के किनारे पर जाजपुर है, जिसका वृत्तान्त आगे मिलेगा। चांदवाली से छोटे छोटे आगवोट कटक जाते हैं। मैं दूसरे दिन दस वजे दिन में आगवोट पर चढ़ा। आगवोट वैतरनी नदी, ब्राह्मनी नदी और एक नहर में क्रम क्रम से चल कर २३ घंटे में कटक के जोवरा घाट पर (महानदी के दहिने तीर पर) पहुंच गया। मार्ग में स्थान २ पर नहर के फाटकों के पास मुसाफिर आगवोट पर चढ़ते उतरते थे।

कटक कसवे से कई एक सड़कें निकली हैं;—एक सड़क दक्षिण पुरी को; दूसरी पूर्वोत्तर जाजपुर, वालेश्वर और मेदनीपुर को तथा मेदनीपुर से पूर्व कलकत्ते को और उत्तर वांकुड़ा हो कर रानीगंज को; तीसरी पश्चिमोत्तर अंगोल हो कर संभलपुर को और चौथी सड़क दक्षिण-पश्चिम रंभा, गंजाम, ब्रह्मपुर, राजमहेंद्री और वैलोर होकर विजवाड़े को गई है।

सूवे उड़ीसे में (२० अंश, २९ कला, ४ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५४ कला, ९ विकला, पूर्व देशांतर में) महानदी के दहिने किनारे पर महानदी और उसकी शाखा काठजूड़ी के मेल के निकट सूवे उड़ीसे की राजधानी, कटक जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान शहर कटक है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कटक में ४७१८६ मनुष्य थे; अर्थात् २५२३५ पुरुष और २१९५१ स्त्रियां। इनमें ३६५०८ हिंदू, ८३९२ मुसलमान, २२४० कृस्तान, ४१ जैन, ३ वौद्ध और २ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ८१ वां और सूवे उड़ीसे में पहिला शहर है।

कटक शहर के उत्तर और पूर्व महानदी और पश्चिम काठजूड़ी नदी वहती है। वरसात में महानदी वहुत वढ़ जाती है। शहर को वाढ़ से

वंचाने के लिये काठजूड़ी के एक किनारे पर नीचे से ऊपर तक पत्थर के ढोकों से बांध वनाया गया है! नदियों की धाराओं को कावू में लाने के लिये कटक के पास मशहूर बांध वनाये गये हैं; जिनमें से विरूपा नदी का बांध लगभग दो हजार फीट लंबा और ९ फीट ऊंचा, जिससे उड़ीसे के खेतों को पटाने के लिये २ नहर निकली हैं और महानदी का बांध ६४०० फीट लंबा और १२½ फीट ऊंचा है। महानदी का बांध सन् १८६९—१८७० ई० में तैयार हुआ; उसके वनाने में लगभग १३ लाख रुपया खर्च पड़ा।

कटक के जोवरा नदी के पास जोवरा घाट पर महानदी में आगवोट लगते हैं और उसी घाट के पास आगवोट वनाने का कारखाना है। जोवरा-घाट से १ मील कटक शहर का वक्सी वाजार और २ मील वालू वाजार और चौधरी वाजार है। वालू वाजार में प्रधान दुकाने हैं। कटक शहर सोने और चांदी के गहने के लिये प्रसिद्ध है। इसके समान साफ और सुन्दर चान्दी के गहनें हिन्दूस्तान में दूसरी किसी जगह भी नहीं वनते हैं। कटक सूवे उड़ीसे में प्रधान तिजारती जगह है। वीमारी फैलने के डर से सर्वसाधारण यात्री शहर के भीतर जाने नहीं पाते हैं।

छावनियों के वीच में और किले को जाती हुई सड़क के दहिने डाक वंगाला है। उससे करीव ४०० गज वाद परेडकी जमीन है। शहर से लगभग १ मील दूर काठजूड़ी नदी के दक्षिण किनारे पर १४ वीं शदी के राजा अनंग-भीमदेव का वनवाया हुआ "वारह वटी" नामक एक पुराना किला हैं, जो अव मट्टी के टीलों का सिलसिला हो गया है। उसकी खाई के पत्थर सन् १८७३ में एक अस्पाताल वनाने के लिये और किले के पत्थर "फल्सपाइन्ट" के पास "लाइटहौस" वनाने के लिये ले लियेगये थे। किले के पूर्व की दीवार में एक फाटक और फतेहखां की मसजिद है। नहर के पुल के आगे दहिने ओर कमिश्नर की कचहरी, एक बड़ी इमारत है। इनके अलावे कटक में दीवानी और फौजदारी की कचहरियां, पुलिस-स्टेशन, अस्पाताल और स्कूल है।

कटक से वुध के दिन तीन कम्पनियों के छोटे छोटे कई आगवोट खुलकर चान्दवाली जाते हैं, जिनके यात्री वड़े आगवोटों पर चढ़कर चान्दवाली से

समुद्र की राहसे कलकत्ते पहुंचते हैं। हर शनीचर को एक छोटा आगबोट कटक से खुल कर आवा के पास समुद्र में जानेवाले आगबोट पर मोसाफिरों को चढ़ाता है; वह बड़ा आगबोट कलकत्ते जाने के लिये आवा से सोमवार को खुलता है। एक गवर्नमेंट आगबोट कटक से नहर होकर सप्ताह में दो बार भद्रक को जाता है। बी. आई. एस. एन. कम्पनी का आगबोट मद्रास और दूसरे बन्दरगाहों के लिये "फल्स पाइंट" के पास मोसाफिरों को चढ़ाता है। एक छोटा आगबोट कटक और फल्सपाइंट के बीच में आता जाता है और कलकत्ते और बम्बे और किनारों के दूसरे बन्दरगाहों के मोसाफिरों को उतारता चढ़ाता है। कटक से ६४½ मील फल्सपाइंट है; इसमें से ५४ मील नहर की राह है। आम तवर से मार्ग में २४ घंटे लगते हैं। कटक छोड़ने के आधे घंटे बाद बोट फाटक से निकलता है और केन्द्रपारा नहर में प्रवेश करता है। नहर के दो हिस्सों में हो जाने की जगह पर वह ६ घंटे में पहुंचता है। नहर की दहिनी शाखा मरसूघाट को और बायें वाली चान्दवाली के लिये आवा को गई है।

महानदी मध्य देश के रामपुर जिले में नवगढ़ के पास से निकल कर संभल-पुर होकर ५३० मील पूर्व-दक्षिण बहने के उपरान्त कटक से पचास साठ मील पूर्व "फल्सपाइंट" के पास समुद्र में मिली है। फल्सपाइंट लाइट हाउस से एक तरफ कलकत्ता २१७ मील और दूसरी तरफ जगन्नाथपुरी ६० मील है।

रेलवे लाइन दक्षिण-पश्चिम से बेजवाड़ा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटक के पास तक तैयार हो चुकी है और पूर्वोत्तर से मेदनीपुर तथा बालेश्वर होकर कटक तक कई एक वर्षों में तैयार हो जायगी।

कटक से दक्षिण-पश्चिम "सदर्न मरहटा रेलवे" के बेजवाड़े के स्टेशन तक "ईष्ट कोष्ट रेलवे" की लाइन बनगई है; पर अभी गाड़ी नहीं चलती।

(१) कटक से दक्षिण-पश्चिम "ईष्ट कोष्ट रेलवे," जिसका महसूल फी मील २ पाई होगा—

मील प्रसिद्ध स्टेशनों के फासिले; शहर से ६ मील कटक रोड से—

१२ भुवनेश्वर।

२२ खुरदा रोड (जङ्गनी)।
८४ रंभा।
११४ ब्रह्मपुर।
१२९ इच्छापुर।
२०५ चीकाकोल रोड।
२४८ विजयानगरम्।
२८४ विजगापट्टन।
३६९ कोकानद वन्दर।
३७८ समालकोट जंक्शन।
४१० राजमहेन्द्री।
५०८ वेजवाड़ा जंक्शन।

खुरदा रोड़ से एक लाइन जगन्नाथपुरी को जायगी।

(२) वेजवाड़े से पश्चिम-दक्षिण "सदर्न मरहठा रेलवे," जिसके तीसरे दर्जे का महसूल फी मील २ पाई है—

मील प्रसिद्ध स्टेशन—
७ मंगलगिरि।
१९½ गंतूर।
१८८½ नदियाल।
२३६ कर्नूल रोड।
२७९ गुंटकल जंक्शन।

(३) कटक से रामेश्वर का फासिला रेलवे द्वारा—

मील एक जगह से दूसरी जगह—
५०८ कटक से वेजवाड़ा जंक्शन।
२७९ वेजवाड़ा से गुंटकल जंक्शन।
१९२ गुंटकल से रेनिगुंटा जंक्शन।
४१ रेनिगुंटा से आरकोनम् जंक्शन।
१८ आरकोनम् से कांचीवरम्।
२२ कांचीवरम् से चिंगलपटम्
११६ चिंगलपटम् से चिदंबरम्।
४२ चिदंबरम् से कुंभकोनम्।
२५ कुंभकोनम् से तंजोर जंक्शन।
३४ तंजोर से त्रिचनापली फोर्ट।
९३ त्रिचनापली फोर्ट से मदुरा।

१३७० जोड़।

१०१ सड़क द्वारा मदुरा से रामेश्वर।

१४७१ कटक से रामेश्वर।

रेनिगुंटा जंक्शन से ६ मील त्रिपती (वालाजी), आरकोनम् जंक्शन से ४३ मील मदरास और त्रिचनापली फोर्ट से सड़क द्वारा ३ मील श्रीरंगजी हैं।

जो आदमी एकही यात्रा में जगन्नाथजी, रामेश्वर, द्वारिका और बदरी-नारायण जाना चाहे उनको नीचे लिखे हुए रास्ते से जाना चाहिए।

मील	नाम स्थान—
१३७०	कटक से मदुरा; वेजवाड़ा गुंटकल जंक्शन, आरकोनम् जंक्शन, कांची और चित्रनापल्ली होकर।
११०२	मदुरा से बम्बई; गुन्टकल और पूना होकर।
१००९	पोरबन्दर से हरिद्वार; महसाना जंक्सन अजमेर, गाजियाबाद और सहारनपुर होकर।
९१९	मील काठगोदाम से कलकत्ता; सीतापुर, लखनऊ, बनारस, मुगलसराय, पटना और वैद्यनाथ होकर।
४४००	मिजान रेल के रास्ते का कटक से कलकत्ते तक।
१०६	कटक से जगन्नाथपुरी और जगन्नाथपुरी से कटकतक; बैलगाड़ी की सड़क।
२०२	मदुरा से रामेश्वर और रामेश्वर से मदुरा तक; बैल गाड़ी की सड़क।
३७८	बम्बई से द्वारिका; आगबोट द्वारा।
५६	द्वारिका से पोरबन्दर, आगबोट द्वारा।
४१७	हरिद्वार से काठगोदाम; केदारनाथ, बदरीनाथ और मीलचौरी होकर पहाड़ी राह।
२६०	कलकत्ता से कटक आगबोट द्वारा।
१४१६	जोड़ खुसकी और जल के मार्ग का।
५८१६	जोड़ रेलवे, खुसकी और जल के मार्ग से; कटक से; पुरी, रामेश्वर, द्वारिका और बदरीनाथ होकर कटक तक।

कुछ लोग रामेश्वर जाने के लिये कटक से जल और थल (अर्थात् सड़क) के मार्ग से प्रायः समुद्र के किनारे किनारे रंभा, गंजाम, ब्रह्मपुर, चिकाकोल, विजयानगरम्, सावलकोटा, राजमहेंद्री, धवलेश्वर, वेलौर, वेजवाड़ा, नैलोर, व्यंकटगिरि आदि प्रसिद्ध स्थानों को होकर रैनिगुन्टा जंक्शन में जाकर रेल-गाड़ी में चढ़ते हैं। कोई कोई आदमी वेजवाड़े के स्टेशन पर रेलगाड़ी में

सवार हो गुन्टकल जंक्शन होकर रैनिगुन्टा जाते हैं। राजमहेंद्री के समीप गोदावरी नदी और वेजवाड़े के निकट कृष्णा नदी पार उतरना पड़ता है। वेजवाड़े से ३ कोस मंगलगिरि पर पन्नानृसिंह हैं। यह पैदल का मार्ग क्लेश दायक है; किन्तु अब इस मार्ग में रेल बन गई।

कटक जिला—यह उड़ीसा विभाग के मध्य का जिला ३५१७ वर्ग मील में फैलता है। इसके उत्तर वैतरनी नदी और धमरा कोल, जो बालेश्वर जिले से इसको अलग करते हैं; पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण पुरी जिला और पश्चिम उड़ीसा का मालगुजार राज्य है। जिले का सदर-स्थान कटक है। इस जिले की अनेक पहाड़ियों पर देव-स्थान और छोटे छोटे पुराने किले देखने में आते हैं। उदयगिरि पहाड़ी पर पवित्र तालाव और हीन दशा में पड़े हुए अनेक मंदिर और गुफाएं हैं। जिले की सब से ऊंची पहाड़ी २५०० फीट ऊंची है। देशी राज्य में एक पहाड़ी की महाविद्या चोटी पर एक प्रसिद्ध शिव मंदिर है। जिले के उत्तरी सीमा पर वैतरनी नदी, दक्षिण भाग में महानदी और मध्य में ब्राह्मणी नदी बहती है। ये तीनों नदियां धमरा, महानदी और देवी इन तीन समुद्र के कोलों द्वारा समुद्र में मिली हैं। बालेश्वर जिले में धमरा गांव के निकट बंदरगाह है। कटक जिले में ४ नहर भी बनी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कटक जिले में १७३८१६५ मनुष्य थे; अर्थात् १६८७६०८ हिंदू, ३७२५९ मुसलमान, २३३१ कृस्तान, ८५७ आदि निवासी इत्यादि, १०४ सिक्ख, ३ बौद्ध, और ३ ब्राह्म। जातियों के खाने में ३३९४२५ खंडाइत, १७७१९३ ब्राह्मण, १४०८७० ग्वाला, १०३३१४ चासा, ७८९६७ पान, ७३८८२ कंधारा, ५८५५९ तेली, ५६८१९ बाउरी, ५३४३६ शूद्र, ४६८९८ कैवट, ४१७७७ तांती, ४१७६१ कान, ३२७०९ बनियां, २४७९२ गोंड़, १०७८२ राजपूत और शेष में भुइया, खरवार, खांद, सवर इत्यादि थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कटक जिले के कसबे कटक में ४७१८६, केन्द्रपाड़ा में १७६४७ और जाजपुर में ११९९२ मनुष्य थे। उस जिले में खुर्दा एक प्रसिद्ध बस्ती है।

इतिहास—कटक जिले का इतिहास उड़ीसे के इतिहास में सामिल है। केशरी वंश के एक प्रतापी राजा नृपति केशरी ने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहर को बसाया और केशरीवंश की राजधानी भुवनेश्वर को छोड़ कर कटक में रहने लगा। अंगरेजों ने सन् १८०३ ई० में उड़ीसा देश के विजय करने के समय कटक के पुराने किले को ले लिया। वह किला हीन दशा में अवतक विद्यमान है।

सूबे उड़ीसा—बंगाल के लेफ्टिनेंट-गवर्नर के आधीन विहार, बंगाल, छोटानागपुर और उड़ीसा ये ४ सूबे हैं;—इनमें से सूबे उड़ीसे का प्रधान शहर और उसकी राजधानी कटक है। सूबे उड़ीसे के उत्तर और पूर्वोत्तर सूबे छोटा नागपुर और सूबे बंगाल; पूर्व और दक्षिण-पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण मदरास हाता और पश्चिम मध्यदेश है। इस सूबे का क्षेत्रफल २४२४० वर्ग मील है, जिनमें से भीतर की ओर १५१८७ वर्ग मील उड़ीसे के मालगुजार राज्य और समुद्र के किनारे की ओर ९०५३ वर्ग मील अंगरेजी राज्य है। उड़ीसे की नदियों में महानदी, ब्राह्मनी, वैतरनी, सुवर्णरेखा और सिंलदी नदी और मंदिरों में भुवनेश्वर; जगन्नाथ जी और कोनार्क के मंदिर प्रधान हैं। उस सूबे की पहाड़ियों में कई बौद्ध गुफाएं बनी हुई हैं।

उड़ीसे के अंगरेजी राज्य में कटक, पुरी, वालेश्वर, वांकी और अंगोल ये ५ जिले हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय अंगरेजी राज्य में ३७३०७३९ मनुष्य थे; अर्थात् ३६३४०४९ हिंदू, ८५६११ मुसलमान, ६९३० जंगली और पहाड़ी इत्यादि, ३९८२ कृस्तान, १५२ सिक्ख, ७ बौद्ध, ३ ब्राह्म, और १ यहूदी। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कटक जिले के कसबे कटक में ४७७४६, केंद्रपाड़ा में १७६४७ और जाजपुर में ११९९२; पुरी जिले के पुरी कसबे में २८७९४ और वालेश्वर जिले के वालेश्वर कसबे में २०७७५ मनुष्य थे।

सूबे उड़ीसे के अंगरेजी राज्य के ५ जिलों में से वांकी और अंगोल ये दोनों पहिले देशी मालगुजार राज्य थे। सन् १८४० में वांकी और सन् १८४७ में अंगोल का राज्य अंगरेजी सरकार ने छीन लिया। अब ये अंगरेजी मिल-

कियत हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बांकी जिले के ११६ वर्गमील क्षेत्रफल में ५६९०० मनुष्य थे, अर्थात् ५६६१९ हिंदू, २७० मुसलमान और ११ कृस्तान और अंगोल जिले के ८८१ वर्ग मील क्षेत्रफल में १०१९०३ मनुष्य थे; अर्थात् १००३६६ हिंदू, २७५ मुसलमान, ६ कृस्तान और १२५६ आदि निवासी इत्यादि।

सूबे उड़ीसे के प्रायः सब लोग काले और सांवले रंग के होते हैं। वे अपने सिर पर बड़े घेरे का शिखा रखते हैं। प्रायः सब हिंदू सर्वदा अपनी दाढ़ी और मूछ मुड़वाते हैं। उड़ीसे में बहुतेरे लोगों को हाथीपांव की बीमारी होती है। बंगाल के अपेक्षा वहां के लोग गंवार होते हैं। सूबे बंगाल के समान वहां के लोगों का भी साधारण भोजन मछली और भात है। वे लोग पान बहुत खाते हैं।

उड़ीसे में उड़िया अक्षर प्रचलित हैं। सरकारी कचहरियों में भी उड़िये अक्षर में काम होता है। बहुतेरे ग्रन्थ ताड़-पत्रों पर उड़िये अक्षर में लिखे हुए हैं और लिखे जाते हैं। ताड़के पत्रों पर एक तरह के कांटे से बिना स्याही के अक्षरों की लकीरें लिखी जाती हैं।

वहां के लोग २½ या ३ मील को एक कोस कहते हैं। वहां आटा कम होता है; वर्तन काले रंग के होते हैं; परन्तु पुरी में नहीं। समुद्र के निकट नमक बनता है। उड़ीसे में १०५ रुपये के वजन का सेर चलता है। चावल आदि कच्ची रसोई की सामग्री सर्वत्र मिलती हैं। बहुतेरे तालावों और पोखरियों के जल गंदे होते हैं। उड़िये लोग उसी का जल पीते हैं और उसी के किनारे मल मूत्र त्याग करते हैं। उड़ीसे का जल वायु बड़ा रोगकारक है। सरकार बीमारी फैलने के भय से कटक आदि शहरों में सर्व साधारण परदेशी मुसाफिरों को जाने नहीं देती है। शहर और बड़ी चटियों के मकानों मे आइन के नियम के मोताविक मुसाफिर टिक सकते हैं; अधिक मुसाफिरों को टिकाने से मकान के मालिक को सजा होती है। वहां के लोग चैतन्य महाप्रभु को विष्णु का अवतार मान कर उनकी पूजा करते हैं और अपने अपने मकान के पास उनकी पूजा के लिए एक छोटा गृह खाली रखते हैं। चैतन्य ने वैष्णव के मत की शिक्षा संपूर्ण बंगाल और उड़ीसे में फैलाई।

उड़िया वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ

ଅ ଆ ଇ ଈ ଉ ଊ ଋ ୠ ଌ ୡ ଏ ଐ ଓ ଔ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ

କ ଖ ଗ ଘ ଙ ଚ ଛ ଜ ଝ ଞ ଟ ଠ ଡ ଢ ଣ ତ ଥ

द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

ଦ ଧ ନ ପ ଫ ବ ଭ ମ ଯ ର ଳ ବ ଶ ଷ ସ ହ

का कि की कु कू के कै को कौ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

କା କି କୀ କୁ କୂ କେ କୈ କୋ କୌ ୧ ୨ ୩ ୪ ୫ ୬ ୭ ୮ ୯

देया के

मेदनीपुर
ा जिला
ौर छोटे
नीचे है—

गवर्नमेन्ट का 'कर' रुपया
१०६०
५९००
८०
१९७०
५५२०
१४००
४१२०
६६०
३९००
१४००
२८२०
१४५०
१०३०
४८०
५२०
८८०
+
३३२२०

चैतन्य महाप्रभु का जीवन चरित्र भारत भ्रमण के इसी खंड के नदिया के वृत्तांत में है।

उड़ीसे में १७ मालगुजार राज्य हैं। उनके उत्तर सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला; पूर्व उड़ीसे का अंगरेजी राज्य; दक्षिण मदरास हाते का गंजाम जिला और पश्चिम मध्य देश में पटना, सोनपुर, बामड़ा इत्यादि देशी राज्य और छोटे नागपुर में कई छोटे देशी राज्य हैं। उड़ीसे के मालगुजार राज्यों का लिस्ट नीचे है—

नंबर	मालगुजार राज्य	क्षेत्रफल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	तसखीसी मालगुजारी रूपया	गवर्नमेन्ट का 'कर' रूपया
१	मोरभंज	४२४३	३८५७३७	३३२०९०	१०६०
२	धंकेल...	१४६३	२०८३१६	१०११००	५९००
३	चोड़	२०६४	१३०१०३	१००००	८०
४	क्योंझोर	३०९६	२१५६१२	९००००	१९७०
५	नयागढ़	५८८	११४६२२	५००००	५५२०
६	बरंबा....	१३४	२९७७२	२८३६०	१४००
७	खांडपाड़ा...	२४४	६६२९६	२४४५०	४१२०
८	दसपला	५६८	४१६०८	२००००	६६०
९	नीलगिरि...	२७८	५०९७२	१९९५०	३९००
१०	रानापुर	२०३	३६५३९	१५०००	१४००
११	अठगढ़	१६८	३१०७९	१४९४०	२८२०
१२	नरसिंहपुर....	१९९	३२५८३	१२०००	१४५०
१३	तालचर	३९९	३५५९०	१२०००	१०३०
१४	अठमलिक	७३०	२१७७४	११०००	४८०
१५	हिन्डोला	३१२	३३८०२	१००००	५५०
१६	टिगरिया	४६	१९८५०	८०००	८८०
१७	पलहरा	४५२	१४८८७	५०००	+
	जोड़।	१५१८७	१४६९१४२	७७१३[illegible]	३३[illegible]

इन राजाओं में मोरभंज, धंकेल, वोड़, क्योंझोर, नयागढ़ इत्यादि के बहुतेरे राजा राजपूत हैं। पलहरा राज्य के गवर्नमेंट का कर क्योंझोर में सामिल है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इन राज्यों में से केवल खांडपाड़ा वस्ती में ५ हजार से अधिक याने ५०५१ मनुष्य थे।

उड़ीसे के मालगुजार राज्यों में बहुत पहाड़ी सिल सिले हैं। भीतर की ऊंची भूमि पर महानदी, ब्राह्मणी और वैतरनी ये ३ बड़ी नदियां बहती हैं। जंगलों का दृश्य मनोरम है। समतल भूमि पर हिन्दू उड़िया लोग, जो आवादी के तीन चौथाई हैं, वसते हैं और पहाड़ियों पर आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली लोग निवास करते हैं। उनमें खांद अधिक प्रसिद्ध हैं, जो केवल खेती और लड़ाई का काम करते हैं। उनके देवते बहुत हैं, जिनको वे लोग रुधिर चढ़ाते हैं। उनमें पृथ्वी देवी प्रधान हैं, जिसको वर्षमें दो वार खेत वोने और काटने के समय मनुष्य वलि दिए जाते थे; उस मनुष्य को खंभे में वांध कर उसको टुकड़े टुकड़े करके प्रत्येक खेत में एक टुकड़ा गाड़ा जाता था। जव सन् १८३५ ई० में वहां अङ्गरेजी राज्य हुआ, तव नर वलिदान रोका गया और उस काम के लिये अंगरेजी अफसर नियत किये गये।

एक जाति जुआंग या पटुआ कहलाती है, उस जाति के लोग पहले नंगे रहते थे। उनकी स्त्रियां अपने आगे पीछे पतों के गुच्छे लटकाती थीं। सन् १८७१ ई० में वहां के अङ्गरेजी अफसर ने उनको पहनने के लिए कपड़े के टुकड़े दिये, तवसे वे कपड़े पहनने लगीं।

इतिहास—उड़ीसे के पूर्व काल का इतिहास तार के पत्तोंपर लोहे के कलम से विना रोशनाई के लिखा हुआ है। उसमें महाभारत के समय से वर्तमान समय तक के १०७ राजाओं के नाम हैं और लिखा है कि पहले के १२ राजाओं ने ३ हजार वर्ष से अधिक राज्य किया था; जिनमें से पहले के ३ राजाओं ने, जिनका नाम महाभारत में है, लगभग १३०० वर्ष राज्य किया।

उड़ीसे का ठीक इतिहास सन् ईस्वी के पहिले १४०७ और १०३६ वर्ष के वीच से या राजा शंकरदेव के उत्तराधिकारी गौतमदेव के समय से आरंभ

होता है। उस वंश के छठवें राजा महेंद्रदेव के राज्य के समय में शहर राज-महेंद्री बसाई गई और राजधानी बनी। वह राजा सन ईस्वी के पहिले १०३७ और ८२२ के बीच में था। सन् ईस्वी के चार पांच सौ वर्ष पहिले से उसके आरंभ तक उड़ीसे में बौद्ध लोगों का राज्य था। सन् ईस्वी के ५० वर्ष पहिले से ३१९ वर्ष पीछे तक का इतिहास ताड़ के पत्तों के लेख में नहीं है। यह जान पड़ता है कि उसी समय में उड़ीसे की पहाड़ियों और चट्टानों में काट कर गुफा और मठ बनाये गये। उड़ीसे के चट्टानों पर के राजा अशोक के समय के शिला लेखों से और बौद्ध गुफाओं से निश्चय होता है कि इशा के ४०० वर्ष पहिले से और लगभग ३०० वर्ष पीछे तक उड़ीसे में खास करके बौद्धों की प्रधानता थी।

सन् ४७४ ई० में केशरी वंश के राज्य के नियत करने वाला राजा ययातिकेशरी उड़ीसे पर आक्रमण करने वाले यावानों को खदेर कर उड़ीसे का राजा बना। उसकी राजधानी भुवनेश्वर कसबा था। उसी समय भुवने-श्वर का बड़ा मंदिर बनाया गया। केशरी वंश के राजाओं के पहिले के उस देश के राजा बौद्धमत के थे। केशरी वंश के एक प्रतापी राजा ने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहर को बसाया। सन् ११३२ में केशरी वंश के राज्य का अंत होगया; गंगा वंश का एक राजा दक्षिण से आकर उड़ीसे में राज्य करने लगा। केशरी वंश के राजा शैव थे; किंतु गंगा वंश के राजा वैष्णव हुए। इस वंश के पांचवें राजा अनंगभीमदेव ने, जिसने सन् ११७५ से १२०२ तक राज्य किया था, जगन्नाथजी के वर्तमान मंदिर को बनवाया। यह उड़ीसे के सब से बड़े राजाओं में से एक था। कबीरजी ने सन् १३८० और १४२० के बीच में उड़ीसे में धर्म उपदेश किया था और चैतन्य महाप्रभु ने, जो सन् १४८५ से १५२७ तक थे, उड़ीसे के लोगों को शिक्षा दी थी। उड़ीसे में घर घर चैतन्य महाप्रभु की पूजा होती है। सन् १५३२ में गंगा वंश का अंतिम राजा मर गया, उसके दीवान ने सन् १५३४ में उस वंश के सब लोगों को मारकर उस राज्य को ले लिया।

सन् ५६७—६८ में बंगाल के अफगान मुसलमान सुलेमान ने उड़ीसे के

स्वाधीन हिंदू राजा को जाजपुर की दीवार के भीतर परास्त किया। उसने पुरी को भी लेलिया। हिंदू राज्य का अंत हो गया। सुलेमान का पुत्र दाउदखां दिल्ली के बादशाह की आधिनता छोड़ कर स्वाधीन बन गया, इस लियें मुगल और अफगानों की लड़ाई हुई। सन् १५७४ में अफगान लोग परास्त हुए। सन् १५७८ में दूसरी बार अफगानों के परास्त होने पर उड़ीसा देश अकबर के राज्य का एक भाग बना। सन् १७५१ में महाराष्ट्रों ने मुगलों से उसको जीत लिया। सन् १८०३ में अंगरेजों ने उड़ीसे पर आक्रमण करके उसको अपनें अधिकार में कर लिया।

उड़ीसे के मालगुजार राजाओ में से अंगोल के राजा ने सन् १८४७ में बगावत किया, इसलिये उसका राज्य अंगरेजी सरकार ने छीन लिया और बांकी के राजा पर सन् १८४० में खून का मुकद्दमा सावित हुआ, इस कारण से उसका राज्य अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(आदिपर्व, १०४ वां अध्याय) बली नामक राजा की सुवेष्णा स्त्री से एक अंधे ऋषि ने संभोग किया, जिससे अंग, बंग, कलिंग, पुंड्र और सुह्य ये ५ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके नाम से एक एक देश हो गए। उनमें से कलिंग के नामसे कलिंग देश हुआ। (वनपर्व ११४ वां अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडवगण वनवास के समय पर्य्यटन करते हुए गंगासागर तीर्थ में स्नान करके समुद्र के तीर तीर चले। उन्होने कलिंग देश में वैतरनी नदी पार उतर कर वहां पितरों का तर्पण किया। पीछे वे लोग उसस्थान से दक्षिण को चलते चलते महेंद्राचल पर्वत पर पहुंचे। कूर्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता, उत्तरार्द्ध, ३८ वां अध्याय) कलिंग देश के पश्चिमार्द्ध में अमरकंटक पर्वत से नर्मदा नदी निकली है (ऊपर के लेखों से ज्ञात होता है कि सूबे उड़ीसे और मध्यदेश इन दोनों में कलिंग देश है)।

लिंगपुराण—(६५ वां अध्याय) सूर्य्य का पुत्र मनु और मनु का पुत्र सुद्युम्न हुआ। सुद्युम्न के उत्कल, गय और विनताश्व ये ३ पुत्र जन्मे, जिनके नामसे एक एक देश हो गये। उनमें से उत्कल के नाम से उत्कल देश हुआ। आदि ब्रह्मपुराण—(४१ वां अध्याय) समुद्र के उत्तर भागमें विरज क्षेत्र

(जाजपुर) में वैतरनी नदी है; इस तीर्थ के अतिरिक्त उत्कल देश में अन्य भी अनेक पवित्र तीर्थ हैं और पुरुषोत्तम भगवान निवास करते हैं (ऊपर के लेखों से जान पड़ता है कि कलिंग देश का एक भाग उत्कल देश है)।

आदि ब्रह्मपुराण—(२७ वां अध्याय) दक्षिण के समुद्र के समीप में ओड्र देश विख्यात है, जिसमें कोंणादित्य सूर्य (अर्थात् कोंणार्क) रहते हैं (ओड्र देश का अपभ्रंश उड़ीसा देश है; उड़ीसे का नाम उत्कल और ओड्र पुराणों से सिद्ध होता है)।

तप्तकुण्ड।

कटक शहर से २५ मील पश्चिम पुरी जिले का एक सब डिवीजन का सदर-स्थान खुरदा एक बड़ी बस्ती है, जिसमें जगन्नाथपुरी के राजा के पूर्वज लोग रहते थे। वहां पुराने किले की निशानी अब तक विद्यमान है; एक मजीष्टर रहता है और बाजार लगता है। सन् १८१८ ई० से १८२८ तक जिलेका सदर स्थान खुरदा था। एक सड़क कटक से खुरदा हो कर गंजाम को गई है।

खुरदा से ६ मील पश्चिम बाघमारो गांव के समीप तप्तकुंड नामक एक कूप है, जिसका उष्ण जल सर्वदा खौलता रहता है। कूप से थोड़ी दूर पर एक पोखरे के निकट हाटकेश्वर महादेव का मंदिर है। वहां मकर की संक्रांति के समय एक मेला होता है। मेला एक मास रहता है। उसमें कपड़े, वर्तन आदि की दूकानें जाती हैं।

भुवनेश्वर।

कटक से दक्षिण जगन्नाथ-पुरी तक ५३ मील बैलगाड़ी की सड़क है। सड़क के किनारों पर मील के पत्थर लगे हैं। दो ढाई रुपये के किराये पर एक बैलगाड़ी कटक से पुरी तक जाती है।

कटक से १९ मील दक्षिण भुवनेश्वर बस्ती है। कटक से चलने पर २ मील आगे एक चट्टी, (उससे आगे १ मील तक नदी का वालू) ३½, ४½, ७½, और १३½ मील पर एक एक चट्टी मिलती है। पिछली चट्टी से आगे नदी

के घालू का मैदान है, जिसमें आगे पुरी की सड़क और दहिने ओर भूवनेश्वर की राह गई है। पिछली चट्टी से लगभग ८½ मील भुवनेश्वर है।

सूबे उड़ीसे के पुरी जिले में (२० अंश, १४ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५२ कला, २६ विकला पूर्व देशांतर में) भुवनेश्वर, रामेश्वर, कपिलेश्वर और भास्करेश्वर के मंदिरों के मध्य में भुवनेश्वर नामक बस्ती है, जिसमें लगभग ४००० आदमी बसते हैं, जिनमें से आधे पंडे तथा पुजारी हैं। भुवनेश्वर क्षेत्र का नाम पूराणों में एकाम्र क्षेत्र लिखा है। यह एक समय उन्नति करता हुआ राज्य की राजधानी था। इसके आस पास दूर दूर तक पथरीली भूमि और जंगल है, जिसमें पहिले ७००० शिव-मंदिर थे, जिनमें से पांच छः सौ अबतक विद्यमान हैं। इन मंदिरों का सुधार कभी नहीं हुआ। सब मंदिर प्रायः एकही प्रकार के हैं और सब में एकही ढंग का पत्थर लगा है। पत्थरों पर फूल और बेल बूटों के अतिरिक्त पत्थर खोदकर असंख्य मूर्तियां बनाई गई हैं। इनमें से अनेक मंदिर बड़े बड़े और सुन्दर हैं; किंतु भुवनेश्वर का मंदिर सबसे विशाल है। यहां के मंदिर जर्जर होगये हैं; इनके सुधार की बड़ी आवश्यकता है।

मंदिर—भुवनेश्वर बस्ती के पास पुरी के जगन्नाथजी के मंदिर से पहिले का बना हुआ भुवनेश्वर का विशाल मंदिर है। यह मंदिर कारीगरी और बनावट में जगन्नाथजी के मंदिर से भी अच्छा है। प्रधान मंदिर १८० फीट ऊंचा है। इसके प्रत्येक इंच खास करके खड़े हिस्से नकाशी के काम से पूर्ण हैं। मंदिर के शिखर पर त्रिशूल लगा है। इसके भीतर ८ फीट व्यास के अर्घे पर ½ हाथ ऊंचे भुवनेश्वर शिवलिंग हैं, जिनको वहां के पंडे लोग हरिहरात्मक कहते हैं। मंदिर में अंधियारा रहता है इस लिये दिन में भी भीतर दीप जलाया जाता है।

भुवनेश्वर का मन्दिर पूर्व मुख का है। मन्दिर के आगे जगमोहन, जगमोहन के आगे नृत्यमंडप और उसके आगे भोगमन्दिर (एक दूसरे से लगा हुआ) है। मन्दिर के चारो तरफ बड़े बड़े पत्थरों से बनी हुई ७ फीट मोटी ऊंची दीवार है, जिसके भीतर देवताओं के बहुतेरे छोटे मन्दिर बने हैं।
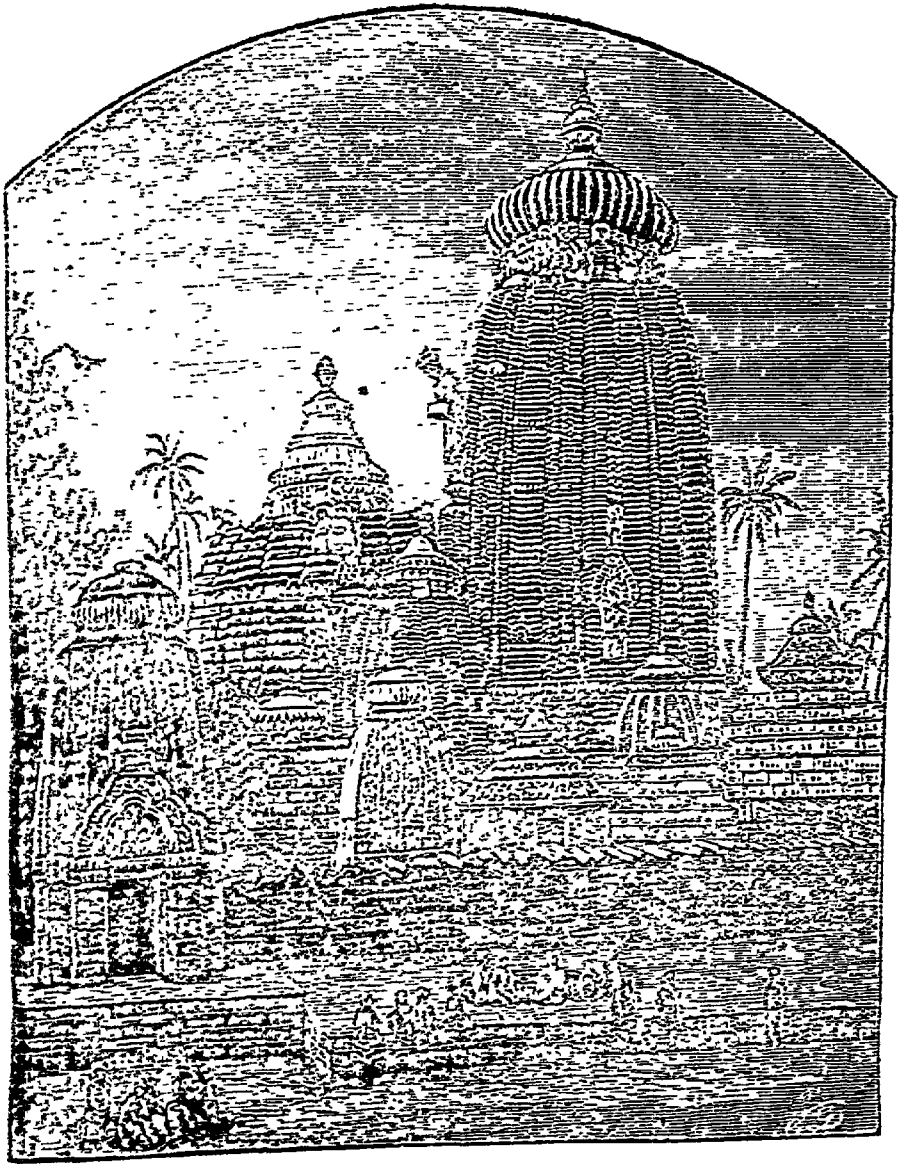
उड़ीसा देशका प्रसिद्ध भुवनेश्वरका मन्दिर ।

भोग मन्दिर के पूर्व सिंह दरवाजे पर सिंह की २ मूर्तियां हैं। घेरे के भीतर हिंदुओं के सिवाय दूसरा कोई नहीं जाने पाता है। भुवनेश्वर शिव की पूजा नीचे लिखे हुए क्रम से नित्य होती है;—

१ भोर को घंटी बजा कर वह जगाये जाते हैं।
२ आरती की जाती है।
३ मुख धोलाया जाता है।
४ स्नान कराया जाता है।
५ कपड़ा पहनाया जाता है।
६ दाना, मिठाई, दही और नारियल का जलपान कराया जाता है।
७ पूरी आदि से प्रधान भोग लगाया जाता है।
८ छोटा जलपान कराया जाता है।
९ मामूली जलपान कराया जाता है।
१० कच्ची और पक्की भोग लगाया जाता है।
११ दोपहर के बाद बाजा बजा कर शिव जगाए जाते हैं।
१२ मिठाई का भोग लगाया जाता है।
१३ दोपहर के बाद स्नान कराया जाता है
१४ वस्त्र पहनाये जाते हैं।
१५ दूसरा भोग लगाया जाता है।
१६ दूसरा स्नान कराया जाता है।
१७ बहुमूल्य वस्त्र पहना कर पुष्प और इतर चढ़ाया जाता है।
१८ भोग लगाया जाता है।
१९ एक घंटे बाद रात को भोग लगाया जाता है।
२० डमरू लिए और नृत्य करते हुए पंचमुखी महादेव की मूर्ति रक्खी जाती है।
२१ सोने के समय आरती होती है।
२२ सोने के लिये सय्या बिछाई जाती है।

बहुतेरे यात्री नृत्यमंडप के भीतर जगन्नाथपुरी के समान सब वर्ण एकही पंक्ती में बैठकर भोग लगी हुई कच्ची रसोई खाते हैं; पर मंडप से बाहर कोई नहीं खाता और बहुतेरे लोग पक्की प्रसाद लेते हैं। पंडे लोग कहते हैं कि जमीन की आमदनी से भोग राग में नित्य २५ रुपया खर्च होता है। पुरी के यात्री पुरी जाने के समय या पुरी से लौटने पर भुवनेश्वर में जाते हैं।

घेरे के बाहर बहुतेरे छोटे मन्दिर और पूर्वोत्तर के कोने के पास चबूतरा है। उसके बाद पूर्व १०८ छोटे मन्दिरों से घेरा हुआ एक तालाब है। बड़े मन्दिर के दक्षिण २० एकड़ का जंगल है। लोग कहते हैं कि ललित इन्द्र-

केशरी का महल इसी जगह था। प्रत्येक जगह नेव और पाटनों की निशानियां देख पड़ती हैं।

बड़े मन्दिर के उत्तर विन्दुसरोवर नामक बड़ा तालाव है। तालाव के जल के मध्य में एक मन्दिर और स्थान बना है, जहां उत्सवों के समय में देवतों की चल मूर्तियां बैठाई जाती हैं। तालाव के किनारे के पास वासुदेव अर्थात् कृष्णजी और अनन्त अर्थात् बलदेवजी का मन्दिर है। मंदिर के आगे जगमोहन, नृत्यमंडप और भोगमन्दिर क्रम से बने हैं। तालाव के पूर्व बगल से भुवनेश्वर के मन्दिर की शकल के (पर उस से छोटे) कई एक मन्दिर देख पड़ते हैं।

वासुदेव के मन्दिर से ½ मील पूर्वोत्तर ४० फीट ऊंचा कोटितीर्थेश्वर का मन्दिर है। कोटितीर्थेश्वर के मन्दिर से ½ मील पूर्व एक टीले पर नवीं शदी के अंतका बना हुआ ब्रह्मेश्वर शिव का मन्दिर है। इसमें भीतर और बाहर बहुत नक्कासी का काम है। मन्दिर के पश्चिम ब्रह्मकुण्ड नामक एक तालाब है।

बड़े मन्दिर के पूर्वोत्तर छठवीं शदी के आरंभ का बनाहुआ हीन दशा में भास्करेश्वर शिव का मन्दिर है। भास्करेश्वर से ½ मील पश्चिम राजरानी का मन्दिर है, जो एक समय खुबसूरत था। मन्दिर के ताकों में ३ फीट ऊंची मूर्तियां हैं। राज रानी के मन्दिर से ३०० गज पश्चिम आम के वृक्षों का एक कुंज है, जहां बहुतेरे मन्दिर बने हैं, जिनमें २० से अधिक अभी तक पूरे हैं; इनमें मुक्तेश्वर, केदारेश्वर, सिद्धेश्वर और परशुरामेश्वर प्रसिद्ध हैं। मुक्तेश्वर का मन्दिर ३५ फीट ऊंचा बहुत खुबसूरत है; इसमें बहुत कारीगरी की मूर्तियां बनी हुई हैं। मन्दिर के पीछे एक तालाव और उस से ३० फीट दक्षिण मछलियों से भरा हुआ गौरीकुण्ड नामक छोटा तालाव है। पहिला तालाब का पानी इसमें आता है; परन्तु बहुत पानी बाहर निकलता है। गौरी कुण्ड के पास ४१ फीट ऊंचा केदारेश्वर का मन्दिर है, जिसके पास एक कोठरी में ८ फीट ऊंची हनुमान की और सिंहासन पर खड़ी एक दुर्गा की मूर्ति है। यह मन्दिर बहुत पुराना है। मुक्तेश्वर के पश्चिमोत्तर एक सुन्दर जगमोहन के साथ ४७ फीट ऊंचा सिद्धेश्वर का पुराना मन्दिर है। गौरी

तालाब के २०० गज पश्चिम सब मन्दिरों से अधिक पुराना परशुरामेश्वर का मन्दिर है। परशुरामेश्वर से पूर्वोत्तर सुर्ख पत्थर से बना हुआ अलम्बु-केश्वर का मन्दिर है, जिसको केशरी वंश के राजा अलम्बूकेशरी ने सन् ६७७ ई० में बनवाया था।

विन्दुसर तालाब के पश्चिम, सड़क के बगल पर नवीं शदी का बना हुआ वैताल-देवल है। वैताल-देवल के दक्षिण ३३ फीट ऊंचा और २७ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा उत्तम नकाशी किया हुआ सोमेश्वर का मन्दिर है।

इतिहास—एक समय भुवनेश्वर कसबा बहुत समय तक उड़ीसे की राजधानी था। केशरी वंश के नियत करने वाला राजा ययातिकेशरी ने, जिसने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसे में राज्य किया था, उड़ीसे पर आक्रमण करने वाले को खदेर कर राजा बना। उसने भुवनेश्वर कसबे को बसा कर उसको राजधानी बनाया और लगभग सन् ५०० ई० में भुवनेश्वर के वर्तमान बड़े मन्दिर (और जगमोहन) का काम आरंभ किया। उसके पीछे के २ राजा मन्दिर को बनवाते रहे; तीसरे राजा ललितकेशरी ने सन् ६५६ ई० में उसको तैयार किया। सन् ६७७ ई० में राजा अलंबुकेशरी ने अलंबु-केश्वर का मन्दिर बनवाया। केशरी वंश के राजा नृपतिकेशरी ने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था; कटक शहर को बसाया और भुवनेश्वर को छोड़ कर कटक को अपनी राजधानी बनाया। केशरी वंश के एक राजा ने सन् १०९० और ११०४ ई० के बीच में मन्दिर के जगमोहन के आगे का नृत्यमंडप और भोगमन्दिर बनवाया। सन् ११३२ ई० में केशरी वंश के शैवराजा के राज्य का अन्त होगया; गंगा बंश का एक राजा दक्षिण से आकर उड़ीसे का राजा बन गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—आदि ब्रह्मपुराण—(४० वां अध्याय) संपूर्ण पापों को हरने वाला कोटि लिंग से युक्त काशी के समान शुभ एकाम्र क्षेत्र है। पूर्व काल में वहां एक आम्र का वृक्ष था इस लिये वह तीर्थ एकाम्र क्षेत्र के नाम से विख्यात होगया। वह तीर्थ विद्वान गणों से पूर्ण, धन धान्य से समन्वित, अनेक प्रकार के वणियों से आकीर्ण, गृहों के अटारियों से

संकीर्ण, श्रेष्ठ राजाओं के गृहों मे सुशोभित और शस्त्रों मे पूरित है। श्रीमहादेवजी सब लोकों के हित के लिये वहां विराजमान हैं। उन्हों ने पृथ्वी के समस्त तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाव, बावली, कूप और समुद्रों मे एक एक बून्द इकट्ठे करके लोक के हित के अर्थ सब देवताओं सहित उस क्षेत्र में बिन्दुसर नामक तीर्थ रचा। जो मनुष्य अगहन मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी को जितेंद्रिय हो उस क्षेत्र में जाकर बिन्दुसर में स्नान करके भक्तिपूर्वक देवता, ऋषि, मनुष्य और पितरों को तिल और जल से विधान पूर्वक तर्पण करेगा उसको अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होगा। वहां ग्रहण और संक्रांति के दिन तथा सम रात्रि दिवकाल और युगादि तिथि अथवा अन्य शुभ तिथियों में ब्राह्मणों को दान देने मे अन्य तीर्थों के अपेक्षा सौगुना फल मिलता है। उस तीर्थ में पिंडदान देने मे पितरों की अक्षय तृप्ति होती है। वहां शिवजी के विधि पूर्वक पूजन और उनकी प्रदक्षिणा करने मे मनुष्यको शिवलोक मिलता है और उसके २१ पुश्त का उद्धार होजाता है। वह क्षेत्र महादेवजी के चारो दिशाओं में ढाई योजन में विस्तृत है। उस क्षेत्र में भास्करेश्वर महादेव हैं, जिनको पूर्व काल में सूर्य ने पूजा था। जो मनुष्य कुन्ड में स्नान करके शिव की पूजा करता है वह शिवलोक में जाता है।

जो पुरुष मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर, स्वर्णजालेश्वर, परमेश्वर, विख्यातीश्वर, सूक्ष्मआमूर्तिकेश्वर नामों मे विख्यात इन शिव लिंगों का दर्शन और बिंदुसर तीर्थ में स्नान करता है वह सब पापों से विमुक्त हो कर विमान में बैठ शिव लोक में प्राप्त होता है। उस क्षेत्र में जिस जिस स्थानों में शिव लिंग स्थापित हैं सब की पूजा करना उचित है। जो मनुष्य बैशाख आदिक महीनों में उस क्षेत्र के बिंदुसर तीर्थ में स्नान करके महादेव तथा पार्वती, कार्तिकेय, गणेशजी, और सावित्री का दर्शन करता है उसको शिवलोक मिलता है। कपिल तीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य अपने सब मनोरथ प्राप्त करके शिव लोक में निवास करता है। एकाम्रक नामक शिव क्षेत्र काशीजी के तुल्य है। वहां शरीर त्यागने वाले को मोक्ष हो जाती है।

स्कंधपुराण—(उत्कलखंड) नीलगिरि (अर्थात् पुरुषोत्तमपुर के (नीलाचल)

से ३ योजन दूर श्रीमहादेवजी का क्षेत्र एकाम्रक वन है। पूर्वकाल में महादेवजी पार्वती के सहित अपने ससुर हिमाचल के गृह में निवास करते थे। एक दिन उस नगर की कई एक स्त्रियों ने उपहास के साथ पार्वती से कहा कि हे देवी! तुम्हारे पति अपने ससुर के गृह में अनेक भांति के सुख भोग करते हैं; तुम कहो वह अपने घर को कब जायँगे? । पार्वती की माता ने पूछा कि पुत्री! तुम्हारे पति में कौन ऐसा अपूर्व गुण है कि तुम उनको इतना प्रिय समझती हो। पार्वती ने लज्जित हो कर महादेवजी के पास जाकर कहा कि हे स्वामिन्! आप को ससुराल में रहना उचित नहीं है; आप दूसरे स्थान में चलें। शिवजी पार्वती की बात का कारण समझ कर उनके साथ बैल पर सवार हो ससुराल से चल दिये और भागीरथी के उत्तर तट पर वाराणसी नगरी बसा कर उसमें रहने लगे। द्वापर युग में वाराणसी के काशिराज नामक राजा ने घोर तपस्या करके महादेव जी को प्रसन्न किया। महादेवजी ने राजा को ऐसा वरदान दिया कि मैं आवश्यकता होने पर युद्ध में तुह्मारी सहायता करूंगा। एक समय विष्णु भगवान ने क्रोध करके काशिराज पर अपना सुदर्शन चक्र चलाया। महादेवजी राजा की रक्षा के लिये अपने गणों के साथ रणभूमि में उपस्थित हुए। उन्हों-ने क्रोध करके पाशुपत्त अस्त्र छोड़ा; पर विष्णु के प्रभाव से वह व्यर्थ हो गया। उस पाशुपत अस्त्र से काशीपुरी ही दग्ध होने लगी। तब महादेवजी घबड़ाकर विष्णु भगवान की स्तुति करने लगे। उस समय भगवान ने कहा कि हे धूर्जटे! तुम्हारा पाशुपतास्त्र अजेय है; किंतु मेरे चक्र के सामने उसकी शक्ति नहीं चलैगी। यदि वाराणसी को स्थिर रखने की तुम्हारी इच्छा है तो तुम पुरुषोत्तम क्षेत्र के नीलगिरि के उत्तर कोण में जाकर पार्वती के साथ निवास करो। ऐसा सुन महादेवजी नंदी, भृंगी आदि अपने गणों और पार्वतीजी को संग में लेकर एकाम्रकानन में चले गये; तबसे वह स्थान मुक्ति देने में काशी के समान प्रसिद्ध हुआ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वां अध्याय) पूर्व देश में एकाम्र नामक शिव तीर्थ है। जो मनुष्य उस तीर्थ में महादेवजी की पूजा करता है वह गणों

का स्वामी होता है। वहां के शिवभक्त ब्राह्मणों को थोड़ी सी भूमि दान देने से सार्वभौम राज्य मिलता है। मुक्ति चाहने वाले मनुष्य को वहां जाने से मुक्ति मिलती है।

दूसरा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ८ वां खंड, पहिला अध्याय) पुरुषोत्तम क्षेत्र में जगन्नाथजी के गुरु स्वरूप भुवनेश्वर महादेव विराजते हैं, जिनके दर्शन करने से सम्पूर्ण पाप विनष्ट हो जाता है।

उदयगिरि और खंडगिरि के गुफा मन्दिर।

भुवनेश्वर से ५ मील पश्चिम पुरी जिले में उदयगिरि और खंडगिरि दो पहाड़ी हैं। छोटे वृक्षों के जंगल हो कर भुवनेश्वर से मार्ग गया है। दोनों पहाड़ियो के बीच में एक तंग घाटी है। दोनों पर पत्थर काट कर अनेक भांति की बहुतेरी बौद्ध गुफा और मंदिर बनाये गये हैं, जो ईशा से लगभग ५० वर्ष पहले से ५०० वर्ष पीछे तक के बने हुए हैं। सबसे पहले की गुफाएं उदयगिरि पर और उनसे पीछे की खंडगिरि पर हैं। वैशाख में खंडगिरि का मेला होता है।

उदयगिरि—यह पहाड़ी ११० फीट ऊंची है। इस के कटि स्थान में भीतर से पत्थर निकाल कर जगह जगह गुफा मन्दिर बने हैं;—

रानीनूर (याने रानी का महल)—सब गुफाओं से नीचे एक दूसरे के ऊपर छोटी कोठरियों के २ कतार हैं, जिनके आगे पायेदार वरंडे और ४९ फीट लंबी तथा ४३ फीट चौड़ी पहाड़ी काटकर बनी हुई अंगनई है। ऊपर के मंजिल में, जो पूर्व मुख का है, ८ दरवाजे हैं, जहां २ द्वारपाल खड़े हैं। वरंडा होकर (जो ६३ फीट लम्बा है) ४ छोटी कोठरियों में जाना होता है। वरंडे के दोनों बगलों में २ सिंह हैं। वहां हाथी और मनुष्यों की बहुत सी मूर्तियां देखने में आती हैं। निचले मंजिल में भी ८ दरवाजे हैं। आगे जमीन के सतह पर ४४ फीट लम्बा सतूनदार वरंडा है, जिससे ३ कोठरियों में जाना होता है।

गणेशगुफा—रानीनूर गुफा के प्रायः सीधा उत्तर उससे बहुत ऊंचाई

पर २ कमरे हैं. जिनके आगे ५१/८ फीट ऊंचा १ वरंडा है। वरंडे की सीढ़ी के दोनों तरफ २ हाथी हैं।

स्वर्गद्वारी गुफा—रानीनूर गुफा से ५० गज पश्चिम एक सीढ़ी स्वर्ग-द्वार नामक दो मंजिली गुफा को गई है। उसके दोनों मंजिलों में दो कमरे और आगे एक वरंडा है। वरंडे के पाये अब टूट गये हैं।

जयविजय या हंसपुर की गुफा—यह ऊपर लिखे हुए गुफाओं के उत्तर है। इसमें छोटी बड़ी बहुत सी मूर्तियां देखने में आती हैं।

गोपालपुरा—पूर्वोत्तर में गोपालपुरा और मंचपुरा नामक गुफाओं के २ झुण्ड है। कमरे के पायों पर खोद कर बने हुए लाट अक्षरों में २ लेख हैं, जो अब पढ़े नहीं जाते।

बैकुंठ—यह गुफा और पाटलपुरा तथा जामपुरा दूसरी दो गुफाएं, जो थोड़ा पश्चिमोत्तर हैं, अब बहुत बिगड़ गये हैं।

हाथीगुफा—७५ गज पश्चिमोत्तर हाथीगुफा है। वहां पत्थर के भीतर ५ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा खोंखला है। उसके दरवाजे के ऊपर लाट अक्षर में १ लम्बा शिला लेख है, जिसमें कलंगा के एरा राजा के यश का वर्णन हुआ है। वह राजा सन् ई० से करीब ४०० वर्ष पहले था। इसके अलावे उस गुफा में गुप्त अक्षर और कुटिला अक्षर में कई छोटे शिला लेख हैं। हाथी गुफा के चन्द गज उत्तर पवनगुफा है।

सर्पगुफा—पवनगुफा से ७५ फीट दक्षिण-पश्चिम सर्पगुफा है। दरवाजे के सिर पर मोटे नकाशी का ३ सिरवाला एक सांप है, जिसके नीचे बैठकर भीतर जाने योग्य द्वार है। उससे होकर ४ फीट लंबी, इतनी ही चौड़ी और इतनीही ऊंची गुफा में आदमी प्रवेश करता है। वहां १ शिला लेख है, जिसका हिन्दी अनुवाद "चूलाकर्म की कोठरी और कर्म ऋषि का मन्दिर" होता है। उसके समीप भजनगुफा और थोड़ा उत्तर अलकपुरी गुफा है। इन दोनों में से कोई मशहूर नहीं है।

व्याघ्रगुफा—वह ५० फीट उत्तर पहाड़ी से बाहर निकली हुई नाक और आंखियों के साथ बाघ के सिर के शकल की है। उसके दरवाजे पर दांत

लटके हुए हैं और सिरके ऊपर का हिस्सा ८½ फीट पहाड़ी से लगा हुआ है। वह गुफा भीतरी ९ फीट चौड़ी है, जिसका छोटा दरवाजा बाघ के हलक की जगह पर बना है। दरवाजे के दहिने लाट अक्षर में समेविन का गुफा लिखा है। वह गुफा ईशा से ३०० वर्ष पहले की होगी। बाघगुफा के उत्तर १२ फीट लम्बी और ६ फीट चौड़ी 'उर्धबांह' नामक कोठरी है, जिसके आगे एक वरंडा बना है।

खंडगिरि—यह पहाड़ी घने दरख्तों से छिपी हुई १३३ फीट ऊंची है। खड़ी राह से ऊपर जाना होता है। करीब ५० फीट ऊपर २ रास्ते होगये हैं, एक बाएं पहाड़ी के पूर्व बगल में काटे हुए गुफाओं को और दूसरा दहिने 'अनन्ता गुफा को' गया है।

अनन्तागुफा—उस गुफा के आगे ४ द्वार और एक पायादार वरंडा है। गुफा में पीछे की दीवार के पास बुद्ध की मूर्ति है। दीवार में मनुष्य, पशु और पक्षी की बहुत सी मूर्तियां बनी हैं, जहां लाट अक्षर में और कुटिला अक्षर में २ शिला लेख हैं।

बाएं की गुफाएं—अनन्तागुफा से दो मुहानी रास्ते के पास लौटकर बाएं के रास्ते से जाना चाहिये। आगे की गुफाओं के पास १२ वीं शदी का संस्कृत लेख है, जिसमें लिखा है कि आचार्य्य कलाचन्द्र और उसका विद्यार्थी बालाचन्द्र का यह गुफा है। उससे आगे दो हिस्सों में पूर्व मुख की गुफाओं का एक सिलसिला है। गुफाओं के भीतर पीछे की दीवार में अनेक बुद्ध की मूर्तियां और चन्द नई जैन देवताओं की नई मूर्तियां हैं। पूर्व छोर के पास एक चबूतरे पर बहुत जैन मूर्तियां हैं। दूसरी कोठरी भी ऐसीही है। पीछे की दीवार में एक फीट ऊंची ध्यान करती हुई बुद्ध की मूर्तियों का एक कतार है और नीचे बैठी हुई स्त्रियों की अनेक मूर्तियां हैं, जिनमें चन्द चतुर्भुजी और दूसरी सब ८ बाँह वाली हैं।

वहां से पहाड़ी के सिरे तक कड़ा चढ़ाव है। सिरो-भाग पर १८ वीं शदी का बना हुआ पारसनाथ का एक मन्दिर है। मन्दिर के दक्षिण-पश्चिम १५० फीट व्यास का 'देवसभा' नामक एक स्थान है, जिसके १०० गज पूर्व

पत्थर खोद के बनाया हुआ आकाश गंगा नामक तालाब है। तालाब के नीचे एक गुफा है। ऐसा प्रसिद्ध है कि यहां उड़ीसे के राजा ललित इन्द्र केशरी का रिमेन्स रक्खा है।
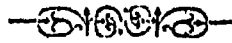
सोलहवां अध्याय।

(सूबे उड़ीसे में) जगन्नाथपुरी और कोणार्क।

जगन्नाथपुरी।

कटक कसबे से ५३ मील दक्षिण जगन्नाथपुरी की सरकारी कचहरी है। जगन्नाथजी की सड़क, जो कटक से १३½ मील आगे भुवनेश्वर के यात्री को छूट जाती है, भुवनेश्वर से २ मील आगे छूटने की जगह से ८ मील पर फिर मिलजाती है। उस ८ मील के भीतर २ चट्टी और एक सूखी नदी मिलती है। सड़क से ५ मील तक भुवनेश्वर के मन्दिर देख पड़ते हैं। कटक से आगे २६½, ३०½, ३१½, ३४ ३५½, ३८¼, और ४०¼ मील पर एक एक चट्टी है। पिछली चट्टी से करीब ½ मील दूर साक्षीगोपाल का सुन्दर शिखरदार मन्दिर है। मन्दिर के आगे जगमोहन बना है। नियत समय पर मन्दिर का पट खुलता है। वहां के पंडे यात्रा के साक्षी के लिये ताड़ के पत्त पर यात्रियों के नाम लिखते है और पुआ का प्रसाद देते हैं। मन्दिर के पास मोदियों की कई दूकानें हैं। कटक से ४२¼ मील पर तालाब और बस्ती के पास चट्टी, ४५ मील पर सूखी नदी के दोनों किनारों पर बस्ती और चट्टी और ४८ मील पर एक छोटी चट्टी है। उसके २½ मील पहले से जगन्नाथजी का मन्दिर देख पड़ता है। उस चट्टी से आगे कोसों तक एक बड़ी झील है, इस लिये पुरी की सड़क बाएं घूम कर गई है।

छोटी चट्टी से १ मील आगे कई मन्दिर, २¼ मील पर 'अठारह नाला' का पुल और ३½ मील पर अर्थात् कटक से ५१½ मील दूर चन्दन तालाब है, जहां से

सब यात्री गाड़ी छोड़कर पैदल जाते हैं। कितने यात्री तो इस स्थान से कई मील पहिलेही अपने जूते को रख देते हैं। 'अठारहनाला' का पुल जिसको मरहटा पुल भी कहते हैं, २७८ फीट लम्बा और ३८ फीट चौड़ा है; उसके नीचे १९ मेहराबियां बनी हैं और ऊपर से सड़क निकली है। यह पुल बहुत पुराना है।

कटक और पुरी के बीच में जगह जगह केलों के बाग, केवड़ों के जंगल और रुंधान, दीमकों के टीले (वल्मीक), जिनमें कोई कोई दो गज ऊंचे और चार गज घेरे के हैं और खजूर तथा नारियल के बाग देख पड़ते हैं। चट्टियों पर यात्रियों के टिकने के मकान और खाने पीने का सामान तैय्यार रहता है।

जगन्नाथपुरी सूबे उड़ीसे में भारतवर्ष के पूर्व के समुद्र के किनारे पर (१९ अंश ४८ कला, १७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५१ कला ३९ विकला पूर्व देशांतर में) पुरी जिले का प्रधान कसबा और सदर-स्थान भारत वर्ष के ४ धामों में से एक पवित्र तीर्थ-स्थान है। जगन्नाथजी के कुछ यात्री कलकत्ते से कटक तक आगबोट द्वारा और कटक से सड़क द्वारा और कुछ लोग रानीगंज से बांकुडा, मेदनीपुर और कटक होकर पैदल सड़क द्वारा पुरी में पहुँचते हैं। दक्षिण-पश्चिम के यात्री भी पैदलही आते हैं; किन्तु अब दक्षिण पश्चिम बेजवाड़ा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटक के पास तक रेलवे लाइन तैयार होचुकी है और पूर्वोत्तर आसिनसोल से मेदनीपुर, बालेश्वर और कटक होकर पुरी तक कई बरसों में रेलवे खुल जायगी। पुरी की सीमा समुद्र से मधुपुर नदी तक १½ मील चौड़ी और बलिबंडा में लोकनाथ के मन्दिर तक ३½ मील लम्बी है। पुरी यात्रियों के टिकने का शहर है। यहां दस्तकारी और तिजारत बहुत कम है। मन्दिर की आमदनी और पूजा से यहां के लोग परवरिश होते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पुरी में २८७९४ मनुष्य थे, अर्थात् २८४७६ हिन्दू, २६९ मुसलमान, ४५ कृस्तान और ४ दूसरे। इनमें से १५९३० पुरुष और १२८६४ स्त्रियां थीं। लेकिन बड़े तिहवार पर १ लाख यात्री बढ़ जाते हैं। हर महीने में दिन और रात यात्रियों की झुन्ड पुरी में पहुंचते हैं। सालाना करीब ५० हजार से अधिक और कभी कभी साल में

तीन लाख यात्री पुरी में आते हैं। केवल रथयात्रा के समय कभी कभी लगभग १ लाख यात्री इकट्ठे होजाते हैं। पंडे लोगों के हजारों नौकर या हिस्सेदार हिन्दुस्तान के हर जिले से यात्रियों को खोज कर पुरी में ले आते हैं। पंडे लोग उनके टिकाने को मकान देते हैं।

जगन्नाथजी के मन्दिर से जनकपुर तक चौड़ी सड़क गई है उसके सिवाय सब सड़क तंग और कच्ची हैं। कसबा नीची जमीन पर बसा है। बीच में ऊंची बालूदार जमीन होने के कारण कसबे का पानी समुद्र में नहीं गिरता, इस लिये कसबे का जलवायू रोग कारक रहता है। यहां के हर एक मकान करीब ४ फीट ऊंचे चबूतरे पर बना है। मकानों की दीवारें टट्टियों की हैं। टट्टियों पर मट्टी का लेवार दिया हुआ है। प्रतिवर्ष सैकड़ों यात्री पुरी में मरते हैं। उड़ीसे के जलवायू रोग वर्द्धक होने के कारण यात्रियों में से प्रति वर्ष हजारो मनुष्य पुरी और पैदल के रास्ते में मरजाते हैं; परन्तु अंगरेजी बन्दोबस्त से तन्दुरस्ती में अब तरक्की हुई है। टिकने वाले मकानों के लिये मकान के मालिक को लेसन्स लेना पड़ता है और मकानों में टिकने वालों की संख्या नियत की जाती है।

पुरी जिले का सदर स्थान है;पर यहां की दिवानी कटक के जज के आधीन है। पुरी की सरकारी कचहरियां समुद्र के निकट बनी हैं। पंडो के मकानों के अतिरिक्त यहां बड़ा छत्तामठ, समाधिमठ, रामगोपालमठ, आचारीमठ, सन्यासीमठ, साधु वैष्णवमठ, गौड़ियामठ इत्यादि बहुतेरे मठ हैं, जिनमें कई बड़े धनवान है। पंडे लोग यात्रियों से उनके नाम और पते अपनी स्याही कलम से बही में लिखवाते हैं; पर उड़ीसे के रीत्यनुसार वे लोग अपनी ताड़पत्र की बही पर कांटे के कलम से उड़िया अक्षर में यात्रियों के नाम और पते लिख लेते हैं। (आदि ब्रह्मपुराण-उत्तरार्द्ध के प्रथम अध्याय में ताल-पत्र पर देवाक्षरों में पुस्तक लिखने की कथा है)। पुरी में बन्दर बहुत हैं।

मार्कण्डेय तालाब, चन्दनतालाब, श्वेतगंगातालाब, पार्वतीसागर (लोकनाथ के पास) और इन्द्रद्युम्नतालाब को लोग पंचतीर्थ कहते हैं। पुरी में ५ महादेव प्रख्यात हैं; लोकनाथ, मार्कंडेश्वर, कपालमोचन, यमेश्वर और नीलकंठ।

जगन्नाथजी का मन्दिर—पुरी के बीच में प्रधान सड़क के अखीर पश्चिम समुद्र से लगभग १ मील उत्तर आस-पास की भूमि से लगभग २० फीट ऊंची जमीन पर, जिसको 'नीलगिरि' कहते हैं, जगन्नाथजी का मन्दिर है। उसके भीतर, अन्य धर्मी और नीच जाति के मनुष्य तथा चमड़े की कोई चीजें नहीं जाने पाती हैं।

मन्दिर के बाहर का घेरा ६६५ फीट लंबा और ६४५ फीट चौड़ा है। इसकी कंगूरेदार दीवार लगभग २२ फीट ऊंची है, जिसके प्रत्येक बगल के मध्य में एक बड़ा फाटक बना है। उनमें से पूर्व का फाटक सब फाटकों से उत्तम है। उसका चौखट नकाशीदार काले पत्थर का और किवाड़ साल की लकड़ी का बना है; फाटक के ऊपर के चौखूटे मकान में संगतरासी का उत्तम काम है; प्रतिमाओं में कई मूर्तियां आदमी के समान बड़ी हैं। दरवाजे के दोनों तरफ दो सिंह की मूर्तियां हैं, इससे इसका नाम सिंह दरवाजा पड़ा है। उत्तर के फाटक पर पत्थर के २ हाथी और काठ के ३ सारथी हैं; जो यात्रा के समय रथों पर बैठाए जाते हैं और दक्षिण के फाटकपर पत्थर के २ घोड़े थे, जो अब नहीं हैं। दक्षिण का फाटक १५ फीट ऊंचा है, जिसके ऊपर बहुतसी मूर्तियां बनी हैं। मन्दिर के घेरे के बाहर चारो तरफ ४५ फीट चौड़ी सड़क है।

सिंहदरवाजे के आगे काले रंग के एकही पत्थर का ३५ फीट ऊंचा, १६ पहल का सुन्दर अरुणस्तंभ खड़ा है, जिसके सिर पर सूर्य के साथी अरुण की मूर्ति है। लोग कहते हैं कि १८ वी शदी के आरंभ में महाराष्ट्र लोक कोणार्क के सूर्य के मन्दिर से इस स्तंभ को यहां लाए थे।

सिंहदरवाजे के पूर्व के मैदान में बाजार है, जिसमें सूखा भात का महाप्रसाद और जगन्नाथ आदि के पट यात्री लोग खरीदते हैं और कोई कोई यहां से बेंत तालपत्र का छाता और चन्दन भी प्रसाद लेजाते हैं।

बाहर के घेरे के भीतर ४५० फीट लंबा और ३०० फीट चौड़ा दूसरा घेरा है, जिसके भीतर जगन्नाथजी और दूसरे देवताओं के बहुत से मन्दिर खड़े हैं। इसकी दीवार बाहर की दीवार से बहुत कम ऊंची है। इसमें भी चारो तरफ ४ फाटक हैं।

जगन्नाथजी के खास मन्दिर के आगे; अर्थात् पूर्व जगमोहन, जगमोहन के आगे नृत्यमन्दिर और इससे आगे भोगमन्दिर है; चारो परस्पर मिले हुए हैं। इतिहासों से जान पड़ता है कि जगन्नाथजी के वर्तमान मन्दिर को राजा अनंगभीमदेव ने, जिसने हुगली से गोदावरी नदी तक राज्य किया था, बनवाया। १४ वर्ष काम होने के उपरान्त सन् ११९८ ई० में मन्दिर तैय्यार हो गया। तबसे यह कई बार मरम्मत हुआ। इस समय भी मरम्मत हो रहा है; इसके लिये करीब १ लाख रुपया चन्दा हो चुका है। नृत्यमन्दिर पीछे का बना हुआ है। भोगमन्दिर को पिछले शतक में महाराष्ट्रों ने बनवाया।

जगन्नाथजी का निज मन्दिर १९२ फीट ऊंचा, ८० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। चारो ओर मन्दिर और जगमोहन पर स्त्रियों और पुरुषों की बहुतसी प्रतिमाएं बनी हुई हैं और लिखित चित्र भी हैं। मन्दिर के ऊपर अर्थात् इसके कटि स्थान पर दक्षिण की कोठरी में बलिराजा, पश्चिम वाली में नृसिंहजी और उत्तर की कोठरी में कलियुग की प्रतिमा है और शिखर के ऊपर नील चक्र और पताका लगा है।

मन्दिर के भीतर पश्चिम ओर ४ फीट ऊंची और १६ फीट लम्बी पत्थर की वेदी है, जिसको रत्नवेदी कहते हैं। रत्नवेदी के दहिने और बाएं ४ फीट और उसके पीछे अर्थात् पश्चिम ३ फीट चौड़ी गली है, जिससे होकर सब यात्री लोग जगन्नाथजी आदि मन्दिर के देवताओं की परिक्रमा करते हैं। रत्नवेदी के ऊपर उत्तर तरफ ६ फीट लम्बा सुदर्शनचक्र है, जिससे दक्षिण जगन्नाथजी, सुभद्रा और बलभद्रजी क्रम से खड़े हैं। जगन्नाथजी, के एक तरफ लक्ष्मीजी और दूसरी ओर सत्यभामा और आगे राजा इन्द्रद्युम्न की धातु-प्रतिमा हैं। बलभद्रजी ६ फीट ऊंचे गौरवरण, जगन्नाथजी बलभद्रजी से एक अंगुल छोटे श्याम रंग और सुभद्राजी ४ फीट ऊंची पीत वरण हैं। तीनों मूर्तियां काष्ठमय हैं; इनके हाथ और पांव ठूंठे और नासिका बड़े हैं। देखने में सुभद्रा की बांह नहीं है, पर वे कपड़े के भीतर लटकी हैं। जगन्नाथजी और बलभद्रजी के ललाट पर एक एक हीरा लगा है। तीनों मूर्तियों को नित्यही समय समय पर और उत्सवों के समय भांति भांति की

पोशाक और रंग वरंग की पगड़ियां तथा सुनहले हाथ और दूसरी पोशाकें पहनाई जाती हैं और अनेक प्रकार के शृङ्गार होते हैं। बहुत सकाले जाग्रन के समय मंगला आरती का सादा शृङ्गार होता है। तब अवकाश वेष, बाद प्रहर वेष और इसके बाद चन्दन लगा वेष बनाया जाता है। सब से प्रसिद्ध बड़ा शृङ्गार वेष है, जो गोधुली के बाद सन्ध्या-धूप के तुरन्तही पीछे बनाया जाता है। इनके अतिरिक्त समय समय पर जगन्नाथजी का दामोदर वेष, वामन वेष, वुद्ध वेष, गणेश वेष आदि बनाये जाते हैं।

मूर्तियों को पोशाक पहनाने और शृंगार हो जाने के उपरान्त मन्दिर का फाटक खुलता है और यात्रीगण दर्शन करते हैं। मन्दिर में अन्धियारा रहने के कारण दिन में भी दीप जलाया जाता है, मंगला आरती के समय, पहर दिन चढ़ने पर प्रधान भोग लगजाने पर और गोधुली के बाद के बड़े शृंगार के समय नित्य ३ बार यात्रीगण खास मन्दिर में जाकर रत्नवेदी की परिक्रमा करते हैं और मूर्तियों के चरण के पास अपना सिर नवाते हैं; बाकी समयों में जगमोहन से दर्शन होता है।

मन्दिर के आगे का जगमोहन १२० फीट ऊंचा, ८० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। इसके मध्यमें चौखूटे ४ पाये और बगल में दो बाजू हैं। जगमोहन में ३ तरफ बड़े दरवाज़े हैं। उत्तर के बाजू में जगन्नाथजी का असबाब रहता है। यात्रीगण जगमोहन में इकट्ठे होकर जगन्नाथ आदि देवताओं का दर्शन करते हैं; नियत समयों में वे लोग खास मन्दिर के भीतर जाते हैं।

जगमोहन से पूर्व नृत्यमन्दिर है। इसके उत्तर और दक्षिण के बगल में चार चार चौखूटे पाये और भीतर चार चार पायाओं के ४ कत्तार हैं। पायाओं में देवताओं के चित्र बनाए गए हैं। नृत्यमंदिर भीतर से ६९ फीट लम्बा और ६७ फीट चौड़ा है। इसके पश्चिम के द्वार पर, जो जगमोहन के पास है, जय और विजय की मूर्तियां और पूर्व के हिस्से में एक स्तंभ पर गरुड़ की मूर्ति है। इस मन्दिर में समय समय पर स्त्रियां नाचती हैं और बाजा बजता है।

नृत्यमन्दिर के पूर्व १२० फीट ऊंचा, ६० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा भोगमन्दिर है, जिस पर नीचे से ऊपर तक पत्थर खोद कर असंख्य मूर्तियां बनाई गई हैं। लोग कहते हैं कि पिछले शतक में महाराष्ट्रों ने कोणार्क के काले मन्दिर के हिस्से का पत्थर लाकर ४० लाख रुपये के खर्च से इसको बनवाया। पाकशाले से भोगमन्दिर तक एक पाटा हुआ रास्ता है। भोग की सामग्री पाकशाले से तैय्यार करके इसमें लाई जाती है।

भीतरीवाले हाते में जगन्नाथजी के मन्दिर से दक्षिण एक पीपल का वृक्ष है। उसके पास ३८ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा, जिसमें पाये लगे हुए हैं, मुक्ति मंडप है, जहां पंडित लोग शास्त्रार्थ करते हैं। उसके बाद अक्षयवट है, जिसको यात्रीगण अंकमाल करते हैं। उसके पास प्रलयकाल के विष्णु की बालमूर्ति है, जिसको बालमुकुन्द कहते हैं। उसी तरफ रोहिनीकुंड नामक एक बहुत छोटा कुंड, जिसके पास पत्थर की चतुर्भुजी काक है और विमला देवी, नृसिंहजी, लक्ष्मीजी, एकादशी आदि बहुत देव देवियों के मंदिर हैं। बड़े मन्दिर से पश्चिम सरस्वती, कर्माबाई, कर्म लिखने वाला विधाता, काली आदि देव मूर्तियां हैं। उत्तर के दरवाजे के पास सीतला की मूर्ति है। इनके अतिरिक्त घेरे के भीतर शिव, सूर्य्य, हनूमान, गणेश, मंगला आदि देवदेवियों के बहुत से मन्दिर हैं। उस हाते में लगभग ५० स्थान और मंदिर बने हुए हैं।

बाहर के हाते में सिंहदरवाजे पर घेरे के भीतर २१ सीढ़ियों के ऊपर मन्दिर का फर्श है। दरवाजे से प्रवेश करने वालों के दहिने महाप्रसाद बेचने वालों की दूकानें हैं, जहां बहुतेरे लोग महाप्रसाद खरीदते हैं। फाटक की मेहराबी के एक ताक में जगन्नाथजी की छोटी मूर्ति है, जिसको लोग पतितपावन कहते हैं। चमार इत्यादि नीच जाति के लोग, जो मन्दिर के हाते में नहीं जाने पाते, इसी मूर्ति का दर्शन करते हैं। इसी जगह १½ हाथ के ताक में २२ भुजवाले ठाकुरजी हैं। सिंहदरवाजे से उत्तर स्नान की वेदी है, जहां ज्येष्ट में जगन्नाथजी स्नान के लिये लाये जाते हैं। दरवाजे के पास एक इमारत है, जिसमें स्नान देखने के लिये लक्ष्मीजी बैठती हैं और दरवाजे के दक्षिण एक दूसरी इमारत है, जिसमें भगवान के फिरने पर स्वागत के लिये लक्ष्मीजी

जाती हैं। बाहर के हाते के पूर्व-दक्षिण के कोने के पास जगन्नाथजीकी पाक-शाला है, जिसमें सैकड़ों चूल्हे बने हुए है; एक एक चूल्हे पर कई एक भांड़े चढ़ते हैं। उत्तर के हाथी फाटक से पश्चिम-दक्षिण वैकुंठ नामक छोटा मकान है, जहां बहुतेरे पंडे अपने यात्रियों से अटका संकल्प कराते हैं

जगन्नाथजी का मन्दिर।

उत्तर

दक्षिण

फीट का स्केल

५० १०० १५० २०० ३००

१ इञ्च का १५० फीट
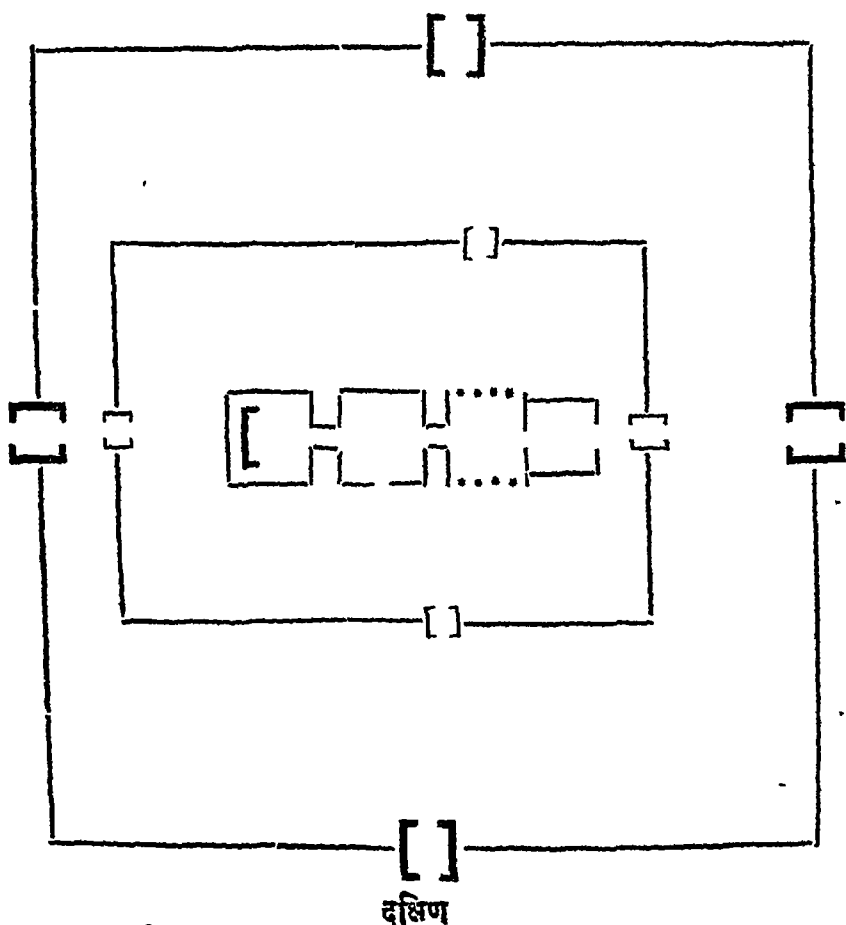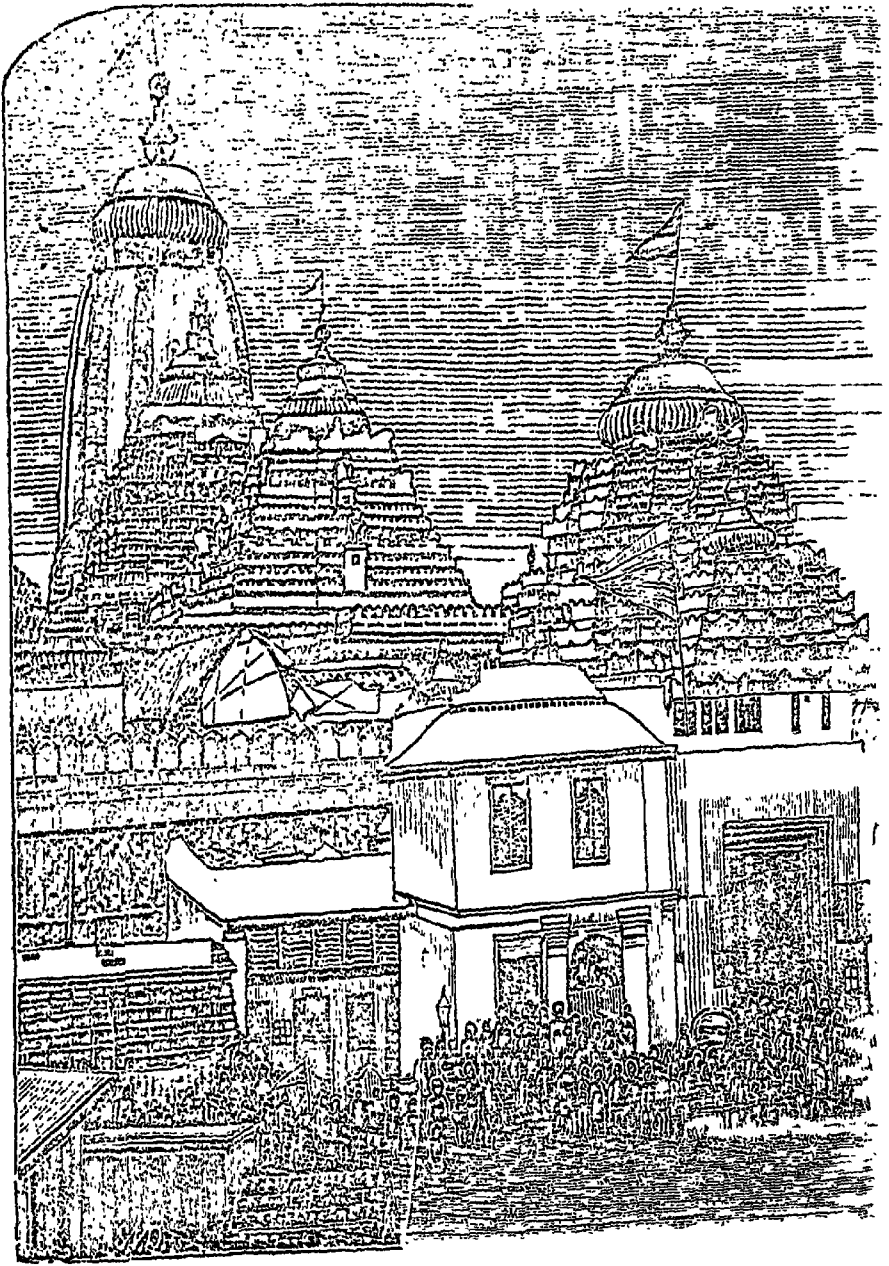
पुरीमें श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर।

कपालमोचन और यमेश्वर—जगदीश के मन्दिर के कोट के बाहर उसके पश्चिम-दक्षिण गहड़ी जमीन पर कई एक मन्दिरों के साथ तीन मुख वाले कपालमोचन शिवका मन्दिर है। कपालमोचन से ½ मील दक्षिण एक मन्दिर में यमेश्वर शिवलिंगहै। यमेश्वर से थोड़ा दक्षिण गोपीनाथ का मंदिर है।

श्वेतगंगा—जगन्नाथजी के मन्दिर से पश्चिम-दक्षिण स्वर्गद्वार के रास्ते के पास श्वेतगंगा नामक एक पक्का तालाव है, जिसके पूर्व किनारे पर श्वेतकेशव का मन्दिर बना हुआ है। श्वेतकेशव की मूर्ति जगन्नाथजी के समान काष्ठमय है। जगन्नाथजी के कलेवर बदलने के समय इनका भी कलेवर बदलता है।

स्वर्गद्वार—जगन्नाथजी के मन्दिर से १ मील दक्षिण-पश्चिम समुद्र के किनारे पर एक चौथाई मील की लंबाई में स्वर्गद्वार है, जहां यात्री लोग समुद्र की लहर में स्नान करते हैं। बड़े तेहवारों के समय लगभग ४० हजार आदमी समुद्र की लहर में गोता मारते हैं। समुद्र को नारियल और रत्नों की भेंट दी जाती है। एक छोटे मन्दिर के पास ४ फीट ऊंचा एक स्तंभ है, जिसपर पूजा रक्खी जाती है। समुद्र के किनारे के पास बालू पर बहुतेरे छोटे छोटे मठ हैं। मलूकदास के मठ में उनकी मूर्ति का दर्शन होता है और टुकड़ा अर्थात् रोटी और साग प्रसाद मिलता है। कबीरदास के मठ में कबीदास के चौरा का दर्शन होता है और तुरानी अर्थात् भात का पानी प्रसाद मिलता है। वहां नानक शाहियों का भी एक मठ है। बहुतेरे लोग मरने के समय स्वर्गद्वार में जाते हैं। वहां समुद्र में पानी बहुत कम है; किनारे से १ मील से अधिक निकट आगबोट नहीं आ सकते हैं।

लोकनाथ महादेव—जगन्नाथजी के मन्दिर से १ मील पश्चिम लोकनाथ का मन्दिर है। सड़क कच्ची और बालूदार है। लोकनाथ के मन्दिर में जल की भूरि फूटी है। मन्दिर सर्वदा अथाह जल से पूर्ण रहता है। जल के भीतर शिवलिंग है। वह जल एक नाला होकर पार्वती तालाव में गिरा करता

है। पानी का नाला एक दूसरे मन्दिर तक है। फाल्गुन वदी ११ मे उस दूसरे मन्दिर मे पानी बाहर निकाला जाता है; शिवरात्री के दिन सम्पूर्ण जल निकल जाने पर लोकनाथ का दर्शन होता है। पीछे मन्दिर में फिर दस हाथ ऊंचा जल होजाता है। सैकड़ों यात्री शिवरात्री की रात्री में मन्दिर के आस पास अपने अपने आगे दीप जला कर रात्री भर जागते हैं। उस दिन करीब २० हजार मनुष्यों का वहां मेला होता है। मन्दिर से थोड़ी दूर पर पार्वती तालाव पक्का वना हुआ है।

मार्कण्डेयतालाव—जगन्नाथ के मन्दिर से १ मील उत्तर मार्कण्डेय तालाव है। पश्चिम के फाटक से तालाव तक सड़क गई है। तालाव के चारो तरफ पक्की सिढ़ियां और दीवारें हैं; दक्षिण किनारे पर मार्कण्डेश्वर शिव का वड़ा मन्दिर और दूसरे कई देव मन्दिर वने हैं। सम्पूर्ण यात्री वहां स्नान करके जगन्नाथजी का दर्शन करते हैं।

चन्दनतालाव—मार्कण्डेय तालाव से पूर्व कटक की सड़क के पास लगभग २२५ गज चौड़ा और इससे अधिक लंवा चन्दनतालाव नाम का वड़ा पोखरा है। उसके चारो तरफ पक्की सिढ़िया वनी हैं और मध्य में चवूतरे के साथ एक मन्दिर है। नाव द्वारा उस मन्दिर में जाना होता है। वैशाख की अक्षय तृतिया को देवताओं की चल मूर्तियों को नाव पर चढ़ा कर उस तालाव में जलकेलि कराई जाती है और वे उस मन्दिर में वैठाई जाती हैं।

जनकपुर—जगन्नाथजी के मन्दिर से १½ मील दक्षिण-पूर्व जनकपुर है, जिसका नाम पुराण में गुड़िच क्षेत्र लिखा है। उसी जगह काष्ठ मूर्तियां रची गई थीं इस लिये उसको जनकपुर (जन्म स्थान) कहते हैं। एक चौड़ी सड़क, मन्दिर से जनकपुर तक गई है। सड़क के दक्षिण वगल पर पुरी के राजा मुकुंद-देव का मकान है।

जनकपुर के मन्दिर के चारो तरफ दोहरी कोट है। बाहर की कंगूरेदार दीवार करीव २० फीट ऊंची है। मन्दिर का प्रधान फाटक पश्चिम तरफ है, जिसके पास पत्थर के २ सिंह खड़े हैं। पुरी के मन्दिरों के समान वहां भी खास मन्दिर, जगमोहन, नृत्यमन्दिर और भोगमन्दिर लगातार वने हुए हैं; पर वहां के मन्दिर पुरी के मन्दिरों से दरजे में बहुत कम हैं। खास

मन्दिर में ४ फीट ऊंची और १९ फ़ीट लम्बी पत्थर की रत्नवेदी (सिंहासन) है, जिसपर रथयात्रा के समय पुरी के जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा बैठाई जाती हैं। घेरे के भीतर एक जगह पाकशाला और दूसरे कई स्थान और मकान बने हुए हैं। जनकपुर के मन्दिर बहुत पुराने हैं।

इन्द्रद्युम्न तालाव—जनकपुर के मन्दिर से थोड़ा पूर्व मार्कंडेय तालाव से कुछ छोटा इन्द्रद्युम्न तालाव है। उसके चारो बगलों में पत्थर की सिढ़ियां बनी हैं। तालाव में कछुए बहुत रहते हैं। तालाव के पास एक मन्दिर में नीलकंठ महादेव और इन्द्रद्युम्न और दूसरे मन्दिर में पद्मनाभ भगवान हैं।

जगन्नाथजी के मंदिर का प्रबंध—मन्दिर की वार्षिक आमदनी जागीर आदि से लगभग ९ लाख रूपये और यात्रियों की पूजा से करीब ६ लाख रुपये हैं। मन्दिर के पुजारी, पंडे, मठधारी, नोकर और दूसरे देशों से यात्रियों को ले जाने वाले गुमास्ते तथा नोकर सब मिलकर ६ हजार से अधिक मनुष्य हैं। २० हज़ार से अधिक पुरुष, स्त्री और लड़के जगन्नाथजी से पर्वरिश पाते हैं। जिनमें से लगभग ६५० आदमी मन्दिर के कामो में मोकरर हैं। इन में से कोई जगन्नाथजी का बिस्तर लगाता है, कोई उनको जगाता है, कोई पानी, कोई भोजन, कोई पान देता है, कोई कपड़ा धोता है, कोई पोशाक गिनता है इत्यादि। ४०० रसोईदारों के घर के लोग, १२० नृत्य करने वाली लड़कियां और कई एक हजार पुजारी और पंडे हैं। उनमें बहुतेरे बड़े धनी हैं। मंदिर के प्रधान प्रबंधकर्त्ता पुरी के राजा हैं।

जगन्नथजी की नित्य की सेवा—सुबह को घंटी बजाकर जगन्नाथ, बलभद्र आदि देवता जगाये जाते हैं। बाद कपाट खोला जाता है और उनको धूप दिखलाया जाता है। ११ बजे आराम के लिये उनकी प्रार्थना की जाती है और भोजन की संपूर्ण सामग्री सिंहासन के आगे लाकर रक्खी जाती हैं। समय समय के भोगों में सकाल भोग, द्विपहर भोग, सन्धा भोग और (उसके पीछे का) शृंगार भोग प्रधान हैं। बहुतसी सामग्री तैय्यार करके भोग मन्दिर में रक्खी जाती हैं और फाटक खोलकर भोग लगाई जाती है। साधुओं

की खास सामग्री भी भोग मन्दिर में रक्खी जाती है। राजा की सामग्री खास मन्दिर में भोग लगती है। राजाकी गोपाल वल्लभ नामक एक खास सामग्री और महल की बनी हुई मिठाई नित्यहीं भोग लगजाने के पीछे बेंच दी जाती हैं; उनका दाम राजा के खानगी हिसाब में रक्खा जाता है। चारो भोगों के समय एक एक घंटे तक पट बन्द रहता है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि कर्माबाई नामक एक स्त्री वात्सल्य उपासक हुई। वह नित्य प्रातःकाल उठ कर बिना प्रातःकाल की क्रिया किए हुए अंगारों पर एक छोटे पात्र में खिचड़ी बना कर अत्यंत प्रीति और प्यार से भगवान को भोग लगाती थी। जगन्नाथजी पुरुषोत्तमपुरी से आकर उस खिचड़ी को खाते थे। एक दिन एक साधु आकर आचार पूर्वक भोग लगाने के लिये कर्माबाई को शिक्षा देकर चला गया। जब कर्माबाई स्नानादिक क्रिया करके आचार पूर्वक भोग लगाने लगी, तब जगन्नाथजी के भोजन में विलंब होने लगा। भगवान की आज्ञानुसार उनके पंडे ने उस साधु को ढूंढ कर उससे कहा कि तुम कर्माबाई को उपदेश देआओ कि वह प्रथमही के समान बिना आचार का सवेरे भोग लगाया करें। साधु ऐसीही सिक्षा दे आया; तब कर्माबाई अति प्रसन्न होकर पहले की भांति बिना स्नानादि क्रिया किए हुए सवेरे खिचरी बनाकर भोग लगाने लगी। अब तक पुरुषोत्तमपुरी में सब भोगों से पहले कर्माबाई के नाम से जगन्नाथजी को खिचड़ी का भोग लगाया जाता है।

महाप्रसाद—भोजन की सामग्री में भोग लगने से पहले स्पर्शका भेद माना जाता है। सम्पूर्ण सामान पाकशाले से भोग लगने के स्थान पर बड़े नियम से लाया जाता है; पर भोग लग जाने के उपरान्त कूली लोग मन्दिर से महाप्रशाद निकालते हैं। भोग लग जाने पर वह बड़ा पवित्र हो जाता है। हिन्दुस्तान के सब प्रदेशों के यात्री सूखाहुआ भातका महाप्रसाद अपने घर ले जाते हैं। सभी जाति सभी को भात परोसता है। उच्छिष्ट प्रसाद भोजन करने में भी लोग दोष नही मानतें है। परोसनेवाले जूठे पत्तल को स्पर्श करके भात परोसते हैं और किसी किसी यात्री के मुखमें एक ग्रास खिला देतें हैं या उसमें से एक ग्रास आप खालेते हैं; परन्तु यवन आदि अन्य धर्मी और चमार आदि

नीच जातियों से पंक्तिभेद और स्पर्शदोष माना जाता है। वे मन्दिर के हाते के भीतर नहीं जाने पावे हैं। वहां के लोग कहते थे कि पुरी के राजा की ओर से २५०) रुपये की सामग्री नित्य भोग लगाई जाती है। पंडे लोग अपने यात्रियों के भोजन के लिये, दूकानदार लोग बेचने के लिये और कोई २ यात्री ब्राह्मण भोजन के लिये पाकशाले में भोग की सामग्री तैय्यार कराकर के भोग लगवाते हैं। और पाक बनाने वालों को नियत हिस्सा देते हैं। पुरी के लोगों के घर जो रसोई बनती है वह मन्दिर में भोग नहीं लगती उसमें स्पर्श भेद माना जाता है।

पुरी का उत्सव—(१) स्नान यात्रा—यह यात्रा रथयात्रा को छोड़ कर पुरी के सब उत्सवों में प्रधान है। ज्येष्ठ की पूर्णिमा को जगन्नाथजी, बलभद्रजी और सुभद्राजी बाहरी हाते में पूर्वोत्तर के कोन के पास स्नान वेदी पर लाई जाती हैं। अक्षयवट के पास के पवित्र कूप से जल लाकर दो पहर दिन के समय इनको स्नान कराया जाता है और सुन्दर पोशाक पहना कर मंत्रों को पढ़कर इनकी पूजा की जाती है। इसके उपरान्त जगमोहन के बगल की कोठरियों में से एक में, जिसका नाम अन्दर घर है, जगन्नाथजी आदि देवता १५ दिन रहते हैं। इतने दिन भोग नहीं लगता; पाकशाला और बाहर का फाटक बन्द रहता है। कहा जाता है कि बहुत स्नान करने से ये लोग बीमार हैं। ऐसे समय में किसी दूजा आषाढ़ में इनके कलेवर बदलते हैं। उस वर्ष की रथयात्रा के समय यात्रियों का बहुत भारी मेला होता है। (२) रथयात्रा पुरीका प्रधान उत्सव है। जगन्नाथजी, बलभद्रजी, और सुभद्राजी रथ में बैठ बड़े सामान और तैय्यारी के साथ जनकपुर के अपने विश्राम वाटिका में जाते हैं। जगन्नाथजी का रथ ४५ फीट ऊंचा और ३५ फीट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा है, जिसमें ७ फीट व्यास के १६ पहिये लगे हैं। बलभद्रजी का रथ ४४ फीट ऊंचा १४ पहियेवाला और सुभद्राजी का रथ ४३ फीट ऊंचा १२ पहियें का है। आषाढ़ सुदी २ के दिन तीनों मूर्तियां सिंहदरवाजे पर लाकर रथ में बैठाई जाती हैं। उस समय तीनों देवताओं को सुनहरे हाथ और पाव लगाये जाते हैं। उसके बाद पुरी

के राजा हाथी, घोड़े, पालकी, आदि असबावों के साथ वहां आते हैं। अगले रथ से लगभग १०० गज दूर आने पर वह गाड़ी से उतर कर पैदल चलते हैं और रथके आगे की भूमि को रत्न लगे हुए झाड़ू से बहारते हैं और मूर्तियों की पूजा करते हैं। सबसे पहिले राजा क्रम से तीनों रथकी डोरी पकड़ कर छोड़ देते हैं; तब पड़ोस के जिलों के ४२०० कूली, जिनको इस कामके लिये बिना लगान की जमीन मिली है, रथको खींचते हैं और बहुतेरे यात्री भी बड़े प्रेम उत्साह से इस काम में लगते हैं। रथों के पहिए बालू में गड़ जाते हैं; मार्ग में कई दिन लग जाते हैं। जगन्नाथजी जितने दिन मार्ग में रहते हैं, उतने दिन पक्की सामग्री भोग लगती है। जनकपुर पहुंचने पर तीन दिन कच्ची भोग की तैय्यारी होती है। चौथी रात को लक्ष्मीजी बहुत जलूस के साथ अपने स्वामी के दर्शन के लिये मन्दिर से आती हैं। उस तिथी को लोग हरिपंचमी कहते हैं। जगन्नाथजी आदि देवता चार पांच दिन तक जनकपुर में रह कर दसमी को लौटते हैं और विजय द्वारहोकर बाहर होते हैं। फिरने के समय यात्रीलोगों के कम हो जाने के कारण मार्ग में विलंब होता है। सिंहदरवाजे पर रथ पहुंचने पर लौट आने का उत्सव होता है। मन्दिर के सिंहासन पर आने के पीछे स्पर्श दोष मिटाने के लिये मूर्तियों के संस्कार होते हैं।

(३) हरि सयनी एकादशी—आषाढ़ शुक्ल एकादशी को भगवान के सयन का उत्सव होता है। (४) झूलन उत्सव—श्रावण शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक मदनमोहनजी झूलन पर रहते हैं। इस समय नाच गान से आनन्द मनाया जाता है। (५) जन्माष्टमी का उत्सव—भादों कृष्ण-अष्टमी को जन्म का उत्सव होता है। (६) पार्श्व परिवर्तन—भादो शुक्ल एकादशी को विष्णु के करवट फेरने का उत्सव होता है। (७) कालिय दमन—कृष्ण ने कालिय नाग का दमन किया था, उसका उत्सव होता है। (८) वामन जन्म—भादो शुक्ल द्वादशी को वामनजी के जन्म के दिन जगन्नाथजी को पोशाक पहनाये जाते हैं और वामनजी के मानिन्द इनको एक छाता और कमण्डलु दिया जाता है। (९) शरत्पूनो—आश्विन की पूर्णिमासी को शरत्पूनो का उत्सव होता है।

(१०) देवोत्थान—कार्तिक शुक्ल एकादशी को विष्णु के जागने का उत्सव होता है। (११) गरम कपड़े पहनाने का उत्सव—मार्गशीर्ष में जिस दिन मूर्तियों को जाड़े के कपड़े पहनाये जाते हैं; उस दिन उत्सव होता है। (१२) पुष्याभिषेक—यह उत्सव पौष की पूर्णिमा को होता है। (१३) मकरकी संक्रान्ति—मकर के सूर्य्य होने के दिन उत्सव होता है। (१४) फूलदोल—रथयात्रा और स्नान यात्रा को छोड़ कर होली पुरी में सब से अधिक प्रसिद्ध उत्सव है। धुलहड़ी के दिन मदनमोहनजी झूलते हैं। यात्रीगण अबीर गुलाल चढ़ाते हैं। उसी दिन जगन्नाथजी का राजभेंट उत्सव होता है। (१५) रामनवमी—रामचन्द्र के जन्म के दिन जगन्नाथजी को रामचन्द्र के समान पोशाक पहनाई जाती हैं। (१६) दमनभंजिका यात्रा—दमन नामक दैत्य के वध का उत्सव होता है। (१७) चन्दन यात्रा-वैशाख की अक्षय तृतीया को चन्दनतालाव पर यात्रा होती है उस समय देवताओं की चल प्रतिमाओं को नाव में बैठा कर चंदनतालाव में जल क्रीड़ा कराई जाती हैं और फूलों का बड़ा शृंगार किया जाता है। लतावृक्षों से वृन्दावन बनाया जाता है। (१८) रुक्मिणी हरण। इनके अतिरिक्त बीचबीच में कई वार पुरी में महोत्सव होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(पाताल खण्ड,१७ वां अध्याय) शत्रुघ्नजी ने अश्व की रक्षा करते हुए जाते जाते एक पर्वताश्रम देखकर अपने मंत्री से पूछा कि यह क्या है। सुमति नामक मंत्री बोला कि यह नील पर्वत पुरुषोत्तम जगन्नाथजी से शोभित है। यहां पुरुषोत्तमजी सदा टिके रहते हैं। इस पर्वत पर चढ़ कर पुरुषोत्तमजी को नमस्कार कर उनकी पूजा करके नैवेद्य भोजन करने से प्राणी चतुर्भुज हो जाता है। इस विषय में पंडित लोग यह पुराना इतिहास कहते हैं,—

लोक में प्रसिद्ध कांची नामक पुरी है। उसमें महाराजा रत्नग्रीव राज्य करता था। उसने अपने पुत्र को राज्य देकर तीर्थयात्रा का विचार किया। एक दिन राजा ने अपनी सभा में एक तपस्वी ब्राह्मण को देख कर उससे तीर्थों का वृतान्त पूछा। ब्राह्मण बोला कि हम पर्य्यटन करते हुए एक

समय गंगासागर के जल से प्रक्षालित नील नामक पर्वत पर गये। वहां हमनें चतुर्भुजी मूर्तिवाले और शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुए भीलों को देखा; तब उनसे चतुर्भुज होने का कारण पूछा। (१८ वां अध्याय) किरातों नै कहा कि हम लोगों का एक छोटा बालक अन्य बालकों के साथ खेलता हुआ इस पर्वत के शृंग पर चढ़ गया। तब उसने वहां मणियों से खचित सुवर्ण की दीवारों से बना हुआ एक अद्भुत देवालय देखा। वह एक मन्दिर में लक्ष्मी नारदादिकों से सेवित श्रीहरि को देखकर समीप चलागया। जब देवगण पूजा करके नैवेद्य लगाकर अपने अपने लोकों को चले गए तब उस लड़के ने नैवेद्य के एक भात का सीथ पड़ा हुआ पाया और श्रीहरि का दर्शन करके भातका सीथ खालिया, जिससे वह चतुर्भुज हो गया। उस बालक से यह समाचार पाकर हमलोग भी इकट्ठे होकर देवदेव का दर्शन किया और स्वादु युक्त वहां का भात आदि नैवेद्य भोजन करके हम लोग चतुर्भुज रूप हो गए। (१९ वां अध्याय) ऐसा कह ब्राह्मणने रत्नग्रीव से कहा कि हमभी गंगासागर के संगम में स्नान करके उस शृंग पर चढ़े। वहां देव देवादिकों से वन्दित महाराज को देख मैं ने नमस्कार किया और वहां के भात के भोजन से शंख चक्रादिकों से चिह्नित चतुर्भुजत्व पाया। (२१ वां अध्याय) ऐसा ब्राह्मण का वचन सुन राजा रत्नग्रीव ब्राह्मण की आज्ञा से पुरुषोत्तमजी के दर्शन को चला और गंगासागर संगम में पहुंच कर ब्राह्मण से बोला कि नीलपर्वत कितनी दूर है। तब ब्राह्मण ने विस्मित होकर कहा कि नीलपर्वत का स्थल तो यही है; यहां ही भील दिखाई दिये थे और इसी मार्ग होकर हम पर्वत पर चढ़े थे। हे राजन्! जब तक पुरुषोत्तमजी का दर्शन नहो तबतक आप यहीं ठहरे रहें। राजा श्रीहरि का ध्यान करने लगा। जब राजा को परमेश्वर के गुणगान करते पांच दिन बीत गये तब भगवान त्रिदण्डी का वेष धारण किये हुए राजा के समीप आकर बोले कि हे राजन्! कल्ह मध्याह्न समय में श्रीहरि तुमको अपना दर्शन देंगे। तुम, तुम्हारा मंत्री, तुम्हारी स्त्री, यह तपस्वी ब्राह्मण और तुम्हारे पुरका करम्भ नामक कोरी, जो बड़ा साधु है, ये सब नील पर्वत पर जायगें और वहां श्रीहरि के धाम को

देखेंगे। (२२ वां अध्याय) दूसरे दिन मध्यांह्न के समय नीलपर्वत राजा को दिखाई दिया, जो चान्दी के शृंगों से अति शोभित हो रहा था। तब पांचो आदमी विजय मुहूर्त में नीलपर्वत पर चढ़े। उसके एक शृंगके ऊपर सुवर्ण से बने हुए देवमन्दिर में, सुवर्ण के सिंहासन पर विराजमान, चतुर्भुजी मूर्ति धारण किये हुए श्रीहरि को देख कर सबों ने प्रणाम किया। उसके अनन्तर सब लोग चतुर्भुजरूप हो शंख, चक्र, गदा, पद्म हाथों में लिये हुए विमानों पर चढ़ कर विष्णु लोक को चले गये।

(८० वां अध्याय) महादेवजी ने पार्वतीजी से कहा कि ज्येष्ठ मास में विष्णु भगवान् को यत्न से स्नान कराने से ब्रह्महत्यादि सहस्रों पाप नष्ट होते हैं। आषाढ़ में रथयात्रा और आषाढ़ के शुक्ल पक्षकी एकादशी को विष्णु शयन का महोत्सव करना उचित है। श्रावण में श्रवण नक्षत्र अर्थात् पूर्णिमा से श्रावण में श्रवण नक्षत्र के दिन तक श्रावणी उत्सव अर्थात् झूलनोत्सव होना चाहिए। भादो मास में जन्माष्टमी और वामन द्वादशी को उपवास में तत्पर होना उचित है। भाद्रपद की शुक्लाद्वादशी को शयन किये हुए भगवान् का परिवर्तन कराना चाहिए। आश्विन के शुक्ल पक्ष में महामाया की पूजा; कार्तिक में दामोदरजी के लिए दीपदान, मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्षकी षष्ठी को श्वेत वस्त्रों से जगदीश की पूजा; पौष मास में पुष्य जल से भगवान् को स्नान; माघ मास में संक्रान्ति के दिन गुड़ मिश्रित तण्डुल और तिल से भगवान् की पूजा और माघ शुक्लापञ्चमी को केशवजी को स्नान कराना उचित है। मनुष्य को चाहिए कि फाल्गुन मास की चतुर्दशी को अठवें पहर में अथवा पौर्णमासी में जब प्रतिपदा का संयोग होजाय तब विविध प्रकार के कुंकुमादि चूर्णों से परमेश्वरको तृप्त करें; एकादशी से इस दोलोत्सव का आरम्भ करके फिर पंचमी को समाप्त करे अथवा ५ दिन वा ३ दिन दोलोत्सव करे। दोला पर चढ़े हुए कृष्णचन्द्र को एक बार भी देखकर मनुष्य अपराध समूहों से छूट जाते हैं। वैशाख मास में दमनारोपण करके सब पदार्थ कृष्णचन्द्र को समर्पण करना चाहिए। वैशाख मास की शुक्ल तृतीया को जल के मध्य में बैठा कर अथवा दमनारोपण मंडल में श्रीहरि की विशेष पूजा करनी चाहिए। गंधाष्टक को अन्य सुगंधित

वस्तुओं से युक्त करके विष्णु के अंगों में लगावे, वहां पर वृन्दावन बनावै और उसमें सब प्रकार के फलित वृक्ष लगावे इत्यादि।

(पद्मपुराण, उत्तरखंड, ८३ वां अध्याय) चैत्र मास की शुक्ला एकादशी को उत्सव के साथ दोलारूढ़ श्रीकृष्ण भगवान की पूजा करनी चाहिए। दोला पर चढ़े हुए भगवान के दर्शन करने से मनुष्य हजारों पाप से विमुक्त होजाते हैं और उनको झुलाने से करोड़ों जन्म के पाप छूट जाते हैं। चैत्र और वैशाख में दोलोत्सव के समय संपूर्ण देवता और पृथ्वी के सब प्राणी भगवान के दोलोत्सव में आते हैं। उस समय दोला में स्थित विष्णु भगवान के दर्शन करने वाला मनुष्य अंत काल में विष्णु के साथ आनंद करता है। दोला में भगवान के पास श्रीलक्ष्मीजी को और उनके आगे नारद आदि सुरर्षि और विष्वक्सेन आदिक भक्तों को स्थापित करके प्रत्येक पहर पर यत्न से उनका पूजन करना चाहिए।

(८४ वां अध्याय) चैत्र मास की शुक्ला द्वादशी को अच्छी विधि से दमनोत्सव करना उचित है। देवताओं के आनंद से उत्पन्न दिव्य दमनमंजरी है। उत्सव करनेवाले मनुष्य को उचित है कि बागीचे में जाकर रति समेत मदनमंजरी का पूजन करें और गीत और बाजा के शब्द के सहित उसको अपने घर लावे; एकादशी की रात्रि में सर्बतोभद्र बना कर रति के सहित दमन अर्थात् कामदेव को स्थापित करके उसको पूजे; उसके पश्चात् दमनक मुष्टि को ग्रहण कर लक्ष्मीजी और विष्णु आदि देवताओं को अर्पण करे और फिर चंदन आदि पदार्थों से महती पूजा और गीत, बाजा तथा नाचों से भारी उत्सव करे। ब्रह्मघाती आदि बड़े पापी मनुष्य भी दमनकोत्सव के दर्शन करने से निःपाप हो जाते हैं। जो मनुष्य मंजरी से दमनक की पूजा करता है उसका सब तीर्थों के करने का फल लाभ हो जाता है। चैत्र और वैशाख में दमनक के उत्सव करनै वाले मनुष्य को हजार गोदान का फल मिलता है। (भविष्यपुराण—उत्तरार्द्ध के १२१ वें अध्याय में दमनकोत्सव और दोलोत्सव का और १२२ वें अध्याय में रथयात्रा का विधान है)।

(८५ वां अध्याय) वैष्णवों को उचित है कि वैशाख की पूर्णिमा को

जल में स्थित भगवान की पूजा; एकादशी में बड़े उत्साह से भगवान का दर्शन करे। वह सोना, चांदी, तान्बे या मट्टी के वर्तन में ठंढे सुगंध युक्त जल में विशेष करके गोपाल जी अथवा शालिग्रामशिला को स्थापन करे। मनुष्य जेठ मास में जल में स्थित भगवान के दर्शन करने से प्रलय पर्यन्त ताप रहित हो जाता है। मिथुन और कर्क राशि के सूर्य में अर्थात् चान्द्र मास के आषाढ़ और श्रावन में विशेष करके द्वादशी तिथि में जल में स्थित भगवान की पूजा करने से सौ क्रिरोड़ यज्ञ करने का फल लाभ होता है।

(८६ वां अध्याय) सावन मास में पवित्रारोपण विधि करना चाहिए। विष्णुजी के पवित्रारोपण करने से आत्मा को सुख होता है, इत्यादि।

अग्निपुराण—(८० वां अध्याय) दमनकारोहण विधि इस भांति जगत में प्रचलित हुई,—पूर्व काल में शंकरजी के क्रोध से भैरव की उत्पति हुई। जब वह देवताओं का दमन करने लगे तब महादेवजी ने उनको शाप दिया कि तुम वृक्ष हो जाओ। पीछे भैरवजी की प्रार्थना से प्रसन्न होकर शिवजी ने कहा कि हे भैरव! जो मनुष्य सप्तमी और त्रयोदशी को दमनक वृक्ष का पूजन करेगा, उसको संपूर्ण फल प्राप्त होगा। पूजा के अंत में प्रार्थना करनी चाहिए कि हे हरप्रसाद संभूत! तुम इस स्थान पर सन्निहित हो। अपने गृह पर भी दमनक के आह्वान करके पूजनें के उपरांत सायंकाल में विसर्जन कर देना उचित है।

आदि ब्रह्मपुराण—(४१ वां अध्याय) उत्कल देश में पुरुषोत्तम भगवान निवास करते हैं। उस देश में वसनेवाले मनुष्य धन्य हैं। पुरुषोत्तम पुरी में निवास करनेवाले का जन्म सुफल हो जाता है। जो पुरुष तीर्थराज के जल में स्नान करके पुरुषोत्तम भगवान का दर्शन करता है, उसका सदा स्वर्ग में निवास होता है। जो उस क्षेत्र में शरीर छोड़ता है, उसका जीवन सफल है।

(४२ वां और ४३ वां अध्याय) पृथ्वी में सब नगरियों में उत्तम अवन्ती नामक नगरी है। कृतयुग में उस नगरी का राजा इन्द्रद्युम्न था। वह एक समय विष्णु की आराधना की इच्छा से वहुतसी सेना, भृत्य और पुरोहितों को संग ले अवन्तीपुरी से चल कर लवणोदक समुद्र के तीर पर

पहुँचा। राजा ने दस योजन लम्बा और ५ योजन चौड़ा बहुत आश्चर्यों से युक्त तीन लोक से पूजित उस दुर्लभ क्षेत्र को देख कर वहां निवास किया।

(४४ वां अध्याय) पुरुषोत्तम के दहिने एक वट का वृक्ष है, जो कल्पांतर में भी विनाश नहीं होता। वट को देखने और उसकी छाया में प्राप्त होने से ब्रह्म हत्या भी दूर होजाती है। उस वृक्ष की प्रदक्षिणा और उसको नमस्कार करने से संपूर्ण पाप छूट जाते हैं। वट के उत्तर दिशा में केशव के प्रासाद अर्थात् धर्ममय स्थान में भगवान की रची हुई मूर्ति है। एक समय सूर्य्य के पुत्र धर्मराज ने वट के समीप विष्णु भगवान की स्तुति की और प्रणाम करके उनसे कहा कि हे नाथ! इस विख्यात और पवित्र पुरुषोत्तम स्थान में सब कामना देनेवाली एक मूर्ति है। उसके दर्शन और उसमें श्रद्धा करने वाले संपूर्ण मनुष्य श्वेतभुवन को चले जाते हैं; इस कारण से यमपुरी शून्य हुई जाती है; हे देव! तुम मुझ पर प्रसन्न होकर इस प्रतिमा को हर लो। धर्मराज का ऐसा वचन सुन विष्णु ने उस इंद्रनील की मूर्ति को पुरुषोत्तम क्षेत्र के बालू में गुप्त कर दिया। उसके पश्चात् इंद्रद्युम्न का आगमन हुआ।

(४५ वां अध्याय) राजा इंद्रद्युम्न पुरुषोत्तम क्षेत्र में जाकर विचार करने लगा कि विष्णु भगवान का मनरूपी पुरुषोत्तम क्षेत्र है। कल्पवृक्ष के समान यहां वटवृक्ष स्थित है। इन्द्रनील प्रतिमा को भगवान ने गुप्त कर दिया है; विष्णु भगवान की अन्य कोई सुन्दर मूर्ति यहां नहीं देख पड़ती, इस लिये जिससे भगवान प्रत्यक्ष मुझको दर्शन दें, मैं प्रयत्न करता हूँ। (४६ वां अध्याय) ऐसा कह राजा ने उत्तम शास्त्र के जानने वाले गणकों को बुलाकर यत्न से भूमि का शोधन करवाया और उस पर सोने और रत्नों से सुशोभित और सुन्दर भीतों तथा सोने के स्तंभों से युक्त भगवान का मन्दिर बनवाया। (४७ वां अध्याय) उसके उपरांत राजा इन्द्रद्युम्न ने भगवान के प्राप्ति के लिये बड़े विधान से अश्वमेध यज्ञ समाप्त किया।

(४८ वां अध्याय) राजा की स्तुती से प्रसन्न हो वासुदेव भगवान ने उन्हे स्वप्न में दर्शन दिया और उसने कहा कि हे राजन्! जो तू सनातनी राज पूज्य प्रतिमा को यहां स्थापित करने की इच्छा करता है तो मैं उसका

उपाय तुम से कहता हूं; जब रात्रि व्यतीत हो जावे गी और निर्मल सूर्य्योदय होगा, तब अनेक प्रकार के वृक्षों से सुशोभित समुद्र के तट के समीप लवणोदधि समुद्र से जल बहेगा। उस समय कोलालंधी नामक महा वृक्ष समुद्र की वेला से हन्यमान होने पर भी न कांपे गा; उस समय जब तू हाथ में कुल्हाड़ा ले कर वहां अकेले गमन करे गा तब उस वृक्ष को देखे गा; निदान तुम इन चिन्हों को देख कर अशंकित हो उस वृक्ष से दिव्य प्रतिमा बनाना। राजा इन्द्रद्युम्न प्रभात होने पर समुद्र में स्नान कर ब्राह्मणों को दान दे अकेला समुद्र के तट पर गया और अति तेजमान महान शाखों वाला करड़ा मंजीठ के वरण के समान कान्तिवाला विष्णु के उस पुण्य वृक्ष को जल में स्थित देख कर प्रसन्न हुआ। जब वह कुल्हाड़े से उसे छेदन करने लगा और उसने बीच से छेदन करने की इच्छा की तब उस निरीक्ष्यमान काष्ठ में उस को अद्भुत दर्शन हुए। उस समय प्रकाशमान हो महात्मा लोग राजा के पास आकर उससे बोले कि तू किसलिये इस वृक्षको काटता है।राजाने कहा कि हे ब्राह्मणों! मैं जगत के पति देवदेव के आराधना के लिये इस से मूर्ति बनाऊंगा। यह सुन कर उनमें से एक बोला कि हे महाभाग ? तू इस वृक्ष की छाया में हमारे संग स्थित हो; शिल्प कर्मवालों में श्रेष्ठ यह दूसरा ब्राह्मण, जो सब कर्म्मों में विश्वकर्मा के समान है, तेरे उद्देश के अनुसार प्रतिमा बना देगा। यह सुन राजा ने वृक्षकी छाया में बैठ कर उस ब्राह्मण से कहा कि तुम कृष्ण, बलदेव और सुभद्रा इन तीनों की तीन प्रतिमा बनाओ। शिल्प कर्म्मों में निपुण ब्राह्मण वेषधारी विश्वकर्मा ने शुभ लक्षणों से युक्त दिव्य वस्त्रों को पहिनी हुई अनेक रत्नों से अलंकृत मनोहर प्रतिमाओं को बनाया। यह देख कर राजा परम विस्मय को प्राप्त हो बोला कि तुम दोनों देवताओं के समान आचरण करने वाले कौन हो। (४९ वां अध्याय) ब्राह्मणों में से एक पुरुष बोला कि तुम मुझ को पुरुषोत्तम भगवान् जानों; जब तक समुद्र, पर्वत और स्वर्ग में देवता रहेंगे, तबतक इन्द्रद्युम्न नामवाला और यज्ञांग से संभव यह तीर्थ रहेगा। मनुष्य एक बार यहां स्नान करने से इन्द्रलोक में प्राप्त हो जावेंगे। जो मनुष्य इस सरोवर के तट पर पिंडदान करेगा उसके २१ कुलका उद्धार

हो जावेगा। इस सरोवर के दक्षिण भागके नैऋत्य कोन में एक बट का वृक्ष है; उसके समीप एक सुन्दर मंडप बना है। ऐसा कह विश्वकर्मा समेत हरि भगवान अन्तर्द्धान हो गये। राजा श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा को बिमान के समान रथमें बैठा कर लाया और शुभ तिथि तथा सुन्दर मुहूर्त में ब्राह्मणों के सहित अपने उत्तम मन्दिर में इन की प्रतिष्ठा की। (५० वां अध्याय) मार्कंडेय मुनि महाप्रलय के समय महावह्नि को देख कर भयसे व्याकुल होकर पृथ्वी में भ्रमता फिरा। जब उसे कहीं विश्राम न मिला तब वह पुरुषेश के पास सनातन बटराज के समीप जाकर उसके मूल में स्थित हुआ, जहां न कालाग्नि का ही भय था और न शरीर को खेद होता था। (५१ वां अध्याय) जब पृथ्वी जलार्णव होगई तब डूबते हुए मार्कंडेय मुनिने उस बट की शाखा पर पलंग के ऊपर बाल रूप कृष्ण भगवान को देखा। उस बालक के कहने पर मुनि उसके मुख में प्रवेश कर गया। (५२ वां अध्याय) और बालक के मुखमें सम्पूर्ण ब्रह्मांड को देख कर अन्त में बाहर निकला। (५३ वां अध्याय) उसने बाहर निकल बट वृक्ष के ऊपर पलंग पर स्थित उस बालक को फिर देखा। बालक बोला कि हे मुने! सुख से यहां विश्राम कर; जब ब्रह्मा उत्पन्न होंगे, तब मैं पृथ्वी, आकाश और सब जीवों को रचूंगा। मार्कंडेय बोले कि हे भगवन्! मै परमात्मा शंकर को स्थापन करूंगा; तुम कहो मैं किस स्थान में उन को स्थित करूं। जगन्नाथजी बोले कि हे मुने! तुम शीघ्रहीं शिवालय बना कर शिव की स्थापना करो। शिव के स्थापना में मेराही स्थापन हो जावेगा; क्योंकि हमारे और शिव में कुछ अन्तर नही है। हे विप्र! पुरुषोत्तम देव के उत्तर दिशा में अपने नाम से चिन्हित शिवालय बनाओ। यह मार्कंडेय नामक तीर्थ करके लोक में विख्यात होगा।

(५५वां अध्याय) मनुष्यों को उचित है कि मार्कंडेय ह्रद में स्नान कर शिवालय में जाकर तीन बार शिव की प्रदक्षिणा करे और मार्कंडेय तथा केशव भगवान् के पूजन करके उनकी स्तुति और उनको प्रणाम करे और कल्पवृक्ष के समीप जाकर तीन प्रदक्षिणा करके उस वटवृक्ष का पूजन करे। जो मनुष्य कृष्ण के आगे स्थित गरुड़ का दर्शन करता है वह विष्णुलोक में प्राप्त होता है और

जो वट, गरुड़, पुरुषोत्तम, बलदेव, और सुभद्रा का दर्शन करता है; उसको परम गति लाभ होती है। (५६ वां अध्याय) जहां इन्द्रनील मय विष्णु भगवान रेत से आवृत हो कर छिपे हैं, उस स्थान के दर्शन करने से मनुष्य विष्णु पुर में जाता है। जिस भगवान ने नृसिंह रूप धर हिरण्यकशिपु दैत्य को मारा था वही वहां स्थित हैं।

(५७ वां अध्याय) सतयुग में श्वेत नाम से विख्यात एक राजा था। वह कई हजार वर्षों तक राज्य करके अन्त काल में इस लोक की कामनाओं से विरत हो दक्षिण दिशा के समुद्र के तट पर गया। वहां उसने एक अति उत्तम देवमन्दिर बनवा कर उसमें चन्द्रमा के समान कान्तिवाली माधव की मूर्ति को स्थापित किया। राजा की स्तुति से प्रसन्न हो विष्णु भगवान प्रकट होकर बोले कि हे राजन्! तेरी यह कीर्ति तीनों लोकों में प्रकाशित होगी और श्वेत गंगा का यश सम्पूर्ण नर तथा देवता गान करेंगे। जो मनुष्य श्वेत-गंगा के जल को कुशा के अग्रभाग से स्पर्श करेगा उस का निवास स्वर्ग में होगा। जो कोई माधव की प्रतिमा का दर्शन करेगा; वह मेरे लोक में जायगा।

(५८ वां अध्याय) चतुर्दशी को मार्कंडेय ह्रद में और पूर्णिमा को समुद्र में स्नान का बड़ा पुण्य है। मार्कंडेय वट, रोहिण्याह्रद, कृष्ण, महोदधि और इन्द्रद्युम्न सरोवर ये पांच पंचतीर्थ हैं। ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को जो ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो तीर्थराज में स्नान करने से महान फल लाभ होता है। मनुष्यों को उचित है कि वट को नमस्कार करके उससे ३०० धनुष दक्षिण ओर समुद्र के निकट, जहां मन को रमण करने वाला स्वर्ग के द्वार का चिन्ह देख पड़ता है, गमन करे। वह पहले उग्रसेन को देख कर स्वर्ग द्वार से समुद्र पर जाय और (६१ वां अध्याय) पश्चात् यज्ञांग संभव तीर्थ में जाकर इन्द्रद्युम्न नामक पवित्र सरोवर में आचमन कर मंत्र का उच्चारण करे। जो एकादशी के दिन व्रतकर ज्येष्ठ की पूर्णिमा के दिन पुरुषोत्तमको देखता है वह भगवान् के लोक में जाता है। पृथ्वी पर जितने तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाव, बावली, कुंए और ह्रद हैं, वे सब ज्येष्ठ के महीने में पुरुषोत्तम तीर्थ में शयन करते हैं और ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन प्रत्यक्ष होते हैं। यह दशमी दस पापों का नाश करती

है, इस लिये इसका नाम दशहरा पड़ा है। वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन जो मनुष्य चन्दन से विभूषित श्रीकृष्ण का दर्शन करता है वह भगवान के स्थान में प्राप्त होता है। (६३ वां अध्याय) ज्येष्ठ के महीने में ज्येष्ठा नक्षत्र सहित पूर्णिमासी के दिन सदा हरि का स्नान कराया जाता है। (६४ वां अध्याय) जो मनुष्य "गुडिच क्षेत्र" में जाते हुए रथ में स्थित श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा के दर्शन करते हैं, वे हरि के भवन में प्राप्त होते हैं। जो पुरुष वहां ७ दिन तक मंडप में स्थित श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा का दर्शन करते हैं, वे विष्णुलोक में जाते हैं। पूर्व काल में राजा इन्द्रद्युम्न ने हरि की प्रार्थना करके उसने कहा कि हे प्रभो! मेरी इच्छा है कि सरोवर के तीर आपकी यात्रा हो। तब पुरुषोत्तम भगवान ने उसको वरदिया कि "गुडिच क्षेत्र" में सरोवर के तीर ७ दिन तक मेरी यात्रा रहेगी। आषाढ़ शुक्ल में गुडिचा नामवाली यात्रा के समय श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा के दर्शन करने से अश्वमेध यज्ञ से भी अधिक फल होता है (आगे ७० वां अध्याय तक पुरुषोत्तमक्षेत्र की कथा है)।

पुरुषोत्तम माहात्म्य—(चौरासी हजार वाला स्कन्दपुराण, उत्तर खण्ड, पहिला अध्याय) समुद्र के किनारे पर पुरुषोत्तमक्षेत्र १० योजन में विस्तृत है। उसके मध्य में नीलाचल नामक बड़ा पर्वत सुशोभित है। सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने विष्णु भगवान की स्तुति की; तब भगवान ने प्रकट होकर ब्रह्माजी से कहा कि समुद्र के उत्तर और महानदी के दक्षिण का प्रदेश सब तीर्थों के फल को देनेवाला है। उस देश में बड़े पुण्यवान् मनुष्य जन्म लेते हैं और निवास करते हैं। एकाम्रक वन से दक्षिण समुद्र के तीर तक की भूमि पद पद में श्रेष्ठ और पवित्र है। समुद्र के तीर पर पृथ्वी में अत्यन्त गुप्त नील पर्वत विराजमान है। मैं वहां सर्वदा निवास करता हूं। उस स्थान की कभी सृष्टि अथवा लय नहीं होता है। नीलगिरि पर वटवृक्ष के मूल से पश्चिम सुप्रसिद्ध रोहिणीकुण्ड के तीर पर मैं स्थित रहता हूं। जो मनुष्य उस कुण्ड में स्नान करके मेरा दर्शन करता है; उसको मुक्ति मिलती है। तुम वहां ही जाकर मेरा ध्यान करो। हमारी प्रसन्नता से गुप्त और प्रकट संपूर्ण विषय तुमको ज्ञात हो जायगा।

(दूसरा अध्याय) ब्रह्माने पुरुषोत्तम क्षेत्र में जाकर भगवान का दर्शन किया। उसी समय एक काक ने रोहिणीकुण्ड में गोता मारा और नीलमाधव अर्थात् नीलमणि की भगवान की मूर्ति का दर्शन कर अपने शरीर को छोड़ चतुर्भुज हो कर भगवान के पास चला गया। काक की ऐसी गति देख कर ब्रह्मा विस्मित हो गये। उसी समय यमराज ने श्वास लेते हुये वहां आकर माधव और लक्ष्मी की स्तुति की और उसने कहा कि मैं अपने अधिकार से रहित हुवा जाता हूँ; अर्थात् सबलोग तुम्हारे दर्शन करने से स्वर्ग को चले जाते हैं। लक्ष्मी ने कहा कि जिस लिये तुम मेरी स्तुति करते हो वह नहीं हो सकेगा। हम दोनों पुरुषोत्तमक्षेत्र को नहीं छोड़ सकते हैं। यहां के बसे हुये मनुष्य तुम्हारे वसमें कभी नहीं हो सकेंगे। नीलेन्द्रमणि के नारायण की मूर्ति के दर्शन करने वाले बन्धन से छूट जाते हैं।

(तीसरा अध्याय)—लक्ष्मीजी कहने लगीं कि जिस समय प्रलय में सब चराचर लीन हो रहा था, यह क्षेत्र और भगवान् के वक्षस्थल में मैं शेष रह गई थी। उस समय सप्तकल्प जीने वाला मार्कण्डेय मुनि प्रलय के समुद्र में बहता हुआ पुरुषोत्तम क्षेत्र में आया। उसने वहां एक वट वृक्ष और उसके ऊपर पत्र के दोने में मेरे सहित बालरूप चतुर्भुज भगवान् को देखा। बालक ने कहा कि हे मुने! तुम हमारे मुख में पैठ कर बैठ जावो। मार्कण्डेय ने बालक के मुख द्वारा उसके उदर में जाकर भीतर ब्रह्मादिक देवता और नदी पर्वत समुद्र इत्यादि वस्तुओं को देखा; पीछे वह बाहर आकर भगवान् की बड़ी स्तुति करके उनसे बोला कि आप ऐसा उपाय करें जिससे मैं मृत्यु को न प्राप्त होऊं। भगवान् ने मुनि के मनोरथ सिद्ध करने के लिये वटवृक्ष के वायुकोण में अपने चक्र से एक तालाब खोदा। मार्कण्डेय मुनि ने उस तालाब के समीप महादेवजी की आराधना करके मृत्यु को जीत लिया। उसी मुनि के नाम से सरोवर का नाम मार्कण्डेय तालाब हुवा, जिसमें स्नान करके मार्कण्डेयेश्वर शिव के दर्शन करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। पुरुषोत्तम क्षेत्र समुद्र के तट पर पांच कोस में विस्तृत है। समुद्र के निकट यमेश्वर शिव स्थित हैं, जिनके दर्शन और पूजन करने से कोटि लिङ्ग के दर्शन और पूजन का फल मिलता है।

(चौथा और पांचवा अध्याय) पुरुषोत्तम क्षेत्र शंख के आकार का है। इसकी पश्चिम सीमा अर्थात् मस्तक स्थान पर वृषभध्वज महादेव और अग्रभाग में (अर्थात् पूर्व) नीलकंठ महादेव हैं। समुद्र से लेकर के वट के मूल तक शंख का उदर भाग है। शंख के दूसरे भाग में कपालमोचन शिव हैं। जब महादेवजी ने ब्रह्मा का, पांचवां सिर काट लिया था; उस समय वह सिर उनके हाथ में लपट गया। तब शिवजी पृथ्वी पर भ्रमण करते हुये पुरुषोत्तम क्षेत्र में आये। यहां आने पर वह सिर इनके हाथ से छूट गया, तबसे इस स्थान का नाम कपालमोचन पड़ा। कपालमोचन शिव के दर्शन करने से ब्रह्महत्यादिक पाप छूट जाते हैं। शंख के तीसरे चक्र में विमला देवी की मूर्ति की पूजा करने से मुक्ति होजाती है। कपालमोचन से अर्द्धाशनी देवी तक शंख का मध्य भाग है। यह देवी महाप्रलय के समय समुद्र के आधे जल को पी जाती है। समुद्र के किनारे से वटवृक्ष तक की भूमि में जितने कीट पर्यन्त जीव मरते हैं; सबकी मुक्ति होजाती है। इस अन्तर्वेदी को देवतालोग भी इच्छा करते हैं। रोहिणीकुण्ड के जल स्पर्श करने से प्राणीमात्र की मुक्ति होजाती है। जगन्नाथजी के दक्षिण ब्रह्मस्वरूप नरसिंह भगवान् विराजते हैं, जिनके दर्शन करने से मुक्ति मिलती है। समुद्र में स्नान करने और कल्पवृक्ष अर्थात् वट की छाया में जाने वाला मनुष्य किसी स्थान में मरे; उसकी मुक्ति होजाती है। गौरी की आठ मूर्तियां इस क्षेत्र की रक्षा करती हैं;—वट के मूल में मंगला, पश्चिम में विमला, शंख के पृष्ठभाग में सर्वमंगला, उत्तर दिशा में अर्द्धाशिनी और लम्बा, दक्षिण में कालरात्रि, पूर्व में मरीचिका और कालरात्रि के पीछे चण्डरूपा। शिवजी भी रुद्राणी के आठ रूप देखकर आठरूप धारण कर यहां स्थित हुए;—कपालमोचन, क्षेत्रपाल, यमेश्वर, मार्कंण्डेयेश्वर, ईशान, बिल्वेश, नीलकण्ठ, और वट के मूल में वटेश।

(६ वां अध्याय)—दक्षिण के समुद्र के तीर पर ऋषिकुल्या से लेकर के दक्षिण के समुद्र में जाने वाली स्वर्णरेखा अर्थात् सुवर्णरेखा नदी तक परम पवित्र उत्कल देश है, जिसमें बहुत से तीर्थ विद्यमान हैं।

(७ वां अध्याय) सतयुग में ब्रह्मा के पांचवें पीढ़ी में इन्द्रद्युम्न नामक

सूर्यवंशी राजा मालवदेश के अवन्तीनगरी में निवास करता था। एक समय उसने अपनी सभा में लोगों से पूछा कि ऐसा कौन उत्तम क्षेत्र है, जिसमें हम साक्षात् भगवान् का दर्शन कर सकेंगे। एक ब्राह्मण, जिसने बहुतेरे तीर्थों में भ्रमण किया था, राजा से बोला कि महाराज! भारतवर्ष में विख्यात ओड्र देश में दक्षिण समुद्र के निकट पुरुषोत्तम क्षेत्र है। वहां नीलगिरि पर्वत के ऊपर चारों ओर से १ कोस में विस्तृत कल्पवृक्ष है, जिसके पश्चिम दिशा में रोहिणीकुण्ड है। उसके पूर्व तट पर नीलेन्द्रमणि की वासुदेव की प्रतिमा है। जो मनुष्य उस कुण्ड में स्नान करके पुरुषोत्तम का दर्शन करता है उसको १००० अश्वमेध का फल मिलता है और मुक्ति मिलजाती है। तुम विष्णु के भक्त हो, इसलिए यह बात कहने को मैं तुम्हारे पास आया हूँ। ऐसा सुन राजा इन्द्रद्युम्न ने अपने पुरोहित को वहां भेजा। वह अपने भाई के साथ महानदी को पार करके एकाएक वन में पहुँचा और आगे जाकर नीलाचल पर चढ़कर भगवान् को ढूढ़ने लगा। जब उसको मार्ग नहीं मिला, तब वह कुशों को बिछाकर वहांही सो गया; किन्तु उसका छोटा भाई विद्यापति ऊपर चढ़कर एक स्थान में चुपचाप बैठ गया। उस समय विश्वावसु नामक एक शबर पुरुषोत्तम की पूजा करके उस स्थान पर आया। उसने ब्राह्मण से पूछा कि तुम कहां से आये हो। ब्राह्मण ने अपने आने का सब वृतान्त सुनाकर उससे कहा कि तुम मुझको भगवान् का दर्शन करावो।

(८ वां अध्याय)—शबर ब्राह्मण का हाथ पकड़ कर विषम अन्धकार मार्ग से ऊपर जाकर रोहिणीकुण्ड और कल्पवृक्ष के बीच के कुञ्ज में पुरुषोत्तम भगवान् के पास पहुँचा और ब्राह्मण के साथ भगवान् का दर्शन करके सायंकाल अपने घर लौट आया। उसने अपने घर में ब्राह्मण को राजदुर्लभ भोग भोजन करवाया और ब्राह्मण के विस्मित होने पर उसने कहा कि इन्द्रादि देवता नित्यही दिव्य पदार्थ लाकर जगन्नाथजी को अर्पण करते हैं; इसी को हम ले आते हैं। विष्णु के निर्माल्य भोजन करने से हम लोगों की जरा और रोग नष्ट होगया है। हमने सुना है कि राजा इन्द्रद्युम्न यहां आवेगा; किन्तु उसको भगवान् का दर्शन नहीं होगा। भगवान् की मूर्ति सुवर्ण की वालुका में

दप कर अन्तर्द्धान होजायगी। यह वृतान्त तुम राजा से मत कहना। भोर होने पर शवर और ब्राह्मण ने समुद्र में स्नान और भगवान् का दर्शन करके इन्द्रद्युम्न के रहने का स्थान निर्णय किया। ब्राह्मण रथ पर चढ़ अवन्तिकापुरी में लौट आया।

(९ वां अध्याय)—ब्राह्मण के चले जाने पर सायंकाल में, जिस समय देवता लोग पूजा करने आये थे, बड़ी आंधी चली, जिसमें भगवान् की मूर्ति और रोहिणीकुण्ड वालू के राशि में दप गया।

विद्यापति ब्राह्मण ने अवन्तीपुरी में आकर राजा से वहां का सब वृतान्त कह सुनाया।

(१० वां अध्याय) उसने कहा कि पुरुषोत्तमक्षेत्र का विस्तार ५ कोस का है। वहां १ कोस का लंबा चौड़ा एकवट वृक्ष सुशोभित है, जिसमें फल फूल कुछ नहीं लगता। पूर्व की वेदी के मध्य में वटवृक्ष के नीचे पीत वस्त्र पहने हुए बहुमूल्य भूषणों से भूषित ८१ अङ्गुल परिमित इन्द्रनील पत्थर की भगवान् की प्रतिमा है। उनके वाम पार्श्व में लक्ष्मीजी, पीछे छत्ताकार शेषजी और आगे सुदर्शन चक्र है और पीछे हाथ जोड़े हुए गरुड़ खड़े हैं। उसी समय महर्षि नारद राजा के पास आ गये।

(११ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न ने नारद और सब पुरजनों तथा चतुरंगिणी सेना के सहित ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी बुधवार के पुष्य नक्षत्र में पुरुषोत्तम क्षेत्र को प्रस्थान किया। अवन्तिकापुरी जनों से शून्य होगई। राजा ने उत्कल देश की सीमा पर चर्चिका देवी को देखकर रथ से उतर उसकी स्तुति की और वहां से चल चित्रोत्पला नदी के तीर पहुंच कर धातुकन्दर में अपनी सेना को विश्राम कराया। उत्कल देश का राजा, जिसको ओढ़ू देशपति भी कहते हैं, वहां आकर इन्द्रद्युम्न से मिला। इन्द्रद्युम्न ने ओढ़ूपति से क्षेत्र का वृत्तान्त पूछा। ओढ़ूपति ने कहा कि दक्षिण समुद्र के पास का नीलाद्रि पर्वत और उस पर के देवता नहीं देख पड़ते हैं। मैंने सुना है कि पवन के चलने से वे वालू में दप गये हैं। इसी कारण से हमारे राज्य में दुर्भिक्ष पड़ गया है। यह वृत्तान्त सुनकर इन्द्रद्युम्न बहुत दुःखी हुए। नारद ने कहा कि

हे राजन्! भगवान् तुम्हारे लिये पृथ्वी में फिर अवतार लेंगे। ब्रह्माजी ने इसी काम के लिये मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

(१२ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न प्रातःकाल होने पर आगे चले। ओड्र देश का राजा आगे मार्ग बताने लगा। इन्द्रद्युम्न ने वेगवती शीततोया नदी के पार हो एकाम्रक क्षेत्र में पहुँच कर नारद से पूछा कि यह कौन सा क्षेत्र है। नारद ने कहा कि यहां से ३ योजन आगे नीलगिरी है। यह गौरीपति का एकाम्रक नामक क्षेत्र है।

राजा के पूछने पर मुनि कहने लगे कि पूर्व काल में महादेवजी गौरी से विवाह करके अपने श्वसुर हिमालय के गृह रहने लगे। एक समय गौरी की माता ने परिहास से उस से कहा कि हे पुत्रि! तुमने महत् तपस्या करके ऐसा निष्कुल और निर्गुण वृद्ध वर को प्राप्त किया; तुमने कौनसा गुण अपने पति में देखा था; वह तो हमारे ही यहां रहते हैं। पार्वती ने शिव के पास जाकर उनसे कहा कि श्वसुर के घरमें रहना उचित नहीं है; तुम किसी दूसरे स्थान में चल कर निवास करो। ऐसा सुन महादेवजी पार्वती के साथ बैल पर सवार हो वहां से चल दिये और गंगा के उत्तर तट पर वाराणसीपुरी बसाकर उसमें रहने लगे। बहुत काल बीतने पर वह कैलास पर चले गये। द्वापर युग में काशी के राजा ने महादेव को प्रसन्न किया। शिवजी ने कहा कि समय आने पर मैं युद्ध में तुम्हारी सहायता करूंगा। विष्णु की आज्ञा से सुदर्शनचक्र ने काशिराज का सिर काट डाला। महादेवजी ने अपने गणो सहित वहां आकर अपना पाशुपति अस्त्र चलाया। जब उनका अस्त्र विफल होगया और काशी जलने लगी तब शिवजी विष्णु की स्तुति करने लगे। विष्णु भगवान् प्रकट हो कर बोले कि हे महादेव! तुम काशी को बचाने चाहते हो तो दक्षिण समुद्र के पास नीलाचल से उत्तर एकाम्रक वन में जाकर कोटि लिंगों के राजा बनो; ब्रह्मा तुमको स्थापित करेंगें। ऐसा सुन पार्वती के साथ शिवजी वहां चले गये। राजा इन्द्रद्युम्न ने एकाम्रक क्षेत्र के विन्दु तीर्थ में स्नान करके उसके तीर पर स्थित पुरुषोत्तम का पूजन किया और कोटिलिंगेश्वर के द्वार पर ब्राह्मणों को बहुतसा धन दिया।

राजा इन्द्रद्युम्न ने वहां से दूसरे दिन कपोतस्थली में आकर समुद्र की पूर्व सीमा पर बिल्वेश और कपोतेश का पूजन किया।

(१४ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न विद्यापति पुरोहित के साथ नीलकण्ठ क्षेत्र के समीप आये। (१५ वां अध्याय) उन्होंने वहां नीलकण्ठ और दुर्गा का पूजन किया और नीलपर्वत पर चढ़कर नीलचन्दन के वृक्ष के नीचे नृसिंहजी की दिव्य मूर्ति को देखा। उस समय राजाने भगवान् को दण्डवत करके बड़ी स्तुति की। तब आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! तुम चिन्ता मत करो; हम तुमको दर्शन देंगे; तुम नारद के उपदेश से चलो।

(१६ वां अध्याय) नारद की आज्ञा से विश्वकर्मा के पुत्र सुघटक ने चन्दन के वृक्ष के नीचे ४ दिनों में नृसिंहजी के लिये पत्थर का मन्दिर तैयार कर दिया। ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी को स्वाति नक्षत्र में पृथ्वी और लक्ष्मी की मूर्ति के साथ नृसिंह की दूसरी मूर्ति स्थापित की गई।

(१७ वां अध्याय) राजा ने यज्ञ कर्म के लिये अनेक देवता, ऋषि, ब्राह्मण, राजा और अन्य मनुष्यों को बुलाया। विश्वकर्मा ने यज्ञशाला बनाई। राजाने यज्ञ आरंभ करके अश्व को छोड़ा। इन्द्रद्युम्नपुर स्वर्ग से भी अधिक मनोहर हो गया। ९९९ यज्ञ समाप्त हो जाने पर सहस्रवें यज्ञ के समय राजा की दिव्य गति हो गई। उसनें सात दिन के पीछे रात्रि के चतुर्थ प्रहर के स्वप्न में स्फटिक का बना हुआ श्वेतद्वीप देखा, जिसको चारो ओर से क्षीर सागर घेरे हुए था। उसने वहां भगवान् को देखकर उनकी स्तुति की।

(१८ वां अध्याय) राजा के सेवकों ने आकर उनसे कहा कि मंजिष्ठ वर्ण का एक बड़ा वृक्ष समुद्र के तीर में पड़ा है। उसका मूल जल में तैरता है। नारद ने कहा कि हे राजन्! तुमनें श्वेतद्वीप में विष्णु की जिस मूर्ति को देखा था उसी के अङ्ग का गिरा हुआ १ रोम से यह वृक्ष हुआ है। तुम यज्ञान्त स्नान कर के बड़ी वेदी के ऊपर वृक्षरूपी यज्ञ भगवान् का स्थापन करो। राजा ने समुद्र के किनारे आकर ४ साखाओं से युक्त उस वृक्ष को देखा; तब ब्राह्मणों को बुला कर मंगल पूर्वक उसको बाहर निकलवाया और माला, गंध, तथा चन्दन से भूषित कर उसको महावेदी पर रक्खा। उस

समय आकाशवाणी हुई कि वेदी में भगवान् आप उतर आवैंगे; तुम पंद्रह दिनों तक वेदी को ढांक कर गुप्त रक्खो। इस वृद्ध बढ़ई को भीतर रख कर द्वार बन्द कर दो। बाहर बाजा बजवावो. जिसमें कोई मूर्ति बनने का शब्द न सुने। कोई मनुष्य घेरे के भीतर न जावें। जब भगवान् बन जायंगे तब अपने आप संपूर्ण काम की आज्ञा देंगें। उसी समय एक बढ़ई ने आकर राजा से कहा कि तुमने जिनको स्वप्न में देखा था हम उन्हीं को दिव्य रूपी काष्ठ से बनावेंगे। ऐसा कह वह वेदी पर अन्तर्द्धान हो गया। (१९ वां अध्याय) राजा आकाशवाणी के आज्ञानुसार सब कार्य करने लगा। दिन२ दिव्य गंध का अनुभव होने लगा। १५ दिन बीत जाने पर बलदेव, सुभद्रा और सुदर्शनचक्र के साथ दिव्य सिंहासन पर बैठी हुई भगवान् की मूर्त्ति प्रगट हुई। भगवान् के हाथ में शंख, चक्र, गदा और पद्म और बलभद्र के हाथ में गदा, मूसल, चक्र और कमल और ऊपर ७ फन फैलाये हुए सर्प का मुकुट था। सुभद्रा के हाथों में वर, अभय और कमल था। इनके पास सुदर्शनचक्र बना हुआ था। इस भांति वृद्ध बढ़ई द्वारा चार मूर्तियां प्रकाशित हुईं। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! नीलपर्वत पर कल्प वृक्ष के वायव्य दिशा में १०० हाथ आगे और नृसिंह जी से १००० हाथ उत्तर ऊंचे स्थान पर एक दृढ़ मन्दिर बनवाकर उस में इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा करो। तुम्हारे पुरोहित और बिश्वावसु शवर की सन्तान सर्वदा इनके लेप संस्कार कर्म करेंगी।

(२० वां अध्याय)—राजा इन्द्रद्युम्न के दान देने के जल से जो स्थान भर गया वही इन्द्रद्युम्नसर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मनुष्य उसमें पितरों को पिण्डदान देते हैं। उसकी महिमा गंगा के समान है।

(२१ वां अध्याय)—इन्द्रद्युम्न ने असंख्य धन लगाकर अद्वितीय वृहत् मन्दिर बनवाया और मन्दिर के काम पूर्ण होने के पहलेही नारद के साथ विमान पर चढ़कर वह ब्रह्मलोक में गये। (२३ वां अध्याय) राजा ने ब्रह्मा से कहा कि काष्ठ की देह धारण कर भगवान् प्रकट हुए हैं; तुम चल कर उनकी प्रतिष्ठा करो। ब्रह्मा ने कहा कि ७१ मन्वन्तर बीत गये; तुम्हारे करोड़ों वंश

का नाश होगया; किन्तु तुम्हारा बनाया हुआ मन्दिर विद्यमान है; चलो मैं तुम्हारे पीछे आऊंगा। (२४ वां अध्याय) राजा ब्रह्मलोक से पुरुषोत्तम-पुरी में आये। उनके पीछे देवता लोग भी आकर उपस्थित हुए। राजा ने मन्दिर का काम पूरा हुआ देख कर विचार किया कि मेरे स्वर्ग के जाने के समय मन्दिर आधा बना था; किन्तु भगवान् के प्रसाद से अब पूरा होगया है। (२५वां अध्याय) विश्वकर्मा ने एकही दिन में ३ रथों को बनाया;—जिनमें से भगवान् का रथ १६ पहिये का, सुभद्रा का बारह पहिये का और बलभद्र का १४ पहिये का था। जिस रथ में जितने पहिये थे उसका विस्तार उतनेही हाथ का था। (२६ वां अध्याय) विश्वकर्मा ने राजा की आज्ञा से एक बड़ी सभा बनाई। प्रतिष्ठा की संपूर्ण सामग्री एकत्र की गई। ब्राह्मण लोग प्रतिष्ठा कार्य में नियुक्त हुए। राजा के ब्रह्मलोक में जाने पर गाल नामक एक राजा ने माधव की पाषाणमयी प्रतिमा को बना कर उसी बड़े मन्दिर में स्थापित कर दिया था। पीछे इन्द्रद्युम्न ने एक छोटा मन्दिर बनवा कर उस मूर्ति को मन्दिर से निकाल कर उसमें स्थापित कर दिया। (२७ वां अध्याय) ब्रह्माजी ब्रह्मलोक से आकर तीनों मूर्तियों और सुदर्शनचक्र को देखकर नीलाचल पर्वत पर मन्दिर और यज्ञशाला के पास चले गये। प्रतिष्ठा का काम प्रारंभ हुआ। वैसाख के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को पुष्य नक्षत्र में ब्रह्मा ने मूर्तियों को मन्दिर में स्थापित किया। जो मनुष्य उस तिथि में जगन्नाथजी की पूजा करता है उसके कोटि जन्म का पाप छूट जाता है।

(२९ वां अध्याय) भगवान् की काष्ठ प्रतिमा राजा से बोली कि तुम्हारी भक्ति से मैं प्रसन्न हूँ। मन्दिर के भङ्ग होजाने पर भी मैं इस स्थान को नहीं त्याग करूंगा। कालान्तर में दूसरा मन्दिर बन जाने पर भी उसमें तुम्हारा ही नाम चलैगा। वट के उत्तर का कूप मट्टी से ढप गया है, उसको तुम प्रकट करो। जो मनुष्य ज्येष्ठ की पूर्णिमा को उस कूप के जल से हम लोगों को स्नान करावैगा, उसको हमारा लोक मिलैगा। ईशान दिशा में एक मण्डप बनाकर वहां हम लोगों को स्नान करा कर ले चलो। उसके बाद १५ दिनों तक मुझको कोई न देखै। गुण्डिच नामक महायात्रा को करो। माघ-शुक्ला

पञ्चमी और चैत्र शुक्ला अष्टमी को गुड़िच यात्रा का उत्तम समय है; किन्तु पुष्य नक्षत्र से युक्त आषाढ़ शुक्ला द्वितीया इस यात्रा का सर्व प्रधान दिन है। उस दिन हम लोगों को रथ में बैठा कर गुड़िच क्षेत्र में, जहां हम लोगों की उत्पत्ति हुई है, ले जाना चाहिये। वह स्थान मुझको अत्यन्त प्रिय है। उत्थान परिवर्तन, मार्ग प्रावरण, पुष्पाभिषेक, और फाल्गुन में दोलोत्सव का उत्सव करना उचित है। चैत्र शुक्ला १४ को दमनों से मेरी पूजा करनी चाहिये। वशाख की अक्षय ३ को जो मनुष्य गन्ध से मेरा लेपन करैगा उसको चारो वर्ग मिलैगा। ऐसा कह जगन्नाथजी मौन होगये। ब्रह्मादिक देवता अपने २ लोक को चले गये।

(३० वां अध्याय) मनुष्यों को उचित है कि ज्येष्ठ शुक्ला १० को पञ्चतीर्थी का विधान करैं। मार्कण्डेय स्थान में शिव की पूजा कर नारायण के पास जावें। उससे दक्षिण के वट का दर्शन और प्रदक्षिणा करके भगवान् के आगे के गरुड़ को प्रणाम करैं। उसके पश्चात् मन्दिर में जाकर भगवान् की तीन प्रदक्षिणा और पूजा करैं। उससे पीछे समुद्र में स्नान करके स्वर्ग द्वार पर जावे, जिस स्थान मे देवता लोग भगवान् के दर्शन के लिये नित्य आते हैं। वहां समुद्र में पितरों को तिलोदक देवें। (३१ वां अध्याय) उसके अनन्तर नृसिंह तीर्थ और इन्द्रद्युम्न तीर्थ में क्रम से जाकर पितरों का तर्पण करैं। (३२ वां अध्याय) एकादशी को कमल की माला और खीर के नैवेद्य से चतुर्भुज भगवान् का पूजन करैं। १२ को यज्ञवाराह की, १३ को प्रद्युम्न की और १४ को नृसिंह भगवान् की पूजा करके पांच दिन का ज्येष्ठपंचकव्रत समाप्त करैं।

(३७ वां अध्याय) भगवान् के नैवेद्य खाने से मद्य पानादिक महापातक नष्ट हो जाते हैं। नैवेद्य से पितरों के कर्म करने से पितर तृप्त होकर विष्णु लोक में चले जाते हैं। प्रसाद से वढ़ कर कोई वस्तु पवित्र नहीं है।

त्रेतायुग में श्वेत नामक राजा ने पुरुषोत्तमपुरी में १०० वर्ष पर्य्यन्त घोर तप किया। नृसिंह भगवान् ने प्रगट होकर राजा से कहा कि तुम वर मांगो। राजा बोले कि हे भगवन्! मै आप के सारूप्य को प्राप्त होऊं और मेरे राज्य

में अकाल मृत्यु न हो। भगवान् बोले कि तुम सहस्र वर्ष पर्यन्त राज्य करके दक्षिण भाग में मेरे रूप को प्राप्त होगे और वटवृक्ष और समुद्र के मध्य में मत्स्यावतार के संमुख तुम स्फटिक प्रतिमा रूप से श्वेतमाधव के नाम से विख्यात होगे। तुम्हारे उत्तर के तालाव में स्नान और तुम्हारा दर्शन करने से मनुष्यों की मुक्ति होगी

(३८ वां अध्याय) भगवान् का उच्छिष्ट संपूर्ण पापों का नाश करने वाला है। विष्णु के मन्दिर में भोग लगे हुए निर्माल्य को पतित लोग भी स्पर्श करें तो वह अशुद्ध नहीं होता। व्रती लोग भी प्रसाद को भोजन कर सकते हैं। किसी यात्री को विष्णु के निर्माल्य के खाने में अभिमान नहीं करना चाहिये। किसी प्रकार से निर्माल्य भोजन करने से पातक छूट जाते हैं। जो मनुष्य उसकी निन्दा करता है उसको भगवान् स्वयं दण्ड देते हैं। बहुत काल का सूखा हुआ, बहुत दूर लेगया हुआ, सब निर्माल्य उपकारी है। कुत्ते के मुख से गिरा हुआ भी प्रसाद को यदि ब्राह्मण भी भोजन करलें तो दोष नहीं है।

(४५ वां अध्याय) बारह यात्रावों में एक दमनभंजिका यात्रा है। मनुष्यों को उचित है कि चैत्र शुक्ला १३ को मूल सहित दमनक तृण को लाकर मण्डप में रख कर उसकी पूजा करें और अर्द्ध रात्रि में लक्ष्मी और सत्यभामा को पूजें। पूर्वकाल में भगवान् ने इसी तिथि की अर्द्धरात्रि में दमनासुर को मारा था और उसके अङ्ग से निकला हुआ दमनक तृण को लाकर वह प्रसन्न हुए थे। उस तिथि में उस तृण को दैत्य समझना चाहिये और उसके वध करने के लिये भगवान् के हांथ में उसको देना चाहिये।

(४८ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न नारद के साथ ब्रह्म लोक में चले गये।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वां अध्याय) पूर्वदिशा में, जहां महानदी और विरजा नदी हैं, पुरुषोत्तम तीर्थ में पुरुषोत्तम भगवान निवास करते हैं। वहां तीर्थ में स्नान करके पुरुषोत्तमजी की पूजा करने से मनुष्य विष्णुलोक को प्राप्त करता है।

भविष्यपुराण—(१२५ वां अध्याय) सब देवताओं की प्रतिमा ७ प्रकार

की होती है;—सुवर्ण की, चांदी की, ताम्र की, पाषाण की, मृत्तिका की, काष्ठ की और चित्र में लिखी हुई।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्म खंड, ३७ वां अध्याय) विष्णु निवेदित समस्त वस्तु शुद्ध रहती हैं। पंडितगणों को उचित है कि विष्णुनिवेदित अन्न से समस्त देव और पितरों की पूजा तथा अतिथियों का सत्कार करें। (७९ वां अध्याय) जो पुरुष विष्णु का प्रसाद भोजन करता है उसके १०० पूर्व पुरुषे पवित्र हो जाते हैं। जो मनुष्य रथ में स्थित जगन्नाथजी का दर्शन और पूजन करता है वह भवबंधन से विमुक्त हो जाता है।

नरसिंहपुराण—(१० वां अध्याय) मार्कंडेय मुनि ने पुरुषोत्तमपुरी में जाकर स्नान करने के उपरान्त गंध पुष्पादिकों से पुरुषोत्तमजी की पूजा करके उनकी बड़ी स्तुति की। विष्णु भगवान प्रकट हो कर बोले कि हे मुनिश्वर ! तुम चिरजीवी हो; यह तीर्थ आज से तुम्हारेही नाम से (मार्कंडेयक्षेत्र) प्रसिद्ध होगा।

इतिहास—इतिहासों में लिखा है कि सन् ३१८ ई० में जगन्नाथजी की मूर्ति प्रगट हुई। उड़ीसे के राजा ययाति केसरी ने, जो सन् ४७४ में उड़ीसे का राजा बना, जगन्नाथजी की मूर्ति को जंगल से ढूंढ कर पुरी में स्थापित किया। धार्मिक हिंदूओं ने कई बार विधर्मियों से उस मूर्ति को बँचाया। उड़ीसे के गंगावंश के पांचवें राजा अनंगभीमदेव ने, जिसका राज्य सन् ११७४ से १२०२ ई० तक था, जगन्नाथजी के वर्त्तमान मंदिर को बनवाया। मंदिर का काम सन् ११८४ से आरंभ हो कर सन् ११९८ ई० में समाप्त हुआ। उस राजा का राज्य उत्तर में हुगली नदी से दक्षिण में गोदावरी तक और पश्चिम में मध्य देश के सोनपुर के जंगल से पूर्व ओर बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ था। राजा से प्रारब्धवस एक ब्रह्महत्या हो गई; अर्थात् उसने एक ब्राह्मण को मारडाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि उसने जगन्नाथजी के मन्दिर के अलावे बहुतेरे देवमंदिर, १० चौड़ी नदियों पर पुल और १५२ घाटों को बनवाया था। सन् १५३२ ई० में गंगावंश के राजा की मृत्यु हो जाने पर उसका दीवान गंगावंश के लोगों को मार कर उड़ीसे का राजा बन गया।

बाद उड़ीसा कई आदमियों के आधीन हुआ। सन् १८०३ में पुरी जिले पर अंगरेजी अधिकार हुआ। सन् १८०४ ई० में जब खुरदा का स्वाधीन राजा बागी हुआ, तब अंगरेजी सरकार ने उसका राज्य छीन लिया; किन्तु मंदिर का प्रबन्ध अब तक खुरदा के राजा के, जिन का महल अब पुरी कसबे में है, आधीन है। वर्तमान राजा के पिता निर्दयता से खून करने के अपराध में दंडित होकर सन् १८७८ ई० में कालापानी भेजे गए। हिंदूलोग पुरी के राजाओं को मंदिर का प्रबंधकर्त्ता समझ कर उनका बड़ा मान करते हैं। बहुतेरे यात्री राजा का दर्शन करते हैं और उनके निकट भेंट रखते हैं।

पुरी जिला—उसके उत्तर बांकी सरकारी मिलकियत और अंठगढ़ का मालगुजार राज्य, पूर्व और पूर्वोत्तर कटक जिला; पूर्व-दक्षिण और दक्षिण बंगाल की खाड़ी और पश्चिम मद्रासहाते में गंजाम जिला और उड़ीसे के रानापुर का मालगुजार राज्य है। जिले का सदर-स्थान सन् १८२८ से पुरी कसबा है। पुरी जिले में भार्गवी, दया और नूर ये तीन नदियां प्रधान हैं, जो चिलका झील में मिल गई हैं। ये बरसात में भयंकर प्रवाह को धारणा करती हैं; किन्तु सूखी ऋतुओं में स्थान स्थान पर सूख कर पानी के कुण्ड बन जाती हैं। गवर्नमेंट ने बाढ़ से देश को बचाने के लिये बहुत रुपये खर्च करके अनेक बांध बनवाये हैं।

पुरी कसबे से पंद्रह बीस मील दक्षिण-पश्चिम सूबे उड़ीसे के दक्षिण-पश्चिम के कोन में समुद्र के निकट प्रसिद्ध चिलका झील है, जो तंग ऊंची जमीन द्वारा समुद्र से अलग हुई है। झील के पश्चिम ऊंची पहाड़ियां हैं। झील की लंबाई ४४ मील और इसके उत्तरी भाग की औसत चौड़ाई २० मील और दक्षिणीय भाग की औसत चौड़ाई ५ मील है। इसका क्षेत्रफल सूखी ऋतुओं में ३४४ वर्गमील और वर्षा काल में लगभग ४५० वर्गमील रहता है। इसकी औसत गहराई ३ फीट से ५ फीट तक रहती है। प्रतिवर्ष झील से लगभग २००००० मन नमक बनता है।

पुरी जिले में सरकार को मालगुजारी मिलने योग्य कोई जंगल नहीं है; किन्तु मधू, मोम, गूण्डी नामक रंग, रेशम और अनेक भांति की दवा बूटी

बहुत होती हैं। पुरी और कटक कसबे के बीच में खंडगिरि और उदयगिरि पहाड़ी पर बहुत बौद्ध गुफाएँ और पुरी कसबे से पूर्वोत्तर ओर समुद्र के किनारे पर कोणार्क का पुराना मंदिर है। जिले के पश्चिमोत्तर भाग में भुवनेश्वर के मंदिरों के झुण्ड और उससे सीधे दक्षिण जगन्नाथपुरी है। पुरी जिले के साधारण निवासी गरीब हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पुरी जिले के २४७३ वर्गमील क्षेत्रफल में ८८८४८७ मनुष्य थे; अर्थात् ८७३६६४ हिंदू, १४००३ मुसलमान, ८१९ कृस्तान और १ सिक्ख। हिंदुओं में २१७४०६ चासा, ८८६९२ ब्राह्मण, ६९३०७ बाउरी, ६६६६२ ग्वाला, ३८९१६ तेली, २९३५७ शूद्र, २८७३८ कान, २८४७६ कैंवट, २००९४ नापित, १८७४२ खंडाईत, १६७३९ खंडारा, १४०५४ वनिया, ३८९८ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। पुरी जिले में पुरी कसबे को छोड़ करके किसी कसबे में ५००० से अधिक मनुष्य नहीं थे।

कोणार्क।

पुरी कसबे से १८ मील पूर्वोत्तर पुरी जिले में समुद्र से २ मील दूर सूर्य्यनारायण का तीर्थ कोणार्क है, जिसको सर्वसाधारण लोग कनारक कहते हैं। कोणार्क का अर्थ (उड़ीसे के) कोनेका सूर्य्य है। यह १९ अंश, ५३ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, ८ कला, १६ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है। बैलगाड़ी, पालकी और टट्टू वहां जा सक्ते हैं। रास्ता पहले दो मील उत्तर तब दहिने फिर कर घास के मैदान हो कर सीधा पूर्व जाता है। मार्ग में पुरी से १३½ मील पर कुशभद्रा नामक छोटी नदी के पास केवल एक झोपड़ा मिलता है। खाने की सामग्री साथ ले जाना चाहिये। माघ शुक्ला-सप्तमी को कोणार्क का मेला होता है। वह सप्तमी रविवार को पड़े तब यात्रियों की अधिक भीड़ होती है। चंद्रभागा नदी, जिसको चनाब कहते हैं, काश्मीर और पंजाब में वहती है; किन्तु कोणार्क का एक खाल चंद्रभागा करके प्रसिद्ध है। यात्री लोग प्राची सरस्वती और खाल में स्नान करते हैं।

कोणार्क में सूर्य्य का विचित्र और प्रसिद्ध एक पुराना मंदिर है। उड़ीसे के लेख से जान पड़ता है कि राजा नरसिंहदेव लंगोरे ने उड़ीसे की १२ वर्ष की आमदनी खर्च करके सन् १२३७ और सन् १२८२ ई० के बीच में वर्तमान मन्दिर को बनवाया था। मन्दिर का शिखर गिरगया है। जो बाकी है वह बाहर से ९० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा तथा १२४ फीट ऊंचा है। याने उसकी खड़ी दीवार ६० फीट और उसका शिखर ६४ फीट है। उसकी दीवारें सुन्दर स्त्रियों, हाथी, घोड़सवारों और दूसरी मूर्तियों से पूर्ण हैं और उसका शिखर भी हाथी, घोड़े, घोड़सवार, और पैदल सेना से छिपा हुआ है। यह मन्दिर भीतरी ४० फीट लंबा तथा चौड़ा है। मंदिर का जगमोहन ६० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। इस की दीवारे बीस बीस फीट तक मोटी हैं। मंदिर खाली पत्थर से बना है। पत्थर के टुकड़े लोहे से एक दूसरे में जड़ दिए गए हैं। यह इस समय अतिशय हीन दशा में पड़ा हुआ है। मन्दिर के उजाड़ स्थानों पर जंगल लग गया है। मन्दिर के पीछे ४५ फीट ऊंचा और करिब ७० फीट लम्बा मन्दिर के तबाहियों का ढेर है। मन्दिर के बाहर के हाते की दीवार अब नहीं है। उस के पत्थरों को महाराष्ट्रों के अफसर लोग पुरी में ले गए।

जगमोहन के दक्षिण एक बहुत बड़ा वृक्ष, जिसके पास बहुतेरे छोटे दरख्त और खजूर का कुंज है और एक बाग में एक मठ और विना मूर्ति का एक मन्दिर है।

कोणार्क के पास के समुद्र में पानी बहुत कम है। वहां बहुतेरे जहाज डूब गये हैं; परन्तु गँवई के लोग इसका कारण ऐसा कहते हैं कि मन्दिर के शिखर के ऊपर बड़े चूम्बक की एक तह थी, जो जहाजों को बालू पर खैंच लेती थी। जब एक मुसलमान मल्लाह ने मन्दिर पर चढ़ कर चूम्बक को उतार लिया तब पुजारी लोग अपने देवता के संग पुरी में चले गये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—आदिब्रह्मपुराण—(२७ वां अध्याय) दक्षिण के समुद्र के समीप में ओढ़ू देश विख्यात है, जिसमें कोणादित्य नाम से विख्यात सूर्य्य निवास करते हैं। वह क्षेत्र समुद्र के तट पर ७ योजन

विस्तार में है। मनुष्यों को उचित है कि प्रति मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी में वहां समुद्र में स्नान कर सूर्य्य का स्मरण और पितर आदि का तर्पण करें। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और स्त्रियां सबलोग सूर्य्य को अर्घ दे कर परम गति को प्राप्त होवेंगे। जब तक सूर्य्य को अर्घ निवेदन न करें तब तक विष्णु और महादेव का पूजन न करना चाहिये। सूर्य्यगंगा के जल में स्नान करने से मनुष्य को स्वर्ग मिलता है। परम भक्ति से कोणार्क की पूजा करनी चाहिये। चैत्र मास के शुक्लपक्ष में, सूर्य्य के शयन में, स्थापन में, संक्रांति में, अयन में, रविवार में और सप्तमी तिथि में सूर्य्य की यात्रा का विशेष दिन है। समुद्र के तीर पर वामदेव नाम से विख्यात महादेव स्थित हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—(कृष्णजन्म खंड, ७६ वां अध्याय) जो व्यक्ति उत्तरायण सूर्य्य के समय सूर्य्य का दर्शन और पूजन करेगा, उसका जन्म संसार में फिर नहीं होगा।

भविष्य पुराण—(पूर्वार्द्ध ६८ वां अध्याय) जम्बूद्वीप में सूर्य्यनारायण के ३ स्थान मुख्य हैं;—इन्द्रवन, मुंडार और कालप्रिय। इस द्वीप में और भी एक स्थान चन्द्रभागा नदी के तट पर साम्बपुर है, जहां साम्बकी भक्ति से लोकानुग्रह के लिये सूर्य्यनारायण मित्ररूप से निवास करते हैं। जो भक्ति से उनका पूजन करता है, उसको वह ग्रहण करते हैं।

राजा शतानीक के प्रश्न करने पर सुमंतु मुनि कहने लगे कि श्रीकृष्ण की जाम्बवती नाम भार्य्या से साम्ब नामक पुत्र हुआ। वह पिता के शाप से जब कुष्ठी होगया तब सूर्य्यनारायण के आराधन करके रोग से मुक्त हुआ। उसीने अपने नाम से नगर बसाकर उसमें सूर्य्यनारायण को स्थापन किया है।

(१२१ वां अध्याय) साम्ब चन्द्रभागा नदी के तट पर मित्रवन नामक सूर्य्य के क्षत्र में जाकर तप करने लगा। सूर्य्य ने प्रकट होकर साम्बका रोग दूर किया और चन्द्रभागा के तट पर अपनी प्रतिमा स्थापन करने के लिये उसको आज्ञा दी। (१२३ वां अध्याय) साम्बने नदी में बही जाती हुई सूर्य्य की प्रतिमा को पाया, जिसको विश्वकर्म्मा ने कल्पवृक्ष के काष्ठ से बनाकर नदी

में वहाया था साम्बने मित्रवन में मन्दिर वनाकर विधिपूर्वक प्रतिमा को स्थापन किया। (१३३वां अध्याय) उसने शाकद्वीप से मग ब्राह्मणों के कुमारों को लाकर सूर्य्य का पूजक (पुजारी) वना दिया।

(६९) राजा के प्रश्न करने पर सुमंतु मुनि पूर्व का वृत्तांत कहने लगे कि एक समय नारदजी ने श्रीकृष्णचन्द्र के पासजाकर कहा कि आपका पुत्र साम्ब अति रूपवान है, इस लिये आपकी सोलहों हजार रानी इसपर मोहित हैं। कृष्णचन्द्र की स्त्रियों के समीप जब साम्ब बुलाया गया तब उसका रूप देख स्त्रियों का चित्त चलायमान होगया। उस समय श्रीकृष्णभगवान् ने स्त्रियों को शाप दिया कि तुमको पतिलोक और स्वर्गकी प्राप्ति न होगी और अन्त में तुम लोग चोरों के वश में पड़ोगी। इसी शाप से श्रीकृष्ण के वैकुण्ठ जाने के पीछे अर्जुन के देखते देखते सब स्त्रियों को चोर हर लेगये। इसके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ने साम्ब को भी शाप दिया कि तू कुष्ठी होजा। (वाराहपुराण के १७१ वें अध्याय; पद्मपुराण, सृष्टि-खंड के २३ वें अध्याय और मत्स्यपुराणके ६९ वें अध्याय में भी शाप की कथा है)।

(७० वां अध्याय) चन्द्रभागा नदी के तट पर सूर्य्यनारायण का सनातन स्थान है। साम्ब ने पीछे वहां सूर्य्य को स्थापित किया। उस स्थान में पर-ब्रह्म स्वरूप जगत् के स्वामी सूर्य्यनारायण ने मित्र रूप से तप किया था। वह सब देवता तथा मनुष्यों की सृष्टि कर आप १२ रूप धर अदिती के गर्भ से उत्पन्न हुए; जिनमें से मित्र नामक बारहवें सूर्य्य की मूर्ति चन्द्रभागा नदी के तट पर विराजमान है। साम्बपुर और साम्बके शाप की कथा साम्बपुराण के तीसरे अध्याय में है)।

(११८ वां अध्याय) प्रलय के समय जब सब जीव नष्ट होगए और सर्वत्र अंधकार व्याप्त होरहा था उस समय पहिले बुद्धि उत्पन्न हुई, बुद्धि से अहं-कार, अहंकार से महाभूत और महाभूतों से अंड उत्पन्न हुआ, जिसमें सातों समुद्रों सहित सात लोक स्थित हैं। उसी अण्ड में ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्थित थे; परन्तु वे सब अन्धकार से व्याकुल होरहे थे। उस समय जब वे परमेश्वर का ध्यान करने लगे तब अन्धकार को हरने वाला एक तेज उत्पन्न हुआ, जिसको देख वे सब स्तुति करके कहने लगे कि आप के इस प्रचंडरूप

को कोई देख नहीं सकता, इस लिये आप सौम्यरूप धारण करें। ऐसा सुन सूर्य्यनारायण ने सब लोकों को सुखदेने वाला उत्तम रूप धारण किया।

(वाराहपुराण (२६ वें अध्याय), मत्स्यपुराण (२ रे अध्याय) और मार्कण्डेय पुराण (१०२ रे अध्याय) में भी सृष्टि के आदि में सूर्य्य की उत्पत्ति की कथा है। भविष्यपुराण के ४२ वें अध्याय और वाराहपुराण में लिखा है कि सूर्य्यभगवान सप्तमी तिथि में प्रगट हुए, इस लिये जो पुरुष वा स्त्रियां सप्तमी व्रत करके सूर्य्य की पूजा करती हैं वे अन्त में सूर्य्यलोक को जाती हैं।)

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध; ४६ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमी को अचला सप्तमी का व्रत होता है।

पद्मपुराण—(स्वर्गखण्ड, ४५ वा अध्याय) ब्रह्मा की आज्ञा से सूर्य्य के कहने पर विश्वकर्मा ने सूर्य्य के किरणों का बहुतसा भाग काटडाला (यह कथा भविष्यपुराण के ४२ वें अध्याय में भी है)।

आदिब्रह्मपुराण—(३१ वां अध्याय) अदिती ने दैत्यों से देवताओं का पराजय देख कर सूर्य्य भगवान् की स्तुति की, जिससे सूर्य्यनारायण अदिती को वरदान देने के उपरान्त उसके गर्भ में स्थित हुए। सूर्य्य के जन्म होने पर इन्द्र ने युद्ध के लिये दैत्य और दानवों को बुलाया। असुर और देवताओं का घोर युद्ध हुआ। उस समय सूर्य्य ने अपने तेज से दैत्यों को भस्म करदिया। सब देवता अपने अधिकार को प्राप्त हुए। मार्त्तण्ड ने भी अपने अधिकार को पाया (सूर्य्य के कश्यप मुनि से उत्पन्न होने की कथा मत्स्यपुराण के ६ वें अध्याय में, मार्कण्डेयपुराण के १०५ वें अध्याय में और पद्मपुराण—स्वर्ग खंड के ४५ वें अध्याय में भी लिखी हुई है)।

(पद्मपुराण में लिखा है कि सूर्य्य बारहों मासों में बारह राशियों पर जाते हैं, इसी से इनका द्वादशात्मा नाम है; क्योंकि बारहों पर बारह नाम से सूर्य्य रहते हैं)

मत्स्यपुराण--(१७ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमी मन्वन्तरादि तिथि है, उसमें सूर्य्य रथ में बैठते हैं, इसी से वह रथसप्तमी कहलाती है।

महाभारत—(वन पर्व्व, ३ रा अध्याय) युधिष्ठिर ने कहा कि हे सूर्य्य! जो मनुष्य सप्तमी वा छठ को तुम्हारी पूजा करता है, उसकी सेवा लक्ष्मी करती है।

(शान्ति पर्व्व २०८ वां अध्याय) द्वादशादित्य कश्यप के पुत्र हैं; उनके नाम ये हैं;—भग, अंशु, अर्य्यमा, मित्र, वरुण, सविता, धाता, विवस्वान, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र और विष्णु। (अनुशासन पर्व्व, १५० वां अध्याय) द्वादशादित्य के नाम ये हैं;—अंशु, भग, मित्र, जलेश्वर, वरुण, धाता, अर्य्यमा, वैजयंत, भास्कर, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र और विष्णु।

सूतसंहिता—(पुरुषोत्तम माहात्म्य, प्रथम अध्याय) जो मनुष्य कोणार्क तीर्थ में चंद्रभागा नदी के जल से स्नान करके सूर्य्य का दर्शन करता है उसका संपूर्ण पाप विनाश हो जाता है।
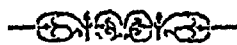
सत्रहवां अध्याय।

(सूबे उड़ीसे में) जाजपुर, वालेश्वर; और (सूबे बंगाल में) मेदनीपुर।

जाजपुर।

एक सड़क कटक शहर से पूर्वोत्तर जाजपुर, भद्रक और वालेश्वर होकर मेदनीपुर को और मेदनीपुर से उत्तर बांकुड़ा कसबा होकर रानीगंज को और दक्षिण कलकत्ते को गई है। उस सड़क से जगन्नाथजी के बहुत से यात्री आते जाते हैं। स्थान स्थान पर सड़क के निकट यात्रियों के टिकने के लिये मोदियों की दुकानें बनी हुई हैं। सम्वत् १९२० में मेरे बड़े भाई बाबू मेवालालजी इसी मार्ग से बांकुड़ा, मेदनीपुर, वालेश्वर, जाजपुर, और कटक होकर जगन्नाथपुरी में गए थे। मैं कटक से पूर्वोत्तर कलकत्ते की ओर चला।

कटक शहर से ४४ मील पूर्वोत्तर (२० अंश, ५०, कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, २२ कला, ५६ विकला पूर्व देशांतर में) वैतरनी नदी के दहिने किनारे पर कटक जिले में एक तीर्थ स्थान और उस जिले के सबडिवीजन का सदर-स्थान जाजपुर एक छोटा कसबा है, जो एक समय

बड़ा प्रसिद्ध शहर था। कटक और जाजपुर के बीच में ब्राह्मणी नदी के पार उतरना होता है। जाजपुर से १२ कोस पूर्व चांदवाली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जाजपुर में ११९९२ मनुष्य थे; अर्थात् ११३१२ हिन्दू, ६६९ मुसलमान, १ कृस्तान और १० अन्य।

जाजपुर में मामूली सरकारी इमारतें, एक खैराती अस्पताल, बहुतेरे शैवमंदिर, जिनमें अधिकांश हीन दशा में पड़े हैं, और बहुत से शैव ब्राह्मण हैं। जाजपुर पार्वतीजी का स्थान है। पुराणों में उस स्थान का नाम विरज क्षेत्र लिखा है। उड़ीसे के ४ पवित्र स्थानों में से वह एक है, उसके अतिरिक्त उड़ीसे में पुरी, भुवनेश्वर और कोणार्क ये ३ तीर्थ स्थान हैं।

जाजपुर के पास वैतरनी नदी के सुप्रसिद्ध घाट पर पादगया तीर्थ में यात्री लोग स्नान और पिंडदान करते हैं। वहां बहुत पंडे रहते हैं। घाट पर सीढ़ियां बनी हैं। विष्णुस्वामी और वाराहजी का मंदिर है। फाटकों पर सूर्य की प्रतिमा बनी हुई हैं। नदी के निकट एक दालान में ६ फीट ऊंची ७ पुरानी मूर्तियां हैं, जिनमें से एक नृसिंहजी और ६ चतुर्भुजी देवियों की मूर्तियां हैं। उसके पास एक मंदिर में गणपतिजी की बड़ी मूर्ति है। उसके सामने जंगल लगा हुआ नदी के टापू में वाराहजी का बड़ा मन्दिर और अन्य बहुतेरे छोटे मन्दिर हैं। मजिष्टर की कोठी के हाते में हाथी पर चढ़ी हुई चतुर्भुजी इन्द्रानी, वाराही और चामुंडा की नक्कासीदार सुन्दर ३ मूर्तियां हैं। घाट से १¼ मील दक्षिण एकही पत्थर का ३२ फीट ऊंचा गरुड़स्तंभ है। ब्रह्मकुण्ड तालाब के समीप विरजादेवी का शिखरदार मन्दिर बना है। उस तालाब का घाट पत्थर से बना हुआ है। जाजपुर में वर्ष में एक मेला होता है, उस समय वैतरनी में स्नान करने के लिये बहुत से यात्री वहां एकत्रित होते हैं।

इतिहास—राजा ययातिकेशरी ने, जिस ने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसे में राज्य किया था, विहार से आते समय जाजपुर को प्रसिद्ध स्थान पाया और कुछ समय के लिये उसको अपनी राजधानी बनाया। वह ११ वीं शदी तक केशरी वंश के राजाओं के आधीन उड़ीसे का प्रधान कसबा

था। १६ वीं शदी में हिंदू और मुसलमानों के परस्पर झगड़े के कारण जाजपुर की दशा हीन हो गई।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ११४ वां अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडवगण महर्षि लोमश के सहित पर्यटन करते हुए गंगासागर में स्नान करके समुद्र के तीर तीर चले। उन्होंने कलिंग देश में वैतरनी नदी के पार उतर कर वहां पितरों का तर्पण किया।

आदिब्रह्मपुराण—(४१ वां अध्याय) विरजक्षेत्र में ब्रह्मा की प्रतिष्ठा की हुई विरजा माता है, जिसके दर्शन करने से दर्शकजनों के ७ पुश्त पवित्र हो जाते हैं। एक वार उनके दर्शन, पूजन तथा प्रणाम करने से मनुष्य अपने कुल का उद्धार करके ब्रह्मलोक में निवास करता है। उस क्षेत्र में सब पापों के हरने वाली और वर को देने वाली अन्य भी अनेक देवी स्थित हैं और संपूर्ण पापों को विनाश करने वाली वैतरणी नदी बहती है। वहां क्रोडरूपी हरि हैं, जिनके दर्शन और प्रणाम करने से विष्णुपद प्राप्त होता है। कपिल, गोगृह, सोम, क्रोड, वासुक और सिद्धेश्वर इन तीर्थों में जितेंद्रिय होकर स्नान करके वहां के देवताओं को नमस्कार करने से मनुष्य सब पापों से विमुक्त होकर ब्रह्मलोक में जाता है। विरजक्षेत्र में पिंडदान करने से पितरों की उत्तम तृप्ति होती है। ब्रह्मा के विरजक्षेत्र में शरीर त्याग करने से मोक्ष मिलती है। समुद्र में स्नान करके कपिल हरि भगवान और वाराही देवी के दर्शन करने से देवलोक में निवास होता है। वह गुह्य क्षेत्र समुद्र के उत्तर भाग में १० योजन विस्तार का है, जिसमें जाने से पापों का नाश होजाता है और मुक्ति मिलती है। उस पवित्र उत्कल देश में पुरुषोत्तम भगवान निवास करते हैं और अन्य भी अनेक तीर्थ हैं। उत्कल देश में निवास करने वाले मनुष्य धन्य हैं।

बालेश्वर।

जाजपुर से ५६ मील (कटक शहर से १०० मील) पूर्वोत्तर (२१ अन्श, ३० कला, ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अन्श, ५८ कला, ११ विकला

पूर्व देशांतर में) बूढ़ीवलंग नदी के दहिने किनारे पर समुद्र से सीधा ७ मील और नदी के मार्ग से लगभग १६ मील पश्चिम सूबे उड़ीसे में जिले का सदर-स्थान और प्रधान बंदरगाह बालेश्वर कसबा है, जिसको बालासोर भी कहते हैं। जाजपुर से लगभग २० मील पूर्वोत्तर भद्रक नामक बड़ी बस्ती मिलती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बालेश्वर कसबे में २०७७५ मनुष्य थे; अर्थात् १६९१२ हिंदू, ३३६२ मुसलमान और ५०१ कृस्तान।

बालेश्वर में मामूली सरकारी इमारतें हैं। जेवर और पीतल आदि धातु के वर्तन अच्छे बनते हैं। तंबाकू, तेल, चीनी, गल्ले इत्यादि चीजें दूसरे स्थानों से बालेश्वर में आते हैं और चावल इत्यादि रकम बालेश्वर से दूसरे स्थानों में भेजे जाते हैं। बंदरगाह की आमदनी, रफतनी बढ़ती जाती है। बालेश्वर में प्रतिवर्ष चड़क पूजा होती है।

बालेश्वर जिला—इसके उत्तर मेदनीपुर जिला और मोरभंज का देशी राज्य; पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण वैतरनी नदी, बाद कटक जिला और पश्चिम क्योंझोर, नीलगिरि और मोरभंज का राज्य। जिले का सदर स्थान बालेश्वर कसबा है। समुद्र के किनारे की नमकदार भूमि पर बहुत नमक तैयार किया जाता है। सुवर्णरेखा, पंचपाड़ा, बूढ़ावलंग, कांसबांस और वैतरनी जिले की प्रधान नदियां हैं और बालेश्वर, चुरामन, ढमरा इत्यादि इस जिले में ७ प्रधान बंदरगाह हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बालेश्वर जिले का क्षेत्र फल २०६६ वर्ग मील था, जिसमें ९४५२८० मनुष्य थे; अर्थात् ९१५७९२ हिंदू, २३८०४ मुसलमान, ८१५ कृस्तान, ४७ सिक्ख, ४ बौद्ध, १ यहूदी और ४८१७ अन्य। जातियों के खाने में १८२९४८ खंडाइत, ११९३७३ ब्राह्मण, ४८१९२ पान, २४४५९ कंडारा, ८४४४ चमार, ६२९० गोंड, २७६७ भूमिज और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

इतिहास—बालेश्वर एक समय प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। सन् १६४२ ई० में वहां अंरेजी कोठी नियत हुई। डचकी कोठी भी वहां थी। फरांसीसी लोग अब तक बालेश्वर के पास १०० एकड़ भूमि अपने कब्जे में रक्खे हुए हैं।

सन् १८०३ में उड़ीसे के दूसरे जिलों के साथ अंगरेजों ने बालेश्वर को अपने अधिकार में किया। सन् १८०५ से १८२१ तक कटक से वालेश्वर का प्रबंध होता था। सन् १८२७ में यह स्वाधीन कलक्टर के आधीन हुआ।

मेदनीपुर।

वालेश्वर से लगभग ८० मील (कटक से १८० मील) पूर्वोत्तर (२२ अंश, २४ कला, ४८ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, २१ कला १२ विकला पूर्व देशांतर में) कसाई नदी के बाएं अर्थात् उत्तर किनारे पर सूबे बंगाल के बर्दवान विभाग में जिले का सदर-स्थान और जिले में प्रधान कसबा मेदनीपुर है। वालेश्वर और मेदनीपुर के मार्ग में सुवर्णरेखा नदी को लांघना पड़ता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मेदनीपुर कसबे में ३२२६४ मनुष्य थे; अर्थात् १६२५३ पुरुष और १६०११ स्त्रियां। इनमें २४७१५ हिंदू, ६७६५ मुसलमान, ३९३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी जंगली लोग, ३६९ कृस्तान और २२ बौद्ध थे।

मेदनीपुर कसबे में सरकारी कचहरियां और यूरोपियन लोगों के रहने के लिये सुन्दर मकान बने हुए हैं। एक सरकारी और दूसरा एडेड स्कूल; सन् १८५१ का बना हुआ एक गिरजा; सन् १८३५ का बना एक अस्पताल; बड़ा-बाजार और यात्रियों के टिकने के लिये मकान हैं। वहां पीतल तथा लोहे के बर्तन इत्यादि चीजें तैयार होती हैं।

मेदनीपुर सड़कों का केंद्र है। वहां से दक्षिण-पश्चिम वालेश्वर और जाजपुर होकर कटक को; पश्चिम कुछ दक्षिण क्योंझोर, संभलपुर, रायपुर, राजनंदगांव, और भंडारा को और भंडारा के आगे से पूर्वोत्तर जबलपुर, कटनी, रींवा और मिर्जापुर तक और दक्षिण-पश्चिम पैठन, अहमदनगर और बम्बई तक; मेदनीपुर से पूर्व ६८ मील का मार्ग उलबड़िया होकर कलकत्ते को; और उत्तर अप्रसिद्ध सड़क बांकुड़ा होकर रानीगंज को गई है। आगबोट मेदनीपुर से उलबड़िया तक नहर में और उलबड़िया से १५ मील कलकत्ते के आरमेनियन घाट तक भागीरथी गंगा में नित्य आते जाते हैं। रेलवे का

काम आरंभ होगया है; मेदनीपुर से रेलवे की कई लाइन कई तरफ निकलेंगी;—एक लाइन पूर्व ओर उलवड़िया होकर हवड़े को; दूसरी दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर, भद्रक, कटक, भुवनेश्वर इत्यादि होकर पुरी को और तीसरी लाइन पश्चिम ओर आसनसोल और नागपुर की लैन के सीनी स्टेशन को जायगी।

मेदनीपुर जिला—यह वर्द्धवान बिभाग के दक्षिण का जिला है। इसके उत्तर बांकुड़ा और वर्द्धवान जिला; पूर्व हुगली और हवड़ा जिला और भागीरथी नदी; दक्षिण बंगाल की खाड़ी; दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर जिला; पश्चिम मोरभंज का राज्य और सिंहभूमि जिला और पश्चिमोत्तर मानभूमि जिला है। जिले की प्रधान नदी भागीरथी है, जिसकी सहायक रूपनारायण, रसूलपुर और हलदी नदी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मेदनीपुर जिले के ५०८२ वर्गमील क्षेत्रफल में २५१७८०२ मनुष्य थे; अर्थात् २२३५५३५ हिंदू, १६४००३ मुसलमान, ११७४३६ पहाड़ी और जंगली, जिनमें ११२०६२ संथाल थे, ७४० क्रस्तान, ४४ सिक्ख, ३६ बौद्ध, ६ ब्राह्मो और २ पारसी। हिंदुओं में ७५३४३५ कैवरत, ११७४१४ ब्राह्मण, १२७२६० सदगोप, ९२१७८ कायस्थ ७४४९७ बागड़ी, ६८२३९ तेली, ५७५६२ तांती, ५३९९४ ग्वाला, ४६०७२ नापित, ४५२९० कुर्मी, ४१६०७ धोबी, २३५०७ बनियां, १९५७३ राजपूत, १२७४६ बाउरी, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मेदनीपुर जिले के कसबे मेदनीपुर में ३२२६४, घटाल में १३९४२, चंद्रकोना में ११३०९ और खरवार में १००८३ मनुष्य और सन् १८८१ में रामजीवनपुर में १०९०९ और तमलूक में ६०४४ मनुष्य थे।

अठारहवां अध्याय।

(सूबे बंगाल में) श्रीरामपुर, तारकेश्वर, चंदरनगर, हुगली, बर्दवान, खानाजंक्शन, सिउड़ी, रानीगंज; (सूबे छोटानागपुर में) पुरुलिया; (सूबे बंगाल में) बांकुड़ा; (छोटानागपुर में) रांची, हजारीबाग, पारसनाथ और (सूबे बिहार में) वैद्यनाथ।

श्रीरामपुर।

मैं नहर और भागीरथी के मार्ग से आगबोट द्वारा मेदनीपुर से लगभग ७० मील पूर्व कलकत्ते में आया और हवड़े में इष्टइंडियन रेलवे की गाड़ी में सवार हो आगे चला। कलकत्ते के पास के हवड़े से १२ मील उत्तर श्रीरामपुर का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के हुगली जिले में हुगली नदी के पश्चिम किनारे पर बारकपुर के सामने (२२ अंश, ४५ कला, २६ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २३ कला, १० विकला पूर्व देशान्तर में) सब-डिवी-जन का सदर-स्थान श्रीरामपुर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय श्रीरामपुर की म्युनिसिपल्टी में ३६९९२ मनुष्य थे; अर्थात् २०२०० पुरुष और १६७९२ स्त्रियां। इनमें ३०१८१ हिंदू, ६४९९ मुसलमान, ३०४ क्रस्तान, ११ एनिमिष्टिक और १ बौद्ध थे।

श्रीरामपुर में डेनमार्कवालों का एक चर्च है, जो सन १८०५ ई० में १८ हजार रुपये के खर्च से तैयार हुआ था। हुगली अर्थात् भागीरथी के किनारे पर सुंदर कालिज बना हुआ है; उसकी डेवढ़ी में ६० फीट ऊंचे ६ स्तंभ लगे हैं और उसके ऊपर का प्रधान कमरा १०३ फीट लंबा और ६६ फीट चौड़ा है। इनके अतिरिक्त श्रीरामपुर में स्कूल, अस्पताल, बाग, एक जूट का

पेच और उसके पास जूट आदि के कई कल कारखाने हैं और कागज बहुत तैयार होता है। कसबे होकर बहुतेरी सड़कें गई हैं।

इतिहास—श्रीरामपुर सन् १७५५ ई० मे डेनमार्कवालों के अधिकार में था। सन् १७९९ ई० में श्रीरामपुर के पादड़ियों ने पहले पहल महाभारत और रामायण छपवा कर एक बंगला अखबार भी निकला; पिछे बंगला पुस्तकें भी छपने लगीं। सन् १८४५ ई० में इष्ट इंडियन कंपनी और डेनमार्क के बादशाह की एक संधि हुई। उसके अनुसार डेनमार्क के बादशाह ने हिंदुस्तान के अपने आधीन की संपूर्ण भूमि अर्थात् ट्रांकूबार, फ्रेडरिक्स नगर और बालासोर के पास के छोटे टुकड़े के साथ श्रीरामपुर को १२५००० पाउंड ले कर इष्ट इंडियन कंपनी के हाथ बेंच दिया।

तारकेश्वर।

श्रीरामपुर से २ मील (हवड़े से १४ मील) उत्तर सेवड़ाफूली का रेलवे स्टेशन है। वहां से २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर एक रेलवे शाखा तारकेश्वर को गई है।

तारकेश्वर हुगली जिले में टट्टी और फूस के मकानों की बस्ती है, किंतु तारकेश्वर-शिव के मन्दिर के अधिकारी महन्त माधवचन्द्र गिरि का मकान दो मंजिला पक्का बना हुआ है। यात्री लोग पंडे या मोदियों के मकानों में टिकते हैं। बहुतेरे मोदी रेलवे स्टेशन से यात्रियों को ले जाते हैं; पूजा की सामग्री भी वही लोग देते हैं। पूजा के समय ब्राह्मण जाकर यात्रियों को पूजा करवाते हैं। सब लोग पोखरे का जल पीते हैं। तारकेश्वर में कई एक कच्चे पोखरे हैं, जिनमे से तारकेश्वर के मन्दिर के निकट का दूधगंगा नामक पोखरा प्रधान है। मन्दिर से दक्षिण-पश्चिम छोटा बाजार, दूधगंगा से दक्षिण और पश्चिम बाग और दक्षिण-पश्चिम के कोने के समीप महन्त का मकान है।

दूधगंगा के पूर्व किनारे पर घेरे के भीतर तारकेश्वर शिव का शिखरदार मंदिर दक्षिण मुख से स्थित है। मन्दिर के जगमोहन से दक्षिण एक सुंदर मण्डप बना है, जिसके दोओर पांच पांच और दो और तीन तीन मेहराबियां बनी हुई हैं।

मंडप में संगमर्मर का फर्श लगा है और दक्षिण भाग में नंदीश्वर की सुंदर मूर्ति है। मंदिर और मंडप से पूर्व महंतों के आठ दस समाधि मंदिर, पूर्वोत्तर कालीजी का मन्दिर और पश्चिमोत्तर पाकशाला है, जिसमें तारकेश्वरजी के भोग की सामग्री तैयार होती है। बहुतेरे रोगग्रस्त लोग, जिनमें मुसलमान भी होते हैं, अपना दुःख छूटने के लिये तारकेश्वर के मन्दिर के आस पास धरना बैठते हैं।

मंदिर का प्रबंध तारकेश्वर के महन्त के आधीन है। जमीन्दारी की आमदनी से मंदिर का खर्च चलता है और यात्री लोग भी बहुत पूजा चढ़ाते हैं। वहां साल में दो बड़ा मेला होता है। फाल्गुन की शिवरात्री के मेले का जमाव तीन दिनों तक रहता है उस समय लगभग बीस पचीस हजार आदमी वहां आते हैं और मेष की संक्राति का मेला, जो चड़क पूजा का मेला कहलाता है, छः सात दिनों तक रहता है, उस मेले में लगभग १५ हजार मनुष्य आते हैं।

चंदरनगर।

सेवड़ाफुली जंक्शन से ७ मील (हवड़ा से २१ मील) उत्तर चंदरनगर का रेलवे स्टेशन है। फ्रांसीसियों के राज्य में (२२ अंश, ५१ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २४ कला, ५० विकला, पूर्व देशांतर में) हुगलीनदी के दहिने किनारे पर चंदरनगर एक सुन्दर छोटा शहर है। वहां फ्रांसीसी गवर्नर की उत्तम कोठी बनी है। गंगा के किनारे पर सन् १७२६ ई० का बना हुआ इटली के मिशनरी का चर्च अर्थात गिर्जा है। फ्रांसीसी राज्य की सीमा के पासही बाहर हुगली जिले में रेलवे स्टेशन बना है।

फ्रांसीसियों का गवर्नर जनरल मदरास हाते के पांडीचरी में रहता है। उसी के आधीन चंदरनगर का सबगवर्नर है (फ्रांसीसियों के हिन्दुस्तान के राज्य का विवरण भारत-भ्रमण-के चौथे खंड में पांडीचरी के वृत्तांत में देखो)। अंगरेजी गवर्नमेंट इस शरत पर चंदरनगर के गवर्नर को प्रतिवर्ष ३०० सन्दूक अफियून देती है कि फ्रांसीसियों की प्रजा पोस्ते का काम न करें।

इतिहास—फ्रांसीसी लोग सन् १६७३ ई० में चंद्रनगर आए और सन् १६८८ में उन्हों ने इसको पाया। फ्रांसीसियों के गवर्नर डुप्ले के समय (१७३१—१७४१) चंद्रनगर में २००० से अधिक ईंटे के मकान बनाए गए। उस समय वहां भारी सौदागरी होती थी। सन् १७४० में चंद्रनगर उस समय के कलकत्ते से अधिक मालदार और रवनकदार था। सन् १७५७ में अङ्गरेजों ने चन्दरनगर को जीत कर किले बंदी को तोड़ दिया; किंतु सन् १७६३ की सन्धि के अनुसार यह फिर फ्रांसीसियों को मिला। सन् १७९४ में फिर इष्ट इंडियन कंपनी ने चन्दरनगर को फ्रांसीसियों से छीन लिया; परंतु संधि होजाने पर सन् १८१६ में यह फिर फ्रांसीसियों को मिल गया; तब से अब तक यह उनके अधिकार में है।

हुगली।

चन्दरनगर के रेलवे स्टेशन से ३ मील (हवड़े से २४ मील) उत्तर हुगली का रेलवे जंक्शन है। सूबे बंगाल के वर्द्धवान विभाग में रेलवे स्टेशन से २ मील दूर हुगलीनदी के दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान हुगली एक कसबा है। उसके दक्षिण चिंसुरा वस्ती है। दोनो मिल कर एक म्युनिसिपल्टी बनती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हुगली और चिंसुरा में ३३०६० मनुष्य थे; अर्थात् १७०१८ पुरुष और १६०४२ स्त्रियां। इन में २६९३६ हिन्दू, ५९०३ मुसलमान, १९८ कृस्तान, १८ एनिमिष्टिक, ३ जैन और २ बौद्ध थे।

हुगली कसबे में देख ने की प्रधान वस्तु इमामवाड़ा है, जिसको करामत अलीने महम्मद मुशिन के धन से, जो सन् १८१४ ई० में मरा, ३ लाख रुपये खर्च करके बनवाया था। इमामवाड़े का अगवास २७७ फीट लंबा और ३६ फीट चौड़ा है। बीच में फाटक लगा है। ऊपर ११४ फीट ऊंचे दो मीनार खड़े हैं। इमामवाड़े का आंगन १५० फीट लंबा और ८० फीट चौड़ा है; फर्श मार्बुल का लगा है; प्रधान कमरा बहुत सुन्दर है और चारो ओर कोठरियां बनी हुई हैं। इमामवाड़े के पास सड़क के दूसरे बगल पर सन् १७७६—१७७७ ई० का बना हुआ एक पुराना इमामबाड़ा है।

चिंसुरा में ईंटे का एक पुराना गिर्जा है, जिसको सन् १७६८ ई० में डच के गवर्नर ने बनवाया था। गिर्जा से दक्षिण सन् १८३६ ई० का बना हुआ हुगली-कालिज है, जिसके बनाने में ८ लाख रुपये से अधिक खर्च पड़े थे। यह हिंदुस्तान के अधिक प्रसिद्ध कालिजों में से एक है; इसमें लगभग ६०० विद्यार्थी पढ़ते हैं।

हुगली का पुल—९ मील की रेलवे शाखा हुगली नदी के पुल को लांघ कर हुगली से नइहाटी में जा कर "ईष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे" से मिली है, जहां से दक्षिण २४ मील कलकत्ता का सियालदह स्टेशन और उत्तर ओर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५९ मील दार्जिलिंग है। हुगली गंगा, जिसको भागीरथी भी कहते हैं, गंगाजी की पश्चिमी शाखा है। हुगली कसबे और नइहाटी के बीच में हुगली नदी पर १२१३ फीट लंबा और (पायाओं के नीचे के छोरों से) ९८½ फीट ऊंचा जुबली पुल है। उसपर २ लाइन बनी हैं। पुल के दूसरे भाग की लंबाई ३२७८ फीट है। इस पुल को सन् १८८७ ई० में जुबली के समय भारतवर्ष के गवर्नर-जनरल लार्ड-डफरिन ने खोला, इसके बनाने में ५२ लाख रुपये खर्च पड़े थे।

हुगली जिला—इसके उत्तर बर्दवान जिला; पूर्व हुगली नदी, जो नदियां और चौबीस परगना जिले से इसको अलग करती है; दक्षिण हवड़ा जिला और पश्चिम बर्दवान जिला है। जिले का सदर-स्थान हुगली कसबा है। इस जिले में हुगली, दामोदर, इत्यादि नदियां और राजापुर डांकनी, सामती इत्यादि झीलें हैं। इनमें से सामती झील का क्षेत्र फल ३० वर्गमील में है। इस जिले से होकर उलबड़िया और मेदनीपुर नहर गई है और जिले में दूसरी कई एक छोटी नहर हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय हुगली जिले का क्षेत्रफल १२२३ वर्गमील था, जिसमें १०१२७६८ मनुष्य बसते थे; अर्थात् ८२२९७२ हिंदू, १८८७९८ मुसलमान, ६५५ कृस्तान, २९० बौद्ध, १६ ब्राह्म और ३७ दूसरे। जातियों के खाने में १४२५२६ कैबरत, १३४१३९ बागड़ी, ७६२७१ ब्राह्मण, ६१०२१ सदगोप, ४६१३४ ग्वाला, ३८७५७ तेली, २५४८४ कायस्थ, १७३५२ बनियां, ९५३० राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसबे श्रीरामपुर में ३५९९२, हुगली और चिंसुरा में ३३०६०, और वैद्यवटी में १८३८० मनुष्य थे। इन के अलावे हुगली जिले में कई छोटे कसबे हैं। इसी जिले के भीतर फ्रांसीसियों के चंद्रनगर का राज्य है।

हुगली कसबे से १ मील उत्तर बंदेल गांव में पोर्चुगीजों की १ पुराना मठ, सन् १५९९ का बना हुआ, एक गिर्जा और हिंदूओं का पवित्र स्थान त्रिबेणी है।

हुगली कसबे से ३ मील उत्तर बांसबड़िया बस्ती में एक जमींदार की स्त्री रानी शंकरीदासी का बनवाया हुआ देवी हंसेश्वरी का एक प्रसिद्ध मंदिर है, जिसमें १३ कलश और १३ शिव स्थापित हैं। मंदिर की रक्षा के लिये एक किला और खाई बनी थी, जिसमें वहां के लोगों ने महाराष्ट्रों की चढ़ाई के समय शरण लिया था।

इतिहास—पोर्चुगीजों ने सन् १५३७ ई० में हुगली कसबे को बसाया और पीछे हुगली के वर्त्तमान जेलखाने के निकट एक किला बनवाया, जिसके चिन्ह अब तक विद्यमान हैं। सन् १६३२ ई० में दिल्ली के बादशाह शाहजहां ने पोर्चुगीजों की शिकायत सुन कर हुगली में एक बड़ी सेना भेजी। किला तोपों से उड़ादिया गया, १००० से अधिक पोर्चुगीज मारे गए और लगभग ४०००, पुरुष, स्त्री और लड़के पकड़ कर आगरा भेजे गए, जो बरजोरी से वहां मुसलमान बनाए गए। "सातगांव" से, जो हुगली से ६ मील दूर है, आफिस और दफतर हुगली में लाए गए। हुगली बंगाल के शाही बंदरगाह हुई।

सन् १६४० ई० में इष्टइंडियन कंपनी ने शाहजहां के पुत्र सुलतान शुजा से, जो बंगाल का गवर्नर था, फरमान हासिल करके हुगली में एक कोठी कायम की। सन् १६६९ में कंपनी को हुगली में जहाज बोझने की आज्ञा मिली। सन् १६८६ में बंगाल के नवाब साइस्ताखां और कंपनी के कर्मचारियों में झगड़ा खड़ा हुआ। उस समय अङ्गरेजों ने इंगलैंड और मद्रास से हुगली में अपनी फौज भेजी; किन्तु मोगलों के बल के सामने उनसे क्या होसकता था; सन् १६८६ में अंगरेजों को हुगली छोड़ कर वहां से २६ मील दूर सतानती को,

जो नीची जगह में एक गांव था, चला जाना पड़ा। वह जगह अब कलकत्ते के उत्तरीय विभाग में शामिल है। सन १७४२ में महाराष्ट्रों ने हुगली कसबे को लूटा।

लगभग सन् १६४६ ई० में चिन्सुरा डच के आधीन हुआ। सन् १८२६ ई० में अंगरेजी सरकार ने चिंसुरा के बदले में उसको जावा का टापू देकर उससे चिंसुरा को लेलिया।

बर्दवान।

हुगली कसबे से ४३ मील (कलकत्ते से ६७ मील) पश्चिमोत्तर और खाना जंक्शन से ८ मील दक्षिण बर्दवान का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल में दामोदर नदी से २ मील उत्तर बांका नदी के निकट किसमत और जिले का सदर-स्थान बर्दवान एक सुंदर कसबा है, जिसका शुद्ध नाम वर्द्धमान है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय बर्दवान कसबे में ३४४७७ मनुष्य थे, अर्थात् १८५२७ पुरुष और १५९५० स्त्रियां। इनमें २४१७९ हिंदू, १००८१ मुसलमान, २०७ कृस्तान, ६ बौद्ध और ४ जैन थे।

बर्दवान में महाराज का महल, गुलाबबाग, अष्टोत्तर शत शिवालय और पीर बहराम का दरगाह इत्यादि बहुतेरी दर्शनीय वस्तु हैं। महाराज के महल के दक्षिण वाले फाटक से पश्चिम नवतूनगंज नामक सुंदर चौक बना हुआ है। उसके चारो बगलों पर पक्की कोठरियां, जिनके आगे ओसारे हैं, बनी हैं और मध्य भाग में ४ कोठरी और टीन से छाई हुई ८ चांदनी और चारो बगलों पर ४ फाटक हैं। महाराज की कचहरी से पूर्व बड़ा बाजार है, जिसमें कपड़े और चांदी, सोने आदि की बड़ी बड़ी दूकानें रहती हैं। बर्दवान में कई सदावर्त लगे हैं और जल कल बनी हुई है। कसबे से २ मील दक्षिण-पश्चिम कंचननगर से कल का पानी आता है। कसबे के निकट कृष्णसागर नामक तालाब और एक शिव मंदिर और जेलखाने के पास रानीसागर नामक एक बड़ा तालाब है। रेलवे स्टेशन से लगभग १ मील दक्षिण कमीश्नर, जज, मजिष्टर आदि की कचहरियां बनी हुई हैं।

राजा का महल—रेलवे स्टेशन से १ मील से अधिक पश्चिम-दक्षिण वर्द्धवान में राजा का उत्तम महल है। दरखास्त करने पर महल देखने का हुकुम मिलता है। राजवाड़ी के बड़े घेरे के अन्दर पश्चिम तरफ़ महल के दरवाजे के पास पूर्व और पश्चिम दो कमरें हैं, जिन में मार्वुल का फ़र्श लगा है और मार्वुल की बहुतेरी मूर्तियां रक्खी हैं। पूर्व वाले कमरे से पूर्व एक बड़े कमरे में मार्वुल का फर्श लगा है, बड़े बड़े झाड़ कटके हैं और उत्तम कुर्सियां रक्खी हुई हैं। बड़े कमरे से पूर्व एक बारहदरी के मध्य में बालरूम अर्थात् अंगरेजी नाचघर है, जिसके ऊपर के मंजिल पर लाइब्रेरी है और कई एक उत्तम कमरें तस्वीर इत्यादि उत्तम असबाबों से सजे हैं। बारहदरी के पूर्व माहताब मंजिल के दक्षिण दिलाराम और दिलाराम के पूर्व आईनामहल है। बारहदरी से थोड़ेही दूर पर ऐसमंजिल में अनेक भांति के बहुतेरे हथियार रक्खे हुए हैं और बहुतेरी तस्वीरें टंगी हैं। आईनामहल से पूर्व राजा की कचहरी है। आंगन के चारो बगलों पर दो मंजिले दालान और दो मंजिले कमरें बने हुए हैं।

लक्ष्मीनारायण का मन्दिर—राजमहल के पास लक्ष्मीनारायण का सुंदर मन्दिर है, जिसको लोग लक्खीनारायण का मन्दिर कहते हैं। मन्दिर के आगे के दालान में मार्वुल का फर्श लगा है और चान्दी जड़े हुए ३ सिंहासन रक्खे हुए हैं, जिनपर समय समय में मन्दिर की देव मूर्तियां बैठाई जाती हैं।

मन्दिर से थोड़ी दूर पर एक सुन्दर पूजावाड़ी है, जिसमें खंभाओं की पांच छ पंक्तियां हैं और सफेद तथा काले मार्वुल के तख्तों से फर्श बना है।

बड़ा बाज़ार से दक्षिण-पूर्व मंगला महारानी का मन्दिर और एक शिवाला है।

गुलाबबाग—रेलवे स्टेशन से करीब २ मील और राजवाड़ी से १ मील दूर वर्द्धवान के महाराज का गुलाबबाग है। राजवाड़ी और गुलाबबाग के बीच में सड़क के पास श्यामसागर नामक एक बड़ा तालाब है। गुलाबबाग में भांति भांति के फल फूलों के वृक्ष लगे हैं, जगह जगह सड़कें बनी हैं और स्थान

स्थान पर जंगली जानवरों, जलचरों और पक्षियों के रहने के लिये अनेक मकान, हौज, कुंड और घेरे बनाए गए हैं। यद्यपि यह चिड़ियाखाना पहले के समान नहीं हैं, तिस पर भी यहां देखने योग्य वहुतेरे जीव जन्तु हैं। इस में थोड़े थोड़े सब प्रकार के पशुपक्षी और वहुतेरे वाघ तथा हरिन देखने में आते हैं। वाग के घेरे के भीतर कई तालाव हैं। वाग के मध्य में एक उत्तम तालाव के चारो तरफ पत्थर की सीढ़ियां और उसके चारों कोनों के पास मार्बुल की ४ प्रतिमा हैं। तालाब के उत्तर और दक्षिण गुलावकी फूलवाड़ी हैं, जिनमें क्यारियों के वगलों पर गच के रास्ते वने हैं। तालाव के पश्चिम किनारे पर रसोई घर, जनाना, अंटाघर, वैठकखाना आदि कई सुन्दर इमारते वनी हैं। गुलाबवाग के वगलों में नहर बनाई गई है।

अष्टोत्तरशत शिवालय—राजबाड़ी से ३ मील पश्चिमोत्तर एक चौगान के चारो वगलों पर एकही प्रकार के १०८ शिखरदार शिवमन्दिर हैं; अर्थात् ३८ पूर्व, ३८ पश्चिम, १४ उत्तर, १४ दक्षिण और ४ चारो कोनों पर। प्रत्येक मन्दिर बाहर से ३ गज लम्बा और इतनाहीं चौड़ा है। चौगान के पूर्व और पश्चिम बगल में दो फाटक और उसके भीतर २ कच्ची दिग्गी हैं।

बर्दवान जिला—इसका क्षेत्रफल२६९७ वर्ग मील है। इसके उत्तर संथालपरगना, बीरभूमि और मुर्शिदाबाद जिले; पूर्व नदिया जिला; दक्षिण हुगली, मेदनीपुर और बाकुड़ा जिले और पश्चिम मानभूमि जिला है। बर्दवान जिला भारतवर्ष के सबसे अधिक उपज होने वाले जिलों में से एक है। इस जिले में केवल पश्चिमोत्तर कोने में संथाल परगने जिले से लगी हुई नीची ऊंची भूमि है, जहां जंगलों में कुछ भालू, तेंदुए, भेड़िया इत्यादि बन जंतु रहते हैं; नहीं तो सर्वत्र समतल भूमि पर धान की बड़ी खेती होती है। जगह जगह ताड़, केला और आम के बागों में झोपड़ियों की बस्तियां देखने में आती हैं। जिले में कोई पहाड़ी नहीं है। दामोदर, खारी, बांका इत्यादि वहुतेरी नदियां, जो भागीरथी में मिल गई हैं, बहती हैं। उस जिले में तशर बहुत होता है और जहरीले सर्प बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बर्दवान जिले में १३९१८२३ म-

नुष्य थे; अर्थात् ११२०६७६ हिन्दू, २६३८१६ मुसल्मान, ६४१८ संथाल, ९१० कृस्तान और ३ यहूदी। जातियों के खांने में १४८७८८ भंगी, ११२१११ सद्गोप, १०७६८४ ब्राह्मण, ८२२५४ वाउरी, ७०२६२ ग्वाला, ४९९२९ चमार, ३९०३० डोम, ३५३०५ वनियां, ३३०६९ कायस्थ, ३१५९२ कैवरत, २८९७८ तेली, ७२१८ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के मनुष्य थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उस जिले के कसवे वर्दवान में ३४४७७ और रानीगंज में १३३७२ और सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कलना में २०४६३ और कतवा में ६८२० मनुष्य थे। वर्दवान जिले में भागीरथी के किनारे पर जिले में सौदागरी का प्रधान स्थान कलना है, जो मुसल्मानों के राज्य के समय एक प्रसिद्ध स्थान था। वहां मुसल्मानों के एक वड़े किले का चिन्ह अव तक विद्यमान है और वर्दवान के महाराज का एक महल वना हुआ है। रानीगंज सवडिवीजन में कोयले की वहुत सी खानियां हैं। भागीरथी और अजयनदी के संगम के निकट कतवा एक तिजारती स्थान है; उसी स्थान पर चैतन्य महाप्रभु ने तप किया था, इस लिये वैष्णव लोग उसको पवित्र समझते हैं।

इतिहास—राजमहल में दाउदखां के परास्त होने के पीछे सन् १५७४ ई० में वादशाह अकवर की सेना ने उसके वंशधरों को वर्दवान में पकड़ा। सन् १६२४ में शाहजादे खुर्रम ने, जो पीछे शाहजहां के नाम से वादशाह वना, वर्दवान कसवे और उसके किले को लेलिया। उसके थोड़ेही पीछे वर्दवान-राजवंश के नियत करने वाले आवूराय खत्री पंजाव से वंगाल में आकर वर्दवान में वस गए। वह सन् १६५७ में चौधरी हुए और उसके पीछे मुसल्मानी गवर्नमेंट के आधीन फौज के कमांडर होगए। उनकी मिलकियत वहुत शीघ्र वढ़ गई। आवूराय के पोते कृष्णरामराय ने वादशाह औरंगजेव से एक फरमान हासिल किया। सन् १६९५ में वर्दवान के एक तालुकदार सूवासिंह ने अफगान प्रधान रहीमखां की सहायता से वर्दवान के राजा को रण-भूमि में मार डाला और राजा के पुत्र जगतरामराय को छोड़ कर राजवंश के सव लोगों को पकड़ लिया। उसके थोड़ेही दिनों के पश्चात् राजा की

पुत्री ने सूबासिंह को मारडाला। जगतरामराय उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने अठारहवीं शदी के आरंभ में महाराष्ट्रों के आक्रमण के समय नवाब की सहायता की थी। उनके पीछे उनके पुत्र कीर्तिचन्द्रराय वर्द्धवान के राजसिंहासन पर बैठे। उन्हों ने चन्द्रकोना, वरदा और बेलगछा के राजाओं को परास्त करके उनकी मिलकियतों को अपनी जमींदारी में मिला लिया। कीर्तिचन्द्रराय के पश्चात् महाराज तिलकचन्द्रराय ने सन् १७४४ से सन् १७७० तक राज्य किया। उनके समय में आक्रमण करने वालों ने बर्द्धवान को लूटा और उस देश को नष्टभ्रष्ट कर दिया। सन् १७७० के बड़े अकाल के समय महाराज तिलकचन्द्र मरगए। उस समय उनके घर वालों को श्राद्ध के खर्च के लिये घर का जेवर वेचना और सरकार से कर्ज लेना पड़ा। उनके उत्तराधिकारी महाराज तेजचन्द्र सन् १७९३ के दाएमी बन्दोवस्त के पीछे कुछ अच्छे हालत में हुए। वर्तमान शदी में वर्द्धवान राज्य की उन्नति हुई है। सन् १८३३ ई० में महाराज महतावचन्द्र राजसिंहासन पर बैठे, जिन्होंने सन् १८५५ में संथालों की वगावत के समय और सन् १८५७ के बलवे में भारत गवर्नमेंट की बड़ी सहायता की। सन् १८७९ में महाराज माहतावचंद्र का देहांत हो गया। उनके गोद लिया हुआ लड़का महारानी का भतीजा महाराज आफतावचंद्र माहताव बहादुर ने सन् १८८१ में बालीग होने पर राज्य का संपूर्ण अधिकार प्राप्त किया। इस समय वर्द्धवान के महाराज की मिलकियत की वार्षिक आमदनी ३० लाख रुपये से अधिक है।

खाना जंक्शन।

खाना जंक्शन से "ईष्टइण्डियन रेलवे" की लाइन ३ तरफ गई है। तीसरे दरजे का महसूल फी मील २½ पाई लगता है।

(१) खाना जंक्शन से पश्चिमोत्तर कार्ड लाइन पर।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

४१ अण्डाल जंक्शन।

४६ रानीगंज।

५७ आसनसोल जंक्शन।

६३ सीतारामपुर जंक्शन।

१०८ मधुपुर जंक्शन।

१२६ वैद्यनाथ जंक्शन।
१६० गिद्धौर।
१६९ जमुई।
१८७ लक्षीसराय जंक्शन।

अण्डाल जंक्सन से २४ मील पश्चिमोत्तर गौरागद्दी।

आसनसोल जंक्शन से पश्चिम दक्षिण बंगाल नागपुर रेलवे पर ४७ मील पुरुलिया, २२१ मील बामरा और २४४ मील झारसूगढ़ जंक्शन।

सीतारामपुर जंक्शन से पश्चिम ५ मील बराकर और ३९ मील कटरसगढ़।

मधुपुर जंक्शन से २३ मील पश्चिम थोड़ा दक्षिण गिरिडी।

वैद्यनाथ जंक्शन से ४ मील पूर्व-दक्षिण देवघर।

(२) लूपलाईन पर खाना जंक्शन से उत्तर साहबगंज और साहबगंज पश्चिम लक्षीसराय—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—
४४ सांईथिया।
६१ रामपुरहाट सबडिवीजन।
७० नलहाटी जंक्शन।
८० मुराडोई।
९४ पकड़ड़।
१२० तीनपहाड़ जंक्शन।
१४४ साहबगंज।
१७० कहलगांव।
१९० भागलपुर।
२०५ सुलतानगंज।
२२३ जमालपुर जंक्शन।
२४१ कजरा।
२४८ लक्षीसराय जंक्शन।

नलहाटी जंक्शन से २७ मील पूर्व मुर्शिदाबाद के पास अजीमगंज।

तीनपहाड़ जंक्शन से ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल।

साहबगंज के उसपार के मनिहारीघाट से उत्तर और पश्चिमोत्तर को झुकता हुआ। 'ईष्टर्न बंगालस्टेट रेलवे' पर ७ मील मनिहारी, २३ मील कटिहर जंक्शन, ४० मील पूर्निया, ८२ मील फार्बिसगंज और ९६ मील कोशीनदी के बाएं किनारे पर अंचराघाट।

जामालपुर जंक्शन से ५ मील पश्चिमोत्तर मुंगेर।

(३) खाना जंक्शन से पूर्व-दक्षिण—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

८ वर्द्धवान।

४६ मगरा।

५१ हुगली जंक्शन।

५४ चन्दरनगर।

६१ सेवड़ाफुली जंक्शन।

६३ श्रीरामपुर।

७५ हवड़ा।

हुगली जंक्शन से ५ मील पूर्व-दक्षिण हुगली अर्थात् भागीरथी नदी के वाएं नइहाटी जंक्शन।

नइहाटी से दक्षिण २४ मील सियालदह और उत्तर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५५ मील दार्जीलिंग।

सेवड़ाफूली जंक्शन से २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर तारकेश्वर।

सिउड़ी।

खाना जंक्शन से ४४ मील उत्तर लूपलाइन पर सांइथिया का रेलवे स्टेशन है। सांइथिया से बारह चौदह मील पश्चिम सूबे बंगाल के वर्द्धवान विभाग में मोर नदी से लगभग ३ मील दक्षिण एक सड़क के पास (२३ अंश, ५४ कला, २३ विकला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, ३४ कला, १४ विकला, पूर्व देशांतर मे) वीरभूमि जिले का सदर-स्थान सिउड़ी एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सिउड़ी में ७८४८ मनुष्य थे; अर्थात् ५८३८ हिन्दू, १९९१ मुसलमान और १९ दूसरे।

वीरभूमि जिला—जिले का क्षेत्रफल १७५६ वर्गमील है। इसके पश्चिमोत्तर संथालपरगना जिला; पूर्व मुर्शिदाबाद और बर्द्धवान जिला और दक्षिण अजयनदी, जिसके बाद वर्द्धवान जिला है। वीरभूमि का अर्थ जंगली भूमि है; संथाली भाषा में जंगल को वीर कहते हैं। इस जिले का सदर-स्थान सिउड़ी कसबा है। इस जिले में कोई झील अथवा नहर या सर्वदा नाव चलने योग्य कोई नदी नहीं है। जिले में कोयले और लोहे की खान हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वीरभूमि जिले में ७९४४२८ मनुष्य थे; अर्थात् ६१७३१० हिन्दू, १६२६२१ मुसलमान, १४४४९ पहाड़ी और जंगली इत्यादि और ४८ कृस्तान। जातियों के खाने में ७९६२१ सद्गोप, ४००३२ वागड़ी, ३९७२४ ब्राह्मण, ३५३१६ डोम, ३०९७५ चमार, २७२६८ वाउरी, २३२८६ हाड़ी, २०७८३ कालू, १८१०३ वनियां, ८९०२ कायस्थ, ८३४४ राजपूत और शेप में दूसरी जातियों के लोग थे।

वीरभूमि जिले में सिउड़ी, रामपुरहाट, नागोर, एलमवाजार और महमूद बाजार प्रसिद्ध गांव हैं।

वाकेश्वर स्थान—वीरभूमि जिले में तांतीपाड़ा गांव से लगभग १ मील दक्षिण वाकेश्वर नामक नाले के किनारे वाकेश्वर स्थान पर तप्त जल के कई एक झरने हैं। झरनों के पास वहुतेरे शिव-मन्दिर वनाए गए हैं; वहां बहुत से यात्री जाते हैं।

जयदेवजी का जन्म-स्थान—उपरोक्त सिउड़ी कसवे से १८ मील दूर अजयनदी के उत्तर जयदेवजी का जन्म-स्थान केंदुली गांव है। पूर्व समय उस गांव में भोजदेव ब्राह्मण वसता था। उसकी पत्नी रामादेवी के गर्भ से जयदेवजी ने जन्म लिया। किस संवत् में उनका जन्म हुआ यह निश्चय नहीं है। किसी किसी प्रमाण से सन् ईस्वी की ग्यारहवीं शदी के आदि में और किसी के मत से बारहवीं शदी के मध्य भाग में उनका जन्म हुआ था। एक ब्राह्मण की पद्मावती नामक पुत्री से जयदेवजी का विवाह हुआ। उन्होंने अपने जीवन का अर्द्धभाग उपासना और धर्मोपदेश में विताया। जयदेवजी के रचे हुए गीतगोविन्द के सरस पदों को देख कर वड़े वड़े कवि मोहित और विस्मित होते हैं। वास्तव में उन्हों ने इस काव्य में अपनी रस शालिनी रचना शक्ति का एक अद्वितीयत्व प्रदर्शन किया है।

केंदुली गांव में जयदेवजी का सुंदर समाधि-मंदिर वना हुआ है। उस स्थान पर अव तक जयदेवजी के स्मरणार्थ प्रति वर्ष मकर की संक्रांति को एक वड़ा मेला होता है। उसमें लगभग ७५ हजार वैष्णव एकत्रित होते हैं और समाधि-मंदिर के चारो ओर संकीर्तन करते हैं।

लगभग ३०० वर्ष हुए नाभाजी ने पद्यभाषा में भक्तमाल ग्रन्थ बनाकर भक्तों का यश वर्णन किया था। उसका '४४ वां छप्पै यह है;—जयदेव कवि नृपचक्कवै खंडमंडलेश्वर आनि कवि ॥ प्रचुर भयो तिहुलोक गीतगोविंद उजागर। कोक काव्य नवरस सरस शृङ्गारको आगर॥ अष्टपदी अभ्यास करे तिहि बुद्धि बढ़ावै। राधारमण प्रसन्न सुन तहँ निश्चैआवै॥ संतसरोरुह खंडकोपदमावतिसुखजनकनरवि। जयदेवकवि नृपचक्कवै खंडमंडलेश्वर आनि कवि॥४४॥ अर्थात् जयदेवजी कवियों के महाराजा थे। उनका बनाया हुआ गीतगोविंद तीनों लोक में प्रसिद्ध हुआ, जो कोकशास्त्र, काव्य और नवरसों में सरस शृङ्गाररस का भंडार है। उसकी अष्टपदी में अभ्यास करने से बुद्धि की वृद्धि होती है और उसका गान सुन कर निश्चय करके श्रीकृष्णभगवान प्रसन्न होकर उस स्थान पर चले आते हैं। संत रूपी कमलों और (अपनी पत्नी) पद्मावती को सुख देने में जयदेवजी सूर्य के तुल्य थे। भक्तमाल के टीका में (जो भाषापद्य में बना है) लिखा है कि किंदुबिल्वग्राम में जयदेवजी का जन्म हुआ। वह वृक्ष के नीचे प्रतिदिन नए नए स्थानों में रहते थे। उनके पास एक गुदरी और एक कमंडलु था। एक दिन एक ब्राह्मण ने अपनी कन्या के सहित जाकर जयदेवजी से कहा कि जगन्नाथजी की आज्ञा से मैं आया हूं; तुम इस कन्या से अपना ब्याह करो; यदि उनकी आज्ञा का प्रतिपालन तुम नहीं करोगे तो तुमको दोष लगेगा। अनेक बातें करने के पश्चात् जयदेवजी ने जगन्नाथजी की आज्ञा से विवस होकर उस कन्या को स्वीकार किया और अपने रहने को एक झोपड़ी बनाई। उसके पश्चात् उन्होंने सुप्रसिद्ध गीतगोविंद बनाया। जयदेवजी अपने स्थान से १८ कोस दूर गंगाजी की धारा में नित्य जाकर स्नान करते थे। वृद्ध होनें पर भी उन्हो ने अपना नित्यनेम नहीं छोड़ा; तब गंगाजी ने उनसे स्वप्न में कहा कि अब तुम यहां मत आवो, मैंहीं तुम्हारे लिये वहां चली आऊंगी। उसके उपरांत गंगाजी जयदेवजी के आश्रम में चली आई, जो अब तक (अजयनदी के नाम से) वहां विद्यमान है।

रानीगंज।

खाना जंक्शन से ४६ मील पश्चिमोत्तर (हवड़ा से १२१ मील) कार्डलाइन

पर रानीगंज का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के वर्द्धवान जिले में दामोदर नदी के उत्तर किनारे पर सबडिवीजन का सदर-स्थान रानीगंज एक कसबा है। प्रथम यह स्थान वर्द्धवान की रानी का था, इस लिये कसबे का नाम रानीगंज पड़ा।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रानीगंज में १३७७२ मनुष्य थे; अर्थात् ११३६४ हिंदू, २१४७ मुसलमान, १८३ कृस्तान, ६४ एनिमिष्टिक, १३ जैन और १ यहूदी।

रानीगंज अब वर्द्धवान जिले की सौदागरी के प्रधान स्थानों में से एक हुआ है। यहां 'वर्नकंपनी' का कारखाना, बंगाल पेपर मिल्स, एक अस्पताल और सरकारी कचहरियां हैं।

कोयले की खान—रानीगंज कोयले की खानों के लिये प्रसिद्ध है। यहां के कोयले का मैदान भारतवर्ष के सम्पूर्ण कोयले के मैदानों से बड़ा और सब से अधिक प्रसिद्ध है। सन् १८२० ई० में मिष्टर जोन्स ने अकस्मात् यहां कोयले के खानों को पाया; तब से सरगर्मी से खानों से कोयला निकाला जाता है। रानीगंज सबडिवीजन में रानीगंज, माधवपुर, शंखतरिया, धौसाल, नियामतपुर, वेसागढ़, धद्का, वेलरोई, वरिया, आसनसोल, चांदपुर, लक्खीपुर, शिवपुर इत्यादि के पास कोयले की खान हैं। कोयले के मैदान रानीगंज के चंद मील पूर्व से बराकर नदी के कई एक मील पश्चिम तक नीचे ऊंचे सतह पर फैलते हैं। वर्द्धवान जिले में कोयले के मैदानों का क्षेत्रफल लग भग ५०० वर्गमील है। उसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्व से पश्चिम को लगभग ३९ मील और सबसे अधिक चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को लगभग १८ मील है। भूमि के सतह से नीचे कोयला है। कूप के समान सुण्ड बना-कर भूगर्भ से काट कर कोयला निकाला जाता है। नीचे स्थान स्थान पर स्तंभों के तुल्य मोटे मोटे पाये छोड़ दिये जाते हैं। ऊपर खेती होती है। सन् १८८३ ई० में यहां के कोयले की ५० खानों में लगभग १२००० पुरुष, स्त्रियां और लड़के काम करते थे। कोयला दामोदर नदी तथा रेलवे द्वारा कलकत्ता तथा दूसरे स्थानों में भेजा जाता है।

पिंजरापोल—कलकत्ते के मारवाड़ियों ने सोदपुर के समान रानीगंज

के निकट के बारिया बस्ती में भी पिंजरापोल स्थापित किया है, जिसमें सन् १८९० ई० में ९११ गौ, बैल और बछड़े; और १० घोड़े रक्षित थे।

जगन्नाथजी का मार्ग—जगन्नाथपुरी में पैदल जानेवाले यात्रियों की प्रधान सड़क रानीगंज से दक्षिण बांकुड़ा, और मेदनीपुर और मेदनीपुर से दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर, जाजपुर-बैतरनी और कटक होकर पुरी को गई है। सड़क के पास स्थान स्थान पर चट्टियां बनी हुई हैं।

पुरुलिया।

रानीगंज से ११ मील (खाना जंक्शन से ५७ मील) पश्चिमोत्तर और लक्खीसराय जंक्शन से १३० मील दक्षिण-पूर्व वर्द्धवान जिले के रानीगंज सबडिवीजन में कार्डलाइन पर आसनसोल रेलवे का जंक्शन है। वहां "बंगाल नागपुर रेलवे" आकर "इष्टइंडियन रेलवे" से मिली है और कोयले की बड़ी खान तथा एंजिन का बड़ा कारखाना है।

बंगाल नागपुर रेलवे के निकट आसनसोल से ५ मील पश्चिम दामोदर स्टेशन के समीप दामोदर नदी पर रेलवे का पुल और ४७ मील पश्चिम-दक्षिण पुरुलिया का रेलवे स्टेशन है। छोटा नागपुर बिभाग में (२३ अंश, १९ कला, ३८ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, २४ कला, ३५ विकला पूर्व देशांतर में) मानभूमि जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा पुरुलिया है। वहां रेलगाड़ी देरतक ठहरती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पुरुलिया में १२१२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९८८२ हिंदू, १६२५ मुसलमान, ५०८ कृस्तान और ११३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी जातियां।

पुरुलिया में डिपोटीकमिश्नर का आफिस, कचहरियों के मकान, थाना, जेलखाना, गिरजा, अस्पताल और स्कूल हैं। वहां के बाजार में गल्ले, नमक इत्यादि वस्तुओं की सौदागरी होती है। पुरुलिया से पश्चिम एक अच्छी सड़क रांची को गई है।

मानभूमि जिला—यह छोटा नागपुर विभाग के पूर्व भाग में ४१४७

वर्गमील में फैला हुआ है। इसके पूर्व बर्दवान और बांकुड़ा जिला, दक्षिण सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला; पश्चिम लोहारडागा और हजारीबाग जिला और उत्तर हजारीबाग और संथाल परगना जिला हैं। जिले के पश्चिम और दक्षिण लोहारडागा और सिंहभूमि की सीमा पर सुवर्णरेखा नदी और उत्तर तथा पूर्वोत्तर की सीमा के बड़े हिस्से पर बराकर और दामोदर नदी बहती है। इस जिले का सदर-स्थान पुरुलिया है। जिले में बहुतेरी पहाड़ियां हैं, जिनमें से प्रधान पहाड़ियां लगभग ३४००, २२०० और १६०० फीट ऊंची हैं। कसाई नदी जिले होकर बहती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मानभूम जिले में १०५८२२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९४६२४७ हिंदू, ६५९४८ पहाड़ी और जंगली जातियां, ४५४५३ मुसलमान, ५५२ कृस्तान, २३ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी। इस जिले में संपूर्ण आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली कौमे ३०७५९२ थीं, जिनमें से बहुत लोग हिंदुओं में लिखे गए थे; उनमें १२९१०३ संथाल, ६९२०७ बाउरी, ५७६९५ कोल, २६१६४ भुइया, ९०१७ खरवार थे। हिंदुओं में ४९१९० ब्राह्मण, ३९०८१ ग्वाला, ३१५६९ कुंभार, २६९१५ लोहार; २६८३८ बनियां, २४१६४ कालू, १९१२५ राजवाड़, १८९४३ डोम, १८४५० मदक, १७७३७ सूण्डी, १५९४२ राजपूत और बाकी में दूसरी जातियों के लोग थे। इस जिले के रघुनाथपुर कसबे में ५६१५ मनुष्य थे।

बांकुड़ा।

पुरुलिया के रेलवे स्टेशन से ५० मील से अधिक पूर्व कुछ दक्षिण (२३ अंश, १४ कला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, ६ कला, ४५ विकला पूर्व देशांतर में) द्वकिशोर नदी के बाएं अर्थात् उत्तर सूबे बंगाल के बर्दवान विभाग में जिले का सदर-स्थान बांकुड़ा एक कसबा है। पुरुलिया से बांकुड़ा कसबे को एक सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बांकुड़ा कसबे में १८७४३ मनुष्य थे; अर्थात् १७९३१ हिंदू, ६९२ मुसलमान, ७७ कृस्तान और ४३ एनिमिष्टिक।

बांकुड़ा में एक सराय और मामूली सरकारी इमारतें हैं। सौदागरी बहुत होती है। रेशमी कपड़े अच्छे बुने जाते हैं। रेशम के कपड़े लाह, चावल, अनेक भांति के तेल के बीज इत्यादि वस्तु बांकुड़ा से अन्य स्थानों में भेजी जाती हैं और नमक, तंबाकू, मसाले, अंगरेजी चीजें दूसरी जगहों से वहां आती हैं।

जगन्नाथजी के पैदल जानेवाले यात्री रानीगंज से बांकुड़ा, विष्णुपुर मेदनीपुर, बालेश्वर, जाजपुर और कटक होकर पुरी में जाते हैं।

बांकुड़ा जिला—यह जिला त्रिभुजाकार है। इसके उत्तर और पूर्व वर्द्धवान जिला और दामोदर नदी; दक्षिण मेदनीपुर जिला और पश्चिम मानभूमि जिला है। जिले में दामोदर और दलकिशोर इत्यादि नदियां बहती हैं। कोई झील या नहर नहीं है। पहाड़ियों से लोहे का ओर और मकान बनाने के लिये पत्थर निकाले जाते हैं। पश्चिम की सीमा के पास बाघ, तेंदुए, भालू, भेड़िये इत्यादि बनैले जन्तु होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बांकुड़ा जिले का क्षेत्रफल २६२१ वर्गमील था, जिसमें १०४१७५२ मनुष्यों की गिनती हुई थी, जिनमें ९१०८६५ हिंदू, ८४५९७ आदि निवासी इत्यादि, ४६२७४ मुसलमान, और ५६ कृस्तान थे। जातियों के खाने में ११७५४८ बाउरी, ८४३२३ ब्राह्मण, ७४१२७ तेली, ५९६५२ ग्वाला, ४७१४६ बागड़ी, ४५२१६ सदगोप, ३७८३५ लोहार, ३१३३७ बनियां, २९३२० तांती, २५२५० कैवरत, २१३०८ कालू, २१३५० सूंड़ी, २०५७५ कायस्थ, २०३२५ वैष्णव, १३९८७ राजपूत, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बांकुड़ा जिले के बांकुड़ा कसबे में १८७४३, बिष्णुपुर में १८१९० और सोनामुखी में १३४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—पहले बांकुड़ा के चारो ओर का देश विष्णुपुर कहलाता था। बांकुड़ा कसबे से लगभग २५ मील पूर्व-दक्षिण पुराने समय की राजधानी बिष्णुपुर है। विष्णुपुर के एक राजा ने कई तालाब और दूसरे ने कई मंदिर बनवाये। ग्यारवीं शदी के आरंभ में विष्णुपुर प्रसिद्ध शहर था। १८ वीं शदी में विष्णुपुर के राजघराने का ऐश्वर्य घट गया। राजा इतना निर्धन हो

गया कि उसने अपने घर के इष्टदेव मदनमोहनजी की प्रतिमा को कलकत्ते के गोकुलचंद्र मित्र के पास बंधक रक्खा। कुछ दिनों के पश्चात् राजा ने रुपये इकट्ठे करके गोकुलचंद्र के पास भेजा। गोकुलचंद्र ने रुपया लेकर मूर्ति को देने से इन्कार किया। मुकद्दमा दायर होने पर राजा की डिगरी हुई; तब गोकुलचंद्र ने उसी भांति की एक मूर्ति बनवाकर राजा को देदी। विष्णुपुर का राजमहल अब नहीं है। पुराने किले के भीतर जंगल लग गया है। बीच में एक बड़ी तोप पड़ी है। सन् १८३५—१८३६ में बांकुड़ा एक जिला बनाया गया।

रांची।

पुरुलिया से लगभग ८० मील पश्चिम रांची को एक अच्छी सड़क गई है। "छोटा नागपुर" विभाग और लोहारडागा जिले का सदर-स्थान और उस जिले में प्रधान कसबा रांची है। (यह २३ अंश, २२ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २२ कला, ६ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से २१०० फीट ऊपर स्थित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रांची में २०२०६ मनुष्य थे; अर्थात् ९९९१ हिंदू, ५०४२ मुसलमान, २८९५ कृस्तान, और २३७८ एनिमिष्टिक।

रांची की प्रधान इमारतें कमीश्नर साहब और डिप्टीकमिश्नर के आफिसें, कचहरी के अनेक मकान, स्कूल, एक खैराती अस्पताल और २ गिरजे हैं। कसबे की छोटी छोटी बस्ती अलग अलग बसी है। वहां थोड़ी तिजारत होती है; कृस्तान लोग बहुत रहते हैं। रांची से कई एक देहाती मार्ग कई तरफ गये हैं।

रांची से ६ मील दूर जगन्नाथपुर बस्ती के निकट एक पहाड़ी पर जगन्नाथजी का मंदिर है। प्रति वर्ष आषाढ़ सुदी २ को वहां मेला होता है।

लोहारडागा—रांची से ४५ मील पश्चिम लोहारडागा को एक सड़क गई है। लोहारडागा एक छोटा म्युनिसपल कसबा है, जिसमें सन् १८८१

की मनुष्य-गणना के समय ३४६१ मनुष्य थे। वह सन् १८४० ई० तक लोहारडागा जिले का सदर स्थान था। लोहारडागा से लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर पालामऊ है, जिसको पलामू भी कहते हैं।

लोहारडागा जिला—इसका क्षेत्रफल १२४५ वर्ग मील है। इसके उत्तर सोन नदी, जो हजारीबाग, गया और शाहाबाद जिले से इसको अलग करती है; पश्चिमोत्तर और पश्चिम मिर्जापुर जिला और सरगुजा, जशपुर, और गांगपुर के देशी राज्य और दक्षिण-पूर्व और पूर्व सिंहभूमि और मान भूमि जिला है। जिले का सदर-स्थान रांची है। उस जिले की पहाड़ियों में सबसे ऊंची पहाड़ी रांची से पश्चिम ३६५० फीट ऊंची है। जिले की नदियों में सुवर्णरेखा और कोयल नदी प्रधान हैं। खानों से लोहे के ओर और कुछ कुछ तांबा निकलता है। जिले के दक्षिण भाग में दरिद्र लोग नदियों के वालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं। जिले में एक प्रसिद्ध कोयले का मैदान २०० वर्ग मील में फैलता है और २ सुन्दर जलप्रपात अर्थात् झरने हैं;—एक रांची से लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर जशपुर परगने में, जिसकी ऊंचाई ३२० फीट है और दूसरा रांची से लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व। जिलेके जंगल और पहाड़ियों में बाघ, तेंदुए, वनैले सूअर, भालू इत्यादि वन जंतू रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय लोहारडागा जिले में १६०९२४४ मनुष्य थे; अर्थात् ८६८८४२ हिंदू, ६२६६६१ आदि निवासी (जिनमें ५९१८५८ कोल थे), ७७४०३ मुसलमान, २६२८१ कृस्तान, ५६ जैन और १ बौद्ध। जातियों के खाने में ५९१८५८ कोल, ७८६७७ अहीर, ७७३४१ खरवार, ५८४१९ भुँइया, ४७४७१ राजपूत, ४३७६६ कुर्मी, ४२४३९ ब्राह्मण, ३७०३४ दुसाध, ३४७०० कहार, ३४३४१ लोहार, ३२८३५ तेली, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। लोहारडागा जिले के कसबे रांची में १८४४३, पालामऊ सब डिवीजन के सदर-स्थान डलटोनगंज में ७४४०, गरवा में ६०४३ और लोहारडागा में ३४६१ मनुष्य थे।

सूबे छोटानागपुर—इसको लोग चटियानागपुर भी कहते हैं। बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन विहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर ये ४ सूबे हैं। इनमें से सूबे छोटानागपुर का सदर-स्थान रांची है। सूबे छोटेनागपुर के उत्तर मिर्जापुर, शाहाबाद और गया जिला; पूर्व मुंगेर, संथालपरगना, बांकुड़ा और मेदनीपुर जिला; दक्षिण उड़ीसा के मालगुजार राज्य और पश्चिम संभलपुर जिला और रींवा का राज्य है। इस सूबे में हजारीबाग, लोहारडागा, सिंहभूमि और मानभूमि ये चार अंगरेजी जिले और ९ छोटे देशी राज्य हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस सूबे के अंगरेजी जिलों और देशी राज्यों का क्षेत्रफल ४३०२० वर्गमील था, जिसमें ४९०३९९१ मनुष्य थे, अर्थात् २४३८८०७ पुरुष और २४६५१८४ स्त्रियां। इनमें ३८५८८३६ हिन्दू, ७६८८०६ पहाड़ी और जंगली, (जिनमें ६०१६८८ कोल और १००२५७ संथाल थे), २३५७८६ मुसलमान, ४०४७८ क्रस्तान, ९६ जैन, २४ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस सूबे के नीचे लिखे हुए कसबों में १०००० से अधिक मनुष्य थे;—लोहारडागा जिले के रांची में २०३०६ हजारीबाग जिले के हजारीबाग कसबे में १६६७२ और चतरा में १०७८३ और मानभूमि जिले के पुरुलिया में १२१२८।

इस सूबे के पश्चिमी भाग में छोटे छोटे ९ देशी राज्य हैं। इनके उत्तर रीवां का राज्य और मिर्जापुर जिला; पूर्व लोहारडागा और सिंहभूमि जिला; दक्षिण उड़ीसे के देशी राज्य और मध्यदेश का संभलपुर जिला और पश्चिम बिलासपुर जिला और रीवां का राज्य है। इस देश में ऊंची भूमि है और पहाड़ियां बहुत हैं। पश्चिम में गोंड़ और पूर्व में कोल अधिक बसते हैं। इनके अलावे भुँइया और संथाल आदि पहाड़ी जातियां भी हैं।

छोटेनागपुर के देशी राज्यों का लिस्ट;—

नंबर	देशीराज्य,	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	मालगुजारी रुपया।
१	सरगुजा ...	६१०३	३७-३२६	६११४७
२	गांगपुर ...	२४८४	१०७९६५	२००००
३	यशपुर ...	१९६३	९०२४०	१२०००
४	कोरिया ...	१६२५	२९८४६	
५	बोनाई ...	१३४९	२४०३०	
६	छोटाउदयपुर ...	१०५५	३२९५५	
७	चंगभकर ...	९०६	१३४६६	
८	सरायकाला ...	४३८	७७०६२	
९	खरसवान ...	१४५	३११२७	
	जोड़ ...	१६०६८	६७८०२७	

हजारीबाग।

रांची से लगभग ५० मील उत्तर हजारीबाग को अच्छी सड़क गई है। छोटानागपुर विभाग में (२३ अंश, ५९ कला, २१ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २४ कला, ३२ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से लगभग २०० फीट ऊपर जिले का सदर-स्थान और जिले में प्रधान कसबा हजारीबाग है। कई एक छोटे गांव मिल कर यह एक कसबा बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हजारीबाग कसबे में १६६७२ मनुष्य थे; अर्थात् १२१२९ हिंदू, ४०९९ मुसलमान, २२९ कृस्तान, १६३ एनिमिष्टिक, ४२ जैन और ९ बौद्ध।

हजारीबाग में सरकारी कचहरियां, पुलिस स्टेशन; अस्पताल, और स्कूल है। वहां सन् १७८० में फौजी छावनी और सन् १८३४ में दीवानी कचहरी नियत हुई। कसबे के दक्षिण-पूर्व फौजी छावनी में थोड़ी सी अङ्गरेजी सेना रहती है। पहिले उसमें बहुत फौज रहती थी; किन्तु सन् १८७४ में बोखार से बहुत लोगों के मरने के कारण वहां से फौज हटा दी गई।

हजारीबाग जिला—इसका क्षेत्रफल ७०२१ वर्गमील है। इसके पूर्व संथालपरगना और मानभूमि जिला; दक्षिण लोहारडागा जिला; पश्चिम लोहारडागा और गया और उत्तर गया और मुँगेर जिला है। जिले में बहुतेरी पहाड़ियां हैं। सबसे ऊंची पहाड़ी समुद्र के जल से ४५०० फीट से अधिक ऊंची नहीं है। इस जिले में कई एक अबरक की खानीयां हैं, डिबोर, कोदमा, चीरकुँड़ी इत्यादि बस्तियों के पास खानों से अबरक निकाला जाता है; प्रतिवर्ष हजारीबाग से आठ दस लाख रुपये का अबरक बाहर जाता है। सूबे छोटानागपुर में हजारीबाग का जल वायु अच्छा है। जिले की प्रधान नदी दामोदर है। इस जिले के पांच सात स्थानों में पवित्र झरने हैं, जहां कुछ कुछ यात्री जाते हैं। जंगलों में बाघ, तेंदुए, भालू इत्यादि बनजन्तु पाए जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय हजारीबाग जिले में ११०४७४२ मनुष्य थे; अर्थात् ९२४८११ हिंदू, १०६०९७ मुसलमान, ७३२८२ आदिनिवासी और ५५२ कृस्तान। इन में से लगभग ५००० जैन हिंदुओं में लिखे गए थे। जातियों के खाने में १२९४४५ ग्वाला, ९२८४९ भुइयां, ६२७६१ कुर्मी, ५६५९८ संथाल, ४२६०२ कोइरी, ४२५७४ चमार, ४२३१९ तेली, ३८४४१ घाटवाल और भोगता, ३७४०४ राजपूत और बंडावत, ३६८९३ खरवार, ३२४१९ कहार, २९५४० भूमिहार, २८४२२ ब्राह्मण, २७२७७ बनिया, २४८२७ दुसाध, २३६७१ नापित, ९२३२ कायस्थ, ८८१५ कोल और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के हजारीबाग कसबे में १६६७२, चतरा में १०७८३, और इचाक में दस हजार से कम मनुष्य थे।

पारसनाथ।

हजारीबाग कसबे से लगभग ७० मील पूर्व कुछ उत्तर गिरिडी का रेलवे स्टेशन है। इष्टइन्डियन रेलवे के मधुपुर जंक्शन से दक्षिण-पश्चिम २३ मील की रेलवे लाइन गिरिडी को गई है। आसनसोल जंक्शन से ६१ मील पश्चिमोत्तर मधुपुर जंक्शन है। गिरिडी से पश्चिम-दक्षिण पारसनाथ पहाड़ी के पादमूल के पास तक १८ मील की पक्की सड़क बनी है।

छोटे नागपुर विभाग के हजारीबाग जिले के पूर्वी भाग में (२३ अन्श, ५७ कला, ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, १० कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) जैन लोगों का पवित्र तीर्थ-स्थान पारसनाथ नामक पहाड़ी है। पहाड़ी के सिरोभाग तक एक अच्छी पगडंडी गई है। पहाड़ी जंगल से हरी भरी है। वहां का जल वायु ठंढा और साफ है। स्लेट के चट्टानो पर बांस के जंगल होकर मार्ग निकला है। ऊपर साख इत्यादि वृक्षों के सघन वन होकर पगडंडी निकली है। राह में जल के कई एक झरने देखने में आते हैं।

पारसनाथ पहाड़ी की ऊपर वाली चोटी, जिसको जैन लोग "असिमद शिखर" कहते हैं, समुद्र के जल से ४४८८ फीट ऊंची है। उसके ऊपर छोटे छोटे २० जैन मंदिर बने हैं, जिनमें कई एक बहुत सुंदर हैं। खास करके उजले मार्बुल का एक छोटा स्थान है, जिसके बनाने में ८०००० रुपया खर्च पड़ा था।

जैन लोगों के २४ संत हैं, जिनमें से १० संतो ने इसी पहाड़ी पर निर्वाणपद पाया और १९ संतों की इसी पर समाधि दिई गई; २३ वें संत पारसनाथ की भी समाधि इसी पर दी गई थी। उन्हीं के नाम से इस पहाड़ी का नाम पारसनाथ पड़ा। पारसनाथ का जन्म काशीजी में हुआ था। वह १०० वर्ष तक रहे। प्रति वर्ष लगभग १० हजार जैन यात्री पारसनाथ पहाड़ी पर जाते हैं।

भारतवर्ष में जैन लोगों की ५ पवित्र पहाड़ी हैं;—काठियावार में शत्रुंजय और गिरनार; राजपुताने में आबू; मध्य भारत में ग्वालियर और छोटा नागपुर के हजारीबाग जिले में पारसनाथ पहाड़ी। इन पांचो में शत्रुंजय पहाड़ी सब से अधिक पवित्र समझी जाती है। जैन लोगों के मत और उन लोगों की रीति का बयान भारत-भ्रमण के चौथे खंड के शत्रुंजय के वृत्तांत में मिलेगा।

जैन मत बहुत पुराना है; क्योंकि पुराणों में इस मत के बहुत वृत्तांत मिलते हैं। मत्स्यपुराण के २४ वें अध्याय में लिखा है कि बृहस्पतिजी ने रजि के पुत्रों के पास जाकर उनको मोहा और उनको आज्ञा दी कि तुम सब जैनधर्म के आश्रय हो जाओ और पद्मपुराण के सृष्टिखंड के १३ वें अध्याय में भी सरावगियों का वृत्तांत है।

वैद्यनाथ।

मधुपुर जंक्शन से १८ मील (खाना जंक्शन से १२६ मील) पश्चिमोत्तर और लखीसराय जंक्शन से ६१ मील (पटना से १३१ मील) पूर्व-दक्षिण कार्ड लाइन पर वैद्यनाथ जंक्शन है। जंक्शन से ४ मील पूर्व कुछ दक्षिण एक रेलवे शाखा देवगढ़ को गई है। रेलवे स्टेशन से लगभग १ मील दूर सूबे बिहार के भागलपुर विभाग के संथाल परगना नामक जिले में सबडिवीजन का सदर-स्थान और पवित्र तीर्थ स्थान देवगढ़ कसबा है, जिसको देवघर और वैद्यनाथ भी कहते हैं। पंडे लोग स्टेशन से यात्रियों को ले जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वैद्यनाथ में ८००५ मनुष्य थे; अर्थात् ७७०४ हिन्दू, २९७ मुसलमान और ४ दूसरे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह इस जिलेमें सब से बड़ा कसबा है।

कसबे से पश्चिम सड़क के निकट बैजू का मंदिर, कसबे से बाहर सबडीवीजन की कचहरियां और कसबे के आस पास जगह२ जंगल और कई छोटी पहाड़ियां हैं। कसबे के पास राजा मदनपाल शिविर के उजड़े पजड़े अनेक मीनार और मूर्तियां देखने में आती हैं। वैद्यनाथ में कोढ़ियों का बड़ा जमाव रहता है वे लोग रोग से मुक्ति होने की आशा करके वहां पड़े रहते हैं। वहां गिद्धोर के महाराज रावणेश्वरप्रसादसिंह की जमीन्दारी है।

कसबे में एक बड़े घेरे के भीतर पत्थर से पाटा हुआ बड़ा आंगन है। लोग कहते हैं कि इसको पाटने में मिर्जापुर के एक धनी महाजन का एक लाख रुपया खर्च पड़ा था। आंगन के बीच में वैद्यनाथ शिव का शिखरदार पूर्व मुख का बड़ा मन्दिर और बगलों में छोटे बड़े २१ मन्दिर हैं। मन्दिरों में से

संध्या, गौरी, गायत्री, सूर्य, लक्ष्मीनारायण, गणेश, और भैरव आदि के मन्दिर हैं; बाकी बहुतेरे मन्दिरों में शिवलिंग स्थापित हैं।

वैद्यनाथ शिवलिंग शिव के १२ ज्योतिर्लिंगो में से एक है। लगभग ३०० वर्ष हुए इनके वर्तमान मन्दिर को पूर्णमल ने बनवाया था। वैद्यनाथ शिव लिंग ११ अंगुल ऊंचा है; लिंग के सिर पर थोड़ा गहड़ा है। नित्य समय समय पर वैद्यनाथजी के शृङ्गार और पूजन होते हैं। बहुतेरे यात्री लोग गंगोत्तरी हरिद्वार, प्रयाग, बक्सर, जहांगिरा इत्यादि स्थानों से गंगाजल लाकर वैद्यनाथजी पर चढ़ाते हैं, और बहुतेरे लोग शिव पर चढ़ाने के लिये वहां के पंडाओं से गंगाजल मोल लेते हैं। माघ और फागुन में सैकड़ों कोस से हजारों यात्री कांवरों में गंगाजल लाकर वैद्यनाथजी पर चढ़ाते हैं। श्रीपंचमी और फाल्गुन की शिवरात्रि को वैद्यनाथजी पर जल चढ़ने को बड़ी भीड़ होती है। मंदिर से उत्तर कसबे से बाहर शिवगंगा नामक एक बड़ा सरोवर है; उसके किनारों पर पत्थर के घाट बने हैं- और एक मन्दिर है। सरोवर में यात्री-गण स्नान करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिव के १२ ज्योतिर्लिंग हैं—(१) सौराष्ट्रदेश में सोमनाथ, (२) श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैन में महाकालेश्वर, (४) ओंकार में अमरेश्वर, (५) हिमालय में केदार, (६) डांकिनी में भीमशंकर, (७) वाराणसी में विश्वेस, (८) गोदावरी के तट में त्र्यम्बक, (९) चिताभूमि में वैद्यनाथ (१०) दारुकावन में नागेश, (११) सेतुबंध में रामेश्वर, और (१२) शिवालय में घुश्मेश्वर स्थित हैं। इनलिङ्गों के दर्शन करने से शिवलोक प्राप्त होता है। इनकी पूजा करने का अधिकार चारों वर्णों को है। इनके नैवेद्य भोजन करने से सम्पूर्ण पाप का नाश होता है, इस लिये इनका नैवेद्य अवश्य खाना चाहिए। नीच जातियों में उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से दूसरे जन्म में शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होता है और उस जन्म के पश्चात मुक्ति लाभ करता है।

(५५ वां अध्याय) एक समय लंकापति रावण कैलास पर्वत पर जाकर शिवजी की आराधना करने लगा। उसके पश्चात् शिवजी के प्रसन्न होने पर

वह हिमालय पर्वत के दक्षिण भाग के वृक्षखंड नामक देश में पृथ्वी में गढ़ा करके उसमें अग्निस्थापन कर और उसके निकट शिवजी को स्थापित करके हवन करने लगा। जब हवन से शिवजी प्रसन्न न हुए तब उसने अपने सिरों को काट कर उससे हवन करना प्रारम्भ किया। जब वह अपने नव सिर हवन कर चुका तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे राक्षसों में श्रेष्ठ! तुम अपना मनोवांच्छित वरदान मांगो। रावण बोला कि हे भगवन्! मेरा अतुल पराक्रम होवे और मेरे सिर पूर्ववत् होजावें। शिवजी ने एवमस्तु कहा और रावण के सम्पूर्ण सिर पूर्ववत् हो गए। तब वह अपने गृह को जाने लगा। देवताओं को दुःखी देखकर महर्षि नारद ने मार्ग में रावण से पूछा कि तुम किस कार्य्य के लिये कहां गए थे। रावण ने कहा कि मेरे तप से प्रसन्न होकर शिवजी ने मुझ को अतुल बलवान होने का वरदान दिया है और हमारे प्रार्थना से हिमवान से दक्षिण वृक्षखण्ड में वह बैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। मैं उनको नमस्कार कर भुवन के जय करने के लिये जाता हूं। (५६ वां अध्याय) नारदजी हँस कर बोले कि हे रावण! शिवजी भंग आदि खाकर कुछ का कुछ कह देते हैं; उनके वचन का प्रमाण नहीं है। तुम जाकर कैलाश पर्वत को उठावो; यदि उनके वरदान से तुम महाबली हुए होगे तो पर्वत तुम से उठ जायगा। नारद के ऐसे वचन सुन कर बलदर्पित रावण ने जाकर कैलासगिरि को उठाया, जिस से पर्वत पर रहने वाले सब जीव जन्तु व्याकुल होगए। तब शिवजी ने रावण को शाप दिया कि अब शीघ्रही तुह्मारे बल का ह्रास हो जावेगा। उसके उपरांत रावण पर्वत को रख कर लौट आया। रावण का शाप सुनकर नारद और देव-गण हर्षित हुए। इस भांति रावण ने बैद्यनाथ महादेव से वर लाभ कर बलवान हुआ। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक बैद्यनाथ शिव का पूजन करते हैं, उनको संपूर्ण मनोवांच्छित फल मिलता है।

दूसरा शिवपुराण—उरदू अनुवाद, ८ वां खंड, ४३ वां अध्याय) एक समय रावण ने हिमालय पर्वत पर शिव लिंग स्थापित करके शिवका बड़ा तप किया। जब शिव प्रसन्न न हुए तब अपने ९ सिर काटकर शिवलिंग पर चढ़ादिया; जब वह अपना १० वां सिर चढ़ाने को उद्यत हुआ तब शिवजी ने प्रगट होकर

उसके सिरों को उसके धड़ों में जोड़ दिया और उससे कहा कि हे रावण! वरदान मांगो। रावणने कहा कि मैं बड़ा बलवान होऊं और तुमको अपने नगर में ले जाकर स्थापित करूं। शिवजी बोले कि तुम मेरे लिंगों को लेजाव; किन्तु मार्ग में किसी स्थान पर तुम रक्खो गे तो लिंग वहीं रह जावेंगे। ऐसा कह वह दो लिंग रूप हो गए। रावण दोनों लिंगों को मंजूषों में करके कांवर पर ले चला। शिव की माया से रावण को मार्ग में बड़े वेग से लघुशंका लगी। वह एक मुहूर्त के लिये एक गोप को कांवर थंभाकर मूत्र करने लगा और दोघड़ी तक मूत्र करता रहा। (४४वां अध्याय)जब उसका मूत्र न रुका तब अहीर ने थक कर कांवर को धरती पर रख दिया। तब दोनों लिंग पृथ्वी में स्थितहोगये। रावण के बहुत बल करने पर जब लिंग न उठे तब वह अपने अंगुठे से दोनों लिंगों को दबाकर अपने घर चला गया। जो लिंग कांवर में रावण के आगे था, वह गोकर्ण में चंद्रभाल के नाम से विख्यात हुआ और जो पीछे था वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध होकर चिताभूमि में विराजमान हुआ। तब विष्णु आदि देवताओं ने वहां जाकर वैद्यनाथ का पूजन किया और ऐसा कहा कि तुम वैद्य के समान मनुष्यों को आनंद देने वाले हो इससे तुह्मारा नाम वैद्यनाथ होगा। जो तुम पर गंगाजल लाकर चढ़ावेगा, वह परम पद लाभ करेगा।

कांवर थांभनेवाला ग्वाला का नाम वैजू था। उसका यह नियम था कि बिना शिवलिंग के पूजन किए भोजन नहीं करता। एक दिन एक उत्सव में उसको शिव पूजा की सुधि बिसर गई। जब वह अपने बंधुवर्गों के सहित भोजन करने बैठा तब उसको शिवपूजा याद पड़ी। उसने शीघ्र भोजन छोड़ कर वैद्यनाथ के पास जाकर उनकी पूजा की। शिवजी वैजू की ऐसी भक्ति और नियम देख कर गिरिजा सहित उस स्थान में प्रकट हुए और वैजू से बोले कि तुम अपना इच्छित बर मांगो। वैजू ने कहा कि हे महादेव! तुम बैजनाथ नाम से प्रसिद्ध हो जाओ। शिवजी एवमस्तु कह कर उसी लिंग में प्रवेश कर गए और बैजनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए।

संथाल परगना जिला—यह जिला भागलपुर विभाग के दक्षिण भाग में ५४५६ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है। इसके उत्तर भागलपुर और

पुर्निया जिला; पूर्व मालदह, मुर्शिदाबाद और बीरभूमि जिला; दक्षिण वर्द्धवान और मानभूमि जिला और पश्चिम हजारीबाग, मुंगेर और भागलपुर जिले हैं। इस जिले का सदर स्थान दुमका है; किंतु आवादी में जिले में सब से बड़ा देवगढ़ अर्थात् वैद्यनाथ कसबा है। राजमहल की पहाड़ियां, जो गंगा की घाटी से आरम्भ होती है, २००० वर्गमील फैली है; उनमें से १३६६ वर्गमील धामनीकोह के गवर्नमेंट मिलकियत में है। वे किसी जगह २००० फीट से अधिक ऊंची नहीं हैं। उनकी औसत उंचाई बहुत कम है। धामनीकोह के बाहर राजमहल पहाड़ियों के सिलसिले में बहुतेरी पहाड़ियों के ऊपर सघन वन लगे हैं और उन पर चढ़ना कठिन है।

जिले के उत्तर और कुछ दूर पूर्व की सीमा पर गंगा हैं। जिले में ब्राह्मणी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियां बहती हैं। नीचा ऊंचा देश के बहुतेरे भागों में जंगल लगा है; किंतु उसमें कीमती लकड़ियां नहीं होती हैं। गवर्नमेंट दामिनीकोह में जलावन के लिए लकड़ी काटने का ठीका देकर थोड़ी मालगुजारी प्राप्त करती है। जिले के जंगलों में खास कर शाल के वृक्ष हैं। इस जिले का प्रधान जंगली पैदावार लाही है, जो पलाश, बैर और पीपल के वृक्षों से निकाली जाती है और महाराजपुर के रेलवे स्टेशन से दूसरी जगह भेजी जाती है। संथाल और पहाड़ी लोग बहुत रेशम के कीड़ो को पालते हैं। इस परगने में कोयले और लोहे की खानियां हैं। जिले में कई एक पहाड़ी झरने हैं और बाघ, तेंदुए, भालू, हरिन, जंगली सूअर इत्यादि बनैले जंतु रहते हैं। पहले हाथी और गेंड़े थे; किंतु अब प्रायः सब मर गए।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १७५३७६३ और सन् १८८१ में १५६८०९३ मनुष्य थे; अर्थात् ८४७५९० हिन्दू, ६०८३५३ आदिनिवासी, १०८८९९ मुसलमान, ३०५७ क्रुस्तान, १३२ बौद्ध, ५४ सिक्ख, ६ यहूदी और २ जैन। जातियों के खाने में ८८५४४ ग्वाला, ३८०३२ घाटवाल, ३६०७५ ब्राह्मण, ३५७२३ डोम, ३३५४६ चमार, २८१२४ राजपूत, २८१२४ बनियां, २६४३३ लोहार, शेष में बाउरी, धानुक, कालू, कैवरत, हाड़ी, तांती इत्यादि जातियों के लोग थे। आदि

निवासियों में ५५९६०२ संथाल, ११९९५ कोल और शेप में दूसरे थे । जिले के कसबे देवगढ़ में ८००५, साहबगंज में ६५१२, राजमहल में ३८३९, और दुमका में २०७५ मनुष्य थे । साहबगंज उन्नति करता हुआ तिजारती कसबा है; उसमें बढ़ते बढ़ते सन् १८९१ में ११२९७ मनुष्य हो गए ।

वैद्यनाथ जंक्शन से पश्चिमोत्तर ६१ मील लक्षीसराय जंक्शन और लक्षीसराय से पश्चिम २० मील मोकामा जंक्शन, ७० मील पटना, ७६ मील बाँकीपुर जंक्शन, १०६ मील आरा और १२० मील बिहिया का रेलवे स्टेशन है । मैं बिहिया में रेलगाड़ी से उतर कर, उससे १२ मील उत्तर गंगा के दूसरे पार अपने जन्म स्थान चरजपुरा चला आया ।

साधुचरणप्रसाद ।

भारत-भ्रमण तीसराखंड समाप्त ।
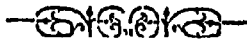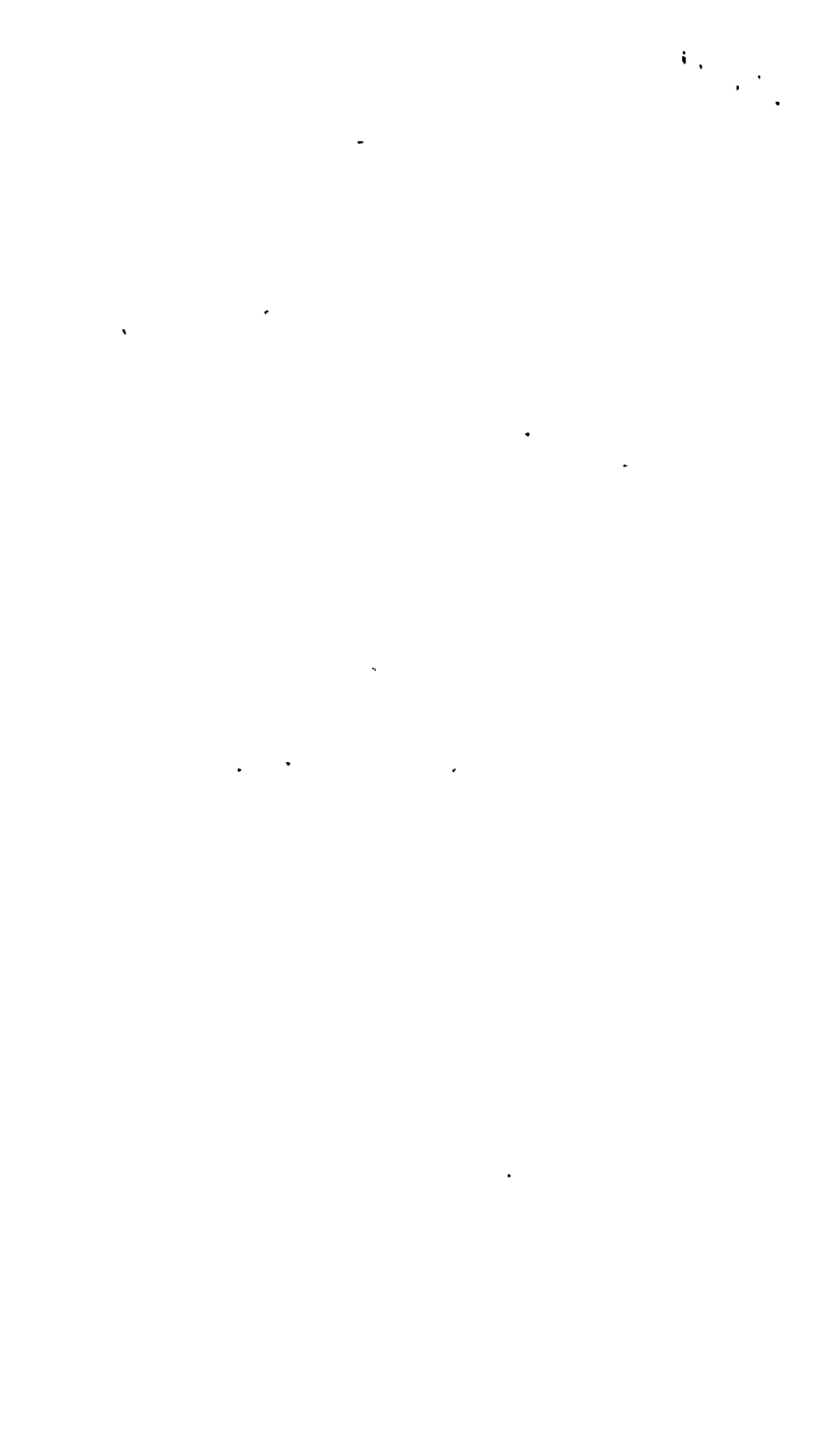
विशेषद्रष्टव्य ।

विदित हो कि पश्चिमोत्तर प्रदेश-बलिया जिले के अन्तर्गत चरजपुर निवासी बाबू साधुचरणप्रसाद ने सम्पूर्ण भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न प्रांतों में ५ यात्रा करके भारतवर्ष के प्रायः सम्पूर्ण तीर्थस्थान, शहर और अन्य प्रसिद्ध स्थानों को देख कर और बहुतेरी अङ्गरेजी, उर्दू और हिन्दी की किताबों में आवश्यकीय बातों और ऐतिहासिक वृत्तान्तों तथा स्मृतियां, १८ पुराण, महाभारत, वाल्मीकी रामायण इत्यादि धर्म पुस्तकों प्राचीन कथाओं का संग्रह कर ५ खण्डो में भारत-भ्रमण नामक पुस्तक बनाई है इसमे भारतवर्ष के भूतकालिक और वर्तमान काल के वृत्तान्त भली भांति ज्ञात होंगे। इसमें स्थान स्थान पर नक्शे और तस्वीरें भी दी गई हैं। केवल प्रेस का खर्च मात्र ले कर ग्रांहकों को पुस्तकें दी जाती हैं।

पुस्तक मिलने का ठिकाना—

(१)—विश्वेश्वरप्रसाद वर्मा बुकसेलर नैपालीखपड़ा बनारस सिटी।

(२)—गणेशदास एण्ड कम्पनी बुकसेलर चांदनीचौक के उत्तर बनारस सिटी

(३)—यज्ञेश्वर प्रेस, मिश्रपोखरा, बनारस सिटी।

(४)—भारतजीवन प्रेस, बनारस सिटी।

पुस्तकों का मूल्य।

पहिला खण्ड	१॥)	तीसरा खण्ड	
दूसरा खण्ड	१॥)	पांचवां खण्ड	

ग्रांहकों को कुछ आवश्यकता होवे तो वे बाबू तपसीनारायण

(गांव चरजपुरा, डांकखाना बैरिया, जिला बलिया)

मे पत्र व्यवहार करें।